बाल संसार समग्र

रंग रंगीले गीतों, कहानियों, नाटकों का रंग रंगीला संसार

शकुन्तला सिरोठिया

बाल संसार समग्र

(प्रथम भाग)

शकुन्तला सिरोठिया

प्रचारक ग्रंथावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो. बॉ. ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१

प्रकाशकीय

बाल-साहित्य में विशिष्ट शैली में अधिकारपूर्वक लिखना शकुन्तलाजी की विशेषता है। ऐसे तो साहित्य की हर विधा पर शकुन्तलाजी की पकड़ है, परन्तु बाल-हृदय पर प्रभाव डालने वाली लुभावनी कविताओं के माध्यम से इस बाल समग्र में जो प्रयास किया है वह लेखन-वैशिष्ट्य का परिचायक है। इससे लगता है कि बाल-मनोविज्ञान का उन्होंने गंभीरता से अध्ययन किया है।

बच्चों में अच्छे संस्कार पड़ें, बड़ों के प्रति श्रद्धा हो, छोटों के प्रति प्रेम हो तथा स्वयं अनुशासन में रहें तो राष्ट्र की उन्नति होने में देर नहीं होगी। शकुन्तलाजी ने बाल साहित्य में कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी सब कुछ लिख डाला है। बाल साहित्य समग्र में अपनी विशिष्ट शैली में आपने जो कुछ दिया है उससे बच्चे अवश्य लाभान्वित होंगे।

बाल साहित्य समग्र में मनोरंजन, शिक्षा, बड़ों के प्रति क्या कर्तव्य है, अपने से छोटों के प्रति कैसा व्यवहार हो ये सारी चीजें इसमें एक साथ उपलब्ध हैं। कविताओं को संगीतबद्ध करके संगीतमय बनाने का भी स्तुत्य प्रयास किया गया है। इनके नाटक और कथाओं के लेखन में बच्चों की रुचि का ख्याल रखा गया है। बच्चे उनके नाटकों का अभिनय आसानी से कर सकते हैं।

बच्चों, युवा वर्ग के लोगों को ऐसा साहित्य देकर शकुन्तलाजी ने इस क्षेत्र की कमी को दूर किया है।

ऐसे साहित्य का प्रकाशक बनकर हम भी गौरवान्वित हैं।

—कृष्णचन्द्र बेरी

बाल संसार समग्र

प्रकाशक :

विजय प्रकाश बेरी

प्रचारक ग्रंथावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पी. बॉ. ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१
फोन : 0542- 350425, 358470, 356850
350670, 352287, 361452, 361758

लेखन व संपादन :

शकुन्तला सिरोठिया

आवरण :

प्रो. श्यामलदास गुप्ता

चित्रांकन :

दुलाल प्रामाणिक एवं
पुष्पिता बराट
(पुष्पदल)

कम्प्यूटर कम्पोजिंग एवं
फिल्म प्रोसेसिंग :

काशी ग्राफिक्स
सी २/४१ हंकारटोला, वाराणसी
फोन : ०५४२-३५५३७२

मुद्रक :

काबरा ऑफसेट्स
रवीन्द्रपुरी, वाराणसी
फोन : ०५४२-३१०६८४

मूल्य : १००.०० रु. मात्र

Bal Sansar Samagra
Bal Sansar Samagra
collective works of
Shakuntala Sirothia

समग्र : एक आकलन

शकुन्तला जी के बाल साहित्य का 'समग्र' मेरे समक्ष है। देखता हूँ तो ऐसा प्रतीत होता है मानो यह हिन्दी के बाल साहित्य के समग्र का संक्षिप्त रूप हो, एक समर्थ प्रतिनिधि। अपने में यह बड़ी बात है। साहित्य में प्रचलित सभी विधाओं में लेखन-क्षमता प्रतिभा की असामान्य देन है। शकुन्तला जी को वह प्राप्त है और उसी की पुष्टि है प्रस्तुत संकलन जिसमें उनकी सभी विधाओं का प्रसाद समाहित है।

लगभग तीन दशक पूर्व तक बाल साहित्य एक प्रासंगिकता थी, एक सामान्य धारणा कि अवसर या प्रयोजन विशेष से इसकी रचना की जाती है। परिस्थितियों का निरस्त्रीकरण हो चुका है अब। अद्यतन शोध कार्यों ने प्रस्तुत तथ्यों के आधार पर इस संचेतना की पुष्टि कर दी है कि वाङ्मय के प्रारंभ से बाल-साहित्य किसी-न-किसी रूप में विद्यमान था। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और सामाजिक परिवेश इसे उत्तरोत्तर परिवर्तित तथा प्रत्यावर्तित स्वरूप देते चले गये। बाल-साहित्य का इतिहास साक्षी है कि यह उपक्रम चलता रहा है, चल रहा है। जब तक समय में प्रवाह और प्रवाह में परिवर्तन की प्रवृत्ति है, यह अनवरत चलता रहेगा।

बाल साहित्य का आदि स्रोत संस्कृत साहित्य है जिसकी मनोरंजक बोध कथाएँ सुदूर पूर्वी देशों में पहुँच चुकी थीं, प्रचलन पा चुकी थीं। तब से बाल कथाओं का क्रम युग की सामाजिकता के अनुरूप चलता रहा। प्रचलित मान्यताओं, विश्वासों और संगतियों ने इन कथाओं को विषय प्रदान किये, मनोरुचि ने उन्हें कलेवर दिया। मिर्जा उस्मान बेग मध्यकाल के लोकप्रिय बाल कथा लेखक थे, हर्नाफ बाल कवि। सोलहवीं और सत्रहवीं शती से ले कर अंग्रेजों के आगमन काल तक बंगाल, हैदराबाद और अवध में लगभग सभी लेखकों ने बाल साहित्य को स्पर्श किया, उसे थोड़ा-बहुत प्रवहमान बनाया। उर्दू साहित्य के मर्मज्ञ समीक्षक डॉ० मजहर के शब्दों में—"उस समय का उर्दू का बाल साहित्य अपनी मानसिकता ले कर चला इसीलिए वह न चेतना का जनक बन सका, न प्रेरणा का स्रोत।"

सामान्य धारणा है कि हिन्दी का बाल साहित्य पिछले तीन-चार दशकों की देन है। वास्तविकता उससे बिल्कुल भिन्न है। खड़ी बोली के साहित्य का कोई भी काल या भाग बाल साहित्य के प्रभाव से वंचित नहीं। स्वयं भारतेन्दु बाबू ने बच्चों के लिए लिखा और फिर उनके अनुवर्ती लेखकों ने। द्विवेदी युग में बाल कविताओं का बाहुल्य रहा। इस युग के प्रायः सभी वन्दनीय कवियों ने बाल साहित्य के इतिवृत्त पर अपने हस्ताक्षर किये। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाएँ ऐसी रचनाओं से भरी हुई हैं। कुछ बाल पत्रिकाएँ भी प्रारंभ हुईं इस काल में।

स्वतंत्रता-पूर्व का बाल साहित्य अपेक्षाकृत कम है, साथ ही बिना किसी अपनी पहचान के। जहूरबख्श जी ने हिन्दी को कई पीढ़ियाँ दीं, कई पीढ़ियों का साहित्य और बाल साहित्य भी। अपने एक आत्मनिवेदन में उन्होंने कहा—"तब बाल साहित्य तथा सरल सामान्य साहित्य में लक्ष्मण रेखा नहीं खींची जा सकी, शायद इसलिए कि तब का लेखक अपने आपको बालकों के लिए समर्पित नहीं कर सका।" जो भी हो तब से आज तक बहुत कुछ बदलाव आ गया है—चिंतन, मनन और जीवन में। बाल साहित्य उससे अप्रभावित रह पाता यह संभव नहीं था, समीचीन भी नहीं।

यहाँ तो बात शकुन्तला जी के समग्र बाल साहित्य की है जो विविध विधाओं में हमारे सामने है। शिशु से ले कर किशोरों तक को उन्होंने अपने अंतर्मन में उतारा, उनसे तादात्म्य स्थापित किया और उन्हें अपने व्यक्तित्व का एक अंश बनाया। यही शकुन्तला जी की सफलता का मर्म और रहस्य है। उन्होंने कई रूपों में जीवन जिया है—माँ, गृहिणी, शिशुओं की अध्यापिका, गीत गायिका, संवेदनशील भावनामयी लेखिका और इसके साथ ही भारतीय संस्कृति की धार्मिक अभिव्यक्ति। उनके ये सब रूप उनके बाल साहित्य में यथास्थान मिलते हैं। इसीलिए उनमें कल्पना की अपेक्षित और भावना की अपेक्षा कामना कहीं अधिक है।

लोरियों के रूप में उन्होंने हिन्दी को सर्वथा एक अभिनव प्रयोग दिया है। इनकी सहजता, सुकुमारता और भावों की सरलता चित्रात्मक ही नहीं अभिनयात्मक भी है। इन लोरियों में ललक है, स्नेहाकुलता की झलक तथा दिनों की सकारात्मकता है। भाषा और भाव एक-दूसरे में पैठ-बैठ गये हैं, समा गये हैं।

शिशु गीतों की दुनिया में शकुन्तला जी की अपनी देन है। उनमें गीतात्मकता के साथ भाव की स्निग्धता और प्रस्तुति की सादगी है। विषयों का चयन भी उन्होंने अपनी दृष्टि से नहीं, अपने बाल पाठकों की रुचि के अनुकूल किया है। इनमें एक तारतम्यता और प्रवाह है। बाल काव्य के उपवन में उनके ये शिशु गीत अधखिले फूलों के समान लहराते और अपना गंधहास

लुटाते हैं।

विकास क्रम में आगे आते हैं बाल गीत, जो कभी-कभी किशोरों तक भी पहुँच जाते हैं। इन गीतों में विषयों की विविधता और प्रस्तुति की विभिन्नता है। ये गीत विभिन्न छंदों, लयों और शैलियों में हैं और कभी-कभी तो इनका विस्तार और भाव-क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि यह सहमति भी कठिन हो जाती है कि ये एक ही कवि द्वारा विरचित हैं।

सिरोठिया जी का गद्य काव्य से कम सशक्त नहीं। उनकी बाल कहानियाँ अपने पाठकों का केवल मनोरंजन ही नहीं करतीं, उनसे कुछ कहती भी हैं, कभी गुदगुदाती हैं, कभी हँसाती हैं और कभी उन्हें अपने में समेट लेती हैं। इन कहानियों के विषय बाल जीवन से कुछ इतने निकट से जुड़े हुए हैं कि वह इन कहानियों को जीवन की सार्थकता का ही एक अंश मान लेता है। यह ठीक है, इन कथाओं की कोई विशिष्ट परिपाटी नहीं, फिर भी उनमें परिव्याप्त रोमांचक तत्व उनकी पात्र-प्रियता का निरापद संदर्भ है।

सामान्यतः बाल उपन्यास लम्बी कहानी के रूप में होते हैं। शकुन्तला जी के उपन्यास स्पष्टतः उसके अपवाद हैं। विषयों का चयन, चयन के परिप्रेक्ष्य, विस्तार, प्रसंग-विभाजन, पात्रों की बहुरूपता, उतार-चढ़ाव इन सब परिवेशों में, इन उपन्यासों में वे सब तत्व विद्यमान हैं जो उन्हें लम्बी कहानी से भिन्न करते और औपन्यासिक विधा की गरिमा देते हैं। बार-बार पढ़ने पर भी उनकी रोचकता कम नहीं होती। एक बाल पाठक के शब्दों में—'जितनी बार पढ़ा, नया मजा आया।'

इन स्थापित विधाओं के अतिरिक्त भी शकुन्तला जी ने बच्चों के लिए नाटक, छोटे-छोटे लेख, संवाद आदि लिखे हैं जो उनकी उपलब्धियों का अलंकरण करते और प्रतिभा को अपना रंग प्रदान करते हैं।

समग्र में यह सब कुछ है। वस्तुतः सब कुछ, जो भोला बाल पाठक अपने प्रबुद्ध लेखक से अपेक्षा करता है, इस संकलन में समाहित है शकुन्तला जी की छः दशकों की साधना जो कभी उनकी थी, अब उनके बाल पाठकों की हो चुकी है।

'समग्र' का प्रकाशन निश्चय ही एक साधुवादी प्रयास है। अनेक पुस्तकों में बँटे-बिखरे साहित्य को एक स्थान पर समेटना और कलेवर प्रदान करना निर्विवाद एक पुण्य कार्य है, शोध और साहित्य दोनों ही दिशाओं में। समग्र वस्तुतः व्यक्तित्व की समग्रता की प्रस्तुति है। मैं इस सद् प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ।

२२३ राजेन्द्र नगर
लखनऊ-4

शिवशंकर मिश्र
पूर्व परामर्शदाता
उ. प्र. शासन (सूचना)
सचिव, हिन्दी समिति
संपादक, उत्तर प्रदेश
संप्रति—प्रकाशन सलाहकार
साक्षरता निकेतन

बाल साहित्य : एक चिन्तन

किसी देश के साहित्य में उसका विगत और वर्तमान स्पष्ट झलकता है, साथ ही वह एक ऐसा दर्पण भी है जिसमें झाँक कर भावी पीढ़ी अपने रूप को सँवारती और सजाती है। अच्छे साहित्य की जितनी आवश्यकता बड़ों को है उससे अधिक बच्चों को। बाल साहित्य के महत्व को आज हम पहिचानने लगे हैं। बीस-पच्चीस वर्ष पूर्व तक वयस्कों का लेखक और कवि छोटे बच्चों का साहित्य लिखने में हिचकता था। किन्तु धीरे-धीरे उसके अन्दर से यह कुंठा दूर हो गयी है। इसके लिए बाल पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों को श्रेय मिलना चाहिए जिन्होंने अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों और प्रभावों से प्रसिद्ध साहित्यकारों को नन्हें-मुन्नों के लिए भी लिखने के लिए प्रेरित किया। अब तो बाल साहित्य में एक नयी लहर आ रही है। स्पष्ट रूप से यह अनुभव हो रहा है कि बाल साहित्यकार की लेखनी अपना लक्ष्य, अपनी मंजिल प्राप्त करने के लिए बेचैन है। अब वह ऐसा, तैसा, कुछ भी ऊटपटाँग लिख कर आज के चेतन-बालक को संतुष्ट नहीं कर सकता। वास्तविकता का ठोस धरातल उसे मिल गया है। आस्था का प्रकाश उसने पा लिया है। बालकरूपी भगवान् के प्रति यही निष्ठा सदैव बनाये रखने में बालक और राष्ट्र का शुभ भी है।

आज भारत में जिस प्रकार सद्बाल-साहित्य की आवश्यकता का अनुभव हो रहा है वैसा शायद ही किसी युग में हुआ है। युवा वर्ग की अनुशासनहीनता, उद्दंडता, उच्छृंखलता, पूर्वजों तथा बड़ों के प्रति अश्रद्धा और अवमानना ने राष्ट्र के शासन की नींव को हिला कर रख दिया है। देश का भविष्य धुँधला दिखलाई दे रहा है। किशोरों और बालकों के हाथ में जो साहित्य दिया जा रहा है, चलचित्र के माध्यम से इन्हें जो कथानक दिखाये जा रहे हैं, जो अवांछनीय प्रस्तुतियाँ इन्हें दी जा रही हैं उन्होंने इन्हें दिग्भ्रमित कर दिया है। भावी कर्णधार को ऐसी जर्जर पतवार थमा कर हम कैसे आशा कर सकते हैं कि वे हमारी राष्ट्र तरी को पार लगा सकेंगे ? अब एकमात्र उपाय है इस भावी तरुण पीढ़ी को समयोचित सद्साहित्य प्रदान करके सँभालना।

बालक को यदि प्रारंभ में ही, राष्ट्रभक्ति, नैतिकता, अनुशासन, मानवता, समाज सेवा आदि की उदात्त भावना तथा शुचि संस्कार का साहित्य सुनाया और पढ़ाया जाये तो निश्चय ही वह राष्ट्र को उच्च शिखर पर खड़ा कर देगा। यदि इन भावी नागरिकों में राष्ट्रीय चेतना भरी जाय तो ये समाज और राष्ट्र में स्वस्थ तथा नवीन क्रान्ति ला सकते हैं। देश को ये ही तरुणाई प्रदान करनेवाले हैं। मातृभाषा में रचा गया स्वस्थ साहित्य ही इन्हें यह चेतना देने में समर्थ हो सकता हैं। अभी तक इनका यह दुर्भाग्य रहा है कि देश की संस्कृति का चित्र विदेशी भाषा कें चौखटे में जड़ कर इन्हें दिखाया गया है। इनकी भावना के संग क्रूर खिलवाड़ किया गया और किया जा रहा है। नीले गहरे नभ के झिलमिलाते तारों का सौन्दर्य इन्हें 'ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार' के माध्यम से दिखाया गया है। बाल साहित्यकार को देश की इस ज्वलन्त समस्या को गहराई से समझना है, तभी समस्या सुलझाई जा सकती है।

इस युग के बाल साहित्यकार के ऊपर भारी दायित्व आ गया है। इन कोमल ग्रहणशील बालकों का भविष्य अब उनके ही हाथों में है। कोई भी विवेकशील तथा ईमानदार साहित्यकार उनका भविष्य नहीं बिगड़ने देगा।

जिस लेखक या कवि ने अपनी क्षमता को पहिचाना है, बालक की माँग को जाना है, उसके मनोविज्ञान को नजदीक से पढ़ने की चेष्टा की है, उसकी भावना को प्यार से अनुभव किया है और साथ ही समय की गति का भी अध्ययन किया है वही अपनी लेखनी को गति और वांछित रूप देने में समर्थ हो सकता है।

वह स्वान्तःसुखाय दृष्टि से नहीं, बालकों के शुभ के लिए लिखेगा। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित और प्रसारित हो रहा है या नहीं उसे इसकी इतनी चिन्ता या इच्छा नहीं होगी जितनी इस बात की कि वह जो कुछ बालकों को दे रहा है वह उपयोगिता और वांछनीयता की दृष्टि से खरी है या नहीं। यद्यपि यह भी महत्वपूर्ण बात है कि जो कुछ लिखा जाये वह पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से समय और अवसर के अनुसार प्रकाशित भी हो जिससे बच्चों तक पहुँचने में समर्थ हो सके। उन तक साहित्य पहुँचाने में पत्र-पत्रिकाएँ सशक्त माध्यम हैं। रचनाओं की उपयोगिता भी तभी संभव है जब ये बाल पाठकों के हाथों में सरलता से पहुँच सकें।

इसका यह अर्थ भी नहीं है कि केवल नाम और यश के प्रचार हेतु ही लिखा जाये। सम्पादकों से अच्छे सम्बन्ध रखने वाला या किसी अच्छे पद पर आसीन व्यक्ति अपनी किसी भी रचना को अच्छी-से-अच्छी पत्रिका में स्थान दिलाने में समर्थ हो सकता है। ऐसे लेखक और सम्पादक दोनों की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। बालक के लिए वही साहित्य सार्थक हो सकता है जिसे वह पूरी तरह ग्रहण कर सके। क्लिष्ट शब्द या भाव जो उसकी आयु और मानसिकता से हट कर होंगे

[illegible] नहीं पढ़ सकते और वह उसमें रुचि लेना ही छोड़ देगा। कठिन शब्द और भाव यदि ऐसे संदर्भ में आयें जो आगे-पीछे के भावों से सम्बन्धित हों तो वह सरलता से समझ लेगा।

आज का बालक पहले की अपेक्षा मानसिक दृष्टि से अधिक सजग और चेतन है। मशीन युग के उपकरणों ने उसके बौद्धिक स्तर को काफी ऊँचा उठा दिया है। जिज्ञासा की तीव्र अनुभूति उसे निरंतर चंचल बनाये रखती है। ज्ञान का वर्धन और जिज्ञासा का समुचित समाधान कर सकनेवाला साहित्य ही उसे सन्तोष प्रदान कर सकता है। इसके लिए साहित्यकार को ईमानदारी से अपने साहित्य को परख कर बालक के सम्मुख प्रस्तुत करना है।

खेद का विषय है कि हमारी भाषा का बाल साहित्य अभी उस स्तर पर नहीं पहुँचा है कि हम गर्व से मस्तक ऊँचा उठा सकें। कुछ दशक पूर्व तक तो हमने यह महसूस ही नहीं किया था कि बच्चों के लिए भी साहित्य की आवश्यकता है। वयस्कों के लिए लिखनेवाले प्रसिद्ध लेखक बच्चों पर लिखना अपने सम्मान के विरुद्ध समझते थे जबकि अन्य भाषा और राष्ट्र के बड़े-से-बड़े साहित्यकार ने बच्चों के लिए लिखने में रुचि ली है। ऐसा हिन्दी में नहीं हुआ। हाँ, ठाकुर रवीन्द्रनाथ ने, जो कि नोबुल पुरस्कार विजेता थे, बालकों के लिए लिखा और खूब लिखा। बालकों के हृदय को रिझानेवाले साहित्य का उन्होंने सृजन किया।

प्राचीन काल में जब यहाँ प्रकाशन की सुविधा नहीं थी, भोजपत्रों पर हस्तलिखित पुस्तकें होती थीं तब प्रसारण का एकमात्र साधन मौखिक प्रचार था। बच्चों तक वाचिक साहित्य ही पहुँचता था। आश्रम तथा शिक्षा संस्थाओं में गुरु तथा घर में परिवार के सदस्य उन्हें वाचिक ज्ञान देते थे। सुनानेवाले का व्यक्तित्व उसे प्रभावशाली बनाता था। बच्चे उस श्रव्य साहित्य-गंगा में मन भर कर स्नान करते थे जिसका अमिट प्रभाव आजीवन उनके हृदय पर अंकित रहता था।

आज रेडियो, टेलीविजन आदि जैसे शिक्षा उपकरण भी जिस उद्देश्य की पूर्ति करने में असमर्थ हैं वह सहज ही गुरु, दादा, दादी, नानी, माता-पिता आदि द्वारा उस समय पूर्ण हो जाता था। परिवार के वृद्ध जन, घर के दास-दासियों के पास शिक्षाप्रद कथाओं, गीतों, लोरियों आदि का अक्षय भंडार था। बालक का प्यासा मन जिन्हें सुन कर तृप्त होता रहता था। तब जनसंख्या की ऐसी भीड़ नहीं थी और न समय का ऐसा अभाव था। वाचक की निकटता भी उसे प्राप्त होती थी जिसके कारण उसका मन श्रव्य साहित्य में रम जाता था।

शिशु पढ़ना या लिखना नहीं जानता। उसका चंचल मन स्वयं पढ़ कर आनन्द नहीं ले सकता। रंगीन आकर्षक चित्रों को दिखाते हुए उसे कथा कहानी सुनायी जा सकती है। लोरी सुनाने का दायित्व माँ पूरा करती है। प्राचीन काल में वाचिक साहित्य की प्रचुरता थी, साथ ही कुछ उच्च कोटि का लिखित साहित्य भी उपलब्ध था जो शिशुओं के लिए नहीं किशोरों के लिए ही मुख्य रूप से था। पंचतंत्र की कहानियाँ तथा हितोपदेश की कथाएँ आदि किशोर साहित्य ही हैं। पंचतन्त्र की कथाएँ पहले वाचिक ही थीं। पशु-पक्षियों पर आधारित कहानियों को सुना कर प्रबुद्ध कथाकार आचार्य विष्णु शर्मा ने राजकुमारों (किशोरों) को शिक्षित तथा राजनीति में प्रवीण कर दिया था। यदि उस समय प्रकाशन की सुविधाएँ उपलब्ध होतीं तो दादी, नानी की कहानियों का आज प्रचुर भण्डार बाल साहित्य में उपलब्ध होता।

आज के मशीन युग में परिवार के वृद्ध जन भी इतने व्यस्त हैं, (माता-पिता तो हैं हीं) कि उन्हें अपने नन्हें दुलारे नाती-पोतों को बिठा कर गीत, कहानी आदि सुनाने का समय नहीं है। मौसी, बुआ, दादी आदि का सम्पर्क भी उसको नहीं मिल पाता। आज लोरी की गुनगुनाहट सुनते हुए सोने का सौभाग्य बिरले ही बालक को प्राप्त है। आज जैसा उपेक्षित बालक कदाचित् किसी युग में नहीं रहा है। जब शिशु को मौखिक साहित्य नहीं मिल पाता तब उसे रंगीन चित्रों की पुस्तकों की आवश्यकता है। इनका भी अभाव होने से शिशु और बालक के मन की जिज्ञासा अतृप्त रह जाती है। अतः उसकी माँग को पहिचानते हुए तथा उसके मनोविज्ञान को जानते हुए साहित्यकार को बच्चों को लिए लिखना है। खूब लिखना है, लगन से लिखना है। अपनी अहं पूर्ति के लिए नहीं, यश पूर्ति के लिए भी नहीं, बालक के लिए लिखना है। अपने बड़प्पन को भूल कर बाल-मन को झाँकते हुए, स्वयं बालक बन कर लिखना है। बालक के स्तर पर उतर कर, अपने बचपन को याद करके लिखना है। उसके साथ मन को मिला कर उसके साथ थिरक कर, लड़खड़ा कर, तुतला कर ही वह साहित्य लेखन के उद्देश्य में सफल हो सकता है और तभी ये वामन अवतारी उसके अर्घ्य को स्वीकार करेंगे।

बालक गीतों के विशेष प्रेमी होते हैं। वैसे तो बड़ों पर भी पद्य में (विशेष रूप से स्वर संगीतमय) कही हुई बात अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती है। प्रचार के लिए भी गीतों का सहारा लिया जाता है। प्राचीन संस्कृत साहित्य, वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि सभी की रचनाएँ पद्य में हुई हैं। बच्चा भी गीतों का जन्मजात रसिया है। उसके वातावरण के परिचित पात्र पशु-पक्षी, चाँद-तारे, फूल, तितली आदि इसके प्रिय विषय हैं। राष्ट्रीय तथ्य, सांस्कृतिक पर्वों पर सरस

कविताएँ उसे देने की आवश्यकता है।

बालक प्रकृति और उसके उपकरणों वृक्ष, पशु, पक्षी, चाँद, तारों आदि से तादात्म्य स्थापित करना चाहता है। माँ के साथ लेटा हुआ बालक चाँद को देख कर कहता है—

"झाँक रहा बादल से चंदा अम्मा उसे बुला ले तू
तुझको ही वह देख रहा है अपने पास सुला ले तू।"

स्वस्थ स्पर्धा, प्रतियोगिता, चुनौती की भावना भरने तथा गंदी आदतों, बुराइयों, भय और वितृष्णा आदि से उसे बचाने की आवश्यकता है। सरल छन्दों में, छोटे गीत, कहानी आदि बालकों को दे कर उनके चरित्र गठन की दिशा पकड़ी जा सकती है। जोश और उत्साह से भरे प्रयाण और देश प्रेम के गीत बालक के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं जो उनमें एकता और सहयोग से कार्य करना, देश की पुकार पर न्यौछावर होने की भावना भरें। उनके आत्मविश्वास को दृढ़ बनायें। संकल्पों को दृढ़ बनानेवाली कविताएँ उनके लिए कल्याणकारी हैं।

बच्चे छोटे गागर में सागर जैसे गंभीर भी हैं। देश की नाव की पतवार कल इन्हीं के हाथों में आयेगी। इनका एक आत्मविश्वासी स्वर का उदाहरण इनके ही मुख से सुनिए—

"अपने नन्हें हाथों से हम गढ़ते हैं अपनी तकदीर।
राष्ट्र नवीन बना सकते हैं, मानव नया बना सकते हैं,
हम न रुकेंगे बढ़ निकले हैं तोड़ बंधनों की जंजीर।
हम तुम सबको दिखला देंगे, हम दुनिया को दिखला देंगे,
नन्हें मुन्ने हो कर भी हम कितने तन के मन के वीर।"

बालक में जो तादात्म्य की प्रवृत्ति है, सुख-दुःख अनुभव करने की जो क्षमता है वही उसके साहित्य के लिखने वाले में जब होगी तभी वह उसे कुछ दे सकेगा।

माता-पिता के प्रति प्रेम तथा श्रद्धा की भाव-गंगा को आगे बढ़ा कर देश और समाज के प्रति प्रेम और श्रद्धा के सागर में मिला देना है। कल नये जयचन्द न उत्पन्न हों, देश को निज स्वार्थ और धन के लोभ पर बेचनेवाले न पैदा हों, इसके लिए साहित्यकारों को भी सावधान रहना है। बच्चा भी सब कुछ देखता है, सब कुछ समझता है, केवल हमें उसका विशाल, विशद रूप इनके नन्हें रूपों में दिखलायी नहीं पड़ता उसी प्रकार जिस प्रकार वट बीज में विशाल वट-वृक्ष नहीं दिखाई देता।

मातृ प्रवण वातावरण के साथ माँ के सुख-दुःख देखभाल का दायित्व भी उनका है, इसकी भावना भी बचपन में ही उसमें भर दी जाती है। तभी वह विश्वास से कह सकता है—"मेरे रहते माँ मेरी तू कभी न घबराना। संकट कोई आये तो मुझको आवाज लगाना।"

जन्म देनेवाली माँ से भी ऊँची, उससे भी अधिक श्रद्धा की पात्र राष्ट्र की माँ है। उसके अहसानों से मनुष्य प्राण दे कर भी उऋण नहीं हो सकता। अतः प्रत्येक व्यक्ति अपने देश और राष्ट्र के लिए प्राणपण से न्यौछावर हो, उसका सपूत सिद्ध होने की चेष्टा करे यह बात बालक में बाल्यावस्था से ही भरने का कार्य साहित्य का है। समयोचित साहित्य ही उसे सुनागरिक बना सकता है और सुनागरिक ही राष्ट्र की नींव को दृढ़ बना सकता है।

बाल साहित्यकार जिस दिन अपने इस पावन दायित्व को पहिचान कर रचना करेगा उस दिन वह स्वयं श्रद्धा का पात्र माना जायेगा। उस दिन उसकी साहित्य की बगिया सुन्दर, सुगंधित फूलों से महमहा उठेगी।

शकुन्तला सिरोठिया

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
3.	पिता पुत्र का मिलन	106
4.	शेरू की वीरता	110
5.	अपने ही घर में	117
6.	गुलमुहर	119
7.	साँप की कुंडली	122
8.	माँ	124
9.	करोड़पति भिखारी	126
VIII.	***बालक नेपोलियन की डायरी***	130
1.	आशीर्वाद	130
2.	कर्ज का प्रमाण-पत्र	134
IX.	***शिशु-नगर (रुपक)***	
1.	वर्षापति का दरबार	142
2.	चतुर ओडिसस	144
3.	स्वतंत्रता के पथ पर	146
X.	***आरी निंदिया***	
1.	जाग पहरुए	157
2.	आजादी त्योहार	158
3.	खेतिहर	158
4.	राखी	159
5.	मिट्टी में फूल	159
6.	प्रभात बेला	160
7.	दीपक	160
8.	प्रहरी	161
9.	सोना बरसा है	161
10.	झण्डा प्यारा	162
11.	घिर-घिर आये बदरा	162
12.	शिशु गीत	163
13.	कुत्ता	167
14.	हाथी	167
15.	बन्दरवाला	167
16.	रेल	167
17.	सोओ सुख निंदिया	168
18.	उठ जा मुन्ना	172
19.	हम बड़े हैं	172
20.	झण्डा	172
21.	ढोल	172
22.	रुकते नहीं जरा	173
23.	बढ़ते चला	173
24.	नाव	173
25.	जाड़ा	173
26.	होली	174
27.	चंदा	175
28.	दिल्ली चलो	175
29.	घोड़ा	175
30.	नन्हीं चिड़िया	176
31.	वसंत	176
32.	राखी	176
33.	कल-कल नदी	176
34.	बापू आजा	177
35.	बापू	177
36.	झंडा	177
37.	सपूत	178
38.	बंदरवाला	178
39.	तितली	178
40.	बरसा	179
41.	नाव चली	179
42.	तितली रानी	179
43.	झगड़ा	180
44.	एक कहानी	180
45.	सिंहराज की मौसी	180
46.	अम्मा की बिल्ली	181
47.	कुकडूँ-कुकडूँ	181
48.	एक कहानी	181
49.	खोजा बाके वीर	181
50.	रेल	182
51.	बिल्ली रानी	182
52.	तीन भालू	184
53.	राणा रणजीत सिंह	186
54.	दुलहिन चुहिया दूल्हा बिल्ला	187
55.	भोला और शेरा	188

बाल संसार समग्र

(प्रथम भाग)

शकुन्तला सिरोठिया

बाल कथायें

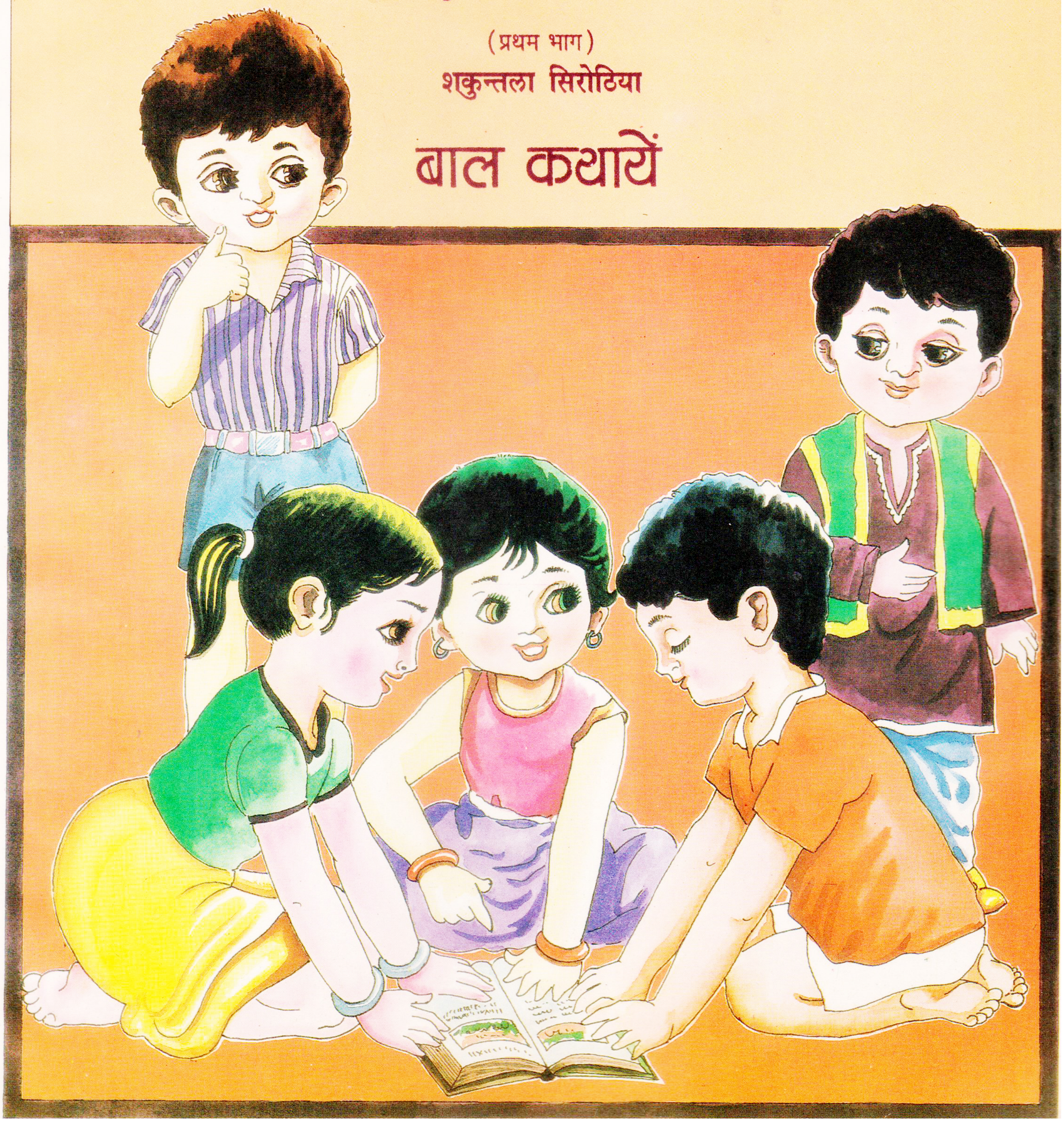

नागराज, नागराज फूल दो

राजा के बाग में एक गंधराज का पेड़ था। बाग एक ऊँची चहारदीवारी से घिरा था। गंधराज की एक शाख उस दीवार से बाहर आ गयी थी जो मौसम में फूलों से भर जाती थी। फूलों की महक से सारा वातावरण महक उठता था। अन्दर से ज्यादा बाहर की शाखा में फूल फूलते थे। बुढ़िया नानू सूरज निकलने से पहिले ही फूल चुनने आ जाती और टपके हुए फूलों को ले कर घर चली जाती। वहाँ अपनी छोटी बेटी चम्पा की मदद से सुन्दर गजरे बना कर बाजार में बेच आती जिनसे उसे अच्छे दाम मिल जाते। यह उसका रोज का काम था।

नानू के तीन लड़कियाँ थीं, गोपी, राधा और चम्पा। वैसे तीनों सुन्दर थीं किन्तु चम्पा इन तीनों में सबसे सुन्दर और मीठे स्वभाव की थी। देखने में भोली और हँसमुख। बोलती तो जैसे मुख से फूल झरते। मुस्कराती तो चाँदनी-सी खिल उठती। हृदय से निश्छल और दयावान। क्रोध उसे कभी आता ही नहीं था। माँ के हर काम में हाथ बँटाती, उसकी सेवा करती। बहनों की आज्ञा मानती। उनके काम स्वयं कर देती और हर तरह से उन्हें प्रसन्न रखती। पड़ोसी भी उसे खूब प्यार करते। किन्तु उसकी बहनों से सब नाराज रहते।

गोपी और राधा देखने में तो असुन्दर नहीं थीं किन्तु उनका स्वभाव बड़ा कड़ुआ था। माँ को सदैव जली-कटी सुनातीं। घर का कुछ काम न करतीं। सब छोटी बहिन चम्पा से करातीं और उसके दुबले, पतले, कोमल शरीर का मजाक उड़ातीं। खाने की अच्छी चीजें स्वयं खातीं बचा हुआ रूखा-सूखा भोजन उसे दे देतीं। चम्पा उस रूखे-सूखे भोजन को खा कर भी प्रसन्न और संतुष्ट रहती। कभी कोई शिकायत उसे किसी से नहीं थी। वह बहिनों और माँ की हर इच्छा पूरी करती और उन्हें प्रसन्न रखना ही अपना परम कर्त्तव्य समझती।

एक दिन नानू सुबह होते ही फूल चुनने के लिए घर से चल दी। नानू का घर शहर से दूर जंगल में था। चम्पा ने कहा—''माँ तुम्हें घर लौटने में देर हो जायगी इसलिए कुछ खाना खा कर जाओ; और हाँ, जल्दी लौटना नहीं तो धूप तेज हो जायगी और तुम्हें तकलीफ होगी।''

उसने जल्दी-जल्दी कुछ खाना बनाया और माँ को खिला दिया। माँ ने प्यार से अपनी बच्ची के सिर पर हाथ फेरा और मन-ही-मन उसे आशीर्वाद देती हुई टोकरी उठा कर चली गयी।

बाग में पहुँच कर नानू ने देखा कि आज एक भी फूल जमीन पर नहीं गिरा था। फूल उसकी पहुँच से दूर रहते थे इसलिए वह केवल टपके हुए फूल ही बीनती थी। फूल न मिलने से वह दुःखी हुई। उसने ऊपर आँख उठा कर देखा, खूब फूल खिले थे। ललचाई नजरों से वह उन्हें देख ही रही थी कि उसकी दृष्टि डाल से लिपटे एक काले नाग पर पड़ी जो फन उठाये उसी को देख रहा था। नाग के भय से वह हाथ जोड़ कर बोली।

''नागराज यदि दो चार फूल मुझे भी दे देते तो कितना अच्छा होता।''

उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब कि नाग ने मनुष्य की आवाज में कहा ''फूल तो मैं तुझे दे दूँ, लेकिन उसके बदले मुझे क्या देगी ?''

नानू ने बिना कुछ बिचारे झट से उत्तर दिया—''मेरी बड़ी बेटी को ले लेना।''

नाग ने थोड़े से फूल गिरा दिये। आज के फूल ताजे, बड़े और विशेष सुगंधित थे। नानू को और फूल चाहिए थे उसने कहा—''महाराज मेरी मझली बेटी राधा को भी ले लेना लेकिन मुझे कुछ और फूल दे दो।''

नाग ने कुछ और फूल गिरा दिये। बुढ़िया ने जल्दी जल्दी उन्हें भी बीन कर टोकरी में रख लिया लेकिन अभी टोकरी नहीं भरी थी। नाग की कृपा से उसका साहस बढ़ गया था उसने फिर प्रार्थना की—''नागराज मेरी सबसे सुन्दर प्यारी पुत्री चम्पा को भी ले लेना मुझे और फूल दे दो।''

इस बार नाग ने अपने शरीर को पेड़ से कस कर

लपेट कर इतनी जोर से झकझोरा कि पेड़ के सभी फूल पृथ्वी पर चू पड़े। बुढ़िया की टोकरी फूलों से भर गयी। उसने उसे उठा कर सिर पर रखा और बिना नाग की ओर देखे तथा बिना धन्यवाद दिये वह वहाँ से जल्दी-जल्दी चल दी। उसने एक बार पलट कर भी नहीं देखा।

कहने को तो वह अपनी बेटियों को देने की बात नाग से कह गयी लेकिन फिर उसे डर लगा कि कहीं वह सचमुच उसके पीछे-पीछे न आये। वह उसे धोखा दे कर जल्दी-जल्दी घर पहुँचना चाहती थी। उसकी टोकरी के फूलों से जहाँ-जहाँ वह पहुँचती रास्ता महक उठता। एक पेड़ पर बैठी कोयल कूक उठी—"बुढ़िया अम्मा कैसे प्यारे फूल लिये जा रही हो। एक मुझे नहीं दोगी क्या ?"

बुढ़िया बोली—"हाँ-हाँ क्यों नहीं, लेकिन एक शर्त पर। देखो कोयल, मेरे पीछे नाग आ रहा है उसे मत बताना कि मैं किधर गयी हूँ। और उठा ले अपनी पसंद का एक फूल।"

कोयल बोली—"भला मुझे क्या पड़ी है नाग को तुम्हारा पता बताने की ?" यह कह कर उसने एक फूल चोंच से उठा लिया और पेड़ पर जा बैठी।

नानू अभी थोड़ी ही दूर गयी थी कि एक मोर झाड़ी के पास नाचता हुआ दिखाई दिया। फूलों की महक से प्रसन्न हो कर वह मोओं-मोओं कह कर चिल्लाया और जल्दी-जल्दी चक्कर लगा कर नाचने लगा। जैसे ही बुढ़िया उसके पास पहुँची उसने कहा—"अहा-हा ! बुढ़िया माँ, कितने प्यारे महक रहे हैं तुम्हारे फूल ! क्या एक फूल मुझे नहीं दोगी ?"

बुढ़िया ने जल्दी से उत्तर दिया—"अरे दूँगी क्यों नहीं लेकिन एक शर्त है। मेरे पीछे नाग आ रहा है उसके पूछने पर मेरा पता मत बताना।"

मोर ने कहा—"भला मैं क्यों तुम्हारा पता उस दुश्मन को बताने लगा ? लाओ मुझे फूल दो और जल्दी अपने घर जाओ।"

नानू ने खुश हो कर अपने हाथ से तीन फूल उसकी कलँगी में लगा दिये और चली गयी। आज वह उस रास्ते से नहीं गयी जिससे रोज जाती थी। नाग को धोखा देने के लिए उसने आज रास्ता बदल दिया था लेकिन उसे जो डर था वही हुआ। नाग उसके जाते ही पेड़ से उतर कर पीछे-पीछे आ रहा था।

वह वहाँ पहुँचा जहाँ कोयल कूक रही थी। उसने पूछा—"तू भी काली मैं भी काला, बोल री मेरी बहिन तूने इधर कोई फूलोंवाली बुढ़िया तो नहीं देखी ?"

"नहीं-नहीं मैंने कोई बुढ़िया सुढ़िया नहीं देखी।" कोयल ने अपना वचन निभाया।

"झूठी कहीं की और जो फूल तेरे पंजे में है वह किसने दिया ?" नाग ने क्रोध से फुफकारते हुए कहा। कोयल का झूठ पकड़ा गया। उसकी फुफकार से डर कर उसने बुढ़िया का पता बता दिया।

चलते-चलते नाग उस झाड़ी के पास आया जहाँ मोर नाच रहा था। उसने उससे भी पूछा—"चिड़ियों में सबसे सुन्दर, रंग-बिरंगे पंखोंवाले मोर भाई, तुमने कोई फूलों वाली बुढ़िया तो इधर नहीं देखी ?"

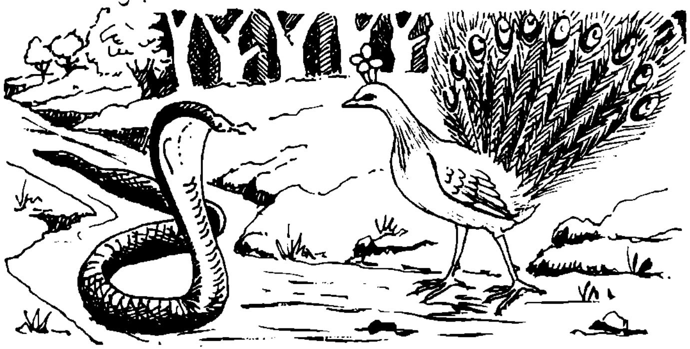

"जा अपने रास्ते जा और मुझे नाचने दे।" मोर ने बिना उसकी ओर देखे, लापरवाही से उत्तर दिया।

नाग अपनी दुम के बल खड़ा हो कर जोर से फुफकारा—"झूठा कहीं का, ये कलँगी में जो फूल लगाये हैं वे कहाँ से आये ?"

मोर ने तो सोचा था कि कोई छोटा-मोटा नाग होगा जिसे मार वह खा लेगा लेकिन इस विशाल नाग को फुफकारते देखा तो उसका दम ही खिसक गया। उसने बुढ़िया के रास्ते की ओर इशारा किया और जल्दी से उड़ कर दूर दूसरी झाड़ी की ओट में चला गया। नाग भी उसके बताये रास्ते की ओर बढ़ गया।

बुढ़िया नानू जल्दी-जल्दी घर पहुँची और अन्दर जा कर बिना किसी से कुछ कहे किवाड़ बन्द करके घर में बैठ गयी। नाग भी पीछा करते-करते पहुँच गया। द्वार बन्द देख कर वह पीछे खिड़की के रास्ते अन्दर गया और चावल के एक कुठले में कुंडली मार कर बैठ गया।

शाम को खाना बनाने के समय नानू ने चावल निकालने के लिए जैसे ही कुठले में हाथ डाला कि नाग उसके हाथ में लिपट गया। नानू के डर के मारे पसीना छूट गया। वह समझ गयी नाग घर में आ गया है। उसने कहा—"नाग महाराज, मेरी बड़ी बेटी से विवाह कर लेना, मुझे छोड़ दो।"

नाग ने एक लपेट खोल दी लेकिन उसे छोड़ा नहीं। नानू ने फिर कहा—"नागराज मेरी मँझली लड़की से विवाह कर लेना मुझे छोड़ दो।" नाग ने एक लपेट और खोल दी। उसने फिर कहा "नागराज मेरी सबसे छोटी फूलों-सी सुन्दर मधु सी मीठी स्वभाव वाली चम्पा ले लो मुझे छोड़

दो।''

नाग ने अपनी सब लपेट छोड़ दी। नानू समझ गयी कि नाग बिना लड़की लिये उसे छोड़ेगा नहीं। वह अपनी बड़ी बेटी गोपी के पास आयी और बोली—''बेटी गोपी तू मेरे लिये नागराज से विवाह कर ले नहीं तो वह मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगा।''

''अरे बाप रे ! नाग से ब्याह करूँ ? मैं तो किसी सुन्दर नौजवान से ब्याह करूँगी।'' गोपी ने साफ इन्कार कर दिया।

नानू मँझली बेटी राधा के पास आयी और बोली—''बेटी तू मेरी जान बचा और नाग से ब्याह कर ले।''

''ना बाबा ना ! मेरी जान क्या फालतू है, अपनी लाड़ली चम्पा से कह न।'' राधा ने कहा।

हार कर नानू ने चम्पा से भी वही बात कही, चम्पा ने सिर नीचा कर लिया—''माँ तेरे लिये मैं कुछ भी कर सकती हूँ। तुझे कष्ट नहीं होना चाहिए।''

नानू के आँसू भर आये उसने चम्पा को छाती से लगा लिया। चम्पा नाग के पास आयी। उसने उसे दूध-भात खाने को दिया। उसे फूलों से भरी एक टोकरी में सुला दिया और रात को टोकरी अपने बिस्तर के पास रख कर सो गयी।

चम्पा का सपना

उसी रात को चम्पा ने सपना देखा। एक सुन्दर राजकुमार उसकी चारपाई पर बैठा है। उसने चम्पा से कहा—''चम्पा क्या मुझसे ब्याह करोगी ? मैं तुम्हें सब कुछ दूँगा। मैं तुम्हें रानी की तरह रखूँगा। मैं तुम्हें रत्नों से भर दूँगा। तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो।''

''कौन हो तुम ?'' चम्पा ने पूछा।

''मैं गंधराज हूँ'' युवक ने कहा।

चम्पा ने झिझकते हुए कहा—''लेकिन मेरी माँ तो नागराज को वचन दे चुकी है।''

गंधराज बोला—''इसकी चिन्ता तुम मत करो। मैं सब निपटा लूँगा। तुम केवल हाँ कर दो।''

चम्पा ने शरमाते हुए आँखें नीची करके स्वीकृति दे दी। वह भी गंधराज की सुन्दरता पर मुग्ध हो गयी थी।

प्रातःकाल जब उसकी आँख खुली उसने टोकरी पर नजर डाली। नाग आराम से फूलों पर कुंडली मार कर पड़ा था। वह उठी, उसने उसे दूध दिया, बासी फूल बदल कर ताजे फूल बिछा दिये। सपने की बात याद करके उसे आश्चर्य हो रहा था। लेकिन वह चुप रही।

दूसरी रात आयी, उसने फिर सपना देखा। गंधराज

आया और उसके पास सो गया। रात भर दोनों बातें करते रहे। सुबह हुई। नाग महाराज अपनी फूलों की शय्या पर उसी तरह आराम कर रहे थे।

इस प्रकार कई दिन बीत गये। एक दिन चम्पा ने अपनी माँ को सपने की बात बता दी।

माँ ने सुना तो उसे भी बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने निश्चय किया कि वह रात को चम्पा के कमरे में छिप कर देखेगी कि कौन उसकी लड़की के पास रोज आता है।

रात काफी हो चुकी थी। दोनों लड़कियाँ सोने चली गयी थीं। चम्पा भी अपने नाग को ले कर अपने कमरे में चली गयी। बुढ़िया नानू अपने कमरे में लेटी थी। उसे आज नींद नहीं आ रही थी। उसे गंधराज का भेद जानना था।

वह धीरे से उठी और चम्पा के कमरे के दरवाजे से लग कर छेद में से झाँकने लगी। उसने देखा उसकी बेटी गाढ़ी नींद में सो रही है। इतने में नाग की टोकरी में से एक सुन्दर युवक बाहर आया। उसके वस्त्र ाजकुमारों से कीमती और सुन्दर हैं। गले में मोतियों की म लाएँ पड़ी हैं। वस्त्रों में सोने चाँदी का काम हुआ है।

बुढ़िया नानू की आँखें यह चमत्कार देख कर खुशी से चमक उठीं। अपनी प्यारी बेटी के भाग्य क मन-ही-मन सराहने लगी। उसने यह भी देखा कि राजकुम र के डलिया से बाहर आने पर उसकी खाली केंचुल पड़ी थ । वह वापस लौट कर अपने कमरे में जा कर सो रही।

दूसरे दिन उसने चम्पा से पूछा—''क्या ग राज आज भी सपने में आया था ?''

''हाँ माँ वह रोज आता है।'' चम्पा ने कहा। नानू बोली, ''बेटी पता नहीं यह कैसा सपना है। अ न तू उसके लिए अच्छा अच्छा भोजन थाली में परोस कर अपने पास रखना। तब पता चलेगा यह सपना है या सत्य।''

चम्पा ने कहा—"अच्छा आज मैं भोजन परोस कर रखूँगी सबेरे देखूँगी कि वह थाली खाली रहती है या भरी।"

नानू ने उस दिन अपने हाथ से खाने की कई प्रकार की स्वादिष्ट चीजें बनायीं। साथ ही उसमें हल्की-सी नशे की दवा भी मिला दी। रात होने के पहिले ही चम्पा के कमरे में छिप गयी। चम्पा ने नाग को दूध भात दिया और पलँग के पास टोकरी में रख कर सो गयी। पास ही माँ का बनाया भोजन रख लिया। काफी रात गये जब वह सो गयी तो नाग के शरीर से वही राजकुमार फिर निकला।

उसने खड़े हो कर अँगड़ाई ली और चम्पा के पलँग पर बैठ गया। वह उसे जगा कर बातें करने लगा। दोनों ने रखा हुआ भोजन भी साथ ही खाया और थोड़ी देर में सो गये।

बुढ़िया ने टोकरी में से नाग की केंचुल उठायी और चुपके से कमरे से बाहर निकल गयी। नशे के कारण चम्पा और गंधराज गहरी नींद में सो रहे थे। उन्हें कुछ भी मालूम नहीं हुआ। जल्दी-जल्दी बुढ़िया बाहर आयी और उसने केंचुल को उठा कर आग में डाल दिया। वह चाहती थी गंधराज अब फिर नाग न बने। जब केंचुल रहेगा ही नहीं तब वह सदा के लिए मनुष्य बन जायेगा।

लेकिन जैसे ही केंचुल आग में पड़ी चम्पा के कमरे से चीखें आने लगीं। "हाय मरा, हाय जला।" कह कर गंधराज चिल्लाने और तड़पने लगा।

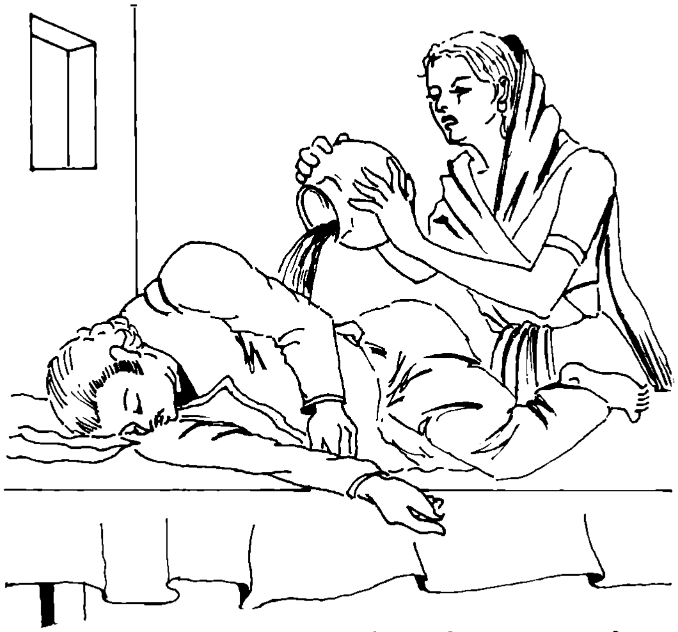

चम्पा घबरा कर उठी। उसने तड़पते हुए गंधराज के ऊपर पानी डाल दिया। तब कहीं जा कर उसे कुछ शांति मिली। वह दौड़ी-दौड़ी चन्दन का टुकड़ा ला कर घिसने लगी। उसे गंधराज का तड़पना देख कर रोना आ रहा था। उसने बड़ी सावधानी और प्यार से चन्दन का लेप उसके शरीर पर लगाया। इससे नाग कुमार गंधराज की जलन शांत हो गयी लेकिन वह उदास हो गया। चम्पा यह देख कर कि यह सपना नहीं सब सच है बेहद खुश हुई।

बुढ़िया जब कमरे में आयी तो गंधराज ने कहा—"माँ यह तुमने अच्छा नहीं किया।"

बुढ़िया बोली—"बेटा मैं नहीं चाहती थी कि तुम फिर नाग के शरीर में जाओ। तुम हमेशा मेरी बेटी के पास इसी रूप में रहो। इसीलिए मैंने यह किया। तुम्हारा कष्ट देख कर मुझे भी दु:ख हुआ लेकिन ईश्वर को धन्यवाद है कि अब तुम ठीक हो।"

यह सुन कर वह चुप हो गया। सबेरे पंडित बुला कर नानू ने अपनी बेटी की शादी धूम-धाम से की। चम्पा की बहिनों ने जब यह सब देखा तो पछताने लगीं कि उन्होंने नाग से विवाह करने से क्यों इन्कार कर दिया। वे भी माँ का प्रस्ताव स्वीकार कर लेतीं तो कितना अच्छा होता। दोनों ईर्ष्या और जलन से कुढ़ने लगीं।

उन्होंने आखिर एक दिन अपनी माँ से कहा—"हमारे लिये भी नाग लाओ। हम भी उससे विवाह करेंगी।"

नानू परेशान थी कि वह गोपी और राधा के लिए कहाँ से नाग लाये। दोनों बहिनें बड़ी कर्कशा थीं। उन्होंने अपनी माँ के नाक में दम कर दिया। आखिर माँ ने कहा कि वह खोजेगी जैसे ही कोई नाग मिलेगा वह ले कर आयेगी। गोपी और राधा चम्पा को भी तंग करने की कोशिश में लगी रहतीं थीं। पर गंधराज के भय से कुछ कर नहीं सकती थीं और दिन-रात उसके सौभाग्य से जल कर कुढ़ती रहती थीं।

यह सब देख कर गंधराज चम्पा को ले कर दूसरे घर में रहने चला गया। दोनों ने थोड़े दिन में ही अपने घर को राजाओं जैसा महल बना दिया जिसमें हर प्रकार की सुख सुविधाएँ थीं। कीमती सामानों से घर सजा था। चम्पा के शरीर पर अब सोने और जवाहरातों के जेवर चमचमाते थे। वह अपने पति के साथ सुख से रहने लगी। गंधराज उसकी प्रत्येक इच्छा को पूरा करता था। वह उससे रोज पूछता कि उसे क्या चाहिए, लेकिन चम्पा कहती, "मुझे तुम्हारे सिवा कुछ नहीं चाहिए। तुमने मेरे लिए क्या नहीं किया। सब कुछ तो दिया है। हाँ, मेरी माँ और बहिनें गरीबी में जीवन बिता रहीं हैं। इसका मुझे दु:ख है। हो सके तो इन्हें भी कुछ धन दे दो।"

गंधराज ने कहा—"अच्छा तुम्हारी यह इच्छा है तो मैं पूरी कर दूँगा लेकिन एक बात याद रखना अपनी बहिनों से सदा सावधान रहना। वे तुम्हें कभी भी नुकसान पहुँचा सकती हैं।"

सीधी सादी चम्पा इस पर केवल मुस्करा दी। दूसरे दिन नानू के घर में गंधराज ने एक गाड़ी भर खाने की सामग्री और अच्छे-अच्छे वस्त्र पहुँचा दिये। नानू ने गंधराज

पर आशीर्वाद की झड़ी लगा दी। गोपी और राधा भी बहुत खुश हुईं। और उसे बहुत धन्यवाद दिया परन्तु मन-ही-मन चम्पा का यह दान समझ कर बहुत कुढ़ीं।

उन्होंने फिर माँ से कहा—"माँ क्या तुम हमारे लिए नाग-कुमार ढूँढ़ कर नहीं लाओगी। तुम अपनी छोटी बेटी को हमेशा ज्यादा प्यार करती हो। तुमने हमसे पहिले नहीं बताया कि वह नाग नहीं आदमी था। हमने तो डर के मारे उससे विवाह करने से मना कर दिया। चम्पा से तुमने बता दिया होगा तभी तो वह राजी हो गयी।"

दोनों ने मन भर कर माँ को जली-कटी सुनायीं। हार कर नानू ने टोकरी उठायी और जंगल की ओर चल दी नाग ढूँढ़ने। भूखी-प्यासी चलते-चलते बुढ़िया के पैर टूटने लगे। वह एक झाड़ी के पास हाँफ कर बैठ गयी। संयोग से वहीं पास में एक अजगर पड़ा हुआ धूप सेंक रहा था। बुढ़िया नानू ने हाथ जोड़ कर कहा—"हे नागराज मेरे साथ चलो। मेरी दो बेटियों में से जिससे चाहो उससे विवाह कर लो। उठो महाराज मैं तुम्हारी ही खोज में सारे दिन से चक्कर लगा रही हूँ। मेरी लड़कियों ने मेरी नाक में दम कर दिया है, तुम चलो तो मेरा कष्ट दूर हो।"

लेकिन अजगर अपनी जगह से टस-से-मस नहीं हुआ। चिड़ियाँ आस पास उसे देख कर चीख रहीं थीं ! नानू ने सोचा यह जरूर कोई बड़ा नागराज है। चिड़ियाँ भी चह चहा कर इसका सम्मान कर रहीं हैं। उसने कहा—"अच्छा नागराज मेरी टोकरी में बैठ जाओ मैं तुम्हें घर ले चलती हूँ।"

उसने धीरे से उसे उठा कर टोकरी में रख लिया और घर की तरफ चल दी। अजगर खा-पी कर लेटा था अस्तु वह हिला भी नहीं। नानू ने सोचा वह उसकी लड़कियों से शादी करने को तैयार है। अपनी सारी थकान भूल कर वह खुशी-खुशी जल्दी-जल्दी घर आयी। लड़कियों ने जैसे ही नाग देखा प्रसन्नता से चीखने लगीं।

"यह चम्पा के नाग कुमार से भी बड़ा मालूम होता है। यह नाग शायद कोई राजा है। अब देखना चम्पा को हम कैसा जलायेंगी।" दोनों बहिनें बोलीं। नानू भी खुश थी। गोपी ने कहा—"माँ मैं इससे विवाह करूँगी। मैं बड़ी हूँ। पहिले मेरी शादी होनी चाहिए।"

राधा ने कहा—"बड़ी आयी है। अरे चम्पा सबसे छोटी थी पहिले उसकी शादी हुई उसके बाद मेरी बारी है।" दोनों बहिनें शादी की बात ले कर खूब लड़ने लगीं। पड़ोस के आदमी तमाशा देखने लगे। नानू ने घर के दरवाजे बन्द कर दिये और अजगर से पूछने लगी—"नागराज तुम्हीं फैसला कर दो तुम्हें गोपी चाहिए कि राधा ?"

लेकिन वह तो टस-से-मस नहीं हुआ। अन्त में बुढ़िया ने स्वयं फैसला दिया कि गोपी बड़ी है इसलिए पहिले उसी की बात माननी चाहिए। राधा के लिए वह जंगल से एक और नागकुमार ढूँढ़ कर लायेगी। किसी तरह राधा राजी हो गयी।

गोपी ने खूब सिंगार किया, अच्छे-अच्छे खाने बनाये और टोकरी को उठा कर अपने कमरे में पलँग के पास रख दिया और शाम से कमरे में जा कर सो गयी। बहुत रात हो गयी। वह बार-बार टोकरी की तरफ झाँकती लेकिन कोई राजकुमार नहीं निकला। हार कर वह सो गयी।

बहुत रात गये अजगर महाराज की नींद खुली। उसने अँगड़ाई ली उसे खूब भूख लगी थी। वह टोकरी से बाहर आया, पास ही चारपायी थी। वह पैताने की तरफ से चढ़ा। गोपी गहरी नींद में सो रही थी। सपने में उसे राजकुमार दिखायी दे रहा था। अजगर ने उसे पैर से निगलना शुरू किया। वह चीख पड़ी—"माँ, माँ, दौड़ो नागराज ने मेरे पैर निगल लिये हैं।"

माँ ने सुना तो हँस कर अपने कमरे से ही कहा—"चुप हो जा, तेरा पति तुझे प्यार कर रहा है।"

गोपी चिल्लायी—"नहीं, नहीं, माँ उसने मुझे कमर तक निगल लिया है, बचाओ।"

माँ ने कहा—"अरे तेरा पति तुझे चिढ़ा रहा है। तू डर मत।" गोपी फिर चीखी "माँ मैं मरी। बचाओ ! बचाओ ! अरे वह मेरी गर्दन तक आ गया है।" लेकिन नानू समझ रही थी कि नागराज उसे मजाक में डरा रहा है। जब वह मनुष्य के रूप में आ जायेगा तभी मैं जाऊँगी, और उसकी भी केंचुल जला दूँगी जैसे चम्पा के नाग की जलाई थी।

अजगर की मौत

दूसरे दिन सुबह नानू जब जगी तो लेटी-लेटी गोपी का इन्तजार करने लगी। वह सोच रही थी कि गोपी आ कर नागकुमार की बातें उससे कहेगी जैसे चम्पा ने गंधराज के बारे में कहा था। लेकिन काफी देर होने पर भी जब गोपी नहीं आयी तब उसने सोचा कि चलूँ उसे खुद ही जगाऊँ और हाल-चाल पूछूँ।

उसने गोपी को दरवाजे के बाहर से ही आवाज लगाई। कोई उत्तर न मिलने पर उसने मन-ही-मन कहा—"कैसी लड़की है ? अभी तक सो रही है।"

उसने किवाड़ खोल कर झाँका। अजगर पलँग पर पूरा फैल कर सो रहा था। गोपी का कहीं पता नहीं था। उसने सोचा नागराज जरूर रात भर गोपी के साथ बातचीत करता रहा है तभी तो अभी तक सो रहा है। उसने गोपी को आवाज लगाई लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला तो सारा घर ढूँढ डाला।

राधा भी आ गयी। दोनों ने घर का कोना-कोना ढूँढ डाला। गोपी का कहीं पता नहीं लगा। दोनों फिर कमरे में आयीं। नानू ने नागराज से हाथ जोड़ कर पूछा—"नागराज महाराज मेरी गोपी कहाँ है ? मैं जानती हूँ वह तेज स्वभाव की है उसने तुम्हारा अपमान तो नहीं किया ?"

लेकिन अजगर चुप पड़ा रहा। उसने तो छक कर भोजन किया था। अब तो दिन भर के लिए उसे कोई हिला भी नहीं सकता था। इतने में राधा ने उसके पेट की ओर इशारा करके कहा "माँ नागराज का पेट तो देखो। कैसा गठरी-सा हो रहा है ? देखो ! ! अन्दर से कुछ हिल-सा रहा है। माँ कहीं गोपी को नागराज ने खा तो नहीं लिया।"

राधा रोने लगी। नानू भी अपना सिर पीट कर चीखने लगी "हाय मेरी बेटी को अजगर ने खा लिया। वह बेचारी तो रात को चीख रही थी, मैंने मजाक समझा था।"

राधा भय से काँप रही थी। वह सोच रही थी कि मैं तो इसके साथ शादी करने की जिद कर रही थी। यदि मैं शादी करती तो मेरी भी यही दशा होती। अब न तो उससे चुप रहा जा रहा था न रोते ही बनता था। आखिर इन दोनों की जिद पर ही तो माँ इस नाग को ढूँढ कर लायी थी।

बड़ी देर तक माँ-बेटी रोती जाती थीं और आगे क्या करना चाहिए सलाह करती जाती थीं। आखिर नानू उठी और चम्पा और गंधराज को बुला कर लायी। गंधराज इन लोगों की मूर्खता देख कर बहुत दुःखी हुआ और बोला—"माँ यह तुमने क्या किया ? मैंने तुमसे पहिले ही कहा था कि सब नाग मनुष्य नहीं बन सकते। लेकिन तुम लोगों ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया।"

नानू रोती हुई बोली—"बेटा इन लड़कियों की जिद्द के आगे मेरी कुछ नहीं चली। जल्दी ही इस मनहूस अजगर को तलवार से काट कर गोपी को बाहर निकालो। वह अभी जिन्दा है। देखो इसका पेट कैसा हिल रहा है। जल्दी करो बेटा गंधराज। गोपी अभी मरी नहीं है।"

गंधराज बुढ़िया की बात सुन कर सिहर उठा। उसने हिचकते हुए कहा—"यह काम मुझसे न करवाओ माँ इसमें मेरे लिये खतरा है। यह काम तुम किसी पड़ोसी से करवा लो।"

बुढ़िया बोली, "बेटा, हमारे परिवार में एक मात्र पुरुष तुम्हीं हो। हम स्त्रियों की रक्षा करना तुम्हारा कर्त्तव्य है। तुम्हारे रहते मैं बाहर के किसी आदमी से प्रार्थना करूँ कि वह आकर अजगर मारे यह क्या हम सब के लिए शरम की बात न होगी ? नहीं, नहीं, यह काम तुम्हीं को करना होगा। जल्दी करो नहीं तो गोपी मर जायेगी।"

"तुम्हें बाद में पछताना पड़ेगा माँ" गंधराज ने कहा। लेकिन राधा और नानू दोनों जिद करने लगीं। राधा बोली—"तुम हम लोगों को डरा रहे हो। तुम केवल चम्पा को चाहते हो। हम लोगों को नहीं।"

यह कह कर वह "हाय गोपी, हाय बहिन" चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगी। उसका यह नाटक देख कर और नानू की जिद्द से क्रोधित हो कर गंधराज ने तलवार से अजगर का पेट चीर डाला। अजगर मर गया। गोपी बेहोशी की हालत में बाहर निकल आयी।

अजगर के शरीर से खून का फव्वारा छूट रहा था। कमरे में खून का तालाब भर गया। लेकिन जैसे ही खून के छींटे गंधराज के शरीर पर पड़े कि वह नाग के रूप में बदल गया। सब आश्चर्य से चीख पड़े।

नाग अपनी पूरी लम्बाई पर खड़ा हो गया। राधा और नानू की ओर देख कर उसने जोर से फुफकार भरी फिर घूम कर चम्पा को करुणा और दुःख से निहार कर फुर्ती से घर के बाहर चला गया। चम्पा जोर से चिल्लाई "गंधराज ! गंधराज मत जाओ, मत जाओ। रुको मैं भी आती हूँ।" चिल्लाती हुई वह भी उसके पीछे-पीछे चली गयी।

इधर गोपी अजगर के पेट से जीवित तो निकल आयी लेकिन बेहोश और अधमरी-सी थी। नानू और राधा उसके उपचार में लग गयीं। गंधराज के फिर नाग बनने पर उन्हें आश्चर्य तो हुआ, नानू को दुःख भी हुआ किन्तु उसका सारा ध्यान अपनी अधमरी बेटी की ओर था।

गोपी का सारा बदन अजगर की चर्बी में सना था और चिपचिपा रहा था। उसे कई बाल्टियों पानी से नहलाया गया। आँख, नाक, कान मुख सब में चर्बी चिपकी थी। उन्हें अच्छी तरह साफ किया गया। अँगीठी जला कर उसे सेंका तब कहीं जा कर उसके बदन में हरकत हुई। एक बार वह जोर से काँपी, आँखें खोलीं और फिर बेहोश हो गयी।

कई घंटे के उपचार के बाद उसे ठीक प्रकार से होश आया। लेकिन जैसे ही उसने पास में पड़े अजगर को देखा कि वह फिर चीख मार बेहोश हो गयी। जल्दी-जल्दी अजगर की लाश को नानू ने वहाँ से हटाया और जगह धो कर साफ की। गोपी को उठा कर दूसरे कमरे में पलँग पर लिटाया।

होश आने पर तसल्ली दी कि वह अब खतरे से बाहर है। उसे गरम-गरम दूध पिलाया। यह सब करते-करते शाम हो गयी। दोनों बहिनों के विवाह का सपना अब टूट गया था। दोनों एक-दूसरे को देख कर शरमा रही थीं।

सारे पड़ोसी इस विचित्र दुर्घटना को सुन कर घिर आये। हवा की तरह यह बात सब जगह फैल गयी। दोनों लड़कियों का खूब मजाक उड़ा। सभी इनसे चिढ़ते थे क्योंकि दोनों ईर्ष्यालु और चिड़चिड़ी थीं। किसी से मीठा नहीं बोलती थीं। किसी के दुःख-सुख से इन्हें कोई मतलब नहीं था। चम्पा और नागराज के बारे में जान कर सबको सचमुच दुःख हुआ। चम्पा को सभी बड़े-बूढ़े और बच्चे प्यार करते थे। कई लोग उसे ढूँढ़ने के लिए भी निकले। जंगल की तरफ गये किन्तु उन्हें कुछ पता नहीं लगा और निराश हो कर लौट आये।

गोपी और राधा ने अब अपने भाग्य को कोस कर संतोष कर लिया। अब कोई भी शादी का जिक्र माँ से नहीं करेंगी, इसका निश्चय कर लिया उन्होंने। एक बात का संतोष इतने दुःख में भी उन्हें था। गंधराज फिर नाग बन गया और चम्पा भी उसके पीछे-पीछे चली गयी जिसके लौटने की उन्हें कोई आशा नहीं थी।

हाँ, बेचारी नानू का दुःख ऐसा था जिसे खुल कर प्रकट भी नहीं कर सकती थीं। दोनों बड़ी लड़कियों से वह बहुत डरती थी। चम्पा के चले जाने के बाद बेचारी छटपटाती रही किन्तु कुछ कह नहीं सकी। उसी की जिद्द से गंधराज को फिर नाग का रूप धारण करना पड़ा। न वह अजगर को मारने को उससे कहती और न यह दुर्घटना होती। अपने को अपराधी मान कर वह चुपके-चुपके रोज रो लेती। कई बार जंगल की तरफ जा कर उसने पता भी लगाया किन्तु न गंधराज और न चम्पा, किसी का कोई पता नहीं मिला। गोपी और राधा के डर के कारण वह कभी अपनी बेटी दामाद का नाम भी नहीं लेती थी।

नागराज का वरदान

उधर नाग सरसराता हुआ जंगल की तरफ दौड़ा जा रहा था। चम्पा रोती सिसकती उसके पीछे भाग रही थी। कभी वह आँख से ओझल हो जाता कभी फिर दिखलाई पड़ जाता। इसी लुकाछिपी के सहारे बेचारी चम्पा गिरती-पड़ती अपने पति गंधराज के पीछे-पीछे जा रही थी।

ठोकर लगने से उसके हाथ पैर छिल गये थे। झाड़ियों और काँटों में उलझ कर कपड़े फट गये थे। दुःख के मारे आँखों से बराबर आँसू बहने के कारण उसे रास्ता नहीं दिखाई देता था। उसे क्या मालूम था कि उसकी सोने की दुनिया एक क्षण में इस प्रकार मिट्टी में मिल जायगी। कुछ दिन भी तो वह सुख से नहीं रह पायी थी।

दोनों बहनें हमेशा उससे दुश्मनी करती थीं। इस महान् दुःख का कारण भी वही थीं किन्तु माँ तो प्यार करती थी। आज उसकी जिद्द के कारण ही गंधराज को फिर नाग बनना पड़ा। उसने कितना मना किया था कि अजगर को मारने का काम उससे न करवा कर किसी और से करवाये किन्तु माँ ने नहीं सुना। यह सब सोच कर उसका हृदय फटा जा रहा था।

नाग अचानक उसकी आँख से ओझल हो गया। अब उसकी समझ मे नहीं आ रहा था कि वह क्या करे किस तरफ जाये। रोते-रोते उसकी हिचकियाँ बँध गयीं। बेहोश होकर वह वहीं गिर पड़ी।

चम्पा को लगा कि वह स्वप्न देख रही है। नदी के किनारे एक टीला है जिस पर घने पेड़ और लताओं की छाया है। वहीं गंधराज मुस्कराता हुआ खड़ा है और चम्पा को हाथ से बुला रहा है। चौंक कर चम्पा ने आँखे खोल

दीं। गंधराज ! गंधराज ! चिल्लाती हुई वह पागल-सी नदी की तरफ दौड़ी।

सचमुच नदी के किनारे एक टीला था बिल्कुल वैसा ही जैसा कि उसने स्वप्न में देखा था। टीले पर चन्दन के अनेक वृक्ष खड़े हैं। वहाँ जा कर उसने देखा कि स्वप्न में जहाँ गंधराज खड़ा था वहाँ कई बिल बने थे। उसने जल्दी-जल्दी घास उखाड़नी शुरू की कि शायद वहाँ उसका पति नाग के रूप में ही कहीं दिखाई दे जाय।

उसने वह स्थान साफ किया। नदी से पानी ला कर जमीन को लीपा और आस-पास से जंगली सुगंधित फूल ला कर बिलों के पास रख दिये। उसने निश्चय किया कि वह अपने पति के स्थान को स्वच्छ और सुन्दर रखेगी भले ही वह नाग के रूप में हैं। गंधराज चाहे जहाँ रहें उसे कष्ट नहीं होना चाहिए।

उसने तय कर लिया कि अब वह घर वापस नहीं जायेगी। जब तक उसे गंधराज नहीं मिल जाता वह यहीं जंगल में अपने दुःख के दिन काटेगी। वहाँ आस-पास कहीं बस्ती नहीं थी। किसी मनुष्य का चिह्न वहाँ नहीं दिखाई देता था। अपने रहने के लिए एक जगह चुन कर वह वहीं रहने लगी।

जंगल में जो भी जंगली फल मिलते उन्हें खा कर वह अपनी भूख मिटा लेती। नदी से चुल्लू भर कर पानी पी लेती। इस प्रकार वह अपने दुःख के दिन बिताने लगी। रोज वह दिन में एक दो बार गंधराज को आवाज लगा लेती। उसे आशा थी कि वह उसकी आवाज सुन कर उसके पास जरूर आयेगा। मनुष्य के रूप में न सही नाग के रूप में ही आये। वह एक बार उसे अपनी आँखों से देख लेती तो उसे संतोष हो जाता।

स्वप्न में वह उसे टीले पर खड़ा रोज ही देखती थी, लेकिन ज्यों ही आँख खोलती स्वप्न टूट जाता, गंधराज गायब हो जाता। रोज प्रातःकाल नियम से वह टीले को साफ करती, पानी से लीपती, फूल और फल ला कर वहाँ रखती, दूसरे दिन वह फूलों को मुरझाया देखती जैसे कोई उस पर लेटा हो। फल सब कुतरे हुए मिलते। यह सब देख कर चम्पा को विश्वास हो गया कि उसकी पूजा स्वीकार कर ली गयी है। उसका हृदय प्रफुल्लित हो उठता कि उस सुनसान जंगल में वह अकेली नहीं, गंधराज उसके साथ है, भले ही वह दिखाई न पड़ता हो। उसका प्रिय पति उसके साथ है और अदृश्य रूप में उसकी देखभाल कर रहा है। यह विश्वास उसका सहारा बन गया था।

एक दिन वह गहरी नींद में सो रही थी। उसने स्वप्न देखा कि गंधराज उसे पुकार रहा है। "चम्पा उठ, मुझे नागराज से माँग ले। उनकी पूजा कर, उनसे प्रार्थना कर। उनकी कृपा से ही मैं फिर तुझे मिल सकता हूँ। मुझसे तेरा दुःख अब नहीं देखा जाता। तेरे बिना अब मैं भी नहीं रह सकता।"

चम्पा चौंक कर उठ बैठी। अभी पूरी तरह सबेरा नहीं हुआ था। किन्तु पूर्व दिशा में थोड़ा प्रकाश उभर आया था। रात बीत गयी थी। श्यामा चिड़िया की चहक भी सुनाई दे रही थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहाँ जाय कि नागराज के दर्शन हों और उनसे प्रार्थना करे।

उसने सोचा पहले मुँह-हाथ धो लूँ, स्नान आदि करने के बाद ही कुछ करूँगी यह सोच कर वह नदी की ओर चल दी। अभी थोड़ी दूर ही गयी थी कि उसे "सर्र,, सर्र", की अजीब आवाजें सुनाई दीं। उसने उस तरफ घूम कर देखा। आश्चर्य से उसकी आँख फटी-सी रह गयीं। सैकड़ों सर्प बड़ी तेजी से नदी की तरफ जा रहे थे। उनके बीच में बड़े-बड़े सर्पों के चौड़े फनों के सिंहासन पर एक नागराज बैठा जा रहा था। नागराज एकदम सफेद रंग का था और बड़ा सुन्दर था। उसके सफेद फन पर नीलम-सी दो आँखें चमक रहीं थीं। बड़ी सतर्कता से सर्प उसके दायें और बायें चल रहे थे।

यह देख कर चम्पा के रोंगटे भय के कारण खड़े हो गये। इतने बड़े समूह में नाग उसने कभी नहीं देखे थे। बीच-बीच में आगे जाने वाले सर्पों के मुख से तेज सीटी की-सी आवाज निकलती थी जो दूर-दूर तक जंगल में फैल जाती थी।

वह शान्त मूर्ति-सी खड़ी देखती रही। साँप फुर्ती से नदी की ओर जा रहे थे। चम्पा भी बिना आवाज किये पीछे-पीछे चल रही थी। नदी के तट पर पहुँच कर सब सर्प पूर्व दिशा की ओर मुख करके रुक गये। नागराज फनों के सिंहासन से नीचे उतरा। अन्य सभी नागों ने अपने फनों को भूमि पर टिका दिया मानो अपने राजा को नमस्कार कर रहे

हों।

श्वेत नागराज ने पूर्व दिशा की ओर आसमान पर उदय होते हुए लाल सूर्य को फन झुका कर सूर्य-नमस्कार किया। अन्य सभी नागों ने भी इसी प्रकार अपने राजा का अनुसरण किया। इसके बाद राजा ने नदी के जल का स्पर्श किया। सभी सर्पों ने भी ऐसा ही किया मानो यह उनका स्नान और आचमन था।

चम्पा आश्चर्यचकित साँपों की ये क्रियाएँ देखती रही। भय से उसके पैर भूमि पर जकड़ गये थे। उसे गंधराज के स्वप्न में कहे शब्दों की याद आयी। उसने सोचा यदि यह अवसर चूक गयी तो फिर उसकी आशा का अन्त हो जायेगा।

मन में साहस भर कर वह आगे बढ़ी। उसने विचार किया कि प्राण ही तो जायेंगे। गंधराज के बिना तो वैसे भी उसका जीवन व्यर्थ है इसलिए प्राणों को हथेली पर ले कर वह सर्पों की सभा के निकट पहुँची।

एकाएक तेज सीटी और फुफकार के साथ सब सर्प उसकी ओर घूम कर खड़े हो गये। मानो उसके पैरों की ध्वनि उन्होंने सुन ली हो। काँपते हुए हाथों को जोड़ कर चम्पा ने दूर से ही भूमि पर माथा टेक कर नाग-राज को प्रणाम किया और सिसकते हुए आर्त्त स्वर में पुकार कर कहा—"हे नागों के राजा, हे नागदेवता, तुम्हारी जय हो। महाराज मुझ दुखिया को मेरा पति लौटा दो। उसके बिना मैं अब जीवित नहीं रह सकती।"

नाग-राज नागों के फन के सिंहासन पर बैठ कर जाने को तैयार हो चुके थे। चम्पा की पुकार सुन कर रुक गये और गम्भीर आवाज में बोले—"हे स्त्री, तू कौन है, जो नित्य हमारे स्थान को स्वच्छ करती है और फल रखती है। क्या तू ही हमारे लिये फूलों की शैया सजाती है ? हम तेरी सेवा से बहुत प्रसन्न हैं। शीघ्र बता तुझे क्या दुःख है। कौन

है तेरा पति उसे क्या हुआ है ?"

चम्पा ने रोते-रोते अपनी करुण कहानी नागराज को सुना दी। नागराज ने बड़े ध्यान से सब सुना। सब नाग भी शान्त खड़े थे। नागराज ने सब नागों पर एक बार दृष्टि डाली फिर कड़कती आवाज में कहा—"गंधराज सामने आ।"

नागों के बीच खलबली मच गयी। सब एक-दूसरे की ओर देखने लगे। इतने में एक नाग झुक कर भूमि पर लेट गया और धीरे-धीरे सरकता हुआ राजा के पास आ कर रुक गया। चम्पा पहिचान गयी कि यही उसका गंधराज है। उसका दिल खुशी से धड़कने लगा। उसका मन हुआ कि वह दौड़ कर उसके पास चली जाय।

बड़े धैर्य से वह अपने को रोके रही। नागराज कड़कती आवाज में बोले—"गंधराज तुमने भारी अपराध किया है। एक सच्चे नाग की परम्परा को तोड़ा है तुमने। तुमने अपनी पत्नी को भी बहुत कष्ट दिया है किन्तु इन सभी अपराधों को मैं इस सती स्त्री के कारण क्षमा करता हूँ। जाओ और फिर अपना घर बसाओ। बेटी चम्पा मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम सुखी रहो। कभी कोई कष्ट हो तो मुझे याद करना।"

यह कह कर उसने एक तेज सीटी की आवाज मुख से निकाली, जिसे सुनते ही सब नाग फुर्ती से घूम कर जंगल की ओर चल दिये। सर्र-सर्र। क्षण भर में वह स्थान खाली हो गया। केवल गंधराज वहाँ रह गया था।

सब नागों के जाने के बाद वह भी बड़ी तेज चाल से नदी की ओर बढ़ा और जल में घुस कर गायब हो गया। चम्पा की समझ में कुछ नहीं आया। वह आश्चर्य से देखती रही फिर वह भी बिना कुछ समझे नदी के तट पर पहुँच गयी। उसके आश्चर्य और प्रसन्नता का तब अन्त नहीं था जब उसने देखा कि गंधराज धीरे-धीरे पानी के ऊपर आ रहा है। धीर गंभीर चाल से वह पानी से निकल कर तट की ओर आया। चम्पा अधीर हो कर दौड़ी और उससे लिपट गयी।

बड़ी देर तक दोनों के मुख से कोई शब्द नहीं निकले। गंधराज चम्पा के सिर पर हाथ फेर रहा था और चम्पा की आँखों से खुशी के आँसू बह रहे थे। वह उसे बार-बार हाथों से टटोल रही थी। मानो छू कर यह विश्वास कर रही थी कि सचमुच उसका पति उसके पास है और वह नित्य की भाँति स्वप्न नहीं देख रही है। अपनी खुशी को प्रकट करने के लिए उनके पास कोई शब्द नहीं थे।

अब तक काफी उजाला हो गया था। लाल सूरज का गोला पूरब से धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था। उसका प्रकाश नदी के जल में पड़ रहा था। पक्षी पेड़ों पर चह-चहा रहे

थे। प्रातःकाल की शीतल मन्द हवा बह रही थी। सारा वातावरण बड़ा सुहावना हो रहा था।

चम्पा और गंधराज इतने दिनों के बाद फिर मिल गये थे। उनकी प्रसन्नता का अन्त नहीं था। तब गंधराज ने कहा—"चम्पा तुमने मेरे कारण बहुत कष्ट उठाया. लेकिन मैं मजबूर था। मुझे क्षमा कर दो।"

चम्पा ने कहा—"नहीं-नहीं, तुमने मुझसे ज्यादा कष्ट उठाया है मेरे ही कारण तुमने अपना नाग-समाज छोड़ा और मनुष्य रूप में आये और मेरी माँ और बहिन के कारण तुम्हें फिर नाग बन कर मुझे छोड़ना पड़ा। फिर इस जंगल में रहना पड़ा। मैं तुमसे कैसे नाराज हो सकती हूँ। तुम मुझे, मेरी माँ, और बहिनों को क्षमा कर दो। हाँ, एक बात का बचन दो कि अब मुझे कभी नहीं छोड़ोगे। नहीं तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी।"

तब गंधराज बोला—"नहीं, नहीं, चम्पा मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ सकता। तुम्हारे बिना मेरे दिन कैसे दुःख में बीते हैं इसे मैं ही जानता हूँ। मैं रोज तुम्हें देखने आता था। तुम सोती रहती थी इसलिए तुम्हें मालूम नहीं पड़ता था। मैं तुम्हारे रखे फूलों पर सोता था। तुम्हारे फलों को चखता था। घंटों तुम्हारे पास बैठा तुम्हें देखता रहता था।"

चम्पा ने कहा—"प्रातःकाल जब मेरे फूल मुरझाये रहते थे, और उन पर चिह्न बने रहते थे तब मैं समझ जाती थी कि तुम्हीं मेरी बिछायी फूल शैया पर रोज सोने आते हो। मेरे फलों को तुम्हीं ग्रहण करते हो वह भी मुझे मालूम था। इसलिए मैं कभी निराश नहीं हुई और यह स्थान छोड़ कर नहीं गयी। मैं जानती थी कि तुम मेरे पास हो चाहे मुझे दिखायी नहीं पड़ते। आओ अब अपने घर चलें।" यह कह कर चम्पा ने उसका हाथ पकड़ लिया। दोनों घर की ओर चल दिये। वे फिर नानू के यहाँ नहीं गये। सीधे अपने घर आये।

रास्ते में गंधराज ने चम्पा से कहा कि वह गोपी और राधा से सावधान रहे। वह तो उन दोनों को दंड देना चाहता था किन्तु सरल और सीधी चम्पा ने उसे ऐसा करने से मना किया और कहा कि वह उन दोनों को क्षमा कर दे। घर पर आकर दोनों ने इतने दिन से खाली घर को फिर से सजाया। चम्पा की खुशी और सुख का पार नहीं था।

गंधराज और चम्पा नियम से रोज कुछ फूल, फल और दूध ले कर जंगल में जाते और वहाँ उस टीले को साफ करके अपनी भेंट रख देते। दोनों नागराज को धन्यवाद देते कि उसने पुनः उन को मिला दिया और गंधराज के अपराधों को क्षमा कर दिया।

दुःख स्वप्न दूर हो गया था और दोनों सुख चैन से रहने लगे थे। उन्होंने नानू के घर से संबंध ही तोड़ दिया। चम्पा और गंधराज के लौटने का समाचार पा कर दोनों बहिनों के मन फिर ईर्ष्या की आग में जलने लगे।

बहिनों का षड्यंत्र

गधराज और चम्पा की सुखी दुनिया में एक खुशी और जुड़ गयी। एक चाँद से सुन्दर पुत्र ने उनके घर में जन्म लिया। अब तो दोनों की प्रसन्नता और सुख का ओर-छोर नहीं था।

बालक सोने से रंग का और फूल-सा कोमल था। काले घुँघराले बाल, भँवरे-सी काली आँखें, और गुलाबी ओंठ। हँसता तो जैसे चाँदनी खिल जाती। गंधराज उसे चूम कर फूला नहीं समाता।

चम्पा अपने भाग्य को सराहती। लेकिन दूसरी ओर राधा और गोपी बालक के जन्म और उसकी सुन्दरता का वर्णन सुन कर अपने भाग्य को कोसतीं।

एक दिन गंधराज ने चम्पा से कहा कि वह दूसरे देश में जा कर कुछ व्यापार करना चाहता है। क्योंकि अब उनके एक पुत्र भी है उसकी सुख, सुविधा, आदि के लिए अब उसे और धन-सम्पत्ति की आवश्यकता है।

उसने कहा—"चम्पा अब तुम अकेली नहीं हो। तुम्हारा मन बच्चे से लगा रहेगा। मैं जहाज ले कर जाऊँगा और जल्दी ही खूब धन कमा कर लौटूँगा। तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करना।"

चम्पा इस प्रस्ताव से दुःखी हुई। अब वह गंधराज से एक पल को भी दूर नहीं होना चाहती थी। पिछली घटना से उसके मन में एक भय समा गया था। गंधराज ने उसे बहुत समझाया। हर प्रकार से तसल्ली दी। कठिनाई से वह किसी प्रकार राजी हुई।

गंधराज ने घर में हर प्रकार की सामग्री, खाने-पीने का सामान खरीद कर रख दिया जिससे कि उसे किसी से कुछ सहायता न लेनी पड़े और उसे घर से बाहर जाने की जरूरत न पड़े। इस प्रकार सब इन्तजाम करके गंधराज ने उसे सब भली-बुरी स्थिति से परिचित करा कर समझा दिया कि वह कभी घर से बाहर न जाय। बच्चे की देख-भाल अच्छी तरह करे। बहिनों के न तो घर जाय और न उन्हें घर आने दे।

दूसरे दिन उसने अपने कुछ साथियों को लिया और यात्रा पर चला गया। बच्चा तो कुछ समझता नहीं था। बाप के जाते समय किलकारी मार कर हँस रहा था किन्तु चम्पा की आँखों से आँसू की झड़ी लग गयी। छत पर खड़ी हो कर वह नदी में जाते जहाज को तब तक देखती रही जब तक

कि वह आँख से ओझल न हो गया।

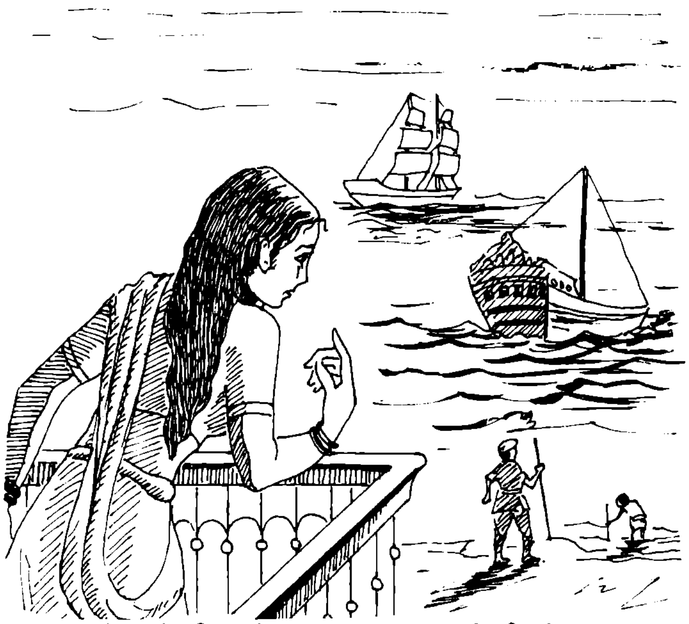

धीरे-धीरे दिन बीतता गया। चम्पा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं था। गंधराज के लिए वह नित्य भगवान् से प्रार्थना करती कि वह सकुशल शीघ्र ही विदेश से लौट आये।

उसकी बहिनों को भी यह बात मालूम हो गयी कि वह आजकल घर में अकेली बच्चे के साथ है और उसका पति जल्दी वापस नहीं आयेगा। दोनों अब इस कोशिश में थीं कि गंधराज की अनुपस्थिति में किसी प्रकार चम्पा को रास्ते से हटा दिया जाय तो गंधराज उन्हीं दोनों में से किसी को पसन्द कर विवाह कर लेगा।

दोनों बहिनें उसके घर का चक्कर लगातीं। लेकिन चम्पा तो बाहर ही नहीं निकलती थी। इतने दिनों बाद एकाएक वे उसके घर जाने में हिचकती थीं। एक दिन वे उसके घर के पास से निकल रही थीं। चम्पा बच्चे को गोद में ले कर द्वार पर खड़ी थी। दोनों वहीं रुक गयीं और बड़े प्यार से बोलीं—"चम्पा अच्छी तो है न ? तू तो सगी बहन हो कर भी हमें भूल गयी लेकिन हम रोज तेरी याद करती हैं। तेरा बच्चा तो बड़ा प्यारा है। हमारा बड़ा मन करता है कि उसे खिलावें और प्यार करें लेकिन तेरे पति से डरती हैं। वह हमसे नाराज हैं। यद्यपि हमारा कोई कसूर नहीं है, हमें क्या मालूम था कि हमें बचाने में उसे इतनी तकलीफ होगी। गंधराज घर पर नहीं हैं तुझे किसी चीज की जरूरत हो तो हम बाजार से ला देंगी। आखिर हम तेरी बहिन ही तो हैं।"

चम्पा आश्चर्य से इन लोगों का मुख देखती रही। जीवन में पहिली बार वे उससे इतने प्यार से बोली थीं। उसने उन्हें अन्दर आने के लिए नहीं कहा और न खुद बाहर आयी। वहीं से उत्तर दिया—"नहीं बहिन मुझे कोई कष्ट नहीं है। मेरा पति घर में सब कुछ रख गया है।"

दोनों बहिनें थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करके वापस चली गयीं। वे दूसरे दिन उसी समय फिर उधर से निकलीं। आज भी चम्पा खड़ी मिली। गोपी बोली—"हम लोग बाजार जा रही हैं। आ तू भी हमारे साथ चल। तुझे भी कुछ सामान लेना होगा।"

"बहिन मैं बाहर नहीं जाऊँगी। मेरा पति मुझे बाहर आने-जाने को मना कर गया है। फिर मुझे किसी चीज की जरूरत भी नहीं है।" चम्पा ने उत्तर दिया।

वे बच्चे को खिलाना चाहती थीं किन्तु चम्पा ने बहाना कर दिया और उनकी गोद में बच्चे को नहीं दिया।

राधा-गोपी उस दिन भी चली गयीं। उनका कुछ दाँव ही नहीं लग रहा था। तीसरे दिन वे फिर उधर से गुजरीं। आज वे खूब सजी-सँवरी थीं। फूलों के गजरे पहिने थीं, जूड़े में महकते फूल लगाये थीं। वे हँस-हँस कर जोर-जोर से बातें करती हुई चम्पा की खिड़की के पास से गुजरीं तो चम्पा बोली—"तुम लोग आज बहुत खुश दिखलाई पड़ रही हो। क्या बात है ? ये सुन्दर-सुन्दर कपड़े पहिन कर कहाँ जा रही हो ?"

उन्होंने उत्तर दिया—"तू तो घर छोड़ कर बाहर जा नहीं सकती। तेरा पति तुझे मना कर गया है। हम तो किसी के बंधन में हैं नहीं। हम आज नदी के किनारे झूला झूलने जा रही हैं। सावन का महीना है। खूब आनन्द आयेगा। तू तो अपने घर पर ही बैठ कर सावन मना।"

चम्पा विवश-सी उनका मुख देखती रही। वे ताना मार कर चली गयीं। वह सोचने लगी कि बेचारी बहिनें उसका ध्यान रख कर ही रोज इधर आती हैं। इसमें इनका क्या स्वार्थ हो सकता है ? कुछ मुझसे माँगती भी नहीं। मुझे दिल बहलाव के लिए ही बाहर ले जाना चाहती हैं। आज तो मुझसे कहा भी नहीं। सावन में बाहर मैदान कैसे हरे भरे होंगे। बागों में, नदी के किनारे सब लड़कियाँ इकट्ठी होती होंगी। झूला झूलती होंगी, गाती नाचती होंगी। कितना आनन्द आता होगा। लेकिन मैं क्या करूँ मुझे तो गंधराज मना कर गया है।

उसका मन इतने दिनों से घर के अन्दर बैठे-बैठे ऊब गया था। बहिनों के बार-बार पूछने पर उसके मन में बाहर जा कर घूमने की इच्छा जोर पकड़ने लगी। अगले दिन फिर जब गोपी और राधा निकलीं तो उसने उन्हें पुकार कर पूछा—"आज क्या तुम फिर झूलने जा रही हो ?"

तब राधा ने ताना मारा—"तुझसे क्या मतलब ? हम तो रोज ही जाती हैं। तेरी तरह कैद थोड़े ही हैं ?"

चम्पा बोली—"नहीं बहिन मन तो मेरा भी करता है तुम लोगों के साथ घूमने जाने का लेकिन गंधराज मना कर गया है, उसी का डर है।"

राधा और गोपी को समझते देर नहीं लगी कि मछली जाल में फँस रही है। वे बोलीं—"तो कौन तेरे साथ जबरदस्ती कर रहा है ? थोड़ी देर बाहर घूमने में ही तू घुल जायगी, तुझे कोई पकड़ कर ले जायेगा ? शाम होने से पहिले ही हम लौट आयेंगे। फिर तू हमारे साथ ही रहेगी। हम तुझे यहाँ तक पहुँचा भी देंगे। और भाई हम तो तेरा मन बहलाने के लिए ही कह रही थीं। हम तुझसे कुछ ले तो रही नहीं हैं। तेरा मन नहीं करता तो मत चल। हमें चलने दे। देर हो रही है।"

चम्पा बोली—"नहीं, नहीं, थोड़ा रुको मैं भी चलती हूँ। मेरा भी घर के अन्दर बैठे-बैठे मन ऊब रहा है। सचमुच थोड़ा घूम आने से क्या हानि होगी। तुम लोग ठीक कहती हो। मैं अभी घर बन्द करके आती हूँ।"

चम्पा घर बन्द करके बच्चे को गोद में लिये बाहर निकल आयी। गोपी और राधा ने एक-दूसरे को आँख मारी। राधा हँस कर बोली—"ला तेरे बच्चे को मैं गोद में ले लूँ।" चम्पा मन-ही-मन डर गयी, बोली—"न बहिन यह बहुत शैतान है। तुम्हारे बाल नोच कर रख देगा; फिर तुम्हें पहिचानता भी नहीं, अभी रो पड़ेगा तो घूमना-घामना सब बन्द हो जायेगा।"

वह बाहर तो निकल आयी लेकिन उसका दिल धक-धक कर रहा था। गंधराज मना कर गया था। कहीं ये बहिनें फिर कोई चाल न चलें। लेकिन अब तो निकल ही आयी थी।

नदी के किनारे एक पेड़ पर झूला पड़ा था। वर्षा में नदी में बाढ़ आने से पानी बिल्कुल पेड़ तक आ गया था। बड़ा अच्छा लग रहा था। तीनों आनन्द लेने लगीं। चम्पा पहिले नहीं झूली। पहिले गोपी झूली और राधा व चम्पा ने झुलाया। फिर राधा झूली और गोपी और चम्पा ने झुलाया अन्त में चम्पा झूले पर चढ़ी। गोपी ने कहा—"ला बच्चे को मुझे पकड़ा दे।"

"नहीं बहिन उसे गोद में लिये रहूँगी। उसे भी अच्छा लगेगा।" यह कह कर चम्पा उसे गोद में लेकर झूले पर बैठ गयी।

दोनों बहिनों ने चम्पा को खूब जोर-जोर से झोंके दिये। बच्चा डर कर चीखने लगा। चम्पा भी चिल्लाने लगी और झूला रोकने के लिए कहने लगी। लेकिन राधा और गोपी ने और जोर से झुलाना शुरू किया। झूला ऊपर पेड़ की फुनगी छूने लगा। चम्पा चौंक पड़ी। बहिनों के मन का मैल स्पष्ट था उसे गंधराज की सलाह की याद आयी। बच्चे को छाती से चिपका कर वह जोर-जोर से रोने लगी और चिल्लाने लगी—"झूला रोक दो। राधा बहिन मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। गोपी बहिन दया करके मुझे उतार दो।"

इतने में दोनों ने एक साथ उसे इतनी जोर का झोंका दिया कि चम्पा बच्चे को लिये पानी के बीच में जा गिरी।

इसके बाद वे दोनों बहिनें थोड़ी देर तक तो देखती रहीं फिर वहाँ से भाग कर चली गयीं।

चम्पा और उसके बच्चे को नदी में ढकेल कर गाधा और गोपी खुशी-खुशी घर लौट आयीं। घर पर आते ही रोने का नाटक करते हुए नानू से कहा कि चम्पा अपने बच्चे के साथ नदी में डूब गयी। नानू अपना सिर पीट कर रह गयी। बरसाती नदी में बचने की क्या आशा थी फिर उसके घर में कोई पुरुष भी नहीं था जो जा कर ढूँढता या उसको बचाने की कोशिश करता। उसके मन में अपनी दोनों लड़कियों के प्रति सन्देह भी हुआ किन्तु दोनों ने तो खुद ही रो-रो कर घर में कुहराम मचा दिया।

रात को दोनों बहिनों में बहुत देर तक खुसुर-फुसुर बातें होती रहीं। दोनों अब आगे की सलाह कर रहीं थीं कि गंधराज जब लौटेगा तब वे क्या करेंगी। उससे क्या कहेंगी। दोनों में से कौन उससे शादी करेगा। राधा कहती मैं करूँगी तो गोपी कहती मैं करूँगी। इसी बात पर दोनों में झगड़ा होते-होते बचा।

अन्त में यह तय हुआ कि गंधराज जिसको पसंद करेगा उसी की शादी होगी।। अब दोनों शान्त हो गयीं। लेकिन चम्पा के घर के सामान का क्या होगा ? सबेरे ही दोनों माँ के पास गयीं और बोली—"चम्पा का घर सूना पड़ा है। कहीं चोर आकर सब सामान न लूट लें। इसलिए हमें चाहिए कि सब सामान इसी घर में ले आयें। अब चम्पा के जीवित लौटने की तो कोई आशा है नहीं और बहुत संभावना यह है कि हम दोनों बहिनों में से ही कोई एक-न-एक दिन गंधराज से विवाह करके सामान की मालकिन बनें। फिर क्यों हम उसे नष्ट होने दें।"

इन लोगों की बातें सुन कर बुढ़िया नानू अपनी स्वार्थी और कठोर बेटियों का मुँह देखती रह गयी। वह चुप चाप घर से बाहर चली गयी। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। जब उसकी प्यारी बेटी ही नहीं तब उसके सामान को चाहे जो ले या लूटे उसे कोई मतलब नहीं। राधा-गोपी ने एक-दूसरे की तरफ देखा और भेद भरी मुस्कराहट उनके चेहरे पर फैल गयी।

दोनों ने जा कर उसका घर खोला और धीरे-धीरे सब सामान ढो कर अपने घर में लें आयीं। चम्पा के सुन्दर कीमती वस्त्रों को वे स्वयं पहिनने लगीं। दोनों बहिनें उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा करने लगीं जब गंधराज जहाज ले कर लौटेगा।

जंगलियों के देश में

पानी में गिरने के बाद चम्पा और बच्चा दोनों बेहोश हो कर बहने लगे। बरसात की नदी खूब भरी थी। दोनों लहरों पर डूबते उतराते तेजी से बहे जा रहे थे।

कई मील दूर नदी के बीच एक टापू था जिस पर एक जंगली जाति के लोग रहते थे। टापू घने जंगल से घिरा था। जिसका सरदार चिकमिक था जो बिल्कुल जंगली था। काले रंग का था, सफेद दाँत थे और वह खूब तन्दरुस्त था। छाल के कपड़े पहनता। पंखों का मुकुट लगाता तथा हाथ में एक तीर कमान हमेशा लिये रहता। उसकी भाषा भी जंगलियों की भाषा थी जो जल्दी किसी की समझ में नहीं आ सकती थीं।

वैसे देखने में काला होते हुए भी वह बुरा नहीं था। चम्पा और उसका बच्चा बहते-बहते उसी टापू के किनारे पहुँचे। चिकमिक ने देखा कि एक सुन्दर स्त्री नदी के किनारे बेहोश पड़ी है, उसी से कुछ दूर पर एक बच्चा पड़ा है। उसने दोनों को उठा कर अपने कंधे पर डाल लिया और अपनी झोपड़ी में ले गया।

आग जला कर पहले तो उसने उन्हें सेंका। कुछ जड़ी-बूटी सुँघायी तब चम्पा को होश आया। बच्चा भी होश में आकर चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगा। पहले तो चम्पा चकाचौंध हो कर इधर-उधर देखने लगी। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह कहाँ है। किन्तु जैसे ही बच्चे का रोना उसके कानों में पड़ा वह छटपटा कर खडी हो गयी

और बच्चे की तरफ झपटी।

चिकमिक समझ गया और बच्चे को उसकी गोद में दे दिया। उसने भेड़ का गरम दूध करके दोनों को पिलाया। चम्पा से कुछ अपनी भाषा में पूछा किन्तु दोनों एक-दूसरे की भाषा नहीं समझे।

चिकमिक चम्पा को पा कर बहुत खुश था। उसे सब तरह का आराम देता। जंगल से अच्छे-अच्छे फल ला कर

देता। बात यह थी कि वह उसे अपनी पत्नी बना कर रखना चाहता था।

बेचारी चम्पा पानी से घिरे उस टापू में कैद-सी हो गयी। वहाँ से निकलने का कोई रास्ता उसे नहीं दिखाई देता था। उसे यह भी नहीं मालूम था कि उसका घर वहाँ से कितनी दूर है और वहाँ जाने का क्या उपाय है। इधर चिकमिक की दृष्टि भी उसे अच्छी नहीं लगती थी। वह उसे नजर से दूर ही नहीं होने देता था। धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे की भाषा समझने लगे थे।

एक दिन वह बच्चे को लोरी गा कर सुला रही थी—"गंधराज के बेटा सोजा, सोजा मेरे लालना। मीठे मीठे गीत सुनाऊँ, तुझे झुलाऊँ पालना।"

चिकमिक ने सुना तो बहुत नाराज हुआ। उसे बुरा लगा कि बच्चे को वह "गंधराज का बेटा" कह कर क्यों सुला रही है। उसने कहा कि वह उसे चिकमिक का बेटा कहे नहीं तो वह दोनों को मार डालेगा। हार कर चम्पा ने गाया—

"चिकमिक के बेटा सोजा,
सोजा मेरे लालना।
मीठे मीठे गीत सुनाऊँ,
तुझे झुलाऊँ पालना।"

चिकमिक सुन कर खुश हो कर हँसने लगा। बेचारी चम्पा खून के जहर-सा घूँट पी कर रह गयी। रोज उसे बच्चे को चिकमिक का बेटा कहना पड़ता था। जब भी वह उसे गा कर सुलाती चिकमिक वहाँ जरूर खड़ा रहता, और हार कर उसे चिकमिक का बेटा कह कर ही बच्चे को गीत सुनाना पड़ता।

इस प्रकार वह किसी तरह अपने दुःख के दिन व्यतीत कर रही थी। सरदार ने उससे शादी करने के लिए कई बार कहा किन्तु वह यह कह कर टाल देती थी कि अभी मैं बीमार हूँ, कभी कह देती बच्चे की दूसरी वर्षगाँठ मनाने के बाद ब्याह करूँगी। हमारे यहाँ का यही रिवाज है।

इस प्रकार चम्पा न तो उस जंगली से शादी कर सकती थी न मना ही कर सकती थी। वैसे चिकमिक उसके प्रति दयावान था। चम्पा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देता था। बच्चे को भी वह बहुत प्यार करता था। वह बच्चा भी उससे खूब हिल-मिल गया था। उसके गले में पड़ी चमकीले मोती और पत्थरों की मालाओं को देखते ही वह उसकी ओर लपकता और पकड़-पकड़ कर खींचता। चिकमिक उसके पास अपने पालतू खरगोश ले आता जिनसे वह खूब खेलता। हिरनों की पीठ पर बैठाता।

वैसे चम्पा को किसी प्रकार का कष्ट वहाँ नहीं था, वह केवल गंधराज की याद करके ही नित्य एक दो बार रो लेती। जंगली चिकमिक उसके दर्द को किसी प्रकार भी समझने में असमर्थ था। उसे उदास देख कर वह उसे ढेर से फूल ला कर भेंट करता। उसके लिए फूलों के गजरे बना कर देता। किन्तु इन सबसे चम्पा का दुःख कम न होता।

हाँ, वह कोशिश करती कि उसको वह अपने आँसू न दिखाये।

एक दिन रात को बच्चा नहीं मालूम क्यों खूब रो रहा था। किसी तरह चुप हीं नहीं हो रहा था। चम्पा उसे ले कर झोपड़ी से बाहर निकल आयी। आसमान में चाँद खिला था। नीले आसमान में अनगिनत तारे दीवाली के दीपों की तरह झिलमिला रहे थे। चम्पा नदी के किनारे पर बच्चे को ले कर बैठ गयी और गा-गा कर उसे सुलाने की कोशिश करने लगी।

संयोग से एक जहाज उसी तरफ आ रहा था। यह जहाज गंधराज का ही था। वह विदेश से खूब धन कमा कर अपने देश लौट रहा था। रात बड़ी सुहानी थी। गंधराज भी जहाज की छत पर आसमान के चाँद और तारों को देख रहा था।

जब वह टापू के किनारे से गुजरा तो उसे चम्पा के गाने और बच्चे के रोने के आवाज सुनायी दी। वह आश्चर्य में पड़ गया। चम्पा यहाँ कैसे आ सकती है ? यह जंगल से घिरा टापू, यह अथाह नदी, यहाँ चम्पा कैसे हो सकती है ? इतने में उसे फिर गाने की आवाज सुनायी दी—"गंधराज के बेटा सोजा, नहीं, नहीं, चिकमिक के बेटा सोजा—सोजा मेरे लालना।"

गंधराज ने सोचा—"उफ, यह तो चम्पा ही है। लेकिन मेरा नाम लेते-लेते यह रुक कर चिकमिक के बेटा सोजा, क्यों कहने लगी ? अरे, यह तो सिसक कर रो भी रही है ? जरूर इस पर कोई आफत आयी है। राधा और गोपी ने फिर कोई दुष्टता तो नहीं की ?"

उसने तुरन्त जहाज रोकने की आज्ञा दी। इतने में चम्पा उठ कर बच्चे को कंधे से लगाये झोपड़ी की तरफ चल दी क्योंकि उसे सामने से चिकमिक आता दिखायी दिया। बच्चा भी सोने लगा था। यद्यपि रात होने के कारण गंधराज को चम्पा का मुख साफ-साफ नहीं दिखाई दिया किन्तु उसे पहिचानने में कठिनाई नहीं हुई। चम्पा की पीठ नदी के किनारे होने के कारण उसने जहाज को नहीं देखा फिर चिकमिक को आते देख कर वह जल्दी से उठ कर चल दी। गंधराज ने भी चिकमिक को देख लिया था।

चिकमिक चक्कर में

जहाज को किनारे रुकवा कर गंधराज टापू पर उतर आया। वह उसी समय चम्पा के पास नहीं गया। पहिले वह सब जानना और समझना चाहता था। धैर्य से वह सबेरा होने की प्रतीक्षा करने लगा। रात में उसने पूरे टापू पर घूम कर सब देख-सुन लिया। चिकमिक की झोपड़ी के बाहर उसने पालतू जानवर खरगोश, हिरन, भेड़, बकरी आदि देखे।

सबेरा होने पर वह चिकमिक के पास आया। वह झोपड़ी के बाहर ही खड़ा था। चम्पा और बच्चा अभी अन्दर ही था, शायद सो रहे थे। गंधराज को दूर से आते देखते ही चिकमिक दौड़ कर उसकी तरफ बढ़ा। गंधराज ने हाथ हिला कर मित्रता का संकेत किया। उसने कहा कि वह परदेशी है। एक दिन आराम करने के लिए उसके टापू पर आ गया है। उसने उसे कुछ चमकीले रत्न भी दिये। इस प्रकार उसे अपना मित्र बना लिया। चिकमिक खुश हुआ और उसे ले कर अपनी झोपड़ी में आया जहाँ चम्पा और बच्चा था।

चम्पा ने जैसे ही गंधराज को देखा चीख कर उससे लिपट गयी। वह बिलख-बिलख कर रोने लगी। गंधराज ने उसे चुप कराया। बहुत समझा बुझा कर शांत किया। दोनों को इस प्रकार झोपड़ी में देख कर वह भी दुःख से रोने लगा। दोनों जंगली वस्त्र पहिने थे। इतने दिनों में उनके सुन्दर कपड़े फट गये थे। वे चिकमिक द्वारा तैयार किये जंगली छाल पत्तों के वस्त्र थे। चम्पा उनमें भी सुन्दर लग रही थी और उसका बच्चा तो, गोल-मटोल, गोरा-गोरा आधा नंगा ही प्यारा था।

चिकमिक चम्पा और गंधराज के मिलन को देख कर पहिले तो चकित रह गया। फिर जो कुछ उसकी समझ में आया उससे उसके मुख पर क्रोध के चिह्न उभर आये। वह समझ गया कि यह नया आदमी चम्पा का कोई है और इसे ले जायेगा।

लेकिन वह तो उससे शादी करने के दिन गिन रहा था। वह हरगिज उसे नहीं जाने देगा। उसने निश्चय किया। उसने गुस्से से गंधराज का हाथ पकड़ कर उसे चम्पा से अलग कर दिया। वह कहीं लड़ाई न कर बैठे इसलिए चम्पा दोनों के बीच आ कर खड़ी हो गयी। उसने उसे कुछ इशारों से, कुछ अपनी और कुछ उसकी भाषा में समझाया। उसने कहा—"यह इस बच्चे का बाप है। मेरा पति है मुझे इसके साथ जाने दो।"

उसने गंधराज से कहा कि चिकमिक ने मेरी बड़ी सेवा की है। मेरे और मेरे बच्चे के प्राण भी इसने बचाये हैं। यदि यह हमें यहाँ न लाता तो निश्चय ही हम दोनों मर गये होते।

उसने धीरे-धीरे सब बातें, किस प्रकार राधा और गोपी ने उसे धोखा दे कर झूले से नदी में गिरा दिया, इत्यादि बतायी। गंधराज सुन कर क्रोध से हाँफने लगा। उसे यदि वे दोनों मिल जातीं तो शायद वह उसी समय उन्हें खतम कर देता। इधर चिकमिक चुपचाप सब सुन रहा था कुछ समझा और कुछ नहीं समझा। वह बस एक बात जानता था कि बच्चे और चम्पा को वह टापू से नहीं जाने देगा। दोनों को वह बहुत प्यार करने लगा था।

अब समस्या यह थी कि बिना लड़ाई और नाराजगी के चम्पा और बच्चे को गंधराज कैसे टापू से निकाल कर ले जाये ? चिकमिक को भी वह दुःखी नहीं करना चाहता था। उसने उसकी पत्नी और पुत्र के प्राण बचाये थे।

वह उससे बहुत प्यार से बोला—प्यारे मित्र, तुमने मेरे ऊपर बहुत अहसान किया है यदि तुम न होते तो ये दोनों नहीं बच सकते थे। मैं तुम्हें दुःखी करके इन्हें नहीं ले जाना चाहता। पर तुम खुद ही सोचो कि मैं अपने प्यारे बच्चे और पत्नी को कैसे अलग कर सकता हूँ। इनके बदले तुम जो चाहो मैं तुम्हें दे सकता हूँ। आओ मेरे साथ जहाज पर आओ। देखो मैं दूर देश से कितनी अच्छी-अच्छी चीजें लाया हूँ।"

वह उसे अपने जहाज पर लाया। चम्पा और बच्चे को टापू पर ही रहने दिया। उसने चिकमिक को मोती, मूँगा और बहुत सुन्दर शंख और सीप दिये। यह सीप बहुत बड़े सूप और थाली के बराबर थे और शंख लोटा और बड़े घड़े के बराबर थे। उसने ढेर से हीरे और पन्ने भी दिये साथ ही शेर और भालू की कई खालें बिछाने और ओढ़ने को दीं। इन सबके अलावा उसने एक बड़ी मजबूत चमकीली तलवार भी चिकमिक को भेंट की तथा अपने कुछ सुन्दर वस्त्र भी उसे पहिनाये जिन्हें पहिन कर वह जंगली भी सुन्दर लगने लगा। एक चीज उसने और दी जिसे पा कर तो चिकमिक

खुशी से उछल पड़ा और गंधराज को उसने दोनों बाहों में भर कर चूम लिया। वह था एक बड़ा सा मुख देखने का शीशा।

गंधराज ने इस प्रकार चिकमिक से मित्रता कर ली और वह चम्पा और मुन्ना को छोड़ने के लिए तैयार हो गया। जहाज के टापू से चलते समय गंधराज ने बच्चे और चम्पा के लिए कुछ कपड़े ले लिये। झोपड़ी में आकर उन्हें नये कपड़े पहिनाये और पत्तों तथा छाल के कपड़े उतरवा

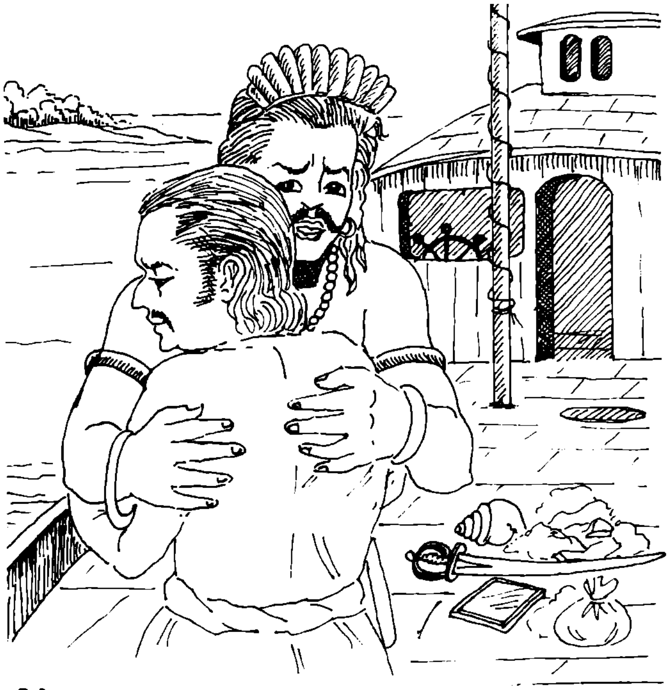

दिये।

इतने दिन बाद उनके दुःख के दिन बीते और सुख के दिन आये। चम्पा की खुशी का अन्त नहीं था। चिकमिक भी इतनी चीजें पा कर बहुत खुश था लेकिन रह-रहकर वह उदास भी हो जाता था। चम्पा और बच्चे को वह दिल से प्यार करने लगा था। उनके जाने के बाद वह अकेला रह जायेगा उसकी झोपड़ी सूनी हो जायेगी। इसी का उसे दुःख था।

चम्पा जाते समय चिकमिक से मिल कर रो पड़ी उसने उससे कहा "मुझे भी तुम्हें छोड़ने का दुःख हो रहा है, मैंने यहाँ रह कर तुम्हें कष्ट ही दिया है लेकिन तुमने मेरे लिये बहुत कुछ किया। मेरी सेवा की, मेरे बच्चे को प्यार किया। मैं तुम्हें अपने भाई की तरह प्यार करती हूँ। तुम्हें बच्चा भी याद करेगा, मैं तो करूँगी ही। मुझे तुम भूल मत जाना।"

चिकमिक का दिल भी भर आया। वह फफक कर रो पड़ा। चम्पा के इतने दिनों के साथ से वह जंगली भी बहुत कुछ सभ्य बन गया था। चम्पा ने गंधराज से अलग ले जा कर कुछ कहा। वह चिकमिक के पास आया और बोला—"मित्र मेरी इच्छा है कि तुम कुछ दिन के लिए हमारे साथ हमारे देश चलो। हमारे मेहमान बन कर हमारे साथ रहो फिर हम तुम्हें इसी जहाज पर वापस पहुँचा देंगे। कुछ दिन जंगल छोड़ कर शहर की जिन्दगी भी देखो।"

चिकमिक पहिले तो हिचका फिर टापू में ही रहनेवाले दूसरे छोटे सरदार कुही के पास सलाह लेने गया जो उसकी झोपड़ी से दो मील दूर रहता था। बहुत देर तक बात करने के बाद वे गंधराज के पास आये। उससे मिलने के बाद कुही राजी हुआ। चिकमिक ने कहा कि कुही भी उसके साथ चलेगा। अनजाने शहर में एक से दो भले।

इस तरह गंधराज, चम्पा उनका बच्चा, चिकमिक और कुही को जहाज पर ले कर अपने शहर को चल दिया। रास्ते में गंधराज और चम्पा ने राधा और गोपी के बारे में बातें की और गंधराज ने कहा कि उसने उन दोनों के लिए ऐसा दंड सोच लिया है कि दोनों जीवन भर याद रखेंगी।

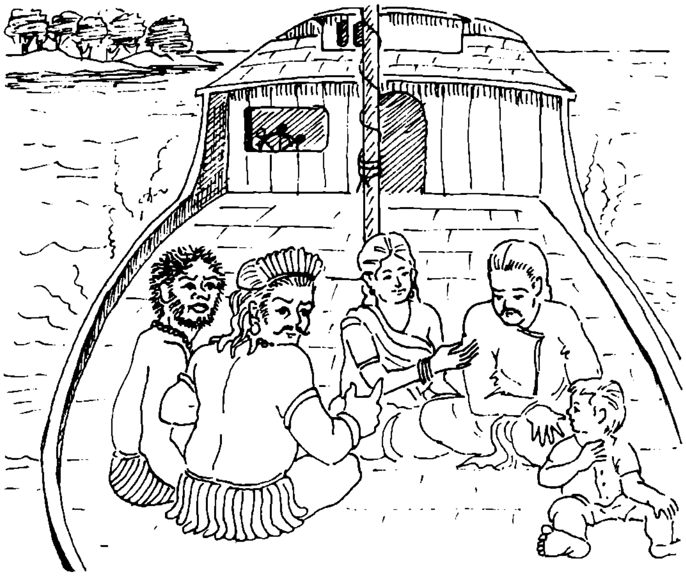

गोपी-राधा अपने ही जाल में

राधा और गोपी चम्पा और उसके बच्चे को नदी में ढकेलने के बाद बहुत खुश थीं कि अब तो दोनों मर ही गये होंगे। दोनों अब गंधराज का इन्तजार करने लगीं। वे सोचने लगीं कि चम्पा को न पा कर गंधराज उसकी बहनों में से ही किसी से शादी कर लेगा।

एक दिन कुछ लड़के चिल्लाते हुए आये—"जहाज आया है। जहाज आया है। नदी में बहुत बड़ा जहाज आया है।"

राधा और गोपी ने सुना तो फूली नहीं समायीं। वे समझ गयीं कि गंधराज वापस आ गया है। दोनों दौड़ी-दौड़ी नदी के तट पर आयीं। जैसे ही, गंधराज मिला उसने राधा और गोपी से चम्पा के बारे में पूछा कि वह कैसी है, बच्चा कैसा है और वे लोग क्यों नहीं आये ?

दोनों चम्पा का नाम सुन कर मगरमच्छ के आँसू गिराने लगीं। कहने लगीं—"गंधराज हमें बड़ा दुःख है कि हमारी प्यारी बहिन चम्पा अब इस संसार में नहीं है। वह तुम्हारे जाते ही एक दिन बच्चे को ले कर नदी में कूद गयी और मर गयी। हमने उसे बहुत ढूँढा किन्तु उसकी लाश का भी पता नहीं लगा। इसीलिए आज तुम्हें लेने हम दोनों ही आयी हैं। अब चलो हमारे ही घर चलो। हम दोनों में जो भी पसंद आये उससे शादी कर लो।"

गंधराज ने मुस्करा कर दोनों बहिनों की बातें सुनीं। उसने कहा—"ठीक ही है। चम्पा के बाद मेरा तुम दोनों के सिवा है ही कौन ? यह जो कुछ कमा कर लाया हूँ यह सब तुम लोगों का ही है। एक परेशानी मुझे हो रही है। खास-खास कीमती चीजें एक बाक्स में रखी हैं उसे मजदूरों से नहीं उठवाना चाहता। मैं अकेले भी उठा कर नहीं ले जा सकता। क्या करें ? तुम्हीं लोग कुछ उपाय बताओ कि इस सन्दूक को घर कैसे ले जाया जाय ?"

राधा और गोपी खुशी से उछल पड़ीं कि गंधराज उन पर इतना विश्वास कर रहा है। वे बोलीं—"अरे इतनी मामूली-सी बात के लिए तुम इतनी चिन्ता क्यों कर रहे हो। हम दोनों बहिनें इस सन्दूक को अपने कंधों पर ले जायेंगी। हम चम्पा की तरह दुबली, पतली और कमजोर नहीं है।"

यह कह कर उन दोनों ने वह सन्दूक (जिसमें चम्पा और उसका बच्चा लेटे थे) उठा कर अपने कंधों पर रख लिया। सन्दूक सचमुच भारी था, लेकिन यह सोच कर कि यह माल से भरा है, उन्होंने कोई आपत्ति नहीं की।

पीछे-पीछे गंधराज और आगे-आगे सन्दूक लिये दोनों बहिनें चलीं। कुछ दूर जाने पर घर पहुँचते-पहुँचते दोनों अधमरी हो कर सन्दूक जमीन पर उतारते ही गिर पड़ीं। नानू ने गंधराज को देखा तो बहुत खुश हुई। उसके साथ बहुत सा समान था जिसे देख कर आस-पास के बहुत से लोग घिर आये। दोनों बहिनें कहने लगीं—"गंधराज सन्दूक खोलो। हमें वह माल दिखाओ जिसे हम इतनी तकलीफ से ढो कर यहाँ तक लायी हैं।"

गंधराज ने कहा—"हाँ, हाँ, अभी खोलता हूँ। माल तुम्हारा ही तो है। लो यह ताली तुम खुद खोल कर देखो और ये लोग जो खड़े हैं उन्हें भी दिखाओ।" गंधराज ने चाभी दोनों बहिनों के आगे फेंक दी।

आखिर तय यह हुआ कि गोपी ताला खोलेगी और राधा ढक्कन उठायेगी। नानू अपनी बेटियों की हरकतें शरम से सिर नीचा किये देख रही थी। आये हुए लोग उत्सुक थे कि कब ढक्कन खुले और वे लोग देखें कि इसमें क्या-क्या माल भरा है।

आखिर सन्दूक का ताला खुला और राधा ने जैसे ही ढक्कन उठाया कि चौंक कर पीछे हट गयी जैसे उसमें कोई भयानक जानवर बैठा हो। गोपी तो चीख कर गिरते-गिरते बची। सब लोग सन्दूक के पास सरक आये। उसमें चम्पा अपने बच्चे को सीने से लगाये लेटी थी।

लोग आश्चर्य और खुशी से चीखने लगे। गंधराज ने आगे बढ़ कर दोनों को बाहर निकाला और बच्चे को गोद में ले कर तथा चम्पा को अपने बगल में खड़ा कर के सब लोगों से बोला—"क्या मैंने झूठ कहा था कि सन्दूक में बहुत कीमती माल भरा है ? मेरे लिये मेरी पत्नी और बच्चे से बढ़ कर कीमती दुनिया में और क्या चीज हो सकती है।"

यह कह कर वह ठठा कर हँस पड़ा। बच्चा पिता को हँसते देख कर गोद में ही कूद-कूद कर हँसने लगा और सब लोगों के तो हँसते, हँसते पेट में बल पड़ गये कि किस प्रकार लालच में पड़ कर दोनों बहिनें अपनी बहिन को ही कंधे पर लाद कर इतनी दूर तक चल कर आयी हैं।

यह तो हम बताना भूल ही गये कि टापू से वे दोनों जंगली चिकमिक और कुही भी वहीं खड़े थे। वे भी कुछ समझे कुछ न समझे नाच-नाच कर हँसने लगे। उस भीड़ में केवल दो ही लोग ऐसे थे जो सिर नीचा किये शरम और दुःख के आँसू गिरा रहे थे, वे थे—गोपी और राधा। उन्हें लग रहा था कि जमीन यदि फट जाती तो दोनों उसमें समा जातीं। इतनी तकलीफ से जिस वस्तु को वे नदी से घर तक उठा कर लायी थीं वह निकली चम्पा ? लोग दोनों बहिनों की दुर्दशा देख कर खूब खुश हो रहे थे। उन्हें भी उन दोनों की हँसी उड़ाने का अच्छा अवसर मिल गया था। जब हँसी

कि दिन कुछ कम हुआ तब गंधराज ने सब लोगों से चम्पा के डूबने की कहानी कही। वहाँ खड़े सब लोग राधा और गोपी पर थू-थू. छि:-छि: करने लगे।

नदी में तैरती लाशें

गोपी और राधा का इतनी भीड़ के सामने अपमान हुआ। इसका दोनों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। कई दिन तक वे घर से नहीं निकलीं। गंधराज को पाने की इच्छा से उन्होंने जो दुष्टता का कार्य किया था वह व्यर्थ गया। उनके कार्यों का दुनिया के सामने भंडाफोड़ हो गया। वे मन-ही-मन खूब पछता रहीं थीं। अब तो कोई भी कभी उनका विश्वास नहीं करेगा। किसी के सामने मुँह दिखाने लायक नहीं रहीं। उन्हें उनकी करनी का भारी दंड मिल गया था।

गंधराज भी यही चाहता था कि उन्हें उनकी नीचता का दंड इस प्रकार मिले कि वे अपनी गलती का अनुभव करें और ऐसा ही हुआ। दोनों सोचने लगीं—"अपनी बहिन के साथ हमने सचमुच बहुत बुरा किया इस पर भी उसने हमें कुछ बुरा भला नहीं कहा। सब हमारी हँसी उड़ा रहे हैं तब भी वह चुप थी। बल्कि, ऐसा लग रहा था कि बहिनों के अपमान से वे दुःखी और शर्मिन्दा है। उनकी नजर बराबर नीची रही। बेचारी बूढ़ी माँ तो रोने-रोने को हो रही थी। अब हम किसी को मुख दिखाने लायक नहीं रहीं। इससे अच्छा तो यह था कि हम नदी में डूब कर मर जातीं। हमारा जिन्दा रहना न रहना बराबर है। हमें जो भी देखेगा हम पर थूकेगा। सचमुच हम कितनी नीच हैं। सगी बहिन और उसके बच्चे की हत्या करने की हमने कोशिश की।"

दोनों बिना खाये-पिये कई दिन तक घर में पड़ी पछताती रहीं। किसी ने उनकी खबर नहीं ली। नानू भी उन पर इतनी क्रोधित थी कि उसने भी उनसे खाने पीने को नहीं पूछा। वह अपना थोड़ा बहुत जो भी समान था उसे उठा कर चम्पा के घर चली गयी।

आखिर राधा और गोपी दोनों बहिनों ने निश्चय किया कि वे नदी में डूब कर प्राण त्याग देंगी। यह सोच कर दोनों एक रात को घर से निकल पड़ीं और नदी में जहाँ उन्होंने एक बार चम्पा को डुबोया था वहीं जा कर अथाह पानी में कूद पड़ीं।

इधर चम्पा के घर में खूब चहल-पहल थी। चिकमिक और कुही भी अभी वहीं थे। गंधराज बड़े प्यार से उनकी खातिरदारी कर रहा था। उसने दोनों के लिए अच्छे वस्त्र सिलवाये जिन्हें पहिन कर वे कभी जंगली थे ऐसा लगता ही नहीं था। दोनों के रहन-सहन में भी दो चार दिनों में ही काफी अन्तर आ गया था। भाषा भी उन्होंने शहर की काफी सीख ली।

आठ दिन रहने के बाद चिकमिक ने कहा कि अब हम अपने देश जायेंगे। तब गंधराज ने उनके जाने का प्रबन्ध किया। जहाज तैयार करवाया। उनके खाने-पीने के लिए खूब सामान रखा। विदायी में भी अच्छी कीमती चीजें दीं और उन्हें टापू तक पहुँचाने खुद साथ चला। चम्पा और बच्चे के साथ तो अब नानू थी इसलिए उसे चिन्ता नहीं थी। राधा और गोपी भी उस घटना के बाद घर से नहीं निकली थीं। इसलिए उनका भी कोई भय अब नहीं था।

जिस दिन सुबह जहाज टापू के लिए रवाना हुआ उससे पहिली रात को ही राधा और गोपी आत्महत्या करने के लिए नदी में डूबी थीं, जिसकी खबर किसी को नहीं लगी थी। किसी को उनकी चिन्ता भी नहीं थी। तीसरे दिन सुबह जहाज टापू के किनारे पहुँचा तब एकाएक गंधराज चीख पड़ा।

"देखो-देखो, किनारे पर दो लाशें पड़ी हैं।"

सबने देखा कि दो स्त्रियाँ टापू के किनारे पड़ी हैं। गंधराज, चिकमिक और कुही तीनों यह देख कर आश्चर्य से चीख पड़े कि वे गोपी और राधा थीं।

सबने उन्हें उठा कर जहाज पर ले लिया। अभी तक दोनों जीवित थीं किन्तु बेहोश हो गयी थीं। वैसे तो गंधराज, चिकमिक और कुही को टापू पर पहुँचा कर लौटनेवाला था

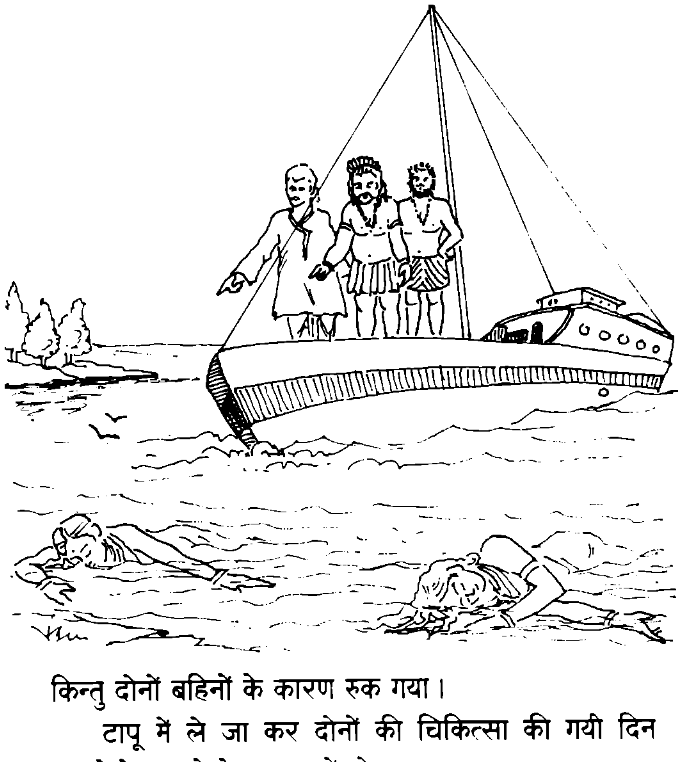

किन्तु दोनों बहिनों के कारण रुक गया।

टापू में ले जा कर दोनों की चिकित्सा की गयी दिन भर बेहोश रहने के बाद उन्हें होश आया।

वे सोचने लगीं—"क्या हम मरी नहीं ? क्या इन लोगों ने हमें डूबने से बचा लिया ?"

उन्होंने अपने चारों तरफ देखा। चिकमिक की झोपड़ी को देख कर उन्होंने समझ लिया कि वे किसी नये स्थान में हैं। राधा ने कहा—"गंधराज हमें क्यों बचा लिया ? हमने तुम्हारे और चम्पा के साथ बहुत बुराई की ।"

गोपी बोली—"हमें मर ही जाना था। आज तक हमने कोई भी अच्छा काम नहीं किया है। हमारे जैसे आदमी का मर जाना ही अच्छा है।"

दोनों दुःख से फूट-फूट कर रोने लगीं। गंधराज का हृदय उन दोनों को पछताता देख कर दया से भर गया। उसने उन्हें बहुत समझाया—"तुम लोग दुःखी मत होओ। जो आदमी गलती करके उसे मान लेता है वह बुरा नहीं माना जाता। सुबह का भूला यदि शाम को घर वापस आ जाता है तो वह भूला नहीं कहलाता। तुम लोग अब समझ गयी हो कि तुमने गलती की थी इसलिए अब भविष्य में गलती नहीं करोगी। ईश्वर भी ऐसे लोगों को क्षमा कर देता है।"

"लेकिन तुम हमें क्षमा नहीं कर सकते, चम्पा हमें क्षमा नहीं कर सकती। हम दोनों ने अपनी प्यारी बहिन को बहुत कष्ट दिया है।" दोनों ने सिसकते हुए कहा।

गंधराज ने कहा—"नहीं, मैं अब तुमसे नाराज नहीं हूँ। मैंने तुम्हें क्षमा किया और चम्पा, उस बेचारी ने तो कभी तुम लोगों के खिलाफ एक शब्द भी नहीं कहा। वह तो तुम्हें माफ कर ही देगी। मेरे साथ चलो।"

इस प्रकार बहुत समझाने-बुझाने के बाद दोनों बहिनों का रोना बन्द हुआ। चिकमिक और कुही ने दोनों की खूब सेवा की जैसे कभी चम्पा और उसके बच्चे की की थी। अब इनका स्वभाव बदल गया था, इनके अन्दर भी सद्बुद्धि और दया आ गयी थी तथा दूसरे के लिए क्रोध और ईर्ष्या कम हो गयी थी।

अपने पिछले कार्यों को सोच कर इन्हें अपने ऊपर ही शरम आने लगती थी। यहाँ टापू में इनके पिछले कामों को गंधराज को छोड़ कर कोई नहीं जानता था इसलिए सब इनका आदर और सम्मान करते थे।

एक दिन राधा ने कहा—"गोपी इस टापू को छोड़ कर मेरे जाने की इच्छा नहीं है। चिकमिक और कुही हमारा कितना ध्यान रखते हैं। वहाँ घर पर हमारा कोई नहीं है। चम्पा को अब हम मुख नहीं दिखा सकतीं। माँ के दिल में भी हमारे लिये प्यार नहीं है। क्यों न हम यहीं रह जायें।"

गोपी ने कहा—"राधा, तूने तो मेरे मुख की बात छीन ली। मैं भी यहाँ से नहीं जाना चाहती। हम यहीं रह कर मेहनत करके खेती-बारी करेंगी और अपने खाने-पीने के लिए कुछ पैदा कर लेंगी। चलो चिकमिक से पूछें कि वह हमें यहीं रहने देगा।"

दोनों बहिनें झोपड़ी से बाहर आयीं जहाँ चिकमिक और कुही एक साथ बैठे कुछ बातें कर रहे थे। दोनों आकर वहीं बैठ गयीं। राधा ही पहिले बोली—"चिकमिक, अब हम दोनों घर वापस नहीं जाना चाहतीं। हमें यह टापू और तुम लोग बहुत अच्छे लगते हो। क्या तुम लोग हमें यहाँ रहने दोगे ?"

गोपी बोली—"हम भी तुम्हारे साथ मेहनत करेंगी। अपने रहने के लिए अलग झोपड़ी बना लेंगी, तुम्हें कष्ट नहीं होने देंगी।"

चिकमिक इन दोनों की बातें सुनते ही खड़ा हो गया और खुशी से बोला—"इससे ज्यादा खुशी की बात और क्या होगी। मैं तो खुद नहीं चाहता था कि तुम लोग जाओ। अभी कुही और मैं तुम्हीं लोगों के बारे में बात कर रहे थे। और यह बात तुमने क्या कही कि अलग झोपड़ी बना लेंगी, नहीं, नहीं, गोपी....तुम....मेरे साथ रहोगी।"

"और राधा....मेरी झोपड़ी में रहेगी।" कुही ने कहा।

दोनों बहिनों ने शरमा कर सिर नीचा कर लिया। आज जो प्यार उन्हें उन दोनों जंगलियों से मिला वह जीवन में कभी नहीं मिला था। दोनों की प्रसन्नता का अन्त नहीं था। दूर से उन्हें गंधराज आता दिखाई दिया। चिकमिक ने वहीं से चिल्ला कर कहा—"गंधराज, अब राधा और गोपी यहीं रहेंगी। मेरे साथ गोपी और कुही के साथ राधा। तुम तो राजी हो न ?"

गंधराज ने इस नयी बात पर आश्चर्य से दोनों बहिनों की ओर देखा मानो पूछना चाहता हो कि क्या यह सही है ? दोनों ने मुस्करा कर सिर नीचा कर लिया और इस प्रकार बता दिया कि वे इस टापू में चिकमिक और कुही के साथ रहने को तैयार हैं।

गंधराज इन दोनों के निर्णय से खुश हुआ। उसने कहा—"तब तो मुझे आज ही घर वापस चल देना चाहिए। केवल तुम दोनों के लिए ही रुका था।"

चिकमिक एकाएक बोल पड़ा—"अरे वाह, गंधराज हम आपको आज कैसे जाने दे सकते हैं ? आज रात को तो आप को रुकना ही पड़ेगा क्या हम लोगों के विवाह में शामिल नहीं होंगे ? क्या हमें अपना आशीर्वाद और शुभकामनाएँ नहीं देंगे ?"

कुही यह सुनते ही जंगल में दौड़ गया। थोड़ी देर में ही जंगल नगाड़ों की आवाज से गूँज गया और इन लोगों के विवाह का समाचार मिनटों में ही टापू के इस छोर से उस छोर तक गूँज गया।

नीना की भेंट

बेचारा बंटू बीमारी से बहुत दुबला और कमजोर हो गया था। लगभग एक माह उसे चारपाई पकड़े हो गया था। डाक्टरों ने उसे खतरे से बाहर तो बता दिया था किन्तु घर से बाहर जाने और चलने-फिरने को बिलकुल मना कर दिया था।

बंटू ने डाक्टर की बात सुनी तो बहुत देर तक वह अपने आँसू न रोक सका। वह ऊब उठा था घर के अन्दर रहते-रहते । वह बाहर घूमना-फिरना चाहता था। दशहरे के दिन भी वह चारपाई पर ही पड़ा रहा। सब बच्चों के साथ वह मेला देखने न जा सका था। अब दीवाली भी नजदीक है, उसे बाहर जाने की सख्त मनाही है। उसके दु:ख का पार नहीं है।

दीवाली पर दूकानें सजी होंगी। उन दूकानों में तरह तरह की मिठाइयाँ और खिलौने होंगे। वह कुछ भी न देख पायेगा। चल सकता तो वह भी जाता और अपनी पसन्द की वस्तुएँ मोल ले आता।

बंटू की बहन नीना उससे केवल दो वर्ष ही बड़ी थी। भाई को बहुत प्यार करती थी नीना। उसकी बीमारी के कारण वह बहुत दु:खी थी। उसे प्रसन्न रखने का वह हर तरह से प्रयत्न करती। स्कूल से आ कर वह दूकानों पर जाती और फिर बंटू से घंटों उन दूकानों के विषय में बातचीत किया करती।

दूकानों पर खिलौने ही खिलौने हैं। एक दूकान पर एक बनारसी खिलौनेवाला बैठा है। कितने रंग-बिरंगे नये-नये खिलौने हैं उसके पास ! वहाँ बच्चों की भीड़ लगी रहती है, कुत्ते की जोड़ी तो बहुत ही बढ़िया है। लम्बे-लम्बे कान हैं उनके। मालूम पड़ता है जैसे वे अब बोलना ही चाहते हैं। पटाखेवाला भी नये-नये प्रकार के पटाखे लाया है इस बार। साँप, छछूंदर, फुलझड़ी, अनार, रंगीन दियासलाई इत्यादि।

नीना इन सबका वर्णन खूब समझा कर करती। बंटू आँखें बन्द कर लेता और नीना के वर्णन के अनुसार दूकानों की चीजों की कल्पना करता रहता।

एक वस्तु का वर्णन नहीं किया था नीना ने। वह थी एक हिरनों की जोड़ी। बंटू को हिरन बहुत अच्छे लगते थे। पिछले वर्ष की दीवाली पर भी वह एक हिरन लाया था। किन्तु इस बार के हिरनों के मुकाबले वह कुछ भी नहीं था। बड़ा सुन्दर रंग है इनका। बड़े-बड़े सींग हैं। गर्दन उठाये कितने अच्छे लगते हैं। उनकी सुन्दर आँखें कितनी भली लगती हैं, बंटू उन्हें देख ले तो प्रसन्नता से नाच उठे, किन्तु दूकानवाला बहुत दाम बताता है उनका। चार रुपये कह रहा था। कल नीना ने दो रुपये तक लगा दिये थे। इतना ही तो है नीना के पास।

बहुत दिनों से बचाती आयी है नीना अपने पैसे। अब उसके पास दो रुपये हो गये हैं। वह चाहे तो अपने लिए अच्छी-अच्छी वस्तुएँ खरीद सकती है, किन्तु नहीं, वह तो बंटू के लिए हिरनों की जोड़ी ही खरीदना चाहती है। दूकान वाला ढाई रुपये तक में दे देगा। अब आठ आने कहाँ से लाये, यही समस्या है।

शाम को दीवाली है। सुबह से नीना मन-ही-मन हिरनों के लिए परेशान है। कहीं से आठ आने उसे मिल जाते तो कितना अच्छा होता।

भोजन करने के बाद नीना के पिता आये और उसे बुला कर दो रुपये देते हुए बोले—"नीना, ये तुम्हारे लिये हैं। जो चाहो, ले लेना।"

नीना की प्रसन्नता का अन्त नहीं था। खुशी के मारे उसकी आँखों में पानी आ गया। सन्दूक से अपने रुपये निकाल कर वह तुरन्त दौड़ती हुई खिलोनेवाले की दूकान पर गयी। ढाई रुपये दे कर उसने हिरन मोल ले लिये। अभी डेढ़ रुपये और बचे थे उसके पास। उसने सोचा, कुछ अपने लिये भी खरीद ले। किन्तु एकाएक पटाखेवाले पर उसकी दृष्टि गयी। बंटू ने पिछले साल दीवाली पर पटाखे छुटाये थे। छछूंदर और साँप देख कर वह कितना हँसा था। नीना ने तुरन्त कुछ साँप, छछूंदर, फुलझड़ियाँ और रंगीन दियासलाइयाँ खरीद लीं। सब सामान अपने दुपट्टे में छिपाती हुई वह घर की ओर चल दी। बहुत प्रसन्न थी नीना। अपने लिए कुछ न खरीद कर भी उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

बंटू चारपाई पर पड़ा उदासी से बाहर की खिड़की की ओर देख रहा था। बाहर से बच्चों के खेलने की आवाजें आ रही थीं। नीना ने चुपके से झाँका। बंटू दूसरी ओर करवट किये हुए था। वह अपने ही विचारों में इतना उलझा था कि नीना के आने की उसको आहट ही न मिली। नीना पलँग पर बैठ गयी। हिरनों को देख कर बंटू एकदम खड़ा हो गया। उन्हें हाथ में ले कर छाती से चिपटा कर कहा—"दीदी, ये तुम कहाँ से लायी ? बहुत ही सुन्दर हैं ये।"

"ये तुम्हारे लिये लायी हूँ और ये पटाखे भी।" कहते हुए नीना ने पटाखों का थैला बंटू के आगे डाल दिया।

एकाएक बंटू ने पूछा—"और दीदी, तुम अपने लिये क्या लाई हो ?"

बात बदलते हुए नीना ने कहा—"जरा सी भी देर हो

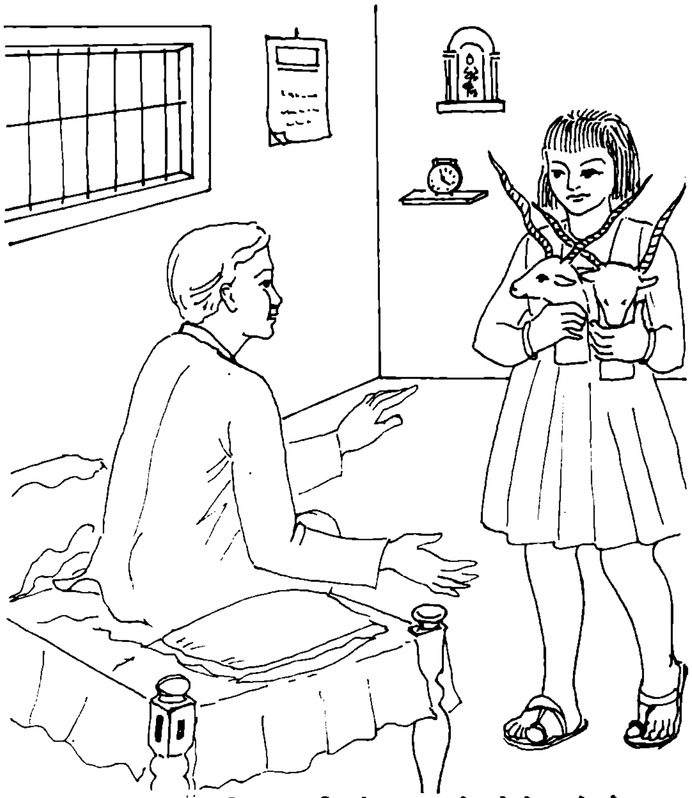

जाती न बंटू, तो ये हिरन न मिलते। एक ही जोड़ी बची थी उसकी दूकान में।"

इसी समय बच्चों के माता-पिता कमरे में आ गये। वे बंटू को प्रसन्न देख कर तथा नीना का त्याग और भाई पर उसकी ममता देख कर बहुत ही खुश थे। बंटू, नीना, माता और पिता सभी प्रसन्न थे।

शाम को पिता ने एक दफ्ती का डिब्बा नीना के हाथ में दिया। एक सुन्दर फ्राक, बालों की सुनहली चोटी और हाथों के लिए एक जोड़ी नये डिजाइन के कंगन थे नीना के लिए। नीना अपना पुरस्कार पा कर प्रसन्न हो उठी।

उन्होंने शिकार खेला

"आओ शिकार खेलें!"

"किन्तु शिकारी मैं ही बनूँगा।"

"पर बन्दूक कहाँ है तुम्हारे पास?"

"तुम्हारे पिता जी के पास तो है, वही दे देना।"

"और मैं?"

"तुम शिकार बन जाना।"

कोतवाल साहब का पुत्र नवीन और दीवान साहब का एकमात्र पुत्र विनोद दोनों पड़ोसी थे।

दोनों की आयु भी लगभग एक ही थी। दस या बारह वर्ष के बीच के थे दोनों। एक-दूसरे के बिना किसी का मन नहीं लगता था। चंचल, भोले, सुकुमार, दोनों बालकों में बचपन साकार रूप में वर्तमान था। दोनों अपने माता-पिता की लाड़ली संतानें और अपने वंश की आशा और प्रकाश थे।

बगीचे में खेल हो रहा था शिकारी और शिकार का। दोनों की हँसी और किलकारी से उपवन गूँज उठा। थोड़ी देर में खेल गम्भीर हो उठा।

विनोद शेर बना था। बड़ी जोरों से गरज उठता था वह रह-रह कर। कभी घर के पीछे और कभी चमेली की झाड़ी में जा छिपता था। पीपल के वृक्ष के तले पत्थरों का ढेर था जिनके बीच-बीच में घास और जंगली लताएँ उग आयीं थीं। उन पत्थरों और घास की आड़ ले कर शेर लेट जाता और स्वाभाविक ढंग से दो-एक पत्थर लुढ़का देता।

शिकारी नवीन सतर्कता से हाथों में दुनाली बंदूक सँभाले बोझ से दबा-सा, घूम रहा था। बंदूक के कारण वह विनोद की बराबरी में दौड़ने में असमर्थ था। उधर शेर अपनी उछल-कूद में कला-बाजियाँ दिखा रहा था। शेर का शिकार था। खतरनाक काम था। पल-पल पर भय था कि कहीं शेर हमला न कर दे। कभी कोई पत्थर लुढ़कता तो कभी कोई झाड़ी हिल उठती। बंदूक में गोली फालतू एक भी नहीं है, कारतूस का पट्टा पिता जी के कमरे से ले आते तो कितना अच्छा होता, यही सोच रहा था नवीन। भरी हुई गोली को ठीक ऐन मौके पर काम में लायेंगे नवीन ने निश्चय किया।

बाग में सन्नाटा था। शेर बहुत सावधान था। वह अवसर ढूँढ़ रहा था कि कब शिकारी पर हमला करें और कब शिकारी की गर्दन दबोच लें। साँस रोक कर वह झुका हुआ आगे बढ़ रहा था। परिश्रम और समय की गम्भीरता से पसीने की धारें बह रही थीं।

एक झाड़ी में खड़खड़ाहट हुई। शिकारी ने बंदूक सँभाली और दबे पाँव झाड़ी की ओर बढ़ा किन्तु यह क्या? कुत्ता टाइगर निकल कर एक मेंढक के पीछे भागा था। अभी शिकारी टाइगर की ओर देख ही रहा था कि पीछे से शेर गरज उठा। मौका देख कर उसने छलाँग मारी और एक पल में वह छलाँग मार कर शिकारी की गर्दन पर सवार होनेवाला था।

किन्तु शिकारी भी कच्चा न था। तुरन्त फुर्ती से घूम उठा और बन्दूक की नली शेर के मुख पर रख दी।

शेर घबरा गया। बन्दूक आँखों के सामने देख कर विनोद के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गयी। शिकारी ने मौका न चूका। बन्दूक का घोड़ा जोर लगा कर दबा ही दिया। 'हाय'! कह कर शेर बना हुआ बालक विनोद जमीन पर गिर पड़ा। निशाना अचूक था। तड़पने का भी मौका न

मित्रा

घर में कोतवाल साहब दौड़े। बाहर ड्यूटी पर बैठे नौकर दौड़े। बन्दूक की आवाज ने सबको घबड़ा दिया। आवाज बंगले के विस्तृत बगीचे के दूर कोने से आयी थी।

शिकारी बड़ी शान से बन्दूक भूमि पर टेक कर गंभीर मुद्रा से नली पर मुख रखे खड़ा था। उसने शेर मारा था। कोई साधारण बात न थी। उसे अपने काम पर गर्व था।

घटना स्थल पर पहुँचते ही सारी बात समझ में आ गयी। अपने शिकारी-पुत्र को देख कर कोतवाल साहब ने कपाल ठोंक लिया। उन्हें चक्कर आ गया। धम्म से भूमि पर आ गिरे। दीवान साहब भी तब तक दौड़े हुए आ गये। ताजा खून से लथपथ अपने एकमात्र पुत्र के शव को देख कर वे चीख उठे।

झपट कर उन्होंने बेटे को गोद में उठा लिया। उसके मुख को आँखें फाड़े देखते ही रहे। आँखों से एक बूँद अश्रु भी न निकला। धीरे से शव को भूमि पर रख वे पागल से खड़े हो गये।

उनकी गंभीर मुद्रा देख कर अन्य लोग भी घबरा गये कि आखिर कुछ तो दीवान साहब बोलें। लोग उन्हें देख कर रो रहे थे किन्तु दीवान साहब नहीं हिले। उनकी आँखों की पुतलियाँ स्थिर हो गयी थीं। यह दशा देख कर कोतवाल साहब सँभले और रोते हुए दीवान साहब के पास आये। लड़के के हाथ से बन्दूक छीन कर उसे उनके हाथों में देते हुए बोले—"लीजिए एक गोली मेरे ऊपर भी चला कर मेरे

नादान बेटे की गलती की सजा मुझे दीजिए, दीवान साहब !" कहते-कहते कोतवाल साहब बच्चों की तरह रो पड़े। दीवान साहब जैसे सोते से जागे हों। आँखें लाल हुईं और फिर उनमें बादल से घिरते हुए दिखाई दिये। आँसुओं की वर्षा हो उठी। बन्दूक एक ओर पटक दी। बहुत उम्र निकल जाने पर बहुत हौसले का पुत्र था उनका।

नवीन आश्चर्यचकित-सा खड़ा हुआ देख रहा था। कोई गलती हो गयी है उससे, कोई बहुत गम्भीर बात है, यह वह महसूस कर रहा था। दीवान साहब और अपने पिता को इस प्रकार रोते देख कर वह घबड़ा गया था। डबडबाई आँखों से कभी एक को और कभी दूसरे की ओर देख रहा था। दीवान साहब आगे बढ़े और विक्षिप्त से उन्होंने नवीन को अपनी ओर खींच कर छाती से चिपका लिया। बालक रो पड़ा और दीवान जी भी फफक कर रो पड़े, बड़ा दर्द भरा दृश्य था। सभी अपनी आँखें पोंछ रहे थे। कुछ लोगों की हिचकियाँ बँध गयी थीं। कोई किसी को सान्त्वना नहीं दे पा रहा था। क्या किया जाय किसी की समझ में नहीं आ रहा था।

अंत में दीवान जी ने कोतवाल साहब से कहा—

"जो मेरे भाग्य में था हो गया। यह भी तो हो सकता था कि शिकारी मेरा पुत्र होता। ये नादान बच्चे हैं। गलती हम लोगों की है कि बन्दूक जैसी खतरनाक चीज बच्चों से दूर नहीं रखते हैं।"

बड़ा कौन ?

एक राजा थे। नाम था शुद्धोधन। बड़े दयालु राजा थे। उनके एक पुत्र था ; सिद्धार्थ। बहुत सुन्दर, बहुत सरल। पिता के स्वभाववाला। उससे किसी का दुःख नहीं देखा जाता था। सब की मदद करता। जानवरों को प्यार करता। शिकार खेलने जाता तो हिरनों को कूदते और खरगोशों को दौड़ते देख कर तीर को धनुष पर से उतार लेता और सोचता, "कितने सुन्दर भोले पशु हैं ? ये क्या मारने के लिए हैं ? इनकी तो रक्षा करनी चाहिए।"

सिद्धार्थ का एक छोटा चचेरा भाई भी था। उसका नाम देवदत्त था। वह भी राजकुमार था। उसको शिकार खेलना अच्छा लगता था। एक दिन उसने एक उड़ते हुए हंस को देख कर तीर मारा। उसी वन में सिद्धार्थ भी घूमने गये हुए थे। तीर लगने पर हंस छटपटाता हुआ जमीन पर आ गिरा। तीर पंख में घुस गया था। खून बह रहा था। सिद्धार्थ ने देखा। दौड़ कर उसे गोद में उठा लिया।

"हाय ! किसने मारा है इस बेचारे पंछी को ? खून निकल रहा है।" उन्होंने उसके तीर को निकाला। घाव को पोछा, हाथ से दबा कर खून को रोका।

"जरा मैं भी तो देखूँ तीर चुभ कर कैसा लगता है ?"

सिद्धार्थ ने तीर अपनी बाँह में चुभा लिया, आँखों से आँसू निकलने लगे। दर्द से हलकी-सी चीख निकल गयी ! "राम ! राम ! कितना दर्द हुआ मुझे। फिर इस छोटे से पंछी को कितना कष्ट हो रहा होगा ?"

उन्होंने उसकी चोंच में पानी डाला। प्यार से उसके पंख सहलाये। वह सिद्धार्थ की छाती से चिपक गया। दर्द के मारे वह अभी काँप रहा था। सिद्धार्थ ने कहा—"पंछी डर मत, तुझे अब मुझसे कोई नहीं छीन सकता। जब तक तू उड़ने लायक नहीं हो जाता मैं तेरी देख-भाल करूँगा। फिर तू उड़ जाना अपने घर।"

पंछी ने जैसे सिद्धार्थ की बात समझ ली। आराम से उसने आँखें बन्द कर लीं।

देवदत्त ने हंस को तीर मारा था। हंस को गिरता हुआ भी देखा था। वह उसे लेने चला। देखा कि उसका भाई सिद्धार्थ बड़े प्यार से उसे अपनी गोद में लिये है। उसने सोचा, "मेरा शिकार सिद्धार्थ लेना चाहते हैं ? मारा तो मैंने है और लेंगे ये ? मैं नहीं लेने दूँगा।"

उसने सिद्धार्थ से कहा—"मैंने इसका शिकार किया है। यह मेरा हुआ। मेरी वस्तु तुम कैसे ले सकते हो ? लाओ मेरा शिकार मुझे दे दो।"

लेकिन सिद्धार्थ ने हंस नहीं दिया। दोनों राजा शुद्धोदन के पास आये। देवदत्त ने कहा—"चाचा जी सिद्धार्थ मेरा हंस मुझे नहीं देता। इसे मैंने अपने तीर से मारा था।"

राजा ने पूछा—"क्यों बेटा सिद्धार्थ क्या देवदत्त ठीक कहता है कि हंस को उसने मारा था ?

हाँ देवदत्त ने ही इसे तीर से मारा था ? हंस जमीन पर गिर गया तो मैंने उसे उठा लिया। इसका तीर निकाला। इसके प्राण भी मैंने बचाए। यह अब मेरा है। आप ही बतलायें पिता जी क्या मैं इस पक्षी को फिर देवदत्त को दे दूँ और वह इसे फिर मार डाले ?" सिद्धार्थ ने कहा।

राजा ने दोनों राजकुमारों की बातें सुनीं, चिन्ता में पड़ गये। देवदत्त का शिकार है, उसका अधिकार है हंस पर, लेकिन सिद्धार्थ भी तो ठीक कहता है। उसने हंस के प्राण बचाये हैं। राजा ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा—"बेटा देवदत्त यह सही है कि हंस को तुमने मारा है और यह तुम्हारा ही शिकार है किन्तु सिद्धार्थ ने इसे मरने नहीं दिया। तुमने पक्षी को मारा है, सिद्धार्थ ने जिलाया है। मारनेवाले से बचानेवाला बड़ा होता है। इसलिए हंस पर सिद्धार्थ का ही अधिकार है।"

देवदत्त ने सिर झुका कर राजा के इस न्याय को स्वीकार कर लिया। सब दरबारी एक स्वर में बोल उठे—"सच, मारनेवाले से बचाने वाला बड़ा होता है।"

एक ही रानी

"तो बेटा राजा ने सन्तान के लिए ही दूसरी शादी की और एक सुन्दर और भोली-भाली छोटी रानी ले आये।" नानी ने नन्हें के बालों को सहलाते हुए कहा।

"कुछ दिन बाद ही राजा को खबर मिली कि छोटी रानी के बच्चा होनेवाला है। राजा पहिले से ही रानी के सरल स्वभाव से बहुत प्रसन्न थे, इस खबर ने रानी को राजा का और भी प्रिय बना दिया। बड़ी रानी को यह खटका। उसके मन में ईर्ष्या ने स्थान जमा लिया। वह सोचने

[illegible] राजा इतना प्यार करते हैं, जब [illegible] तब तो मुझे पूछेंगे भी नहीं।''

दास-दासी सभी बड़ी रानी की आज्ञा ज्यादा मानते थे। सब उससे डरते भी थे। यद्यपि हृदय से वे छोटी रानी को ही ज्यादा चाहते थे। बड़ी रानी ने कुछ दास-दासियों को अपनी ओर मिला कर छोटी रानी के साथ चाल खेलने का उपाय सोचा।

''जीजी मुझे तो बड़ा डर लगता है जब बच्चा होगा तो मैं क्या करूँगी ?'' छोटी ने एक दिन बड़ी रानी से पूछा।

''घबराती क्यों है बहिन, मैं तो हूँ। तू डर मत। आँखों पर पट्टी बाँध लेना मैं तेरी देखभाल कर दूँगी।'' बड़ी ने धैर्य बँधाते हुए प्यार से कहा।

कुछ दिनों बाद, छोटी रानी के बच्चा हुआ। यह खबर महल में हवा की तरह फैल गयी। राजा ने पूछा—''क्या हुआ लड़का या लड़की ?''

उत्तर में बड़ी रानी ने एक काले और एक सफेद दो कुत्ते के पिल्ले राजा की गोद में डाल दिये।

''लीजिए आपकी रानी ने बच्चे दिये हैं। इन्तजाम कराइए इनके लालन-पालन का।'' ताने देते हुए रानी ने कहा।

नन्हें ने आश्चर्य से नानी के मुख की ओर देखा—''अरी नानी आदमी के कुत्ते भी पैदा हुआ करते थे क्या पहिले जमाने में ?''

''पागल ! वह तो बड़ी रानी की चाल थी। छोटी के एक लड़की और एक सुन्दर लड़का पैदा हुआ था जिसे रात

को ही एक दासी के द्वारा बड़ी रानी ने नदी के तट पर फिकवा दिया और उनकी जगह दो पिल्ले रख दिये रानी के पास। कुत्तों की कूँ-कूँ की आवाज सुन कर छोटी रानी ने अपनी पट्टी खींच कर फेंक दी। बच्चों की जगह पिल्ले देख कर दुःख से वह पागल-सी हो गयी।

सबेरे अँधेरे में ही एक धोबिन कपड़ा धोने घाट पर आयी। दो कोमल बच्चों को भूख से अपनी उँगली चूसते और रोते देख कर उसके हृदय में माँ का प्यार उमड़ आया। दौड़ कर उसने बच्चों को छाती से चिपटा लिया और घर ले आयी। बड़े प्यार से वह उन्हें पालने लगी।

''और छोटी रानी का क्या हुआ नानी ?''

बेचारी छत पर बैठ कर कौआ हँकाया करती थी। पिल्लों को पैदा करने की राजा ने उसको यही सजा दी थी। कभी किसी को दया आती थी तो कौआ हँकनी को दो रोटी दे देता था। वह आँसू पी कर उनको खा लेती। इस तरह वह अपने दुःख के दिन बिताने लगी।

उधर उस धोबिन के घर वह राजकुमार और राजकुमारी दोनों लाड़-प्यार में पलने लगे। धोबिन उस अभागी रानी की और पिल्लों के पैदा होने की कहानी उन्हें सुनाया करती थी। उनके लिए उसने काठ के घोड़े ले दिये थे जिन पर चढ़ कर दोनों खेला करते और धोबिन कपड़े धोती रहती। एक दिन दोनों नदी तट पर खेल रहे थे और कह रहे थे—''काठ के घोड़े पानी पी।''

भला काठ के घोड़े कैसे पानी पीते ? दोनों बच्चे उन्हें कोड़े से मारते। रानी की एक दासी भी नदी में स्नान कर रही थी। उसने कहा—''बेवकूफ बच्चो, काठ के घोड़े भी क्या पानी पीते हैं ?''

''बेवकूफ दासी, कोई रानी भी क्या कुत्ते के पिल्ले पैदा करती है ?'' बच्चों ने हँस कर पूछा।

धोबिन दौड़ कर आयी। उसने डर कर बच्चों को अपने आँचल में छिपा लिया कि कहीं बच्चों की बातें बड़ी रानी तक न पहुँच जाये और कोई अनर्थ न उठ खड़ा हो।

दासी एकाएक गम्भीर हो उठी। जल्दी-जल्दी स्नान करके महल की ओर चल दी। उसने जा कर रानी से सब बातें कहीं। रानी चौंक उठी कि कहीं ये वे ही बच्चे तो नहीं हैं जिन्हें फिंकवाया गया था ?

सिर दर्द का बहाना ले कर वह पड़ रही। राजा को पता लगा। वैद्य आये, तरह-तरह की दवा दे गये। किन्तु रानी का दर्द न गया। रानी ने कहा—''राजा जी मैं न बचूँगी, मुझे तो धोबिन के दोनों बच्चों का खून ला दो। उसे सिर में लगाने पर ही मेरा दर्द जायेगा।''

राजा ने मंत्री को आज्ञा दी कि बच्चों को वन में ले जा कर मरवा डाला जाय। मंत्री उन्हें जंगल में ले आया। वहाँ

एक साधू मिले। बच्चों को देख कर उन्होंने कहा—"इन बच्चों को मत मारो। मैं इन्हें आदमी से पेड़ बना देता हूँ। एक दिन यह राजकुमार ही तुम्हारा राजा बनेगा। जब छोटी रानी इन पेड़ों को छुयेगी तभी ये दोनों फिर आदमी बन जायेंगे। तुम किसी से यह बात मत बताना और एक बकरे का खून ले जा कर रानी को दे दो। कहना यही बच्चों का खून है। उसकी दुष्टता का फल उसे एक दिन मिल जायेगा।"

मंत्री को भी बच्चों पर दया आयी। उसने वैसा ही किया जैसा साधू ने बताया था।

कुछ दिन बाद लोगों ने देखा कि जंगल में दो पौधे निकल आये हैं। एक आम का और एक चम्पा का। समय पा कर उनमें फूल लगे, फल आये। चम्पा के फूल से सारा वन महक उठा। आम के फलों को देख कोयल मतवाली हो कर झूम उठी। एक दिन एक कौवे ने एक चम्पा का फूल राजा के सामने गिरा दिया। राजा उसे देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। ऐसा फूल तो उसने जीवन में कभी नहीं देखा था। इतना सुन्दर और सुगन्धित था वह कि राजा थोड़ी देर के लिए मंत्र-मुग्ध हो गया। उसने अपने आदमियों से कहा—"ऐसे फूल और लाओ और मुझे बताओ कि इसका पेड़ कहाँ है।"

आदमी चारों ओर गये और बहुत दिनों बाद उस स्थान पर आये जहाँ चम्पा और आम के वृक्ष थे। आदमियों को देख कर चम्पा के पेड़ से आवाज आयी—

"ओ भइया बाबुल ने फूल मँगाये,
लेने को राजा के चाकर हैं आये।"

आम से आवाज आयी—

"बहिना न इनका लगे तन पर हाथ,
बढ़ चल री बहिना हम छू लें आकाश।"

दोनों पेड़ बढ़ने लगे और इतने बढ़े कि अनेक उपाय करने पर भी राजा के आदमी फूल न तोड़ सके। लाचार हो कर वे लोग वापस लौट आये और राजा से सब कुछ बता दिया। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा—"हम चलेंगे और स्वयं वह कौतुक देखेंगे। हमारे साथ महल के सभी जन चलेंगे।"

सभी चले। बेचारी कौआ-हँकनी को किसी ने नहीं पूछा। तब राजा ने कहा—"इसे भी ले लो, यह अकेली कहाँ रहेगी ?"

वन में जाते-जाते वे अपने मन में सोच रहे थे कि कौन ऐसा भाग्यशाली व्यक्ति होगा जो फूल को छू सकेगा ?

राजा ने प्रत्येक व्यक्ति को बारी-बारी से आज्ञा दी कि फूल तोड़ो। किन्तु जैसे ही कोई आदमी पेड़ों के पास आता पेड़ ऊँचे हो जाते। आखिर राजा स्वयं पेड़ के पास आये तभी चम्पा के पेड़ से आवाज आयी—

"देखो भइया बाबुल आये,
क्या हम अब नीचे झुक जायें ?"

आम से आवाज आयी—

"बहिना न इनका लगे तन पर हाथ,
बढ़ चल री बहिना हम छू लें आकाश।"

राजा परेशान था, बात क्या है ? लगभग सभी लोगों ने कोशिश कर ली थी। एक कौआ-हँकनी ही रह गयी थी। अन्त में राजा ने उसे भी आज्ञा दी कि वही फूल तोड़े। चम्पा और आम ने कहा—

"आ जा री माँ, आ जा री माँ,
सब दुःख-दर्द भुला दे री माँ !"

चम्पा ने कहा—

"भइया आओ झुक जायें,
माँ के चरण चूम आयें।"

कौआ हँकनी की गोद में फूलों से लदी चम्पा की तथा आमों से भरी डालें झुक कर आ गयीं। बहुत दिनों से दुःख भोगती हुई माँ के हृदय में प्रेम का सागर उमड़ आया। सिसकी भर-भर कर वह रोने लगी। आँखों से आँसुओं की धारा बह चलीं। सभी लोगों की आँखें छलछला आयीं। सभी को महान् आश्चर्य हो रहा था। केवल बड़ी रानी और कुछ दास-दासियों के चेहरे भय से सफेद हो रहे थे। राजा ने आज्ञा दी कि पेड़ काटे जायँ। बढ़ई कुल्हाड़ी ले कर बढ़े। पेड़ झुके ही रहे। पेड़ों पर कुल्हाड़ी की चोटें पड़ने लगीं। पेड़ों से आवाज आयी—

"बढ़ई धीरे-धीरे काट, मेरे अंग न कट जायँ,
कुल्हाड़ी धीरे-धीरे मार, मेरे घाव न लग जायँ।"

पेड़ कटते ही आम के बीच से एक सुन्दर बालक और चम्पा के बीच से एक सुन्दर बालिका निकल आयी। दोनों ने आगे बढ़ कर राजा के पैर छुए और छोटी रानी अर्थात् कौआ-हँकनी की गोद में जा बैठे। राजा ने प्यार से दोनों को अपने पास बुलाया और उनसे उनका परिचय पूछा। शुरू से अन्त तक उन्होंने अपनी कहानी सुना डाली। किस तरह पैदा होते ही बड़ी रानी ने फिंकवा दिया, धोबिन के यहाँ से भी पकड़वा कर मरवाना चाहा। ये सारी बातें राजा से उन्होंने कह सुनायी। राजा ने उसी समय छोटी रानी से क्षमा माँगी और बड़ी रानी को मरवा डालने की आज्ञा दी। किन्तु राजकुमार और राजकुमारी ने पिता से प्रार्थना की कि बड़ी माता को क्षमा कर दिया जाय। राजा ने बहुत कहने-सुनने पर उसे मरवाया तो नहीं किन्तु कैदखाने में डलवा दिया और छोटी रानी तथा बच्चों को ले कर धूम-धाम से अपने राज्य में लौट आये और सुख से दिन काटने लगे।

"नानी, धोबिन का क्या हुआ ?" नन्हें ने पूछा।

"राज्य में लौटने पर राजकुमार और राजकुमारी ने उसे अपने महल में ही बुला लिया। दोनों उसे अपनी माँ की तरह प्यार करते थे और उसे तो मानो स्वर्ग का ही आनन्द मिल गया था। दोनों को फिर से पा कर वह फूली नहीं समाती थी। वह उन्हें उतना ही प्यार करती थी जितना मैं अपने नन्हें बेटे को करती हूँ।" नानी ने नन्हें का मुख चूम कर कहा।

नन्हें हँस पड़ा और नानी से चिपट कर सो गया।

मीनू

चाचा ने मीनू को एक नाली में पड़ा पाया था। कुत्ते उस पर भूँक रहे थे और वह अपनी नन्हीं जान बचाने की कोशिश में गन्दी, कीचड़ भरी नाली में गिर पड़ा था। सर्दी के दिन थे, वह कूँ-कूँ कर रहा था। जाड़े के मारे बेहद काँप भी रहा था। कुछ सर्दी के कारण और ज्यादा अपने से बड़े कुत्तों के डर के कारण, जो उसे फाड़ खाने को तैयार थे। किन्तु पानी की नाली में वे कुत्ते भी नहीं कूदना चाहते थे।

चाचा को दया आ गयी और मीनू को निकाल कर वह अपने साथ ले आये। उसे अपने नहाने के साबुन से नहलाया जिसके लिए अम्मा ने बहुत डाँट-फटकार सुनायी। साबुन फेंक दिया गया तो बस वह साबुन मीनू के लिए ही हो गया। मीनू को पा कर हम लोगों ने एक और मित्र पा लिया था।

कहने को तो वे चाचा थे, हमसे बड़े, किन्तु पिता जी के बराबर बड़े नहीं थे। स्वभाव में हम जैसे ही। अम्मा उन्हें भी ऐसे ही प्यार करती और डाँटती थी जैसे हम लोगों को।

मीनू एक सुन्दर कुत्ता निकला। बड़े-बड़े बाल, रंग भूरा और आँखों के चारों तरफ काला घेरा था उसके, जैसे उसने चश्मा पहिन रखा हो। माँ हम सब पर खीझती ही रहतीं क्योंकि स्कूल जाते समय भी हम मीनू से ही खेलते रहते थे और कभी-कभी तो मिन्नी इसी कारण स्कूल भी देर से पहुँचती थी। स्कूल से आते ही हम सब उससे चिपट जाते, किताबें कहीं पटकते, जूते कहीं खोल कर डालते, कोशिश यह रहती कि कौन पहिले मीनू को अपने वश में करे। और मीनू था कि सब को बुद्धू बनाता। एक की गोद में बैठता तो दूसरे की आवाज सुन कर उसके पास चला जाता। सबसे ज्यादा वह चाचा को प्यार करता।

उनके कालेज से आते ही वह हम सब को छोड़ कर दौड़ता हुआ उनके पास जाता और दोनों पंजों से खड़ा हो कर उनके ऊपर चढ़ने की कोशिश करता। चाचा हँसते हुए विजयी वीर से हम लोगों को देखते और हम लोग हारे, ललचाये से उनको देखते रह जाते। किन्तु कुछ भी हो हमारा मीनू को प्यार करना कम नहीं होता था। हमारा नौकर पित्तू भी उसको उतना ही प्यार करता जितना हम लोग। वह उसे नित्य नदी नहलाने ले जाता। शाम को उसको विशेष भोजन खिलाता जिसे अम्मा घर पर नहीं बनने देती थीं।

पिता जी हम लोगों को सुबह-सुबह जलेबी खाने के लिए रोज पैसे देते थे। मीनू भी धीरे-धीरे जलेबी का बहुत

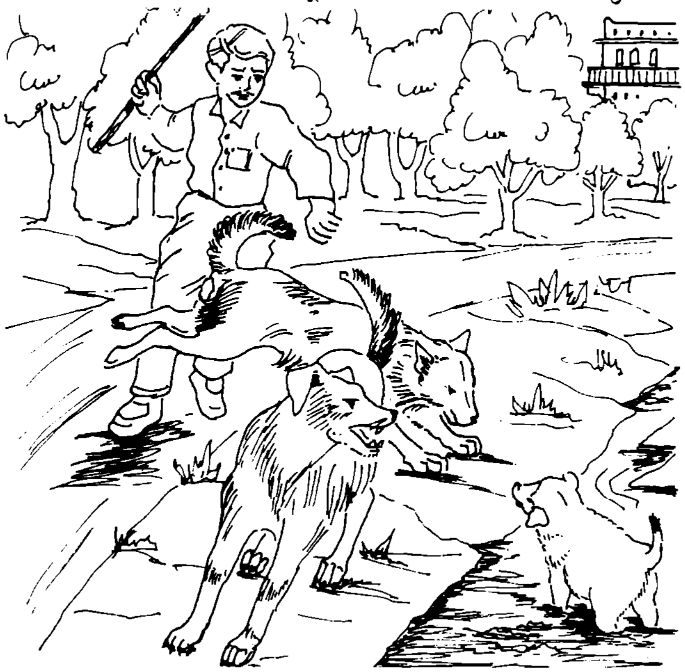

शौकीन हो गया। जब तक वह जलेबी न पा जाता भों-भों चिल्लाता ही रहता। जलेबीवाले की आवाज सुनते ही वह इधर-उधर दौड़ने लगता। हम लोगों के पढ़ने के कमरे में आकर किसी का कपड़ा पकड़ कर खींचता तो किसी की किताब। कभी बाहर जलेबीवाले के पास जाता कभी कमरे में हम लोगों के पास। जब हम लोग चाचा की आज्ञा बिना पढ़ाई छोड़ कर नहीं उठते तो चाचा का पैजामा पकड़ कर खींचता। उस समय उसकी बेचैनी देखते ही बनती थी।

एक दिन चाचा ने हम लोगों को पढ़ने से नहीं उठने दिया और कहा कि घण्टे भर पढ़ने के बाद ही उठोगे, किन्तु मीनू क्यों मानने लगा। उसने चाचा को तंग कर डाला। उन्होंने कुछ पैसे फेंक कर कहा—"जा, खा ले जलेबी। बड़ा आया है खानेवाला।"

सचमुच मीनू ने दाँतों से पैसे उठाये और सीधा जलेबी वाले के पास पहुँच गया और उसके पैर पर पैसे रख कर अलग खड़ा हो गया। जलेबीवाला मौज में था और मीनू उसकी थाल की ओर देख कर भौंके जा रहा था, आखिर जलेबीवाले ने एक दोने में जलेबी उसके सामने रख दी। बस उसकी बन आयी। बड़े स्वाद से उसने जलपान किया फिर पूँछ हिलाता हुआ हम लोगों के पास आकर बैठ गया। उस दिन से उसकी जलेबी के लिए भी पैसे बँध गये।

अब मीनू एक बड़ा कुत्ता बन गया। बहुत समझदार, बहुत वफादार। हम लोगों को स्कूल तक पहुँचा आता। छुट्टी होने के पूर्व वह स्कूल के फाटक पर पहुँच जाता। उसकी इस समझदारी के कारण अम्मा भी उसे बहुत प्यार करने लगी थीं।

एक दिन की बात है। गरमी का दिन था। माँ अँधेरे ही उठीं और चौके में कुछ काम करने चली गयीं। पिता जी नल पर मुँह-हाथ धोने लगे। इतने में बरामदे की खपरैल से एक साँप रेंगता हुआ जमीन पर टपक पड़ा। गिरने से वह कुछ हार-सा गया और इसके पूर्व कि वह सरक कर रसोई घर की ओर बढ़े मीनू ने उसे देखा और तुरन्त उस पर झपट पड़ा। हम सब लोग सो रहे थे। बहुत सबेरा था, अभी अँधेरा दूर नहीं हुआ था। पिता जी को दौरे पर सुबह सात बजे की गाड़ी से जाना था, इसलिए माँ भी नाश्ता बनाने की तैयारी में लगी थी, किसी का ध्यान साँप और मीनू की ओर नहीं गया। दोनों में काफी देर तक लड़ाई होती रही। आखिर में मीनू की जीत हुई और उसने साँप के दो टुकड़े कर डाले। साँप के एक टुकड़े को मुँह में दबाये वह चौके के द्वार पर खड़ा हो गया। माँ ने कुछ ध्यान नहीं दिया और कहने लगीं—"क्या है मीनू ? भाग यहाँ से। सबेरे-सबेरे चौके के दरवाजे पर खड़ा हो गया ? सबसे पहिले तुझे ही भूख लग गयी ?" माँ की नजर अभी उस पर नहीं उठी थी।

वे अपने काम में लगी बातें करती जाती थीं।

हाथ का काम समाप्त करके जो उन्होंने ऊपर दृष्टि उठायी तो मीनू के मुँह में लटकते साँप को देखते ही चीख उठीं। पिता जी दौड़े-दौड़े आये तो बरामदे में आधा साँप पड़ा देख कर वह भी चीख उठे। चाचा तथा हम सब लोग भी जाग गये।

साँप जहरीला था, एकदम काला बहुत डरावना। किन्तु मीनू सुस्त पड़ गया। उस दिन उसने जलेबी भी नहीं छुई, चाचा उसे तुरन्त डाक्टर के पास ले गये। साँप ने लड़ाई में उसे भी काटा था। उस दिन हम लोग स्कूल नहीं गये। चाचा भी कालेज नहीं गये। मीनू बिलकुल सुस्त पड़ा था। उसकी दो दिन यही हालत रही। डाक्टर ने उसे सुई लगायी, दवा पिलायी किन्तु कोई असर नहीं हुआ।

दूसरे दिन शाम को चाचा उसको गोद में लिये थे और वह आँखें बन्द किये अपना मुँह चाचा के हाथों पर रखे पड़ा था। चाचा ने आँसू भर कर कहा—"मीनू बहुत कष्ट है क्या ? या तो अच्छा हो जा या मर जा। मीनू, तेरा दुःख तो नहीं देखा जाता रे।"

मीनू की आँखों से भी आँसू झरने लगे। उसने कूँ-कूँ किया मानो अपने कष्ट को बताना चाह रहा हो और दो बार हिचकी ले कर ढीला पड़ गया चाचा की गोद में। चाचा जोर-जोर से रो पड़े। मीनू सदा के लिये हमें छोड़ कर चला गया।

उन्हें रोते देख कर हम सभी रोने लगे। हम सब लोग बड़े हो गये हैं अब, किन्तु आज तक हम अपने प्यारे, वफादार मीनू को नहीं भूल सके हैं।

रसगुल्ला

जंगबहादुर अपने इलाके का बड़ा भारी जमींदार था। वह यात्रा करने का बड़ा शौकीन था। उसकी इच्छा थी कि एक बार किसी ऊँचे पहाड़ की चोटी तक चढ़े किन्तु इसके लिए एक उपयुक्त साथी की आवश्यकता थी जो उसकी सेवा भी करे साथ ही मन बहलाव भी करता रहे। उसने गाँव में खबर करवा दी कि उसे एक साथी की जरूरत है। अब तो उसके पास रोज ही एक न एक आदमी आता किन्तु जंगबहादुर को कोई पसन्द नहीं आया। एक दिन सबेरे ही सबेरे एक विचित्र आदमी उसके पास आया जो एक आँख का काना और एक पैर का लँगड़ा था। उसे देख कर जमींदार को हँसी आ गयी। उसने सोचा, यह आदमी तो बिलकुल बेकार है। मनहूस भी है। यात्रा में ऐसे काने का सबेरे-सबेरे मुँह देखना पड़ेगा तो सारी यात्रा ही असफल हो जायेगी। ख़ैर आया ही है तो कुछ प्रश्न पूछ कर टाल दूँ।

"तुम्हारा नाम क्या है जी ?"

लँगड़ा अपनी अच्छी टाँग पर जरा और झुक गया। एक आँख तो बन्द ही थी दूसरी आँख को भी थोड़ा झपकाते हुए वह बोला—

"जी मुझे रसगुल्ला कहते हैं।"

जंगबहादुर इस विचित्र नाम को सुन कर मुस्काये बिना न रह सका।

"तुम्हारा यह नाम कैसे पड़ा ?"

लँगड़े ने निस्संकोच गंभीरता से उत्तर दिया—

"मेरी माँ ने तो दूसरा ही नाम रखा था लेकिन वह नाम मुझे पसन्द नहीं था इसलिए मैंने स्वयं अपना नाम 'रसगुल्ला' रख लिया।"

जंगबहादुर ने पूछा—"तुम कितनी भाषाएँ जानते हो ?"

"क्यों, एक ही तो जानता हूँ जो मेरी माँ बोलती थी। और भाषा तो उसने मुझे सिखायी ही नहीं।"

"तब तो यात्रा के लिए तुम विशेष उपयोगी नहीं हो। अच्छा, भोजन तो बनाना जानते हो न ?"

"मैंने रसोइए का काम कभी नहीं किया। वैसे चीजें उबालना तो जानता हूँ।"

"ख़ैर सफर में विशेष टीमटाम की आवश्यकता भी नहीं है। जूते में पालिश तो कर ही लेते होगे ?"

मुँह बिचका कर लँगड़े ने कहा—"नहीं साहब, इस काम से मुझे बहुत चिढ़ है। जूते की पालिश की गंध से ही मेरा जी मिचला जाता है।"

जंगबहादुर उसके उत्तर से झुँझला गया। बोला—

"तुम मेरे किसी काम के नहीं हो।"

रसगुल्ला ने बड़ी शांति से उत्तर दिया—

"आप बिलकुल ठीक कहते हैं।"

"तब तुम आख़िर कर क्या सकते हो ?"

"जी मैं एक काम बहुत अच्छी तरह कर सकता हूँ।"

जमींदार ने उत्सुकता से पूछा, "वह क्या ?"

"मैं किसी भी पशु या पक्षी का रूप धारण कर सकता हूँ।"

जंगबहादुर को उसकी इस बात पर विश्वास नहीं आया। उसके झूठ बोलने पर कुछ क्रोध भी आया। मजाक में उसने कहा—"रसगुल्ले, वह देखो एक चूहा मेरे तख़्त के नीचे अभी गया है क्या तुम उसे पकड़ सकते हो ?"

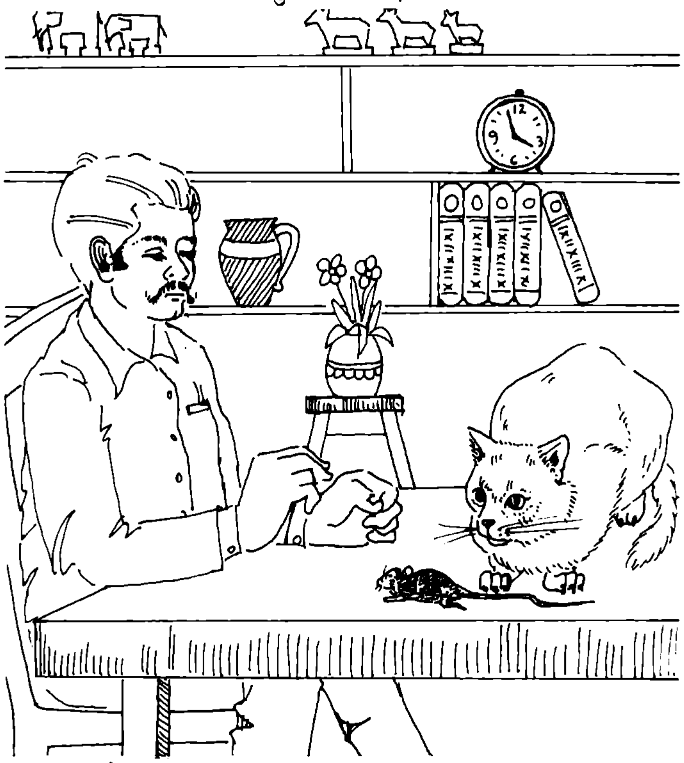

और सचमुच रसगुल्ला गायब हो गया। उसकी जगह एक काना और लँगड़ा बिल्ला खड़ा था जिसके मुँह में चूहा था। चूहा मेज पर रखने के बाद रसगुल्ला सिर नीचा करके फिर आदमी बन कर जंगबहादुर के सामने खड़ा हो गया। आश्चर्य से चकित जंगबहादुर कुछ बोल नहीं सका। बस उसने तुरंत उसे अपनी सेवा में रख लिया। दो-चार दिनों में तैयारी पूरी करने के बाद दोनों यात्रा पर निकल पड़े।

चलते-चलते पहले ये लोग एक ऐसे रेगिस्तान में पहुँचे जहाँ मीलों तक कोई पेड़, नदी, घर, आदमी, जानवर या चिड़िया नजर नहीं आते थे। गरम हवा, रेत के अंधड़ ऐसे भयानक चल रहे थे कि पैर रखना कठिन हो रहा था। मालिक ने रसगुल्ला की तरफ दुःखी हो कर देखा। वह समझ गया कि उसे क्या करना चाहिए। तुरन्त एक ऊँट बन कर वह मालिक के सामने घुटने मोड़ कर बैठ गया। उसके

कूबड़ को थपथपा कर जंगबहादुर उछल कर उस पर बैठ गया। इस प्रकार रेगिस्तानी रास्ता आनन्द से कट गया। एक दिन शाम को दोनों ने विश्राम के लिए तम्बू गाड़ा। भोजन के बाद जब थक कर मालिक लेटा तब रसगुल्ला बुलबुल बन कर सुरीले गाने से उसका मनोरंजन करने लगा। उसके सो जाने के बाद एक बड़ा शिकारी कुत्ता बन कर उसने सारी रात पहरा दिया।

यात्रा में एक दिन ऐसा भी आया जब इन दोनों मुसाफिरों के पास खाने की सामग्री खत्म हो गयी। मालिक ने सेवक की ओर देखा, "रसगुल्ला अब क्या होगा ? तुम्हीं कुछ सोचो !"

शांति से उसने उत्तर दिया—"चिन्ता न करो मालिक ! मैं अभी मुर्गी बन जाता हूँ फिर आप जितने चाहें अंडे दे दूँगा।"

मालिक ने प्रसन्न हो कर कहा—"बहुत सुन्दर, किन्तु पानी कहाँ से लाओगे ? इस रेगिस्तान में तो कहीं भी पानी नजर नहीं आ रहा है।"

"ओह मालिक आप तो थोड़ी सी बात पर परेशान हो जाते हैं। आप यदि भूखे और प्यासे रहें तो मैं आप के साथ इस यात्रा में किसलिए आया हूँ ? आप को प्यास लगने पर मैं गाय बन जाऊँगा। दूध पी कर आप अपनी प्यास शांत कर लीजिएगा।"

मालिक ने हर्ष और आश्चर्य से रसगुल्ले की ओर देखा—"कितने अच्छे हो तुम रसगुल्ले ! सचमुच बड़े काम के हो ! तुमने अपना नाम भी बहुत अच्छा चुना है।"

चलते-चलते ये लोग एक ऊँचे पहाड़ के नीचे आये जिसके रास्ते बीहड़ तो थे ही बहुत चक्करदार भी थे। जंगबहादुर ने आ कर कहा—"रसगुल्ले, अब तो मुझसे ऊपर नहीं चढ़ा जाता। बहुत थक गया हूँ। रास्ते इतने सँकरे हैं कि नीचे गहरी खाई में गिर कर चकनाचूर हो जाऊँगा। देखो वह पहाड़ी नदी किस शोर के साथ बह रही है।"

रसगुल्ला चुप रहा, फिर एकाएक एक छोटा घोड़ा बन कर मालिक के सामने खड़ा हो गया। जंगबहादुर उसकी चतुराई पर मुस्करा कर उसकी पीठ पर सवार हो गया। तीन पैर की चाल से ही घोड़े ने मालिक को पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचा दिया। उसकी पीठ को थपथपा कर मालिक कूद कर भूमि पर खड़ा हो गया और रसगुल्ले ने भी हिनहिना कर मालिक की खुशी का साथ दिया। फिर तुरन्त अपने असली रूप में आ गया। चारों तरफ ऊँचाई से नजर दौड़ाने पर भी दोनों को वहाँ केवल जंगल, पहाड़, चट्टानें आदि ही दिखाई दे रहीं थीं। किसी भी आदमी के रहने का वहाँ कोई चिह्न नहीं था।

जंगबहादुर ने कहा—"रसगुल्ले, ऐसा मालूम पड़ता है यहाँ हमसे पहिले कोई आदमी नहीं आया है। हम दोनों ने ही पहिले पहल इस चोटी पर कदम रखे हैं। आओ अपने भारत का झंडा यहाँ गाड़ दें।"

रसगुल्ला ने कुदाली से एक गड्ढ़ा खोद कर उसमें एक लम्बा डंडा गाड़ दिया जिस पर जंगबहादुर ने तिरंगा झंडा बाँध कर फहरा दिया। दोनों ने फिर एक स्वर में "जन गण मन अधिनायक जय हे" का राष्ट्रीय गान गाया और झंडे को प्रणाम करके नीचे उतर गये। कहना न होगा कि उसी तीन पैर और एक आँख के घोड़े के रूप में रसगुल्ले ने मालिक को वापस पहाड़ के नीचे उतार दिया। इस प्रकार सकुशल और सानन्द दोनों कुछ दिनों में घर वापस आ गये।

कुछ दिन बाद मालिक ने कहा, "रसगुल्ला हमारी यात्रा समाप्त हो गयी। मैंने तुम्हें इसी काम के लिए बुलाया था, अब तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं है। इसमें संदेह नहीं कि तुम यात्रा में मेरे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुए। अब घर में पत्नी मेरे लिये भोजन बनाती है। मेरी पुत्री अन्य सभी काम कर देती है। मुझे अब तुम्हें विदा देनी पड़ेगी, यद्यपि तुम्हें भेजने में मुझे दुःख भी हो रहा है लेकिन सचमुच अब मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं रह गयी है।

रसगुल्ला ने दुःख से सिर लटका लिया फिर धीरे से बोला—

"लेकिन मालिक जब आप काम करते-करते थक जायेंगे और बाहर घोड़े पर घूमने जाना चाहेंगे तब क्या आप को मेरी जरूरत नहीं पड़ेगी ? जब रात को पलँग पर लेटेंगे

और नींद नहीं आयेगी तब बुलबुल का गाना गा कर आपको कौन सुलायेगा ? प्रातः काल घूमने जाते समय कुत्ते के रूप में आप का साथ कौन देगा मेरे मालिक ?"

मालिक ने हँस कर कहा, "रसगुल्ला शायद तुम ठीक ही कह रहे हो। मैं भी सोचता हूँ कि मेरा काम तुम्हारे बिना नहीं चलेगा। हम जीवन भर एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते रसगुल्ला।"

इतना सुनना था कि रसगुल्ला खुशी से झूम उठा और अपनी कृतज्ञता और प्रसन्नता दिखाने के लिए कुत्ता बन कर मालिक के हाथ को प्यार से चाटने लगा।

रमजान चौधरी

उत्तर भारत के एक छोटे से गाँव जगतपुर में एक घास काटने वाला रमजान चौधरी रहता था। रमजान के दादा अच्छे धनी जमींदार थे। वे नेक दिल इंसान थे। गाँव के लोग उनकी इज्जत करते थे और अपने झगड़े-झंझटों का उन्हीं से न्याय करवाते थे। इसलिए सब उन्हें चौधरी कहते थे। रमजान को भी उसी नाते सभी लोग चौधरी कहते थे। रमजान भी सीधा नेक दिल इंसान था। धन का उसे बिलकुल मोह नहीं था। वह घास काटता था। उसे बेच कर जो कुछ मिलता उसी में अपना गुजर-बसर करता था। सस्ता जमाना था। आठ आने जो वह रोज कमाता था उसमें से भी खा-पी कर चार आने बच जाते थे जिन्हें वह एक सन्दूक में डाल देता था।

इस प्रकार रमजान ने अपने जीवन के कितने ही वर्ष बिता दिये। एक बार उसने रात को सोचा—"मैं कई वर्षों से हर दिन इस सन्दूक में चार आने रख रहा हूँ। अब तो इसमें खासी रकम जमा हो गयी होगी। देखूँ तो कि अब मेरे पास कितनी पूँजी हो गयी है।"

उसने उठ कर सन्दूक खोला। सन्दूक खोलते ही वह चिल्ला उठा, "अरे ! इतना धन जमा हो गया ! मैं अब इसका क्या करूँ।" उसने इस धन को अपने काम में लाने का विचार तक नहीं किया था। वह अपने विषय में तो कभी सोचता ही न था। अपने लिये किसी वस्तु की आवश्यकता भी उसे नहीं थी। वह जिस हालत में था उसी में प्रसन्न था।

दूसरे दिन वह सारे रुपये ले कर एक सुनार के पास गया और उतने रुपये में जितनी बढ़िया सोने की अँगूठी खरीदी जा सकती थी उसने खरीदी। इसके बाद वह अपने मित्र रामफल के पास गया। रामफल के पास बहुत से घोड़े थे। वह उन घोड़ों पर कपड़े और कितनी ही अन्य चीजें रख कर देश के कोने-कोने में बेचने के लिए जाया करता था। रमजान ने उससे कहा, "दोस्त ! तुम पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के सभी देशों में जाया करते हो। क्या तुम बता सकते हो कि इस देश में सबसे सुन्दर राजकुमारी कौन है ?"

रामफल ने कहा—"हाँ, मैं जानता हूँ। कोचीन की राजकुमारी देश की सबसे सुन्दर स्त्री है।"

रमजान बोला, "इस बार जब तुम कोचीन जाओ, तो मेरी ओर से उसको यह अँगूठी भेंट करना और कहना कि यह अँगूठी उस आदमी ने दी है जो धन से बिलकुल प्रेम नहीं करता।"

कुछ समय बाद रामफल कोचीन गया। उसने वहाँ की राजकुमारी को अँगूठी भेंट की और रमजान का संदेशा दिया।

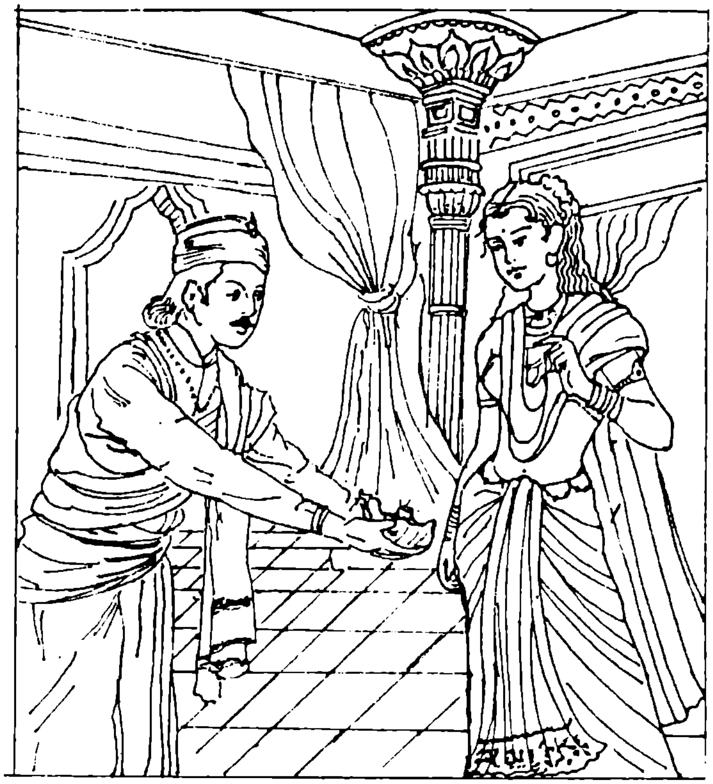

राजकुमारी ने रामफल से अँगूठी भेजनेवाले का नाम पूछा। रामफल ने कहा कि उसका नाम बाद में बतायेगा। अभी नहीं। तब राजकुमारी ने पूछा, "क्या मैं भी उसको कोई चीज भेज सकती हूँ ?"

रामफल ने खुशी से स्वीकृति दे दी। तब राजकुमारी ने बढ़िया कपड़ों से लदा हुआ एक घोड़ा रामफल को दिया और कहा—"ये कपड़े उस अँगूठी भेजने वाले को दे देना। मेरा धन्यवाद देना और कहना कि राजकुमारी उसका नाम जानना चाहती है।"

रामफल उन बढ़िया कपड़ों को ले कर गाँव वापस

आया और रमजान चौधरी की झोपड़ी में गया। उस समय वह घास काटने गया था। इसलिए उसने वे कपड़े उसकी कोठरी में रख दिये। जब रमजान रात को घर लौटा तो उसने वे कपड़े देखे। दूसरे दिन बहुत तड़के ही वह रामफल के घर गया। उस समय रामफल सो रहा था। जब वह जगा तो उसने पूछा—

"तुम इतने सबेरे क्यों आये हो मैं तो इतनी जल्दी बिस्तरे से उठता भी नहीं। क्या कोई खास बात है ?"

"तुम उन कपड़ों का गट्ठर मेरे घर क्यों रख आये ? वे मेरे किस काम के हैं ? मैं सीधा-सादा आदमी भला उनका क्या उपयोग कर सकता हूँ ?"

"ये कपड़े तो कोचीन की राजकुमारी ने तुम्हें उपहार में भेजे हैं। तुमने उसके लिए अँगूठी भेजी थी तो उसने भी तुम्हें यह उपहार भेजा है।" रामफल ने कहा।

"लेकिन मुझे यह सब नहीं चाहिए।" रमजान ने कपड़े वापस करते हुए कहा।

"तुम्हें अभी नहीं, किन्तु बाद में शायद कभी आवश्यकता पड़ सकती है।"

"नहीं, मुझे कभी ऐसे कीमती कपड़ों की जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं तो मामूली गरीब आदमी हूँ।" रमजान ने कहा।

"तुम अभी गरीब हो, किन्तु हमेशा गरीब नहीं रहोगे।" रामफल ने उसे समझाया।

"मैं मालदार नहीं बनना चाहता भाई। अच्छा मुझे तुम बताओ कि देश में सबसे अच्छा राजकुमार कहाँ का है जो सब से अच्छा काम करता हो, सबसे अच्छा खिलाड़ी और बहादुर योद्धा हो, जो अपनी प्रजा का प्रिय हो और सबसे अच्छा न्याय करनेवाला हो ?"

रामफल ने सोच कर कहा, "जहाँ तक मुझे मालूम है कंधार का राजकुमार सब राजकुमारों में श्रेष्ठ है।"

"तो ये कीमती कपड़े राजकुमार को देना और कहना कि ये उस आदमी ने दिये हैं, जिसे धन से रत्ती भर भी प्रेम नहीं है।" रमजान ने कहा।

उन कपड़ों को ले कर रामफल कंधार के राजकुमार के पास पहुँचा। राजकुमार को तो विश्वास ही न हुआ कि वे कीमती कपड़े उसके लिये हैं।

"क्या ये मेरे लिए हैं ? क्या, सचमुच ये मेरे लिए भेजे गये हैं ?" उसने आश्चर्य से पूछा।

रामफल ने कहा—"जी हाँ, ये आपके लिए हैं, ये उस आदमी ने भेजे हैं जिसे धन से जरा भी प्रेम नहीं है।"

"अजीब बात है। अगर तुम ले जाओ तो मैं भी उसके लिए कुछ भेंट की वस्तुएँ दूँ।" यह कह कर उसने दस चुने हुए बढ़िया घोड़े रमजान के लिए भेजे।

उन घोड़ों को आते देख कर रमजान ने प्रसन्नता से कहा—"दस जवान घोड़े ! वह धनवान आदमी जो उन्हें मोल लाया है इनके लिए घास भी चाहेगा।" और वह उनके लिए झटपट घास काटने दौड़ गया। उसने वापस आकर देखा कि वे घोड़े उसकी ही झोपड़ी के बाहर खड़े हैं। रामफल ने बताया—"रमजान ये घोड़े तुम्हारे लिए ही हैं।"

"मेरे लिए ? या खुदा ! तब तो इन घोड़ों के लिए घास के दाम भी मुझ ही को देने पड़ेंगे। मुझे एक आदमी भी रखना पड़ेगा, जो घास काटने में मेरी मदद करेगा, घोड़ों को खुरहरा करेगा और मुझे एक मकान भी इन घोड़ों के रहने

के लिए लेना पड़ेगा। नहीं, नहीं, ये घोड़े मुझे नहीं चाहिए।"

थोड़ी साँस ले कर रमजान ने रामफल से कहा—"इसमें से एक घोड़ा तो तुम स्वयं ले लो और बाकी कोचीन की राजकुमारी के लिए मेरी तरफ से भेंट स्वरूप ले जाओ। उससे कहना कि ये उसी आदमी ने भेजे हैं जो धन-दौलत से प्रेम नहीं करता।"

रामफल ने एक घोड़ा स्वयं ले लिया, बाकी नौ घोड़ों को ले कर वह राजकुमारी के पास जा पहुँचा।

राजकुमारी देखते ही चिंतित हो कर बोली—"कौन आदमी है यह ? क्या चाहता है ?"

रामफल राजकुमारी को कभी सच न बताता था। वह यह न कहता था कि रमजान एक घसियारा है। उसने कहा—"वह एक रईस है। उसने तुम्हारी सुन्दरता की प्रशंसा सुनी है। शायद वह तुम्हें देख कर ही सन्तुष्ट होगा।"

राजकुमारी ने रामफल की बात सच मानी। वह अपने पिता के पास गयी। उसने कहा, "पिता जी उत्तर भारत के एक रईस ने मुझे कीमती चीजें भेज कर तंग कर रखा है।

कहता है कि जब तक मुझे देख न लेगा चैन न लेगा। उसने मुझे पहिले एक अँगूठी भेजी और अब नौ बढ़िया घोड़े भेजे हैं। मैं उसे कैसे रोकूँ ? यह उपहारों का सिलसिला कैसे और कब बन्द होगा ?''

राजा ने कुछ सोच कर उत्तर दिया, ''जब उसने तुम्हें कुछ भेजा है तब तुमने उसे उससे भी अच्छी भेंट भेजी। अब उससे भी बढ़ कर उसने भेजा है। लगता है यह सिलसिला इसी प्रकार चलता रहेगा।''

''तो मुझे अब क्या करना चाहिए पिता जी ?'' राजकुमारी ने पूछा।

''तुम्हें कोई ऐसी बढ़िया वस्तु भेजनी चाहिए जिससे बढ़ कर वस्तु वह कभी भेज न सके। जब तक तुम ऐसा न करोगी, इन उपहारों का आना बन्द न होगा।''

राजकुमारी ने इस बार बीस गदहों पर चाँदी लदवा कर रामफल के साथ कर दिये। चाँदी की रक्षा के लिए उसने रामफल के साथ कई सिपाही भेजे। रमजान चौधरी ने इतनी ढेर सी चाँदी देख कर पूछा—''क्या ये मेरे लिए हैं ? या खुदा, इन उपहारों से कब पीछा छूटेगा। मुझे यह सब नहीं चाहिए। रामफल ! इसके कारण मुझे रात दिन चिन्ता लगी रहेगी। चोर मेरे पीछे लग जायेंगे और मेरी जान लेने की घात में रहेंगे। रामफल ! इनमें से एक बोझ तो तुम अपने लिये ले लो और बाकी कंधार के राजकुमार के पास ले जाओ। उससे कहना कि यह उपहार उस आदमी ने भेजा है, जो धन-दौलत की बिलकुल परवाह नहीं करता।''

रामफल फिर कंधार के राजकुमार के पास सारी चाँदी ले गया और कहने लगा, ''हे राजकुमार ! यह भेंट तुम्हारे लिए उस आदमी ने भेजी है, जो धन-दौलत से बिलकुल प्रेम नहीं करता।''

''मेरी समझ में वह धन-दौलत से प्रेम इसलिए नहीं करता क्योंकि उसके पास असीम धन है। तभी तो वह ऐसे कीमती उपहार भेज सकता है। लेकिन मैं इससे भी बढ़ कर उपहार भेज सकता हूँ। मैं इतने ही गधे सोने से लदवा कर भेजूँगा उसके लिए।''

अब उसने रमजान का नाम और गाँव भी रामफल से पूछ लिया।

अब की सोने से लदे इतने गधों को देख कर रमजान ठट्ठा मार कर हँसा और बोला, ''मेरे अच्छे दोस्त ! अब तुम इन गदहों को कोचीन की राजकुमारी के पास ले जाओ।''

सोने के लदे गदहों को देख कर राजकुमारी आश्चर्य से भर गयी और बोली, ''पिता जी अब मैं क्या करूँ ? देखिए मैंने उसके पास जो उपहार भेजे थे उसके बदले में उसने गदहों पर लदवा कर सोने के सिक्के और जेवरात भेज दिये। मुझे आज तक इतना बहुमूल्य उपहार कहीं से नहीं मिला। क्या यह मेरे लिए उचित है कि मैं इतने कीमती नजराने को स्वीकार कर लूँ ?''

राजा ने कहा, ''तुम उन्हें अवश्य ले लो। एक सुन्दर राजकुमारी को बढ़िया-से-बढ़िया उपहार मिलना ही चाहिए। लेकिन मुझे इसमें कुछ भेद मालूम होता है।''

''कैसा भेद ?'' राजकुमारी ने जानना चाहा।

''यह आदमी या तो तुमसे विवाह करना चाहता है या वह बूढ़ा है और अपने लड़के से तुम्हारा विवाह करना चाहता है।''

''आपकी बात ठीक लगती है तो आप मुझे क्या करने का आदेश देते हैं ?'' राजकुमारी ने पूछा।

''तुम उससे शादी कर सकती हो। राजकुमारियाँ अमीर आदमियों से ही तो विवाह करती हैं चाहे वे राजकुमार न भी हों। यदि यह आदमी राजकुमार नहीं है तो भी नेक आदमी है। इसलिए शादी करने में तुम्हें हिचक नहीं होनी चाहिए।''

राजकुमारी ने कहा, ''ठीक है, लेकिन अब हमें करना क्या चाहिए ?''

''उस आदमी को देखने के लिए चलना चाहिए और मालूम करना चाहिए कि वह है कौन।'' राजा ने राय दी।

इधर कोचीन के राजा, रानी और राजकुमारी अपने साथ बहुत बड़ी सेना ले कर रमजान के गाँव को रवाना हुए। गाँव का पता उन्होंने रामफल से पूछ लिया था। उधर कन्धार का राजकुमार भी देश के विद्वानों को एकत्र करके उनसे सलाह करने बैठा। उसने रमजान का पता लगाने के लिए कहा।

एक बूढ़े व्यक्ति ने बताया, ''राजकुमार हमने कितने ही लोगों से पूछा किन्तु इस आदमी के बारे में कोई कुछ नहीं बताता। हमें यह तो पता लगा है कि वह उस देश के राजकुमारों में से नहीं है किन्तु यह पता नहीं लगा कि वह कौन है।''

दरबारियों ने आपस में सलाह करके राजा को बताया—''शायद वह एक रईस हो और हमारे राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का विवाह करना चाहता हो। हमारे राजकुमार क्वारे हैं। राजकुमार आप स्वयं रमजान चौधरी से भेंट करने जायें और उसके तथा उसकी पुत्री के विषय में छानबीन करें।''

यह सलाह मान कर राजकुमार भी रमजान से मिलने चल दिया। बहुत से दरबारी उसके साथ हो लिए। सिपाहियों की एक फौज उनके आगे-पीछे चली।

रमजान चौधरी उस समय अपनी झोपड़ी में बैठा खाना खा रहा था। तभी रामफल दौड़ता हुआ आया और चिल्ला

कर कहने लगा—"भागो-भागो। दो राजा हमारे गाँव पर हमला करने आ रहे हैं। एक उत्तर से आ रहा है, और एक दक्षिण से।" तब तक रामफल को इस राजा और राजकुमार के आने के बारे में कुछ मालूम नहीं था।

"भला हमारे गाँव पर ये क्यों हमला करने आ रहे हैं ?" रमजान ने पूछा।

"मैं क्या जानूँ।"

"तब मैं नहीं भागूँगा। जाओ पता लगाओ कि असली बात क्या है।"

थोड़ी देर में रामफल वापस आया और कहने लगा—"वे युद्ध करने नहीं आ रहे हैं, वे तो किसी से इस गाँव में मिलने आ रहे हैं।"

"किससे मिलने आ रहे हैं ?"

"यह सब मैं नहीं जानता।" रामफल बोला।

"तो जाओ पता लगा कर आओ रामफल, मेरे दोस्त !"

जल्दी ही रामफल ने वापस आकर बताया, "वे तो तुम्हीं से मिलने आ रहे हैं, रमजान भाई।"

"या अल्लाह, अब तो मुझे भागना ही पड़ेगा। इस छोटी सी झोपड़ी में दो-दो राजाओं का स्वागत मैं भला कैसे कर सकता हूँ !"

जैसे ही कोचीन की राजकुमारी और कंधार के राजकुमार गाँव में पहुँचे और एक-दूसरे से मिले तो राजकुमार ने अपने साथियों से कहा—"मुझे विश्वास है कि यह राजकुमारी जरूर उसी रमजान की बेटी है क्योंकि मैंने सचमुच कभी ऐसी सुन्दर कन्या नहीं देखी।"

राजकुमारी न सोचा, "यह अवश्य रमजान होगा या उसका बेटा होगा, क्योंकि मैंने अपने जीवन में कोई पुरुष इतना सुन्दर नहीं देखा।"

राजकुमार ने कोचीन के राजा से पूछा, "क्या आप ही रमजान हैं ?"

"नहीं मैं तो कोचीन का राजा हूँ और यह मेरी पुत्री है।"

राजकुमार ने मन में निश्चय किया कि मैं विवाह करूँगा तो इसी राजकुमारी से। मुझे रमजान की पुत्री से कोई मतलब नहीं है।

राजकुमारी ने सोचा—"मैं न तो रमजान से विवाह करना चाहती हूँ न उसके बेटे से। मैं इस सुन्दर युवक के सिवाय और किसी से विवाह नहीं करूँगी।"

इसी समय एक वृद्ध गाँव की ओर से दौड़ता हुआ आया। वह रमजान था। वह इतनी तेजी से दौड़ रहा था कि उसे यह भी नहीं मालूम था कि वह कहाँ जा रहा है। वह दौड़ता हुआ राजकुमार से टकरा गया जिससे दोनों नीचे गिर पड़े। राजकुमार जल्दी से उठ कर खड़ा हो गया और पूछने लगा—"तुम कहाँ जा रहे हो ?"

राजकुमार को जब मालूम हुआ कि वह इसी गाँव का

रहने वाला है तो उसने पूछा—"क्या तुम रमजान या उसका घर जानते हो ?"

"जी हाँ मैं, दोनों को जानता हूँ।"

"मेहरबानी करके हमें रास्ता बताओ हम उससे ही मिलने आये हैं।" राजकुमार ने कहा।

अब तो रमजान और घबरा गया। वह चिल्ला उठा, "ऐसा मत कीजिए, रमजान से मत मिलिए।"

राजकुमार ने पूछा, "लेकिन क्यों नहीं मिलना चाहिए ?"

"क्योंकि···क्यों···कि···क्यों···कि वह तो मर चुका है।"

यह सुन कर वे लोग निराश हो गये और राजकुमारी से राजकुमार का विवाह हो गया। वे दोनों बड़े सुखी हुए।

और रमजान···वह तब भी पचास पैसे रोज की कीमत की घास काटता था। किन्तु···शायद उन दोनों में वही सबसे अधिक सुखी था।

टिक्कू ने चलना सीखा

"अब तू इतना बड़ा हो गया है, अपने आप चला कर न !" माँ ने टिक्कू से कहा।

टिक्कू चारपाई पकड़ कर खड़ा हुआ लेकिन फिर बैठ गया।

"हाथ छोड़ कर खड़ा हो न", माँ ने उसके दोनों हाथ

अपने हाथ में थाम लिये और फिर धीरे-धीरे छोड़ दिया। छोटे-छोटे दाँत दिखाते हुए टिक्कू मुस्कराता हुआ खड़ा रहा। माँ ने ताली बजायी। टिक्कू ने भी ताली बजाने की कोशिश की। माँ ने दूर सरक कर उसे अपने पास बुलाया। वह आगे बढ़ा किन्तु लड़खड़ा कर गिर पड़ा। उसने रोने जैसा मुँह बनाया। माँ ने दौड़ कर उसे उठा कर चूम लिया। टिक्कू हँस पड़ा।

"मेरा टिक्कू पइयाँ-पइयाँ चलेगा।"

माँ ने दोनों हाथ पकड़ कर उसे चलाया। अपने छोटे-छोटे पैर बढ़ा कर वह अब खुशी-खुशी चलने लगा। माँ ने उसके हाथ फिर छोड़ दिये। डर कर टिक्कू ने जल्दी से माँ की साड़ी पकड़ ली। माँ ने फिर हाथ पकड़ लिये। टिक्कू ने लड़खड़ा कर दो कदम रखे। माँ ने फिर धीरे से उसका हाथ छोड़ दिया। अब वह अपने आप चल पड़ा।

माँ ने खुश हो कर ताली बजायी। टिक्कू ने भी मुस्करा कर ताली बजायी। माँ ने उसे एक मीठा बिस्कुट खाने को दिया। टिक्कू का इनाम।

टिक्कू ने चलना सीख लिया था।

अच्छा मोहन

मोहन एक बहुत अच्छा लड़का था। वह चिड़ियों को बहुत प्यार करता था। उसके घर के आँगन में एक पीपल का पेड़ था। पेड़ पर चिड़ियों का घोंसला था। उसमें दो नन्हें-नन्हें बच्चे रहते थे।

एक दिन एक बच्चा घोंसले से गिर गया। बिल्ली देख रही थी-कबरी, काली बिल्ली। उसने दौड़ कर बच्चे को मुँह में दबा लिया। बच्चा चीं-चीं करने लगा। ऊपर से उसकी माँ ने देखा वह भी चीं-चीं चिल्लाने लगी।

मोहन को यह देख कर बहुत दया आयी। उसने एक डंडा उठाया और बिल्ली के सिर पर फेंक कर मारा। दर्द के मारे बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ चिल्लायी। उसका मुँह खुल गया और बच्चा बाहर आ गया। मोहन ने दौड़ कर उसे उठा लिया और ले जा कर घोंसले में धीरे से रख दिया।

चिड़िया की माँ सब देख रही थी। अपने बच्चे को पा

कर वह बहुत खुश हुई। उसने मीठी आवाज में कहा—"चीं-चीं। मोहन, तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद ! तुम बहुत अच्छे लड़के हो।"

मोहन सचमुच बहुत अच्छा लड़का था।

जमीन के तारे

सूरज थक कर सोने चला गया। अंधेरी रात घिरने लगी। चाँद ने आवाज लगायी—"नन्हें सितारों बाहर आओ ! सूरज चला गया है। अब तुम्हारे चमकने का समय आ गया है। आओ अब दुनियावालों को तुम अपनी रोशनी दो।"

लेकिन कोई तारा नहीं आया। चाँद ने फिर पुकारा, अब भी कोई नहीं आया। वह उन्हें देखने निकला। एक बादल के पीछे छिपे शैतान तारों को उसने देख लिया। तारों ने उसे देख कर कहा—

"हम आज रात को नहीं चमकेंगे।"

चाँद ने क्रोध से उनकी ओर देखा—"तुम्हें इसका दण्ड मिलना चाहिए। मैं दूसरे तारों को तुम्हारी जगह लाऊँगा। तुम सब मेरे आसमान से चले जाओ।"

तारों को लगा जैसे वे गिरे जा रहे हैं और गिरते-गिरते वे पृथ्वी पर आ पड़े। आसमान उनसे दूर छूट गया। अब वे पछता रहे थे कि उन्होंने क्यों शैतानी की। वे रोने लगे और रोते-रोते नर्म घास पर सो गये।

सबेरे जब सूरज पहाड़ों के पीछे से निकला तो उसने देखा छोटे-छोटे सितारे घास पर उदास पड़े हैं।

"ओ सितारों, तुम लोग वहाँ क्या कर रहे हो ?" उसने

पुकार कर पूछा।

तारे सिसक पड़े। "सूरज देवता ! चाँद ने हमारी शैतानी के कारण हमें यहाँ पृथ्वी पर फेंक दिया है। हमें वापस आकाश पर बुला लो। ओ महान् सूरज, हमें आकाश पर बुला लो न !"

"नहीं, यह नहीं हो सकता।" सूरज ने कहा—"मैं यह नहीं कर सकता। तुम्हें चाँद की आज्ञा माननी थी ! खैर मैं एक काम कर सकता हूँ। तुम दिन के रुपहले सितारे बनो और लोगों को अपनी चमक से प्रसन्न करो उसी प्रकार जिस तरह आसमान पर रात को चमक कर तुम उन्हें प्रसन्न करते थे।"

सूरज ने उन पर अपनी किरणें डालीं।

घास पर पड़े मुरझाये तारे फिर मुस्करा कर ओस के रूप में मोती की तरह चमचमा उठे।

टुन्नी

टुन्नी माँ का कहना न मान कर दिन भर पिल्ले के साथ खेला करती। एक दिन भूख लगने पर वह मालकिन से दूध माँगने चली लेकिन वह अपनी बोली ही भूल गयी। उसे अब केवल पिल्ले की बोली "भों-भों" याद थी।

"हाय राम अब दूध कैसे माँगूँगी ?" टुन्नी रोने लगी।

उधर से एक गाय जा रही थी। उसने पूछा—

"प्यारी नन्हीं बिल्ली रो क्यों रही हो ?"

"मुझे भूख लगी है लेकिन मैं अपनी बोली भूल गयी हूँ। पिल्ले की बोली याद है। मालकिन से दूध कैसे माँगूँ ?" टुन्नी ने रो कर कहा।

"रोओ मत बेटी। मैं बताती हूँ दूध कैसे माँगो। तुम कहना 'म्यां आँ, म्यां आँ' तुम्हें दूध मिल जाएगा।" गाय ने कहा।

"नहीं, नहीं, यह तो गाय की बोली है। यह एक बिल्ली की बोली नहीं है।" टुन्नी ने फिर रोना शुरू कर दिया।

सामने से एक मुर्गी फुदकती जा रही थी। टुन्नी को रोती देख कर रुक गयी—"रो क्यों रही है छोटी बिल्ली ?"

टुन्नी बोली—"मैं भूखी हूँ, लेकिन अपनी बोली भूल गयी हूँ। मालकिन से दूध कैसे माँगूँ ?"

"मैं बताती हूँ। तुम मालकिन से कहना कुड़क-कुड़क, तुम्हें दूध मिल जायगा।"

"नहीं ! नहीं ! यह बिल्ली की बोली नहीं है ऐसे तो मुर्गी बोलती है।"

टुन्नी फिर रोने लगी। इतने में उधर से एक बकरी निकली।

उसे देख कर पूछने लगी—"ओ नन्हीं प्यारी बिल्ली क्यों रो रही है ?"

टुन्नी—"मैं भूखी हूँ।"

बकरी—"तो रोने की क्या बात है ?"

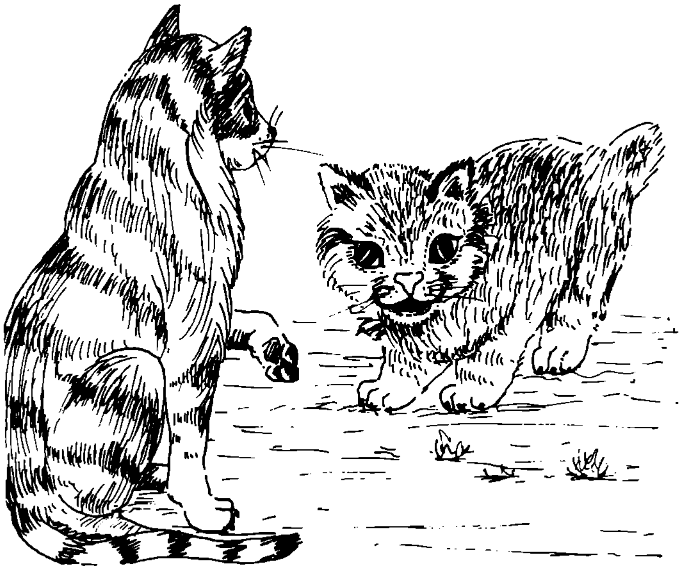

टुन्नी—"मैं अपनी बोली भूल गयी हूँ। पिल्ले की बोली ही याद है मुझे। 'भों-भों', कहने से मालकिन दूध नहीं देगी।"

बकरी—"अरे बस इतनी-सी बात है ? तू कहना मेएँ-मेएँ—तुझे दूध मिल जायगा।"

"नहीं ! नहीं ! यह तो बकरी की बोली है। बिल्ली ऐसे नहीं बोलती।"

टुन्नी फिर रोने बैठ गयी।

बड़ी देर हो गयी थी। टुन्नी की माँ उसे ढूँढती हुई आयी, उसे रोते देख कर पूछने लगी—

"अरे मेरी बेटी रो क्यों रही है ?"

टुन्नी माँ को देख कर और जोर से रोने लगी—"माँ मुझे अपनी बोली ही याद नहीं आ रही है। खाली पिल्ले की बोली 'भों-भों' ही याद है। मुझे जोर से भूख लगी है। मालकिन से दूध कैसे माँगूँ ?"

माँ मुस्करायी—"अब चुप हो जा टुन्नी। मैं बताती हूँ तुझे बिल्ली की बोली-म्याऊँ ! म्याऊँ !"

टुन्नी ने पूरी बात भी नहीं सुनी और माँ को छोड़ कर म्याऊँ-म्याऊँ करती हुई दूध माँगने भाग गयी।

लँगड़ी चिड़िया

एक छोटी हरी चिड़िया थी। एक दिन कुछ नटखट चिड़ियों ने उसे अकेली देख कर उससे लड़ाई की। उसने अपने को बचाने के लिए काफी कोशिश की, किन्तु वह नन्हीं अकेली चिड़िया थी। उसका एक पंख उन दुश्मन चिड़ियों ने तोड़ डाला था। अब बेचारी ज्यादा दूर नहीं उड़ पाती थी।

ठंड आयी। पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ पड़नेवाली थी।

सब चिड़ियाँ दूर देश को उड़ गयीं, जहाँ बहुत ठंड नहीं थी, जहाँ नदी और झरने थे। बेचारी नन्हीं चिड़िया उनके साथ नहीं जा सकी। जाते समय उसकी सहेली चिड़ियों ने कहा—

"प्यारी नन्हीं चिड़िया हमें अफसोस है, हम तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा सकतीं, तुम यहीं रहना। हम ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की प्रार्थना करेंगी।"

"विदा, मेरी प्यारी सहेलियों ! तुम जल्दी ही लौट आना।" नन्हीं चिड़िया ने आँसू भर कर कहा। सब चिड़ियाँ चली गयीं और वह नन्हीं चिड़िया अकेली रह गयी। वह इमली के पेड़ के पास फुदक कर गयी और बोली—"इमली दीदी मुझे शरण दो। मैं अकेली हूँ, कहो तो तुम्हारी डाल पर रह लूँ ?"

"नहीं, नहीं, लँगड़ी चिड़िया हट जाओ। मैं तुम्हें अपने पास नहीं रख सकती।" इमली ने कहा।

चिड़िया बेचारी लड़खड़ाती-लड़खड़ाती नीम के पास गयी—"नीम भइया ! क्या तुम मुझे अपनी डालों और पत्तों में रहने दोगे ? "

"नहीं, नहीं, तुम कहीं और जाओ, मैं लँगड़ी और बदसूरत चिड़िया को अपने यहाँ नहीं रख सकता।"

चिड़िया दुःखी हो कर पीपल के पास गयी—"पीपल दादा ! क्या तुम मुझे अपने यहाँ ठहरने दोगे ? सर्दी पड़ने वाली है मैं बाहर बर्फीली हवा में मर जाऊँगी।"

लेकिन पीपल ने भी उसे फटकार कर दूर कर दिया।

चिड़िया रोती हुई आम के पास गयी। उसके नीचे जा कर डरती हुई बोली—"आम दादा ! आम दादा !"

आम ने कहा—"क्या बात है बेटी, वहीं क्यों रुक गयी ? ऊपर आओ फिर बात सुनूँगा।" और आम ने उसे अपने हरे-हरे पत्तों में रख लिया।

"बेटी, जब तक इच्छा हो मेरे पास रहो। घर तुम्हारा है। अभी मैं फलूँगा फिर तुम्हें खाने को मीठे और रसीले फल दूँगा, तुम बेफिकर हो कर यहाँ रहो।"

चिड़िया की आँखों में खुशी के आँसू उमड़ आये। कुछ दिन बाद पतझड़ आया। उसने अपने दूतों को आज्ञा दी—"सब पेड़ के पत्ते झकझोर कर गिरा दो। लेकिन देखना आम को मत झकझोरना। इस पर एक लँगड़ी नन्हीं चिड़िया रहती है। उसे कोई तकलीफ न होने पावे।आम की डालों को भी नंगी मत करना। नहीं तो नन्हीं चिड़िया को तकलीफ होगी। आम में जल्दी ही फूल आयेंगे। जल्दी ही इसमें फल लगेंगे।"

और सचमुच सब पेड़ों के पत्ते झड़ गये। उनकी नंगी-नंगी सूनी डालें रह गयीं। लेकिन आम लहलहाता रहा और नन्हीं चिड़िया उस पर चहचहाती रही।

मैं बताता हूँ घोसला बनाना

बरसात के दिन आनेवाले थे। चिड़ियों ने एक सभा की। कौए ने कहा—"भाइयो, ठण्ड और पानी के दिन आने वाले हैं। हम अपने रहने का इन्तजाम कैसे करें इसी पर विचार करने के लिए आज आपको बुलाया है।"

गौरैये ने कहा—"मैं तो आदमी के साथ रहती हूँ, उसी के घर में रह लूँगी।"

तोते ने कहा—"लेकिन हम सब ऐसा नहीं कर सकते। आदमी मुझे तो देखते ही पकड़ लेता है। हमें एक घर बनाना चाहिए।"

मैना ने कहा—"लेकिन घर कैसे बनेगा ? क्या किसी को बनाना आता है ?"

सब सोचने लगे।

उल्लू भारी आवाज में बोला—"मैं जानता हूँ बनाना। मैं तुम सब को घोंसला बनाना सिखा सकता हूँ।"

सबने एक साथ कहा—"सिखाओ ! सिखाओ ! उल्लू

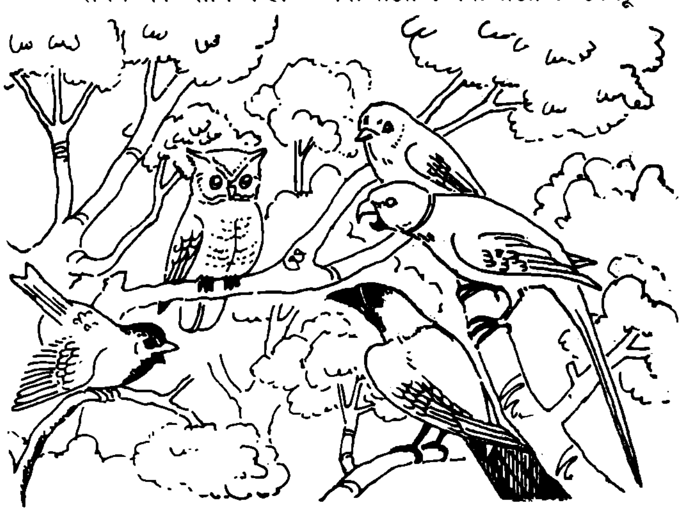

काका, हमें जल्दी घर बनाना सिखाओ।''

उल्लू बोला—''देखो तुम सब अपने लिए घोंसला बनाने के लिए पहले मुलायम और सूखे तिनके इकट्ठे करो।''

चिड़ियाँ बोलीं—''अरे, यह तो हम पहिले से ही जानती हैं, आगे बताओ।''

''फिर उन्हें पेड़ की डालों में ऐसे फँसा कर रखो कि वे गिरने न पायें।'' उल्लू ने कहा।

''यह भी हम जानती हैं, आगे बताओ।''

उल्लू ने शांति से कहा—''तिनकों को जमा-जमा कर ऐसे रखो कि घोंसला बन जाय। उसके ऊपर मुलायम हरी घास बिछा दो।''

सब चिड़ियाँ चिल्लायीं—''चुप रहो। यह सब तो हम जानते ही थे, तुमने कुछ भी तो नया नहीं बताया।''

उल्लू क्रोध से चिल्लाया—''हू-हू ! तुम सब पाजी हो। यदि तुम यह सब जानते थे तो पहले ही घोंसला क्यों नहीं बना लिया ?''

और वह सब चिड़ियों से नाराज हो कर चला गया। चिड़ियों ने घोंसला बनाना सीख लिया था। लेकिन उल्लू ने फिर कभी चिड़ियों से मेल नहीं किया। वह केवल रात को ही निकलता है जब सब चिड़ियाँ सो जाती हैं। मौका लगने पर वह उन्हें और उनके बच्चों को मारता भी है।

सोने की कलँगीवाली

एक सुनहरी कलँगीवाली मुर्गी थी। सब उसे बहुत प्यार करते थे। वह गाया करती थी—

''मैं मुर्गी की रानी सोने की कलँगीवाली,
मैं लगती बड़ी सुहानी, मैं चली दूसरे देश।''

बूढ़े मुर्गे ने कहा—

''ओ मुर्गी की रानी तू करती है नादानी !
मत जाना कभी विदेश।''

मुर्गी बोली—''मैं मुर्गी की रानी मैं लगती बड़ी सुहानी
अपनी सोने की कलँगी दुनिया को मुझे दिखानी।
मैं चली दूसरे देश।''

सबने एक साथ कहा—

''ओ मुर्गी की रानी मत करना यह नादानी
मत जाओ दूसरे देश
सोने की कलँगीवाली !''

मुर्गी बोली—

''मैं मुर्गी की रानी मैं लगती बड़ी सुहानी
मैंने जाने की ठानी
अपनी यह प्यारी कलँगी दुनिया को मुझे दिखानी।''

और सब के मना करने पर भी वह चल दी। कभी ठुमक-ठुमक, कभी फुदक-फुदक, वह चली जा रही थी कि ऊपर से बाज की तेज आँखों ने उसे देख लिया और अकेली देख कर उस पर झपट पड़ा। उसकी सुनहरी कलँगी उसने अपने पंजे में दबोच ली।

मुर्गी चीखी—मुर्गे ने सुना ! सब मुर्गियों ने सुना—

सब चिल्लाये—''कुकड़ूँ कूँ ! कूँकड़ूँ कूँ ! मैं भी आऊँ ! मैं भी आऊँ !
प्यारी मुर्गी तुझे बचाऊँ।''

सब उसे बचाने को दौड़ पड़े।

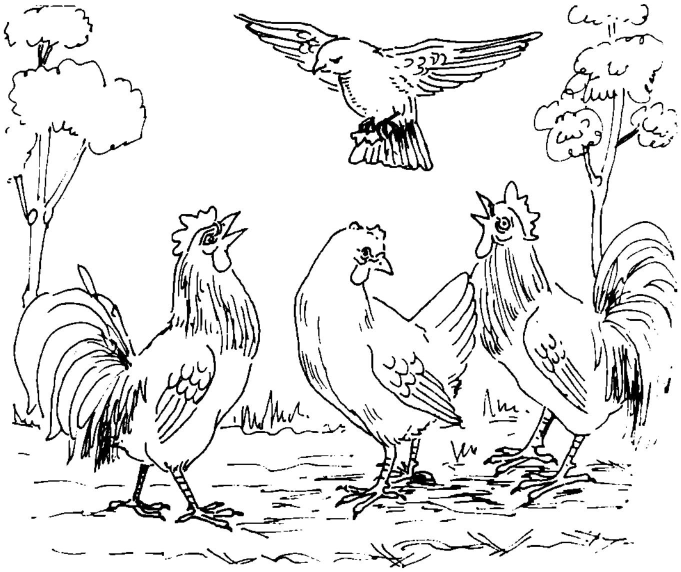

इस तरह सब को चिल्लाते, आते देख कर बाज घबरा गया। उसका पंजा ढीला पड़ गया। मुर्गी छूट गयी किन्तु उसकी सुनहरी कलँगी बाज के पंजे से नुच गयी थी। मुर्गी रो-कर कहने लगी—

''मैं मुर्गी की रानी, लगती थी बड़ी सुहानी,
तुम सब की प्यारी बातें, क्यों हाय न मैंने मानी ?''

कुत्ते का पिल्ला

एक कुत्ते का पिल्ला था—काला, काला, बहुत प्यारा ! एक दिन वह अपनी पूँछ पकड़ने लगा। वह घूमा, पूँछ पीछे हट गयी। वह घूमता गया—बिलकुल गोल, गेंद की तरह। लेकिन पूँछ पकड़ में नहीं आयी। वह अपने ही चारों ओर चक्कर लगाने लगा। थक गया, पर पूँछ न छू सका।

हार कर माँ के पास आया—''माँ मैं पूँछ नहीं पकड़ पाता। तू पकड़ा दे माँ मुझे मेरी पूँछ।''

माँ ने पिल्ले को चाटा, पुचकारा।

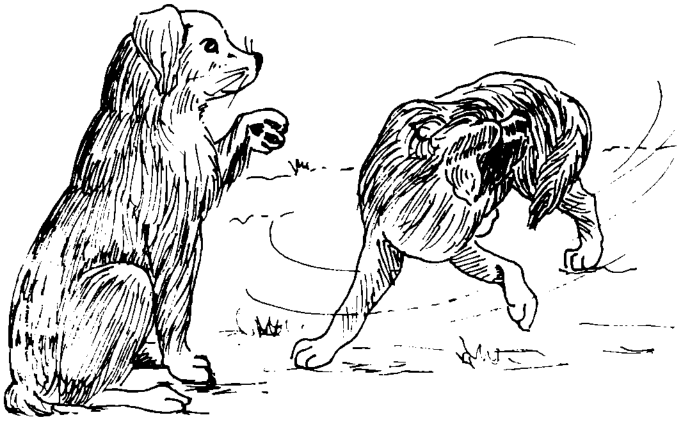

"तू तो अब बड़ा हो गया है ! कुत्ता बन गया है ! कोई बच्चा थोड़े ही है, मेरा बेटा ! छि: अब क्या पूँछ पकड़ेगा ? यह नादानी तो पिल्ले करते हैं। तू तो अब कुत्ता बन गया है !"

पिल्ला खुश हो गया और कहने लगा— "भों, भों, मैं अब बड़ा कुत्ता हूँ !"

खरगोश मामा

चूँ चूँ ने कहा—"बच्चों मैं दाना लेने जा रही हूँ। तुम घोंसले में ही रहना और हाँ, बिल्ली से बच कर रहना। कोई जरूरत पड़े तो खरगोश मामा को आवाज लगा देना। अच्छा अब मैं चली। जल्दी ही लौटूँगी। घबराना नहीं, अच्छा !"

चूँ चूँ चली गयी। दोनों नन्हें बच्चे घोंसले में से नीला-नीला आसमान झाँकने लगे। एक ने दूसरे से कहा—"क्यों रे, हम लोग भी कभी माँ की तरह इस नीले आसमान पर उड़ेंगे ?"

"क्यों नहीं ? क्या हमारे पर नहीं निकल रहे हैं।" दूसरे बच्चे ने अपने पर फड़फड़ा कर कहा। इतने ही में खड़-खड़ हुई। बिल्ली धीरे-धीरे बच्चों की तरफ बढ़ रही थी। "चीं-चीं-चीं ! तुम कौन हो ?" बच्चों ने घबरा कर पूछा।

"म्याऊँ-म्याऊँ। मैं तुम्हें खाऊँ-खाऊँ !" बिल्ली ने कहा। "हाय राम ! अब क्या करें ?" बच्चे चिल्ला कर रो पड़े।

"खरगोश मामा ! खरगोश मामा ! जल्दी आओ !" दोनों ने पुकारा।

खरगोश मामा ने कान ऊँचे किये और पूछा—"खों-खों ! क्या बात है बच्चों ! क्यों रो रहे हो ?"

"मामा-मामा ! यह बिल्ली कहती है—खाऊँ ! खाऊँ !"

खों-खों। ठहर जा री बिल्ली तू मेरे बच्चों को खायेगी ?

खरगोश एक लकड़ी उठा कर बिल्ली को मारने दौड़ा।

बिल्ली ने डर कर कहा—"म्याऊँ ! म्याऊँ ! मैं

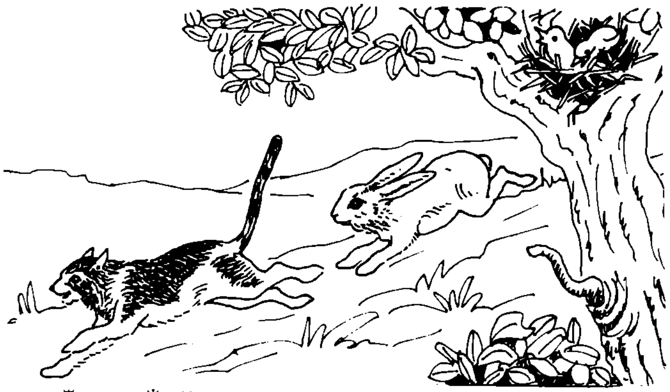

जाऊँ ! जाऊँ।"

वह पेड़ से कूद कर भाग गयी।

थोड़ी देर में चूँ चूँ भी आ गयी। बच्चों ने माँ को सब बताया। वह खरगोश के पास गयी।

"भइया ! तुम कितने अच्छे हो ! आज तुमने मेरे बच्चों की जान बचा दी। लो मैं दाना लायी हूँ, तुम भी खाओ।" और उसने खरगोश को भी अनाज के दाने खाने को दिये।

गिलहरी मौसी

पीपल का हरा-भरा पेड़ था। उस पर एक चिड़िया अपने दो बच्चों के साथ और एक गिलहरी अकेली ही रहती थी। उन सब में बड़ा मेल था। गिलहरी के कोई बच्चा नहीं था। वह चिड़िया के दोनों बच्चों को बहुत प्यार करती थी। एक दिन सबेरे ही उठ कर उसने अपनी पूँछ साफ की, कंघी की और खेत से कुछ हरे चने ले कर चिड़िया के पास गयी।

"अरे गिलहरी मौसी आयी है। मौसी यह झोले में क्या लायी हो ?" दोनों बच्चे खुशी से चिल्लाने लगे।

गिलहरी ने अपनी झब्बेदार पूँछ फटकार कर कहा—"तुम्हारे लिए ही तो चने लायी हूँ। जंगली की तरह चिल्ला क्यों रहे हो ?"

बच्चों को इतनी जल्दी थी कि उन्होंने मौसी के थैले को झपट कर ले लिया और लगे चने कुटकने। चिड़िया और गिलहरी मुस्करा कर, प्यार से उन्हें देखती रहीं।

एक दिन एक काला कौआ आया। बच्चे उसे देख कर डर के मारे चिल्लाने लगे। उनकी माँ कहीं बाहर गयी थी।

"काँव-काँव ! खबरदार जो चिल्लाये। तुम्हारे घर में

जो कुछ है सब निकाल कर मुझे दे दो नहीं तो मैं तुम्हें मारूँगा।'' कौए ने बड़ी रूखी और तेज आवाज में कहा। बच्चे समझ गये कि यह डाकू है। वे खूब जोर से चिल्लाये—''मौसी ! मौसी ! डाकू आया है ! जल्दी आओ !''

गिलहरी ने सुना। एक डाली से दूसरी डाली पर कूदती-फाँदती वह दौड़ी। कौआ ने देखा तो उड़ कर भाग गया। बच्चे डर के मारे हाँफ रहे थे। मौसी ने उन्हें प्यार किया चुमकारा।

''अरे तुम डर गये क्या ? मैं तो यहीं ऊपर की डाल पर बैठी थी। मेरे रहते तुम्हें किस बात का डर ?''

दोनों बच्चे मौसी की छाती से चिपक गये। चिड़िया लौट कर आयी तो उसने सब सुना और गिलहरी से कहा—''बहन अब से हम दोनों एक ही डाल पर घर बनायेंगे। जब तुम बाहर जाओगी तब मैं तुम्हारा घर देखूँगी और जब मैं बाहर जाऊँगी तब तुम मेरे बच्चों की देखभाल करना।''

''हाँ, हाँ, मौसी, हमारे घर के पास ही अपना घर भी बना लेना।''

और दूसरे दिन से गिलहरी का नया घर बनने लगा। चिड़िया और दोनों बच्चे तिनके ला-ला कर उसकी मदद करने लगे।

कौए की फिर कभी उधर आने की हिम्मत ही नहीं हुई। गिलहरी उसे दूर से देखते ही झपट कर मारने दौड़ती थी।

फूल का पहरेदार

राकेश बगिया में घूमने गया। प्रातःकाल का समय था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। पेड़ों की डालों पर नन्हीं-नन्हीं चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। ताजे-ताजे फूल खिले थे। चमेली के सफेद फूल, गेंदा के पीले फूल और एक क्यारी में तो बीसों हँसते हुए गुलाब खिले थे। बगिया नये फूलों की महक से गमक रही थी।

राकेश को यह सब बहुत अच्छा लगा। गुलाब को देख कर तो वह बहुत ही प्रसन्न हो उठा। दो-तीन फूलों को वह

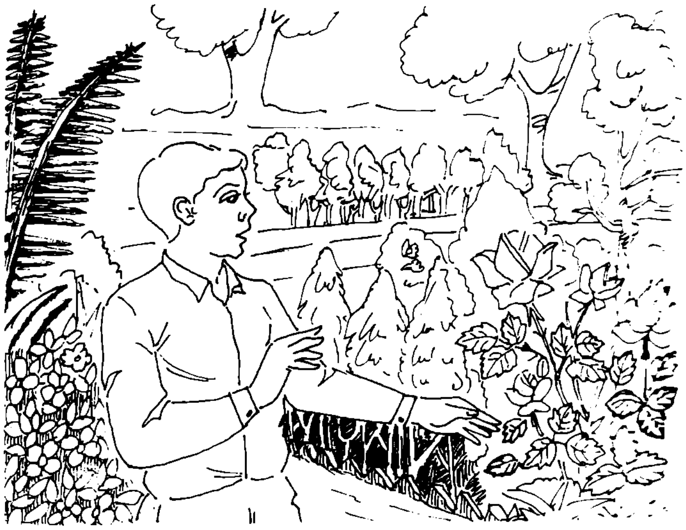

तोड़ लेना चाहता था। उसने हाथ बढ़ाया। डाल पर एक बड़ा-सा लाल गुलाब खिला था।

''अरे !'' चीख कर उसने हाथ खींच लिया। हाथ में कुछ सुई-सी चुभ गयी। वह कभी अपने हाथ को देखना तो कभी गुलाब के पौधे को। उसे लगा कोई कुछ कह रहा है

''सुन्दर वस्तु तोड़ी नही जाती।''

वह इधर-उधर देखने लगा। फिर आवाज आयी—

''गुलाब डाल पर ही सुन्दर है। मैं इन्हें नहीं तोड़ने दूँगा। देखते नहीं मैं पहरा दे रहा हूँ ? तुम इसे हाथ में लोगे तो यह मुरझा जायेगा, सूख जायेगा। खुशबू उड़ जायेगी। रंग फीके पड़ जायेंगे। फिर तुम इसको फेंक दोगे। इधर पौधे पर यह हरा-भरा है, इसको देखो। इसकी महक सूँघो कितना भला लग रहा है। तुम इसे देखो और दूसरों को भी देखने दो।''

राकेश ने घबरा कर फिर किसी को देखने की कोशिश की। ''कौन बोल रहा है ? दिखलाई क्यों नहीं देता ? उँगली में टीस उठी। देखा लाल-लाल दो बूँदे उँगली पर झलक आयी थीं। राकेश ने फिर ललचा कर फूल की ओर देखा, तभी आवाज आयी—

"नहीं पहिचाना मुझे ? इधर देखो फूल के नीचे, डंठल मे। मैं हूँ काँटा। फूल का पहरेदार। अब कभी फूल मत तोड़ना। फूल पेड़ में ही शोभा देता है।"

केले का छिलका

अशोक ने केला खा कर छिलका आँगन में फेंक दिया। उसी समय उसका छोटा भाई पप्पू आया और बोला—

"बइया ! बइया ! मुझे दिल्ली बना दो मैं केलूँदा।"

अशोक ने हँस कर कहा—"तू दिल्ली खेलेगा ? अरे पहिले बोलना तो सीख, फिर गिल्ली खेलना।"

"ऊँ, ऊँ, मुझे दिल्ली दो।"

पप्पू जिद्द करने लगा तो अशोक ने प्यार से मनाते हुए कहा—

"अच्छा-अच्छा, मैं अपने पप्पू को अभी गिल्ली बनाता हूं। जा आँगन से वह लकड़ी तो उठा ला।"

पप्पू आँगन में जा कर लकड़ी उठाने लगा। केले का छिलका उसे नहीं दिखलाई दिया और उस पर पैर रख दिया। बस तुरन्त फिसल कर चारों खाने चित्त गिर पड़ा। वह चीख पड़ा।

माँ दौड़ी-दौड़ी आयी।

"क्या हुआ मेरे बेटे को ? अरे इसके तो सिर से खून बह रहा है ? अशोक ! अशोक !"

"क्या है माँ ?"

माँ—"देखता नहीं, पप्पू गिर पड़ा है ? उसके सिर से कितना खून बह रहा है। जा जरा पानी ला दे और पट्टी भी। कैसे गिर गया मेरा बेटा ?"

पप्पू—"तेले के थिलके पर फिथल दया।"

और खूब जोर-जोर से रोने लगा।

माँ—"अब समझी। यह अशोक की बदतमीजी है। कितनी बार मना किया कि केला का छिलका कूड़े में फेंकने की चीज है। घर में इधर-उधर नहीं फेंकना चाहिए।

इतने में अशोक पानी और पट्टी ले कर आ गया।

माँ—"क्यों रे अशोक, यह तूने क्या किया ? देखता नहीं तेरे छिलके फेंकने से अपने पप्पू की क्या हालत हुई है ? क्या तुझे बिलकुल दु:ख नहीं है कि तेरी लापरवाही से इसे कितनी चोट आयी है ? अभी-अभी कैसा खेल रहा था और अब देख तो कैसा रो रहा है ?"

अशोक अपराधी-सा सिर नीचा करके खड़ा हो गया। अपनी गलती और लापरवाही का फल देख रहा था कि उसके प्यारे भाई पप्पू को कितनी चोट आयी थी। वह धीरे से बोला—

"माँ मेरी गलती है। मैं अब कभी केले का छिलका इधर-उधर नहीं फेकूँगा। मुझे नहीं मालूम था कि अपने पप्पू को इतनी चोट लग जायगी।"

अशोक भी दु:ख से रोने लगा।

माँ—"अच्छा अब चुप हो जा ! चल डाक्टर के यहाँ ले चलें पप्पू को। लेकिन याद रखना कि ऐसी गलती फिर न करना। केले का छिलका चिकना होता है, उस पर पैर पड़ने से आदमी तुरन्त गिर पड़ता है।"

पप्पू भी रोना बन्द करके बोला—"अम्मा मैं बी थिलका नहीं फेकूँदा। कूदे में दालूँदा। नई तो बइया भी दिर दाएदा।"

बूँद भटक गयी

नन्हीं बूँद जब घर से निकली तब बहुत खुश थी। घूमने की शौकीन जो थी ! उसने ऊपर फैले नीले आकाश को देखा। उड़ती चिड़ियों को ललचायी नजर से देख कर तो वह उनकी ओर ही बढ़ गयी। वह चढ़ती गयी ऊपर, ऊपर, बहुत ऊपर ! खूब घूमी। घूमते-घूमते आखिर बेहद थक गयी। आसमान पर कहीं बैठने की जगह तो है नहीं कि ठहर कर थकान मिटाती ! अब और अधिक घूमने की ताकत उसकी खत्म हो गयी थी। वह हवा के पास गयी और मीठे स्वर में बोली—

"हवा मौसी मुझसे अब चला नहीं जाता। बहुत थक गयी हूँ मुझे गोद में ले लो !"

हवा ने उसे प्यार से तो देखा किन्तु सिर हिला कर उत्तर दिया—

"नहीं बेटी, मेरी गोद में तू कहाँ-कहाँ भटकेगी ? मैं तो पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी दिशाओं में तेजी से घूमती रहती हूँ। कहीं गिर पड़ी तब ?"

और हवा उसे छोड़ कर तेजी से एक ओर चल दी।

उदास बूँद किरण के पास आयी।

"किरण दीदी तुम मुझे अपनी गोद में ले लो ! मैं बहुत थक गयी हूँ।"

किरण ने उसे घूर कर देखा—

"घर छोड़ कर घूमनेवाली नादान लड़की ! मेरी गोद में गरमी से सूख कर काँटा बन जायेगी ! जा घर लौट जा !"

लेकिन घर जाने की ताकत ही किस में थी ! बूँद को रोना आ गया। इतने में एक बादल उसी की तरफ घूमता-घूमता आ गया। बूँद ने गिड़गिड़ा कर कहा—"बादल दादा, मैं···बहुत···थ···क··· ग···यी हूँ।"

बूँद से अब और नहीं बोला जा रहा था। बादल ने उसे लपक कर गोद में उठा लिया, नहीं तो बेचारी गिर ही पड़ती। बादल दादा की गोद में वह चिपट कर बैठ गयी। बहुत आराम मिला। सुख से उसने आँखें बन्द कर ली। बादल एक ऊँची पहाड़ की चोटी पर उसे ले कर बैठ गया। बूँद ने आँखें खोलीं। एकाएक खुशी से चीख पड़ी-

"दादा वह रहा मेरा घर ! मैं अब घर जाऊँगी।"

उसे पहाड़ से अपना घर, समुद्र दिखायी दिया। बादल ने मुस्करा कर उसे गोद से उतार दिया। वह अब सब थकान भूल कर घर की तरफ दौड़ पड़ी।

ये सूरज को डराने चले थे

एक रात को वे सब पक्षी, कीड़े और घास, जो रात को ही विशेष रूप से प्रसन्न होते हैं एकत्र हुए।

"उल्लू—मित्रो ! आज कितनी प्यारी अंधेरी रात है ?"

छछूँदर—अहा ! यह अन्धकार तो मुझे भी सचमुच बहुत प्यारा लगता है।

झाड़ी में से सोनकीड़ बोला—"मुझे भी यह बहुत प्रिय है। जब सूरज नहीं रहता तब मैं कितना सुन्दर चमचमाता हूँ, लेकिन उसके होने पर कोई मेरा प्रकाश नहीं देख पाता।"

दलदल से एक चमकपात ने चमक कर कहा—"मेरी भी यही हालत है मेरा तो विचार है कि मैं, जुगनू और सोनकीड़, जब भी किसी को जरूरत होती है, तुरन्त अपनी रोशनी दे देते हैं।"

जुगनू—"तुम ठीक कहते हो मेरे भाई। हम सूरज से भी कहीं अच्छा प्रकाश लोगों को दे सकते हैं, वह चाहे तो हमेशा के लिए यहाँ से जा सकता है।"

सोनकीड़—"हम वास्तव में सूरज से भी अच्छी रोशनी देते हैं, हमारी रोशनी को देख कर किसी की आँखों में दर्द नहीं होता।"

उल्लू—"मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ। मुझे सूरज का इतना अधिक चमकना बिलकुल पसन्द नहीं। यह मेरी आँखों में चकाचौंध पैदा कर देता है।"

चमगादड़—"तुम सच कहते हो। जब वह पूरब से निकलने लगता है तब पूरे जंगल में शोर मचने लगता है।"

छछूँदर—"कितना अच्छा हो यदि वह कभी निकले ही नहीं। यहाँ से हमेशा दूर रहे।"

सोनकीड़—"हाँ भाई, हम तो इससे बहुत दुःखी रहते हैं, जब तक आकाश पर सूरज रहता है मैं और मेरे भाई तो चमक ही नहीं पाते । केवल रात को ही हम चमचमाते हैं। सूरज मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता।"

छछूँदर—"इसके न रहने पर हम ज्यादा अच्छी तरह रहते हैं। अच्छा मान लो कि हम एक दिन उसे इतना डरा दें कि फिर इस जंगल के वृक्षों के पीछे से झाँकने की उसकी हिम्मत ही न हो ! तब कैसा हो ?"

सब—"बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर !"

उल्लू—"मैं अपना काम बहुत अच्छी तरह करूँगा, जैसे ही वह निकलने लगेगा मैं इतनी जोर से चिल्लाऊँगा कि वह अवश्य भयभीत हो जायेगा।"

सोनकीड़—"मैं, जुगनू तथा चमकपात तब इतनी जोर

से चमकेंगे कि हमारी रोशनी में सूरज का प्रकाश किसी को मालूम ही नहीं होगा। क्यों, भाइयो ?"

सब एक साथ बोले—"ठीक है ! हम सब ऐसा ही करेंगे।"

छछुँदर—"और मैं इतनी धूल उस पर उछालूँगी कि वह उसके कारण न तो कुछ देख पायेगा और न ही वह किसी को दिखाई देगा।"

चमगादड़—"मैं अपने बड़े पैने पंखों को इतने लम्बे फैला दूँगी कि जब सूरज अपनी किरणों को पृथ्वी पर फेंकेगा तब उसकी प्रत्येक किरण मेरे डैनों से कट जायेगी।"

उल्लू—"मैं कहता हूँ तब तो आज के बाद जंगल की प्रत्येक वस्तु बदली हुई नजर आयेगी। आज के बाद किसी की आँखों को दुखानेवाला सूरज नहीं दिखाई देगा, चिड़ियों की भयानक चीखें फिर नहीं सुनायी देंगी।"

छछुँदर—"अरे, देखो ! देखो ! वृक्षों के पीछे से वह

लाल-लाल क्या झाँक रहा है ?"

चमगादड़—"हाय, सूरज ! सूरज ! देखो वह ऊपर आने की कोशिश कर रहा है।"

उल्लू—"भाई जितनी जोर से चिल्ला सको चिल्लाओ।"

हू ! हू ! हू !! हूऊँ ! हुऊँ ! हुऊँ !!

"छछुँदर ! चमकपात ! अब चमको ! सोनकीड़ तुम भी चमको ! जुगनू भाई चमको, जितनी शक्ति तुममें हो उतनी तेजी से चमको !"

सोनकीड़—"मैं अपनी ताकत भर चमक रहा हूँ भाई।"

छछुँदर—"लेकिन सूरज तो प्रत्येक क्षण ज्यादा से ज्यादा चमकता जा रहा है, भाइयों तुम और जोर से अपनी रोशनी चमकाओ !"

चमकपात—"अब मैं अधिक नहीं चमक पा रहा हूँ यद्यपि मैं अपनी पूरी ताकत लगा रहा हूँ।"

सोनकीड़—चमकपात—"अरे हमारी रोशनी तो अब समाप्त हो रही है !"

और जुगनू

जंगल की चिड़ियाँ चहचहाईं—चीं! चीं!! चीं चीं!!!

उल्लू—"सुनो, सुनो ! चिड़ियाँ गाने लगीं। लेकिन मेरा गला चिल्लाते-चिल्लाते अब दर्द करने लगा है। मेरी ओर से सूरज जितना चाहे चमके मैं तो अब अपने कोटर में जा रहा हूँ। विदा साथियो !"

चमगादड़—"मैं भी अब जा रही हूँ यदि मेरे थके पंख मुझे उड़ा ले चलें तब। मैंने इन्हें इतना फैलाया है कि इनमें दर्द हो रहा है, विदा छछुँदर बहिन !"

छछुँदर—"विदा चमगादड़ दीदी। मैं धूल फेंकते-फेंकते हाँफ गयी हूँ। आज हम लोगों ने सूरज को जितना डरा सके, डराया है। अब मैं फिर रात आने तक के लिए अपने बिल में जा रही हूँ।"

छोटी चुहिया

जीजी चुहिया ने छोटी चुहिया से कहा—"जा री जा, जीजा से कह, जीजी खाने को बुलावे है।"

छोटी चुहिया खेल रही थी। भुनभुनाती हुई जीजा चूहा के पास गयी।

जीजा कचहरी का काम कर रहे थे। वह खटपट करती, शोर मचाती पहुँची और चिल्लाती हुई बोली "जीजा ! जीजा !! जीजी खाने को बुलावे हैं। जल्दी चलियो नहीं तो रूठ जावेगी। जीजी, घर छोड़ कर चली जावेगी फिर पछिताइयो बैठे-बैठे।"

जीजा चूहा को क्रोध आ गया, झुँझला कर बोले—"अरे जा ! परे हट मेरे सामने से। तू जाय चूल्हे में, तेरी जीजी जाय चूल्हें में। मैं नहीं आने का। जा कह दे अपनी घमंडी जीजी से। जा भाग जल्दी, नहीं तो अभी पिट जावेगी मेरे हाथों।"

जीजा की डाँट खा कर तो छोटी चुहिया रोने लगी। आँख मलती-मलती जीजी के पास लौट आयी, "जीजी री, जीजा से कहा—"अच्छे जीजा चलो अच्छी जीजी बुलावे है"—तो ऊँ ! ऊँ ! जीजा बोले, "तू जाय चूल्हे में, तेरी जीजी जाय चूल्हे में। भाग जा मैं नहीं आने का।" ऊँ !

ऊँ !! मुझे मारने दौड़े जीजा।''

''अच्छा ? ऐसी बात ? मैं चूल्हें मैं जाऊँ ? देखूँगी।'' जीजी चुहिया को भारी क्रोध आया। उसने खाटी-पाटी ली और चादर ओढ़ कर पड़ रही।

जीजा चूहा कचहरी का काम खत्म करके खाना खाने आये और जीजी चुहिया को पुकारने लगे—''अरी ओ

रानी ! खाना दे। कचहरी को देर होवे है।''

लेकिन रानी तो रूठी बैठी थीं। कौन बोले ? कौन खाने को दे ? जीजा चूहा को पिछली बात याद ही नहीं थी। उन्हें नहीं मालूम था कि छोटी चुहिया ने रानी से क्या-क्या कहा है।

छोटी चुहिया किवाड़ की आड़ में से देख रही थी। हँस रही थी। जीजी उठ ही नहीं रही थीं। जीजा घबराये हुए थे।

''अब कैसी रही ? अब जीजा को मालूम पड़ेगी। अब कैसे मना रहे हैं ? जीजी मानतीं ही नहीं। जीजा हाथ जोड़ रहे हैं। पहिले कैसे डाँटा था। तू चूल्हे में जा, तेरी जीजी चूल्हे में जाय। अरे ! रे ! जीजी तो मान गयी ? वह तो हँसने लगी। खाना परोसने उठ गयी ! तो मैं भी चलूँ।''

वह दौड़ कर किवाड़ की ओट से बाहर आ गयी जीजा के लिए पटा बिछाने और पानी का गिलास भरने।

जंगली जानवरों के बीच अकेली लड़की

अजनबी दुश्मन

श्यामली आज कुछ परेशान थी। उसे नीचे की घाटी से सूचना मिली थी—"सावधान रहना श्यामली ! कुछ विदेशी गोरे जंगल में आये हैं। इनमें से एक आदमी तुम्हारा खास दुश्मन है। जब तक ये चले न जायें तुम छिपी रहना। इनके सामने मत पड़ना।"

श्यामली अपने होठों को टेढ़ा कर के व्यंग्य से मुस्करा दी।

"अपने को छिपाये रखना ? धत्। मैं जंगल की रानी, इन गोरे विदेशियों से छिपूँगी ? जिन्हें मेरे राज्य की धरती पर पैर रखने का कोई अधिकार नहीं है, जो चोर की तरह मेरे राज्य में घुस रहे हैं उनसे डर कर मैं छिपूँगी ? छिः।"

वह क्रोध में थी। यह सूचना पा कर वह अपने साथी चीतू और मिंकू को ले कर जंगल का चक्कर काटने निकली थी। वह देखना चाहती थी कि यह खबर जो उसे सुबह-सुबह ही मिली थी सच भी है या नहीं। वह सावधानी और सतर्कता से चारों ओर देखती घूम रही थी। वह अभी बहुत दूर नहीं गयी थी कि ठिठक कर खड़ी हो गयी। उसकी पतली, देह तन गयी। आँखों के ऊपर हाथ रख कर उसने पहाड़ों के नीचे की ओर देखा।

"अरे चीतू, मिंकू उधर देखो। गोरे आदमी ! तो यह खबर सच थी ?"

चीतू जो श्यामली के साथ-साथ इत्मीनान से चला आ रहा था उसकी बात सुन कर रुका और तन कर खड़ा हो गया। पूँछ ऊपर उठा दी। आँखों को सिकोड़ कर सीधे सामने देखने लगा जहाँ श्यामली देख रही थी। उसके काले रेशमी बाल सूरज की किरणें पड़ने से और चमक रहे थे। गले से वह घुर्र-घुर्र की आवाज निकाल कर बता रहा था कि वह भी सावधान है। मिंकू जो अभी तक पेड़ों-पेड़ों कूदता, डालियों पर झूलता हुआ इन दोनों के साथ चल रहा था उछला और चीतू की पीठ पर कूद कर आ बैठा। श्यामली तन कर अपनी एड़ियों पर खड़ी थी। उसकी भौहों पर बल पड़ गये। धूप से तमतमाया कोमल चेहरा कड़ा पड़ गया। पतले ओठों को उसने कस कर दबा लिया। आँखों में सावधानी झलकने लगी। वह आश्चर्य, उत्सुकता और क्रोध से सामने पहाड़ी के नीचे से ऊपर पश्चिम की ओर चढ़ते हुए एक काफिले को देख रही थी। उसने चीतू को जो आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था, धीरे से थपथपाया। मिंकू को जो अब उछल कर उसके कंधे पर आ बैठा था, उसने एक हाथ से पकड़ लिया। दोनों साथी उत्सुकता से श्यामली के आदेश और संकेत की प्रतीक्षा कर रहे थे। मिंकू तो बेचैनी से किच्च-किच्च करता हुआ उसके इस कन्धे से उस कन्धे पर उछल रहा था।

चढ़ता हुआ काफिला पूर्व की ओर नदी के तट से आ रहा था जिसमें कुछ गोरे और काले मजदूर थे। सामान खच्चरों पर लदा था। गोरों के कन्धों पर बन्दूकें लटकीं थीं।

जंगल में मित्रता

कई वर्षों से श्यामली जंगल में अपने इन दो पशु साथियों के साथ रह रही थी। चीतू एक शानदार काला चीता था और मिंकू एक छोटा नटखट बन्दर था। ये दोनों श्यामली की भाषा ऐसे ही समझते थे जैसे एक मानव दूसरे मानव की भाषा समझता है। श्यामली को भी चीतू और मिंकू की हर बात, हर इशारा समझने में देर नहीं लगती थी। तीनों छाया की तरह एक साथ रहते, एक साथ सोते, उठते, खाते-पीते और घूमते थे। जंगल का चप्पा-चप्पा उनका घूमा और पहिचाना था। हर पेड़-पौधे को श्यामली पहिचानती

थी। हर एक की विशेषता वह जानती थी। हर जानवर की आदतें, स्वभाव और विशेषताओं से वह परिचित थी। उसे मालूम था कौन कितना खतरनाक है, किससे दोस्ती की जा सकती है, और किससे सावधान रहने की जरूरत है। खतरे की थोड़ी सी भी झलक वह देख लेती थी। उसकी आँखें और कान जंगल में घूमते समय बराबर सतर्क रहते थे। मीलों दूर की धीमी आवाज भी वह सुन लेती और छोटी सी वस्तु भी उसकी आँखों से नहीं बच पाती थी। तभी तो बेखटके, बेखतरे, हिरनी-सी सारे जंगल में वह अपने दोनों साथियों के साथ स्वतन्त्र घूमती थी। वह वास्तव में जंगल की रानी थी। कोई खतरनाक जानवर उसके सामने आने की जल्दी हिम्मत नहीं करता। छिप कर आने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। उसका मंत्री चीतू और सैनिक सरदार मिंकू जंगल की एक-एक हरकत और आवाज की खबर रखते थे। छोटा से छोटा कीड़ा भी उनके पास से बिना उनकी नजर पड़े नहीं रेंग सकता था। चीतू की नाक किसी भी नयी चीज को दूर से सूँघ लेती थी। पत्ता भी खड़कता तो चीतू जान जाता। मिंकू पेड़ों पर चढ़ कर दूर की चीज देख लेता और कोई भी नयी वस्तु देख कर जोश से किल-किल, किच्च-किच्च करता हुआ श्यामली की पीठ या कन्धे पर आ बैठता। उसका बात करने का यही तरीका था।

इन दोनों पशुओं ने कभी किसी और आदमी को वहाँ नहीं देखा था केवल श्यामली और उन आदिवासी बौनों के जो उस जंगल से काफी नीचे एक घाटी में रहते थे और जो उनके पड़ोसी-मित्र थे। सभी बौनों ने इस लड़की को उस जंगल की रानी स्वीकार कर लिया था। किसी प्रकार का कोई दखल वे लड़की के बीच में नहीं देते बल्कि उसकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखते थे। तभी तो आज नगाड़ों को पीट-पीट कर उन्होंने उसे खबर भी भेज दी कि जंगल में कुछ नये अजनबी गोरों की नाव नदी के रास्ते से आयी है, ये दुश्मन हैं, इनके हाथों में हथियार हैं, इनमें से एक आदमी खास दुश्मन है इत्यादि। नगाड़ों द्वारा संदेश भेजना बौने की खासियत थी जिसे श्यामली भी अच्छी तरह समझती थी किन्तु इस साहसी लड़की ने इस सूचना पर विशेष ध्यान नहीं दिया। केवल लापरवाही से हँस दी थी।

"भला इस जंगल में कोई क्यों और क्या करने आयेगा ? यहाँ रखा ही क्या है ? इतने दिनों से तो किसी की शक्ल नजर नहीं आयी ? यहाँ जंगली पेड़ पौधों और जानवरों के अलावा रखा भी क्या है ? उनको ठिकाने लगाने के लिए यदि ये दुश्मनी की नीयत से आये हैं तो वह अकेली ही काफी है। उसका चीतू अकेला बीसियों को साफ कर सकता है। जंगल की रानी को क्या इन मामूली आदमियों से सावधान रहने की जरूरत है ? मेरी बिना आज्ञा के कोई मेरे जंगल में पैर तो रखे ? मैं देख लूँगी उस बदतमीज हस्ती को। करे तो कोई गुस्ताखी !"

लेकिन इस समय तो वह उन्हें साफ देख रही है। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उत्तर की तरफ भी एक नाव छुक-छुक आवाज करती, पानी में धुँआ की लकीर-सी छोड़ती आ रही थी। लड़की ने मोटर-वोट कभी नहीं देखी थी। वह उसे आश्चर्य से देखने लगी। यह नाव काफिले से अलग आ रही थी उस पर केवल एक व्यक्ति बैठा था।

"ओह ये लोग दोनों तरफ से हमला करने आये हैं मेरे राज्य पर !" वह उछल कर खड़ी हो गयी।

"लेकिन जंगल की रानी की जमीन पर पैर रखने का फल अच्छा नहीं होगा यह उन्हें मैं अच्छी तरह बता दूँगी। मेरी शान्ति भंग करने आ रहे हैं ये शैतान ?"

चीतू के कान के पास झुक कर उसने धीरे से कहा—"चीतू, हम इन शैतानों को अच्छा सबक सिखायेंगे।"

उत्तर में चीतू ने गुर्राहट के स्वर निकाले। श्यामली का मुख भी क्रोध और घृणा से कड़ा पड़ गया। गाल लाल हो गये। चीतू उसकी भाषा और भाव समझ कर गले से विचित्र घुर्र-घुर्र की आवाज निकालने लगा। लड़की धीरे-धीरे जमे हुए कदमों से आगे बढ़ी। सामने नजर रखे चीतू भी दबे पाँवों से उसके साथ-साथ चला। मिंकू आगे-आगे उछलता कूदता जा रहा था। कुछ दूर आगे जंगल घना हो गया। पेड़ों की टहनियों को मजबूत लताओं ने घेर कर कुंज-सा बना

दिया था। श्यामली उछली और एक झुकी हुई टहनी को पकड़ कर लटक गयी। अब वह जमीन पर नहीं थी। एक डाल से दूसरी डाल को पकड़ कर बन्दर की तरह उछलती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। इस तरह वह जल्दी ही काफी दूर निकल गयी। पेड़ों की टहनियों और पत्तियों में वह छिप गयी थी। उसी के साथ नीचे चीतू चल रहा था। बड़े अभ्यस्त हाथों से सर्कस में झूला का खेल खेलनेवाली लड़की की तरह लताओं और घने पेड़ों की झुरमुटों में से अपनी लचीली और फुरतीली देह को झोंका खिलाती हुई वह दौड़ लगा रही थी। वह उत्तर की तरफ जा रही थी। अब घना जंगल समाप्त हो चला था। सूरज की किरणें पेड़ों से छन-छन कर पृथ्वी पर पड़ रहीं थीं। सामने धूप में चमकती चाँदी-सी नदी बह रही थी।

उसकी आँखें एकाएक सामने का दृश्य देख कर चमक उठीं। वह कूद कर जमीन आ खड़ी हुई। अपना हाथ उसने कमर के पट्टे में घुसे छुरे पर रखा। दाहिने हाथ के बल्लम को कस कर पकड़ लिया। उसने देखा नाव से एक लम्बा, मजबूत पेशियोंवाला युवक कूद कर किनारे पर आया। जंगल को देख कर उसकी आँखों में खुशी झलकने लगी। मस्त चाल से वह नदी से ऊपर के किनारे की ओर बढ़ रहा था। उसे कोई देख रहा है इसकी रत्ती भर भी खबर उसको नहीं थी।

लड़की ने चीतू की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—"देख चीतू वह आ गया। लेकिन बहुत देर तक यहाँ नहीं रह सकता वह। आ चलें।"

आगे-आगे मिंकू उसके पीछे चीतू, तीनों बढ़े और एकाएक उछल कर उस अजनबी के सामने खड़े हो गये। श्यामली ने कड़क कर कहा—

"रुक जाओ ए अजनबी। यहाँ तुम क्यों आये हो ?"

युवक चौंक कर खड़ा हो गया। सामने नजर पड़ते ही आश्चर्य से उसकी आँखें फटी रह गयीं। उसने आँखें झपकायीं। कई बार खोलीं और मींची फिर अपने आप ही बुदबुदा कर कहा—

"सपना तो नहीं देख रहा हूँ। ऐ भली लड़की ! कहीं यह मत कहना कि तुम वही नहीं हो। मैं समझ गया तुम वही हो। हे भगवान्, आज मेरा भाग्य कितना बुलन्द है। बोलो, बोलो, तुम वही जंगली लड़की हो न ?"

उसकी चौड़ी छाती, लम्बे मजबूत हाथ-पैर और सुन्दर आकर्षक चेहरे को देख कर एक बार लड़की के चेहरे का कड़ापन भी ढीला पड़ गया। वह नवयुवक भी बच्चों जैसे भोलेपन से उसको उत्सुकता और खुशी से देखे जा रहा था।

"हाँ मैं वही हूँ। मैं यहाँ की रानी हूँ। यह सारा जंगल मेरा है। यहाँ मैं किसी अजनबी को पसन्द नहीं करती।" उसने कड़ाई से उत्तर दिया। बौनों का संदेश उसे याद आ गया था।

"अजनबी मुझे भी पसंद नहीं। हमें अब एक-दूसरे के लिए अजनबी बने रहने की जरूरत ही क्या है ?" वह हँसता हुआ बोला।

"तुम मेरी इस जमीन पर क्यों आये हो ?"

युवक हँसा—"तुम्हारी जमीन ? जमीन तो सरकारी होती है लेकिन हम लोग इस बेकार के झगड़े में क्यों पड़ें ? मुझे अपना परिचय दे कर यह अजनबीपन दूर करना चाहिए। अभी तुमने कहा था कि तुम्हें अजनबी पसन्द नहीं है। मेरा नाम रत्नाकर है, तुम मुझे केवल रतन कह सकती हो।" उसने हँस कर कहा—

"मैं तुम्हें चोर कहूँगी। मुझे तुम्हारे नाम जानने की बिलकुल जरूरत नहीं है। तुम फौरन जहाँ से आये हो वापस चले जाओ।" उसने सख्त आवाज में आज्ञा देने के ढंग से कहा।

"ओह लड़की तुम्हारे हृदय नहीं है क्या ?" उसके सख्त रूखे व्यवहार से परेशान-सा युवक बोला।

"मेरे हृदय है किन्तु वह किसी अजनबी को देख कर नहीं उछलता। समझ में आया ? मेरे मित्रों ने मुझे तुम्हारी तरफ से पहिले ही सावधान कर दिया है। फिर मुझे तुम्हारे आने का यह ढंग बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा है। तुम एक ऐसी नाव से आये हो जिसमें न पतवार है न पाल है। यह क्या शरीफ लोगों के आने का ढंग है ? मैं कहती हूँ वापस जाओ। जंगल की रानी श्यामली तुम्हें आज्ञा देती है कि तुम फौरन चले जाओ।"

लड़की की भोली और नादानी भरी बातें सुन कर युवक की आँखों में हँसी की चमक उभर आयी। मुस्कुराहट से उसके ओठ फैल गए। नाव की बात पर तो वह ठठाकर हँस पड़ा फिर बड़ी नम्रता भरे स्वर में उसने कहा—"बात तो सुनो जंगल की रानी फिर...."

जंगल की रानी ने कड़क कर कहा—"मुझे तुम्हारी बातों में कोई रुचि नहीं। मैं कहती हूँ वापस जाओ। अभी जाओ नहीं तो मेरी जमीन पर पैर रखने का फल.... ।" उसने अपने साथी चीतू की ओर इशारा किया जो सिकुड़ कर चारों पैरों को समेट कर, पीठ ऊँची करके एकटक अजनबी युवक को घूर रहा था, "यह मेरा चीतू तुम्हें अभी मजा चखा देगा। मेरे इशारे भर की देरी है तुरन्त तुम्हें फाड़ खायेगा।"

"ओह !" युवक ने चीतू की ओर प्रसन्नता से देखा। कोई डर उसे उससे नहीं लगा। अभी तक उसकी तरफ उसने ध्यान ही नहीं दिया था। लड़की ही उसे बहुत दिलचस्प लग रही थी। चीतू को प्रशंसा की दृष्टि से देखता हुआ वह बोला—"शानदार है ! सचमुच शक्तिशाली पहरेदार और रक्षक है यह तुम्हारा। किन्तु यह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ेगा। जब यह तुम्हारा दोस्त है तब मेरा भी है। क्यों न दोस्त ?"

उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया ही था कि घबरा-कर श्यामली ने टोका—अरे, "नहीं-नहीं ! खबरदार ! यह तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देगा एक क्षण में। यह केवल मेरे इशारे का इन्तजार कर रहा है।"

लेकिन रत्नाकर हँसा। घबड़ाहट और आश्चर्य से लड़की ने देखा कि वह चीतू के गले पर हाथ फेर रहा था। फुसफुसा कर दोस्ती के लहजे में वह उससे कह रहा था—

"कहो मेरे दोस्त पसन्द हूँ न मैं तुम्हें ?"

युवक उसके बाल सहला रहा था। चीतू के कान जो पहिले सावधानी से खड़े थे झुक गये। उसकी पूँछ हिल रही थी। वह गले से खुशी की घुर्र-घुर्र आवाज निकलने लगी। लड़की मन्त्रमुग्ध-सी देख रही थी कि चीतू उस अजनबी का स्वागत कर रहा था।

यह वही भयानक चीतू है, जो मुझको छोड़ कर किसी के सामाने झुकना नहीं जानता ? जो मेरे अतिरिक्त किसी का दोस्त नहीं है ?" वह सोच रही थी। तभी दूसरा आश्चर्य उसे हुआ जब उसने देखा कि मिंकू भी खुशी से चीख-चीख कर युवक के कन्धों पर उछल रहा था।

"यह कैसा अजनबी है ? दुश्मन का क्या यही रूप होता है ? इसने जादूगर की तरह मेरे साथियों को बस में कर लिया है। जैसे यह इनका पुराना दोस्त हो। भौचक्की, परेशान, मन-ही-मन कुछ प्रसन्न-सी श्यामली अब प्रशंसा के भाव से युवक को देखे जा रही थी। उसका चेहरा अब सरल हो गया था। कड़ापन दूर हो गया था। आँखों में क्रोध न हो कर कोमल भाव भर गये थे।

"लगता है मेरे चीतू और मिंकू को तुम पसन्द आ गये हो। लेकिन तब....तब उन्होंने क्यों खबर दी थी कि तुम दुश्मन हो ?"

युवक लड़की की ओर देख कर मुस्कराया—"यह मैं बताऊँगा, पहिले बताओ तो तुम्हें किसने और क्या खबर दी थी ?"

"मुझे मेरे मित्र बौनों ने खबर भेजी है कि जंगल में कुछ गोरे लोगों का दल आया है जो मेरे दुश्मन हैं।"

"लेकिन मैं तो अकेला ही नदी के रास्ते से आया हूँ। मैं किसी दल के साथ नहीं हूँ। समझी ! गोरा जरूर हूँ किन्तु विदेशी नहीं हूँ फिर तुम भी तो गोरी हो। और यह भी समझ लो मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं दोस्त हूँ।" एकाएक कुछ और कहते-कहते वह रुका फिर तुरन्त ही अपने विचारों को रोक कर बोला—

"तो तुम वही जंगल की रानी हो न जिसके बारे में बहुत दिनों से सुनता आ रहा हूँ, और जिसके लिए मैं इतनी दूर कई सौ कोसों की यात्रा करके आया हूँ ? अब मुझे

अपना मित्र स्वीकार करोगी अच्छी लड़की ; अरे, नहीं-नहीं जंगल की रानी ?"

उसने ओठ काट कर गलती सुधारने के लहजे में कहा और अपना दोस्ती का हाथ उसकी ओर बढ़ाया। कुछ पुरानी यादें श्यामली के मस्तिष्क में उभर आयीं। उसने भी अपना पतला कोमल हाथ युवक की ओर बढ़ा दिया। एक नये प्रकार का अनुभव उसे हुआ जब युवक ने अपनी चौड़ी मजबूत हथेली में उसका हाथ ले कर प्रेम से दबाया। चीतू ने खुशी से अपने बालों को फुलाया, मिंकू भी कभी उसके ओर कभी युवक के कन्धे पर उछल-कूद करने लगा। वह मुस्करा उठी। उसको पहली बार जंगल में एक मानव-मित्र मिला। अब चारों दोस्त थे। जैसे कभी राम, लक्ष्मण, हनुमान और सुग्रीव वन में दोस्त बने थे।

श्यामली की आत्मकथा

"मैंने इस जंगल में अपनी जाति के किसी आदमी से मित्रता करने की कभी कल्पना भी नहीं की थी। हाँ रतन तुम कह रहे थे तुम मेरे लिये ही कई सौ मीलों की यात्रा करके आये हो, यह क्या बात है ? किसलिए तुम मुझसे मिलने आये हो ?" श्यामली ने युवक से पूछा।

"ठहरो पहिले हम लोग कुछ खा लें। मैं भूखा हूँ। खाना मेरे पास है। खाते-खाते बातें करेंगे। ठीक है न ?"

रत्नाकर ने कन्धे से झोला उतार कर जमीन पर रखा और पैक किये हुए खाने के टिन उसने लड़की के पैरों के पास डाल दिये। श्यामली का प्रसन्नता से दिल धड़क रहा था। एक विचित्र प्रकार के खुशी के भाव उसमें भर गये थे। उसे अपने पुराने दिन याद आये। वह भी अपने बचपन में इसी प्रकार पिता के साथ एक दिन नाव से इस जंगल में आयी थी। हालाँकि वह नाव इस प्रकार धुँआ उगलनेवाली नहीं थी। वह पाल तनी पतवार से चलनेवाली नाव थी। वह रतन को स्नेह से देख रही थी। बिल्कुल उसकी अपनी तरह का युवक, उसके अपने रंग और जाति का लड़का है यह। यहाँ किस उद्देश्य से इस भयानक जंगल में आया है ? उत्सुकता और खुशी उसकी आँखों में छलक रही थी।

"ठीक है हम खायेंगे और बातें करेंगे।" कह कर वह भी जमीन पर बैठ गयी। बिलकुल छोटी लड़की की तरह। उसका रानीपन, आज्ञा और अधिकार का स्वर और भावना सब गायब हो गयी थी। रतन उसकी ओर देख कर हँसा और डिब्बे से खाने की सामग्री निकालने लगा। उसने नये ढंग का चाकू निकाला जिससे बन्द टीनों को उतनी ही आसानी से खोल डाला जैसे वह अपने भाले की नोक से आम के कतरे काट लेती थी। वह बड़े आश्चर्य से युवक को टीन के डिब्बे खोलते और सामान निकालते देख रही थी। उसने बोतल से लाल रंग की शहद जैसी चीज निकाली और एक बड़े टिन से गोश्त के टुकड़े निकाले। एक डिब्बे से उसने केक निकाली फिर हँस कर बोला—

"तुम्हें सब नया-नया लग रहा है न रानी ? लेकिन मैं समझता हूँ तुम्हें यह सब अच्छा लगेगा। चलो खाना शुरु करो। क्या नाम है तुम्हारे इस नटखट बन्दर का ?"

"मिंकू !" मन्त्रमुग्ध-सी बोली वह।

रतन ने एक और डिब्बा खोला उसमें से चाकलेट निकाल कर मिंकू की ओर बढ़ाया। झपट कर बन्दर ने उसे ले लिया। उसे सूँघा फिर झिझकते हुए मुँह तक ले गया। चखने के बाद तो उसने खुशी से किलकारी भरी और कूद कर दूर चला गया कि कहीं कोई उससे छीन न ले। दोनों हँसने लगे।

"अब देखें तुम्हारे इस चीतू को मेरा यह गोश्त कैसा लगता है ?"

उसने एक टुकड़ा चीतू की ओर बढ़ाया। पहिले उसने भी उसे सूँघा और फिर एक बार में ही पूरा निगल गया।

"मेरे साथियों को तुम ही नहीं तुम्हारी चीजें भी पसंद आ गयीं हैं। मुझे बहुत आश्चर्य है कि खासकर चीतू ने तुम्हें एक अजनबी होते हुए भी कैसे इतनी जल्दी दोस्त मान लिया ? कैसे इसने तुम्हें एक दम पसन्द कर लिया ?"

"क्योंकि मैं सचमुच तुम सबका दोस्त हूँ।" रतन ने हँस कर कहा।

श्यामली को युवक की एक-एक बात अच्छी लग रही थी। उसके मुख पर उसके लिए प्रशंसा के भाव उभर रहे थे। वह उस पर अब पूरा विश्वास कर रही थी।

दोनों ने खाना शुरू किया। कितने दिनों बाद उसे ऐसा खाना मिला था। उसे अपने बचपन की याद आयी, जब अपने पिता के साथ उसने ऐसा खाना खाया था। पुरानी यादों से उसकी आँखों में पानी भर आया। रत्नाकर उसकी ओर बार-बार देख रहा था। उसके मुख पर उतरते चढ़ते विचारों को पढ़ रहा था।

"श्यामली मैं बहुत दिनों से तुमसे मिलने को उत्सुक था। मेरे देश के लोग तुम्हारे बारे में बिलकुल विश्वास नहीं करते थे, और मैं भी तब तक पूरे विश्वास के साथ नहीं कह सकता था जब तक आज तुम्हें साक्षात् देख नहीं लिया। हम लोगों ने सुना था कि एक लड़की एक भयंकर चीते के साथ घने जंगल में शेरनी की तरह निर्भय और आजाद घूमती है। पेड़ों पर बन्दरों की तरह उछलती-कूदती फिरती है। भयंकर जानवरों का शिकार करती है। भला कोई क्या इन बातों पर यकीन कर सकता है ? लेकिन मैंने इस बात का पता लगाने का निश्चय कर लिया और आज सचमुच, जंगल की रानी, तुम्हें देख लिया है। कितना भाग्यवान हूँ मैं ! अपने देश लौट कर मैं यहाँ के लोगों को बताऊँगा कि सचमुच एक बहादुर, देवी की तरह सुन्दर और पवित्र लड़की इसी दुनिया में रहती है। मैं तुम्हारी कुछ तस्वीरें उतारूँगा और उन्हें दिखाऊँगा। अब तुम मुझे अपने बारे में सब कुछ विस्तार से बताओ। तुम कौन हो, कहाँ से आयी हो और कैसे इस जंगल में अकेली रह रही हो ?"

श्यामली युवक के मुख से अपनी प्रशंसा सुन कर शरमा गयी। उसके गालों पर लज्जा की लाली दौड़ गयी। उसे आज एक विचित्र अनुभव हो रहा था। शरमानेवाली बात, लज्जा के भाव, ये सब पहिली बार ही तो वह अनुभव कर रही थी। शेर, चीते, हाथी, बन्दर इन सबके साथ तो उसने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था। उसे स्वयं अपने पर आश्चर्य हो रहा था।

उसे बौने लोगों की चेतावनी की भी याद नहीं रही। वह युवक के साथ बैठी जिस आनन्द का अनुभव कर रही थी वह बहुत बड़ा सुख था। उसे एक ऐसा साथी मिला था जिससे वह मानव-भाषा में बात कर सकती थी। कितना सुन्दर, हँसमुख, स्वस्थ और शक्तिशाली है रत्नाकर ! उसे वह बहुत ही अच्छा लग रहा था। रत्नाकर उत्सुकता और प्रशंसा से उसको और उसके मुख पर आते-जाते भावों को पढ़ रहा था। श्यामली के काले, मुलायम बाल पीठ पर उसी तरह सँवरे बिखरे थे जैसे जंगल की फूल भरी लता स्वच्छन्दता से फैली हो। चौड़ा माथा, खिंची कमान-सी भौंहें, चंचल हिरनी-सी साफ, निश्चल आँखों में उसके हृदय के भाव शीशे की तरह झलक रहे थे। लम्बी नाक और पतले ओठ। दूधिया रंग की इस लड़की को ईश्वर ने सचमुच बहुत कारीगरी से बनाया था। चीते की खाल से वह अपना अंग ढके थी। लम्बे सुडौल हाथ और पैरों की सुदृढ़ पिंडलियाँ, मुख पर बच्चों जैसी सरलता, दुनिया के छल कपट से अज्ञान यह लड़की सचमुच आश्चर्यजनक थी। जंगल की रानी ऐसी ही होनी चाहिए। इसे इस प्रकार भयानक चीते के साथ इस घनघोर जंगल में अकेली, निर्भय घूमती देख कर क्या कोई विश्वास करेगा कि यह इसी संसार की रहने वाली प्राणी है ?

रत्नाकर मन-ही-मन लड़की की प्रशंसा में डूब रहा था। श्यामली ने ऊपर मुँह उठा कर उसकी ओर देखा और दोनों ने जैसे एक-दूसरे के मन के भाव पकड़ लिये। दोनों खिल खिला कर हँस पड़े।

श्यामली अपने बारे में रत्नाकर को बताने लगी। बौने द्वारा भेजी चेतावनी वह बिलकुल ही भूल गयी थी अब।

"अपने पिता के साथ जब मैं इस नदी के किनारे मय साज और सामान के उतरी थी उसकी मुझे बहुत धुँधली-सी याद है। लेकिन हम लोग ऐसी नाव से नहीं आये थे जैसे तुम्हारी है, धुआँ उगलनेवाली। हमारी पाल लगी नाव थी। पिता जी के साथ इसी प्रदेश के कुछ आदिवासी थे। एक रास्ता बतानेवाला आदमी भी उनके साथ था। कई दिनों तक घूमने के बाद पिता जी ने एक अच्छी जगह देख कर डेरा डाला और स्थायी रूप से यहीं रहने लगे। इस प्रकार हम सभ्य दुनिया से बिलकुल अलग हो कर इस जंगल के ही वासी हो गये। मैं यहीं बड़ी हुई। यहीं के जीव, जन्तु, पशु, पक्षी मेरे मित्र बने। इन्हीं की सभ्यता, रीति, रिवाज, रहन, सहन मैंने सीखा। पिता जी कभी-कभी मुझे पढ़ना लिखना भी सिखाते थे।"

रत्नाकर ने बीच में ही टोका—"कौन सी भाषा सिखाते थे ?"

"वही जो मैं बोल रही हूँ। बहुत थोड़ा ही मैं पढ़ पायी थी। बचपन में ही जब से होश सँभाला मैं यही भाषा बोलती आ रही हूँ। लेकिन यहाँ के आदिवासियों और बौनों की भाषा भिन्न है। पिता जी के बाद मैंने इन्हीं की भाषा और तरीके सीखे। इस प्रकार सभ्य और पढ़ी लिखी दुनिया मेरे लिए स्वप्न बन कर रह गयी। कभी-कभी अभी भी अपने देश और पिता जी की धुँधली-सी याद मेरे मस्तिष्क में कौंध जाती है। जैसे कोई सपना देखा था।

पिता जी मेरे लिए बहुत कम समय दे पाते थे। वे

दिन-रात जंगल में कुछ ढूँढा करते थे। डेरे पर आकर नहीं मालूम क्या पढ़ते रहते। कुछ नक्शा-सा बनाते रहते थे। एक दिन गाइड के साथ वह दूर पश्चिम की तरफ पहाड़ की ओर गये। वह जो उस तरफ एक घना कुंज-सा दिखलाई पड़ रहा है न, उसी के उस पार है वह पहाड़। उन्हीं की बातों से पता चला कि वहाँ उन्होंने एक गड्ढा खोदा था। खुदाई का काम काफी दिनों तक चलता रहा। उन दिनों पिता जी बहुत चिन्तित और व्यस्त रहते थे। गड्ढा क्यों खोदा गया ? वहाँ क्या था ? पिता जी ने मुझे नहीं बताया। शायद वह सब समझने लायक मैं नहीं थी उस समय। बहुत छोटी थी।

एक दिन जंगल में बहुत जोर का तूफान आया। उस दिन की तरह बिजली, बादल, पानी मैंने दुबारा नहीं देखा। सारा जंगल भयानक हो रहा था। जंगली जानवरों की गरज, बादलों की कड़क दोनों ने मिल कर प्रलय का-सा दृश्य उत्पन्न कर दिया था। उस दिन बहुत सबेरे ही पिता जी घर से चले गये थे। रात होने पर भी नहीं लौटे और आज तक भी नहीं। घनी अंधेरी रात थी। चारों तरफ पशु, पक्षियों की चीखें और चिल्लाहट सुनायी दे रही थीं। मैं रोती हुई पिता जी को पुकारती-पुकारती घूम रही थी। रोती-रोती कब कहाँ सो गयी, कुछ पता नहीं था। दूसरे दिन भी तूफान बन्द नहीं हुआ। मैं सारे दिन उन्हें ढूँढती, पुकारती घूम रही थी। भूखी प्यासी और भयभीत ! हमारा झोपड़ीनुमा घर ढह गया था। घर का सब सामान वर्षा, आँधी में नष्ट हो गया था। दिन भर पिता को ढूँढती हुई उस रात को एक ऐसी गुफा में मैंने शरण ली जहाँ चीते के बच्चे उछला-कूदा करते थे।''

रत्नाकर की आँखों में सहानुभूति उभर आयी। वह जिज्ञासा और कौतूहल से भरा श्यामली की कहानी सुन रहा था। श्यामली भी बड़ी लगन से अपनी कथा सुना रही थी। आज पहिली बार उसे सुनने और समझनेवाला कोई उसके सामने बैठा था। थोड़ी देर रुक कर वह फिर कहने लगी—

''इसी जंगल में एक दिन नीचे, घाटी के बौनों ने मुझे अकेला, अनाथ, उदास जीवन से संघर्ष करते, घूमते पाया। उन्होंने मुझे अपनी रक्षा में रख लिया। प्यार से मेरा पालन-पोषण किया और आज भी वे मुझे उसी तरह प्यार करते हैं। दूर रह कर भी मेरी खोज खबर लेते रहते हैं। हर संभावित खतरे से मुझे आगाह कर देते हैं, मेरी रक्षा करते हैं और आज भी उन्होंने मुझे सावधान रहने के लिए सूचना भेजी है।

मैंने उस गुफा के चीते के बच्चों में से एक को अपना साथी चुन लिया वह यही मेरा चीतू है। यही मेरा सुख-दुःख का प्यारा साथी है। मेरा दूसरा साथी यह नन्हाँ नटखट मिंकू है। जंगल में कैसे आत्म-निर्भर हो कर रहा जाता है यह मैंने सीख लिया है। यहाँ का हर छोटा बड़ा प्राणी मेरा मित्र है।

दुश्मनों से कैसे निबटा जाता है, यह मैं जानती हूँ। यहाँ के जीवों की क्या आदतें हैं, उनमें क्या खूबियाँ हैं, उनके क्या-क्या खतरे हैं मैं पहिचानती हूँ। पेड़ पौधों में क्या खाने लायक है, क्या विषैला है यह भी मैं जान गयी हूँ। यह छोटा मिंकू कोई भी चीज मेरे खाने से पूर्व पहिले स्वयं सूँघ लेता है, चख लेता है। इसने कई बार मुझे खतरे से बचाया है और यह चीतू इसके विषय में तो जो कुछ कहूँ थोड़ा है।

अब मैं यहाँ की रानी हूँ। बौनों और जंगल के प्रत्येक प्राणी ने मुझे अपनी रानी स्वीकार कर लिया है। पूरा जंगल मेरा घर है, मेरा बगीचा है। यहाँ किसी प्रकार की कमी या कष्ट का अनुभव मुझे महसूस नहीं होता। मैं हर तरह से सुखी हूँ। हाँ किसी विदेशी या बाहरी आदमी का अपने राज्य में किसी प्रकार का दखल मुझे बिलकुल सहन नहीं है। इसीलिए बौनों की सूचना पा कर मैं आज अपने राज्य का निरीक्षण करने निकली थी।''

यह कह कर वह मुस्करा दी। बड़े आत्म विश्वास के साथ उसने अपनी कहानी सुनायी थी।

रत्नाकर ने आदर और श्रद्धा से उस साहसी, बहादुर लड़की की ओर देखा जो बड़े भोलेपन से अपनी जीवन-कथा सुना रही थी। जैसे कोई बड़ी बात न हो कर बहुत साधारण सी बात हो उसकी यह संघर्ष भरी कहानी।

''तुम्हारे पिता जी का क्या हुआ ? उनके बारे में तुमने फिर कुछ सुना ?''

''नहीं। कभी नहीं। शायद अब वे जीवित नहीं हैं। मर ही गये होंगे, नहीं तो क्या मुझे खबर न होती ?

जीवित होते तो क्या वे मुझे ऐसे ही अकेली छोड़ गये होते ? बहुत प्यार करते थे मुझे। माँ के मरने के बाद वे मुझे हमेशा छाया की तरह साथ रखते थे।''

एक गहरी उदासी उसकी आँखों में भर आयी। पिता की याद ने उसे हिला दिया था।

''अब केवल एक ही वस्तु उनकी मेरे पास है। उनकी याद की आखिरी निशानी।''

रत्नाकर ने बेहद उत्सुकता से पूछा—''वह क्या है ?''

''एक सोने का लाकेट।''

''कैसा लाकेट ?''

वह इतनी गहरी रुचि इसकी बातों में ले रहा है देख कर श्यामली को अपनी बातें बताने में बड़ा आनन्द आ रहा था। इतने वर्षों के बाद उसे कोई मित्र मिला था।

''तूफान से पूर्व, जिस दिन पिता जी सदा के लिए जाने वाले थे उस दिन की पूर्व रात को एक विचित्र नक्काशी

किया हुआ लाकेट मुझे दिया था। उसको देवी के सामने पूजा करने के बाद मेरे गले में उन्होंने पहना दिया था।"

"किस प्रकार की नक्काशी है उस पर ?"

वह रुकी जैसे कुछ याद कर रही हो फिर बोली—"अरे, उस पर उसी पर्वत का चित्र बना है जहाँ उन्होंने गड्डा खोदा था; मैंने तो पहिले इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया था। अभी तुम्हारे पूछने से याद आया।"

"यहाँ तुम्हारे पास है वह लाकेट ?"

"वाह, क्या मैं इतनी मूर्ख हूँ कि इतनी कीमती चीज, अपने पिता जी की आखिरी और एक मात्र निशानी जंगल में लिए घूमती फिरूँ ? मैंने उसे अपने जंगलवाले घर में सँभाल कर रखा है। किसी दिन तुम्हें वहाँ ले जाऊँगी तब देख लेना।"

"ओह कितनी अच्छी हो तुम ! सचमुच उसे देख कर मुझे बहुत खुशी होगी। तुम्हारा घर देख कर भी मुझे बहुत अच्छा लगेगा। लेकिन कहाँ है तुम्हारा घर ?"

"उधर।" लड़की ने एक पहाड़ी की ओर उँगली उठा कर इशारा किया। रत्नाकर ने उत्सुकता से उचक कर उधर देखा फिर कहा—

"क्या अब मैं तुम्हारी कुछ फोटो ले लूँ ?"

"जरूर।" वह छोटी बच्ची की तरह खड़ी हो गयी। उसे खड़ा होते देख कर चीतू भी उछल कर उसके बराबर आ खड़ा हुआ और मिंकू तो उसके गले में ही लटक गया। रत्नाकर हँसा और उसने अपना कैमरा कंधे में लटके बैग से निकाला फिर उन लोगों के कई फोटो उतारे। श्यामली आश्चर्य से फोटो उतारने की क्रिया देख रही थी। फिर रत्नाकर ने बड़ी नम्रता और प्रेम से श्यामली को अपनी मोटर-बोट पर चलने के लिए आमंत्रित किया। किन्तु उसने इनकार से सिर हिला दिया।

"आज नहीं फिर कभी। अब मैं वापस जाऊँगी।" उसने सोचा आज अभी-अभी तो इस अजनबी से परिचय हुआ है। माना यह भला आदमी है। मुझे बहुत अच्छा भी लगा किन्तु फिर भी इतनी जल्दी इतना विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। फिर एकाएक उसे याद आया कि वह मछली पकड़ने के लिए नदी में रात से ही जाल लगा आयी है। उसने अपने दोनों साथियों को संकेत किया और मुड़ कर एक तरफ चल दी। रत्नाकर उस जंगल की लड़की को चीते और बन्दर के साथ जाते हुए एकटक देखता रहा। इस आज की घटना की उसने कभी कल्पना नहीं की थी।

इसका वर्णन यदि वह अपने देश में करे तो कोई विश्वास करेगा क्या ? कितनी वीर, निर्भीक, सुन्दर और भोली है यह लड़की ! सचमुख जंगल की रानी है। वह बराबर उसी के बारे में सोचता बड़ी देर तक वहीं खड़ा रहा। पंजाब से इतनी दूर आसाम की यात्रा का सारा कष्ट वह श्यामली से मिल कर भूल गया। उसके दिल में खुशियाँ भर गयीं। श्यामली जब आँखों से ओझल हो गयी तब वह भी मुड़ कर नदी की तरफ जहाँ उसकी मोटरबोट खड़ी थी चल दिया।

लाकेट की चोरी

श्यामली चलती जा रही थी और मन-ही-मन अभी की गुजरी बातों पर विचार कर रही थी। उसे स्वयं अपने पर आश्चर्य हो रहा था। वह उस दूसरे काफिले के बारे में सोच रही थी जो उसने पहाड़ी के उस पार जाते देखा था। क्या रत्नाकर उसी दल का सदस्य नहीं है ? क्या उसने सच कहा था कि वह अकेला आया है और उसका उस दल से कोई सम्बन्ध नहीं है ? उसे याद आया कि वह उसके पिता और उस लाकेट के बारे में कितनी दिलचस्पी दिखा रहा था। आखिर क्या उसमें कुछ राज है, आखिर वह क्यों उसके प्रति इतनी आकर्षित हो गयी ? क्यों उसने उससे अपनी सब

बातें बता दीं ? कोई धोखा तो नहीं होगा ? वह मित्र बौनों की चेतावनी बिल्कुल ही क्यों भूल गयी ? क्या यह सब उसकी नादानी और भूल तो नहीं थी कि उसने एक नये आदमी के साथ इस प्रकार इतनी जल्दी दोस्ती कर ली और उसे सब कुछ बता दिया ?

फिर उसे याद आया कि चीतू ने भी तो उसे दोस्त की तरह ही स्वीकारा था। वह चीतू जो कभी धोखा नहीं खा सकता ! मिंकू भी उससे कैसा हिल मिल गया था ! दुश्मनी की नीयत से आये किसी आदमी से क्या मेरे ये साथी कभी ऐसा व्यवहार कर सकते हैं ? नहीं, रत्नाकर कभी दुश्मन नहीं हो सकता। वह एक अच्छा सच्चा आदमी ही है। एक ईमानदार दोस्त है वह।

इस प्रकार अपने शक को उसने झकझोर कर दिमाग से हटा दिया और हल्के मन से नदी के किनारे जहाँ मछलियों के लिए कल रात में जाल लगाया था चल दी। उसने जाल और मछली एकत्र की फिर रुक कर घाटी से कुछ फूल चुने और सब ले कर वह अपने घर की तरफ बढ़ी लेकिन कुछ दूर बढ़ते ही वह ठगी सी खड़ी रह गयी।

गुफावाले घर के बाहर बालू पर किसी के पैरों के निशान थे। निश्चय ही वह उसके नंगे पैरों के निशान नहीं बल्कि जूतों के निशान थे। ऐसे जूते जो रत्नाकर के पैरों में देखे थे। साँस रोक कर वह झपट कर अन्दर गयी। गुफा का सारा सामान तितर वितर था। उसका घासों का मुलायम बिस्तर बिखरा पड़ा था। चीते के खाल का गद्दा उधड़ा हुआ था। और उसमें छिपा हुआ उसका कीमती धन गायब था। नक्काशी किया हुआ लाकेट जो उसके पिता ने उसे जाने से पूर्व दिया था किसी ने निकाल लिया था।

"ओह क्या तभी वह आदमी उसके लाकेट में इतनी रुचि ले रहा था ? बहुत देर में उसकी अक्ल मे सही बात आयी ! अब, जब वह लुट गयी ! उस शैतान ने उसे लूट लिया, धोखा दे गया ! तो, यही वह चोर, दुश्मन है जिसके विरुद्ध बौनों ने उसे काफी पहले ही सावधान कर दिया था !" उसने क्रोध में दाँत पीसे। हवा में कस कर मुट्ठी उठायी। "लेकिन मैं देखूँगी कि कैसे मेरा लाकेट उसके पास रह सकता है ? आ चीतू देखें तो उस शैतान को। कहाँ जायेगा बच कर ?"

वह क्रोध में उलटे पैर लौट पड़ी। उसे इस दशा में देख कर चीतू के गले से भी गुर्राहट निकलने लगी। मिंकू ने भी किटकिटा कर चीख मारी। दोनों उसके साथ गुफा से बाहर आ गये। मिंकू उसके गले से लटक गया। उसने उछल कर पेड़ की डाली पकड़ ली। जल्दी-जल्दी डाल-डाल लटकती, झूलती उस जगह आ गयी जहाँ रत्नाकर से वह कुछ घण्टे पूर्व मिली थी। निश्चय ही इस समय वहाँ कोई नहीं था। किन्तु अब जंगल शांत नहीं था। वहाँ शोर और हलचल-सी मची थी।

उसकी आँखें सामने के दृश्य पर टिक गयीं। खच्चर-गाड़ियों और तम्बू का काफिला कुछ दूर पर खड़ा था। तम्बुओं को इस प्रकार खड़ा किया गया था कि एक गोलाकार घेरा बन गया था जिसके बाहर सामान को ढोने वाले काले आदिवासी पहरे पर खड़े थे। घेरे के अन्दर आग जल रही थी और उसके पास तीन गोरे आदमी सफेद वस्त्र पहिने सिपाहियों की-सी ड्रेस में बैठे थे। तीनों कुछ खास बातें कर रहे थे ऐसा उनके हाव-भाव से लग रहा था। ये लोग धीरे-धीरे सावधानी से फुस-फुसा कर बोल रहे थे।

श्यामली ने चारों ओर नजर दौड़ाई उनमें रत्नाकर नहीं दिखाई पड़ रहा था। लेकिन जरूर वह यहीं कहीं होगा। यह

वही पार्टी है जिसके साथ वह आया है, यद्यपि उसने इन्कार किया था कि वह इस दल का नहीं है लेकिन वह झूठ बोला था। कुछ निश्चय करके उसने अपनी गर्दन उठायी, चीतू को संकेत दिया और आगे निडरता से बढ़ गयी। वह सीधी उन तीनों आदमियों के कुछ फासले पर जा कर खड़ी हो गयी। सबसे पहले सामने मुख किये बैठे तीनों में जो सबसे छोटा था उसकी दृष्टि चीते के साथ खड़ी लड़की पर पड़ी तो घबरा कर वह उछल कर खड़ा हो गया। उसके गले में आवाज घुट-सी गयी। बड़ी मुश्किल से उसने कहा—"हे भगवान ! उधर देखो, वह कौन है ?"

उसकी आवाज पर शेष दोनों आदमियों ने मुड़ कर देखा। लड़की कुछ और कदम आगे बढ़ी। उसने सुना वे कह रहे थे—"अरे यह तो वही जंगल की लड़की है ! तो स्वयं ही यहाँ आ गयी वह ?"

लड़की फिर उस चेतावनी को भूल गयी जो सुबह ही बौनो ने नगाड़ों पर भेजी थी। वह सीधे बिना सोचे समझे चीतू के साथ उन तीनों के पास जोश में खड़ी हो गयी।

"मैं तुम्हारे दोस्त रत्नाकर को ढूँढ़ने आयी हूँ।" उसकी आवाज में तेजी और कड़क थी। साफ था कि वह बहुत क्रोध में थी। तीनों ने एक-दूसरे को रहस्य भरी दृष्टि से देखा। तब उन तीनों में बड़ा जो शायद उनका मुखिया था, जिसकी मूँछें घनी थीं बोला—"तुम जंगल की लड़की श्यामली ही हो न ?"

"हाँ यही मेरा नाम है लेकिन तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम हुआ ?"

वह हँसा—"तुम्हें नहीं मालूम लड़की कि तुम्हारा नाम और प्रसिद्धि किस प्रकार दुनिया में चारों ओर फैली है।" वह बढ़ कर लड़की के करीब आ गया। चीतू गुर्राया। कन्धे पर बैठे मिंकू ने भी चीख भरी। आदमी रुका फिर बोला—"हम तुम्हारे नाम और यश को अच्छी तरह जानते हैं। हम सब तुम्हारे दोस्त हैं। मेरा नाम रौबिन क्लेम और ये दोनों ग्रेहम और जेम्स हैं।" उसने साथियों की ओर उँगली से इशारा करके कहा।

"मैं अपने लिए दोस्त ढूँढ़ने नहीं आयी हूँ यहाँ, रत्नाकर का पता लगाने आयी हूँ। कहाँ है वह ?" बेरुखी, से तीखी आवाज में वह बोली। उसने फिर ध्यान दिया कि तीनों ने एक-दूसरे की आँखों में अर्थ भरी दृष्टि फेंकी। उसने फिर देखा कि चीतू के गले से गुर्राहट निकल रही है। उसकी आँखों में घृणा उभर रही थी। वह सावधान एकटक आँखें सिकोड़ कर उन तीनों को घूर रहा है। अपने साथियों का यह बर्ताव श्यामली की समझ में नही आया।

"रत्नाकर नाम का कोई हमारा मित्र नहीं है लड़की।" रौबिन ने कहा।

लड़की ने पूछा क्या—"वह तुम्हीं में से एक नहीं है ? क्या वह तुम्हीं लोगों के साथ नहीं आया ?"

"नहीं। भगवान् का शुक्र है कि वह हमारे साथ नहीं आया और न वह हमारा दोस्त या साथी ही है। हम इन शैतान धोखेबाज लड़कों के साथ नहीं रहते, न ऐसों को दोस्त ही बनाते हैं। वह हमारे देश और जाति का भी नहीं है।" रौबिन ने हँस कर कहा। "अब आओ हमारे पास आग के नजदीक बैठ जाओ। हम लोग तुम से बात करना चाहते हैं।"

उसने अपने साथियों की ओर देखा। वे दोनों भी बोल पड़े—"हाँ, हाँ, हम लोग तुम से बात करना चाहते हैं।"

सभ्य दुनिया के छल-छिद्रों से अनभिज्ञ श्यामली ने भौंहें चढ़ा कर पूछा—"मुझसे बात करना चाहते हो ? लेकिन क्यों, और क्या बात करना है तुम्हें ?"

रौबिन ने कहा—"हम तुम्हारे लिए ही इतनी दूर से यहाँ जंगल में डेरा डाले पड़े हैं। तुम्हीं को ढूँढ़ने के लिए हम यहाँ आये है। समझी लड़की !" एक चालाकी भरी मुस्कराहट उसके होठों पर फैल गयी।

"तुम मुझे ढूँढ़ने के लिए यहाँ आये हो ?" परेशान थी श्यामली। वह सोच रही थी रतन भी तो यही कह रहा था कि वह उसके लिए कई सौ कोस का सफर कर के आया है। आखिर मामला क्या है ?

उसे सोच में खड़ी देख रौबिन फिर बोला—

"हम तुम्हारा पता लगाने के लिए ही अपने देश से चले हैं लड़की। रत्नाकर हमारे पीछे लगा चला आया है लेकिन हमारा दोस्त नहीं है, न हम उसका विश्वास करते हैं। तुम भी उसका विश्वास मत करना वह तुम्हें धोखा दे देगा। तुम्हारा नुकसान कर सकता है वह।"

लड़की ने घूर कर उन लोगों को देखा। क्योंकि वह रत्नाकर से नाराज थी उसे उनकी बातों में सचाई भी लगी। ये लोग उसी के दिल की बात तो दोहरा रहे हैं न ?

"मुझे कैसे विश्वास हो कि तुम सच कर रहे हो और तुम लोग मेरे दुश्मन नहीं हो। फिर भला रत्नाकर मेरा क्या नुकसान कर सकता है और क्यों वह ऐसा करेगा ?"

अपने भावों को दबा कर उसने अपनी समझ में बहुत चतुराई से पूछा।

"श्यामली सुनो, हम सच कह रहे हैं कि हम तुम्हारे लिए ही यहाँ आये हैं क्योंकि तुम्हारे पिता जी···"

"मेरे पिता जी···! उन्हें टोक कर श्यामली उत्सुकता से बोल पड़ी।

"हाँ-हाँ तुम्हारे पिता जी हमारे बड़े अच्छे दोस्तों में से हैं और जिन्हें लोग कुछ दिन पहले तक मरा समझते थे वे अभी जिन्दा हैं।" ग्रेहम ने बड़ी सहानुभूति भरे स्वर में

कहा।

लड़की की नस-नस उत्तेजना से फड़क उठी। दिल

धड़कने लगा। उत्साह और जिज्ञासा से भरा उसका मुख लाल हो गया ? ओठ खुले रह गये। अपने भावों को दबाने की चेष्टा में उसके गले से आवाज नहीं निकल रही थी। बड़ी मुश्किल से वह बोली—

"लेकिन मेरे पिता जी के बारे में सब बातें तुम्हें कैसे मालूम हुई ?"

रौबिन ने जेम्स और ग्रेहम की ओर देखा। फिर लड़की की ओर देख कर अपने स्वर और मुख पर अधिक सचाई और सहानुभूति भर कर बोला—"जब हम देश से चले थे तब रास्ते में एक व्यक्ति तुम्हारे पिता का संदेश ले कर आया था कि उन्हें कुछ जंगली जातियों ने पकड़ लिया था और वह मुश्किल से उनकी कैद से छूटे हैं। उन्होंने हमसे कहलाया कि जंगल में मेरी बेटी को जा कर ढूँढो। वह तुम्हें पहाड़ पर उस गड्ढे का पता देगी। वहीं मैं भी तुम्हें मिलूँगा।"

श्यामली अवाक्-सी रौबिन की बातें सुन रही थीं। उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं। उसे पिता के साथ के वे दिन याद आये जब वह उनके साथ, अपने प्यारे पिता के साथ रहती थी। इतनी बड़ी सूचना पा कर वह भूल गयी कि वह हँसे या रोये। वह बौनों की चेतावनी भी भूल गयी। उसने झिझकते हुए पूछा—

"तो तुम लोग उस पहाड़ पर जाओगे ? और···मुझे भी ले जाओगे ?"

"हाँ-हाँ, यही तो बात है। यदि चलना चाहोगी तो अवश्य तुम्हें साथ ले चलेंगे।"

खुशी और जोश से श्यामली का दिल धड़कने लगा। तभी उसे याद आयी बौनों की चेतावनी और रत्नाकर की मुलाकात। उसके मन में फिर शक भर गया।

"लेकिन आज ही सुबह मुझे मेरे मित्र बौनों ने सूचना भेजी है कि मेरे कुछ गोरे दुश्मन, जंगल में घुसे हैं। मैंने भी इस सूचना के साथ तुम लोगों को आते देखा था। मुझे सूचना दी गयी है कि इन गोरों में एक मेरा खास दुश्मन है और मुझे नुकसान पहुँचानेवाला है, उससे मुझे सावधान रहना चाहिए। क्या यह सच नहीं है ?"

रौबिन यह सुन कर ठठा कर हँसा। "यह सब सच है भोली लड़की !" हमीं ने तुम्हारे मित्रों को तुम्हें यह खबर देने को कहलाया था और वह दुश्मन वही है जिसे तुम खोज रही हो। वह हमसे कई दिन पूर्व अलग हो गया था। हमने कई दिनों से उसकी झलक नहीं देखी, लेकिन अब मैं देख रहा हूँ कि वह शायद अपना कार्य पहिले से ही कर गया है। ठीक है न ?"

श्यामली घबड़ाई-सी खड़ी थी। सब ठीक ही तो लग रहा है। रौबिन की बात ही सच लगती है। रत्नाकर ने इन लोगों को भी झाँसा दिया है और मुझे भी ठग गया है।

उसे सोचते देख कर रौबिन ने फिर कहा—"घबड़ाओ नहीं लड़की ! तुम मेरे मित्र की बेटी हो। हमारे साथ आओ। हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। तुम बिलकुल बेफिक्र रहो। हमारे साथ न रहीं तो पता नहीं वह शैतान तुम्हारे साथ क्या कुछ दुष्टता न कर बैठे।"

लड़की की आँखों में फिर क्रोध और घृणा भर आयी।

"तुम लोग सोचते हो कि मैं उससे डरती हूँ, और डर कर तुम्हारे पास आयी हूँ ?" छिः क्या मैं अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकती ?" वह तन कर खड़ी हो गयी।

"तुम समझते हो, मैं जंगल की रानी, उस छोटे मामूली से आदमी से डर जाऊँगी ? लेकिन फिर भी मैं तुम्हारे साथ पहाड़ पर चलूँगी। कब चलना है तुम्हें वहाँ ?"

जोश में उसे दिखाई ही नहीं दिया कि उन तीनों आदमियों की आँखें उसकी बात सुन कर चालाकी, कुटिलता और खुशी से चमक उठीं थीं।

रौबिन ने कहा—"कल सुबह।"

"मैं तैयार रहूँगी।"

"यह हुई न शानदार बात ! आओ हाथ मिलाओ।" रौबिन ने हँस कर कहा। वह पीछे हट गयी किन्तु फिर

झिझकते हुए उसने हाथ बढ़ाया। चीतू के मुख से फिर एक दबी गुर्राहट निकली। वह यह देख कर चौंकी कि चीतू के बाल खड़े हो गये थे। मिंकू भी जैसे कुछ याद आ गया हो उसके कंधे से कूद कर एक तरफ दौड़ कर चला गया।

परेशान-सी वह चीतू के साथ लौट पड़ी। वह सोचने लगी, चीतू क्यों गुर्राया, मिंकू क्यों भाग गया ? रत्नाकर के साथ हाथ मिलाते समय तो उसने ऐसा नहीं किया था ? तब मिंकू भी खुश था लेकिन अब वह क्यों यहाँ से चला गया ? वह भी खुश नहीं दिखायी दिया। इन लोगों के साथ पहाड़ पर जाने का वायदा करके क्या उसने ठीक नहीं किया ? कुछ धोखा तो नहीं होगा ? जो कुछ रौबिन ने रत्नाकर के बारे में कहा है क्या सच है ? क्या वही सचमुच मेरा दुश्मन है ? क्या वह वही आदमी है जिसके बारे में मुझे सावधान रहने के लिए बौनों ने कहा है ? फिर उसने कहा, जरूर यही ठीक होगा। रत्नाकर ही वह आदमी है। तभी तो उसने चोरों की तरह मेरी गुफा में जा कर मेरा लाकेट ले लिया। किंतु पिता के जीवित रहने की बात पर उसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था। वह जल्दी-जल्दी चलने लगी। तभी एकाएक मिंकू की आवाज सुन कर ठिठक गयी।

मिंकू किलकारी भरता हुआ उसकी ओर दौड़ा आ रहा था। उसके मुख में और हाथों में चाकलेट थी।

''कहाँ, कहाँ मिंकू ? कहाँ है वह चोर ?''

''ठहर जा रे छोटे नटखट, शैतान ?'' कहते हुए एक युवक की शक्ल पेड़ों के झुरमुट से निकलती दिखायी थी। वह रत्नाकर ही था जो हँसता हुआ मिंकू के पीछे-पीछे दौड़ा आ रहा था।

श्यामली का चेहरा उस पर नजर पड़ते ही कड़ा पड़ गया।

रत्नाकर से झगड़ा

रत्नाकर मस्त चाल से झूमता प्रसन्नता से भरा हुआ चला आ रहा था। आगे-आगे मिंकू खुशी से किलकारी भरता कूद रहा था। श्यामली और चीतू को देख कर वह हँसा—

''मैं तुम्हें ही ढूँढ रहा था श्यामली। कितनी जल्दी ढूँढ लिया न ?''

''जरूर ढूँढ लिया ! वैसे ही जैसे मेरा लाकेट ढूँढ लिया न ? चोर कहीं के।'' श्यामली के मुख पर क्रोध और घृणा थी।

''लाकेट ? तुम क्या कह रही हो श्यामली ?'' भौंचक्का-सा रत्नाकर बोला।

''नाटक मत करो रतन। तुम समझते हो कि मैं मूर्ख हूँ। मैं तुम्हें समझ गयी हूँ। अब धोखा नहीं खा सकती तुमसे। तुमने मेरे पिता की एक मात्र निशानी भी चोरी कर ली। छिः। मैंने तुम पर विश्वास कर कितना बड़ा धोखा खाया। किन्तु तुम्हारे षड्यन्त्र को मैं अच्छी तरह जान गयी हूँ। अब जल्दी मेरी चीज मुझे वापस कर दो।''

रत्नाकर का चेहरा दु:ख और अपमान से काला पड़ गया। एक क्षण वह ठिठक कर क्रोध से भरी श्यामली को देखता रहा फिर बोला—

''मैंने तुम्हारा लाकेट नही लिया है विश्वास करो प्रिय मित्र। मैंने तो उसे अभी तक देखा भी नहीं है। तुम्हारा घर भी अभी नहीं—।'' कहते-कहते वह एकाएक कुछ याद कर के रुका। दु:ख से उसका मुख मुरझा गया था।

''समझ गया। तुम सोचती हो मैंने तुम्हारा लाकेट चुराया है ?''

उसका मुख देख कर एक क्षण श्यामली भी सन्देह में पड़ गयी कि उसे चोर समझ कर शायद वह गलती कर रही है, किन्तु उसके घर के दरवाजे पर जूते के वैसे ही निशान थे जैसे रत्नाकर पहिने था। यह सोच कर तथा रौबिन की बातें याद कर के वह फिर क्रोध में भर गयी—

''तो और क्या समझूँ ? तुम्हारे सिवा और कौन मेरे लाकेट के बारे में जानता था ? केवल तुम्हीं को तो मैंने बताया था। ज्यादा चालाकी मत करो और मेरी चीज मुझे वापस कर दो।''

रत्नाकर ने कड़ी नजर से उसे देखा फिर बिना कुछ

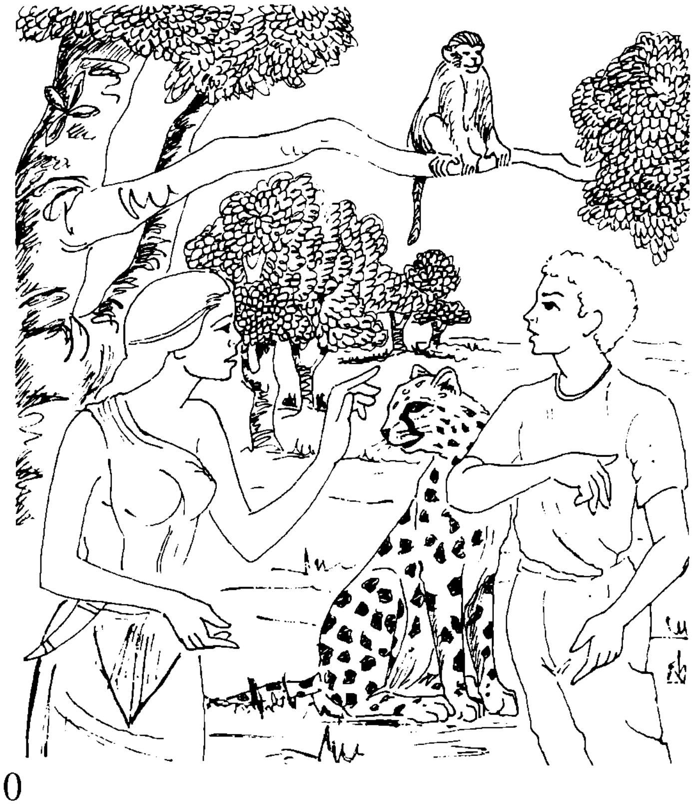

उत्तर दिये मुड़ कर दौड़ गया। श्यामली पहिले तो उसे इस प्रकार वापस जाते देख कर आश्चर्यचकित रह गयी फिर चीख कर उसे पुकारा—

"रतन !"

किन्तु तब तक वह आँखों से ओझल हो गया था। घने पेड़ों और लताओं के कारण उसकी अब झलक भी नहीं दिख रही थी। एक बार उसके मन में आया कि वह उसका पीछा करे किन्तु उसने विचार बदल दिया और उदास और परेशान-सी अपने घर की तरफ चल दी।

रात हो चली थी। आकाश में चाँद चमक रहा था। सारा जंगल चाँदनी से नहा गया था। सब कुछ बहुत शान्त और सुन्दर था किन्तु श्यामली अत्यन्त दुःखी थी। लाकेट खो जाने से उसे महसूस हो रहा था जैसे उसका सब कुछ लुट गया हो। वह घर के अन्दर नहीं गयी। अन्दर सब बिखरा, टूटा-फूटा सामान देखने का साहस वह अपने मन में नहीं जुटा पा रही थी। घर के बाहर ही वह चिन्तित-सी एक चट्टान पर बैठ कर सोचने लगी।

"रतन का चेहरा देख कर लग रहा था कि वह चोर नहीं है। काश जैसा वह दिख रहा था, जैसा कह रहा था वही सच हो। क्या मैं ही उसे पहचानने में गलती कर रही हूँ ? तब लाकेट किसने चुराया ? मुझे चोर का पता लगाना ही होगा। आज सुबह ही तो रत्नाकर से परिचय और मित्रता हुई थी। मेरे साथी चीतू और मिंकू भी तो उससे मिल कर कितने खुश थे !"

अशान्त और परेशान-सी वह खड़ी हो कर चारों तरफ देखने लगी। उसे क्या करना चाहिए यह वह नहीं समझ पा रही थी। इतने में उसकी दृष्टि नदी के किनारे खड़ी मोटरबोट पर पड़ी। चाँदनी में उसकी छाया मात्र दिखाई पड़ रही थी।

"मुझे रत्नाकर से मिल कर बात करनी चाहिए चोर का पता लगाना ही होगा। अपने शक को दूर करना ही होगा।"

चीतू और मिंकू को उसने वहीं ठहरने को कहा और अकेली नदी की तरफ चल दी। उसने निश्चय कर लिया कि यदि रत्नाकर चोर नहीं है तो अच्छा ही है और यदि वह चोर है तो वह उससे फैसला कर के ही रहेगी। संदेह के झूले में इस प्रकार झूलना ठीक नहीं है। यह स्थिति तो उसकी शान्ति और चैन को भंग कर रही है। इस पार या उस पार। उसे किनारे लगना ही होगा।

वह नदी के किनारे जा कर चुप-चाप पानी में उतर कर नाव की तरफ तैर चली। नाव तट के किनारे पेड़ों की छाया में खड़ी थी। नाव पर रत्नाकर अकेला बैठा था। उसका मुख दूसरी तरफ था। वह अपने हाथ की किसी वस्तु को ध्यान से देख रहा था। श्यामली को लगा, रत्नाकर चोर नहीं हो सकता। उसका सन्देह गलत है। उसे देख कर उसे मन-ही-मन प्रसन्नता का अनुभव हुआ। पीछे की तरफ से नाव पकड़ कर वह पानी से उठी और मीठी आवाज में पुकारा—"रतन !"

रत्नाकर ने चौंक कर पीछे देखा—"अरे श्यामली !"

उसे देख कर वह बहुत खुश हुआ। चाँदनी के प्रकाश में उसका चेहरा साफ दिखायी दे रहा था। हाथ की वस्तु को उसने शीघ्रता से जेब में डाल कर श्यामली को पानी में से निकालने के लिए अपना हाथ बढ़ाया किन्तु इतनी देर में श्यामली ने उसके हाथ की वस्तु देख ली। उसके मुख से चीख निकलते-निकलते रह गयी।

यह उसका लाकेट था जिसे वह इतने लगन से देख रहा था।

"इस पर वह कह रहा था कि मैंने तो लाकेट देखा तक नहीं।" क्रोध और घृणा से वह काँप उठी।

"वहीं खड़े रहो ! खबरदार, मेरे पास मत आना। अब तुम्हें अच्छी तरह समझ गयी हूँ। अपने पास मेरा लाकेट रखे हुए हो और मुझसे कहते थे कि तुमने उसे देखा तक नहीं ? झूठे, चोर, नीच।" वह जैसे अपने वश में नहीं थी और जो कुछ मुख में आ रहा था निकाले जा रही थी।

"अच्छी लड़की, शान्त होओ तब तो मैं कुछ बताऊँ तुम्हें !"

"मैं अपनी चीज के लिए आयी हूँ बस इतना ही मुझे तुमसे कहना है। लाओ, दो मेरी चीज मुझे।"

"अरे वह तो तुम्हें मिलेगी ही किन्तु एक शर्त......।"

"बस, बस, कोई शर्त नहीं। मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहती। कोई सौदा अपनी चीज के लिए मुझे मंजूर नहीं है। लाओ लाकेट मुझे दो।"

अब रत्नाकर ने भी क्रोध भरी दृष्टि से उसे देखा—"एक मिनिट, मेरी बात पहिले सुनो !"

"नहीं ! नहीं ! नहीं ! मुझे एक शब्द भी नहीं सुनना है। तुमने मेरा लाकेट चुराया है और ...."

"तुम्हारा लाकेट मैंने चुराया ?" वह व्यंग्य से हँसा। "हाँ मैंने लाकेट चुराया है किन्तु तुम्हारे घर से नहीं। मैंने उनसे चुराया है जो इसे तुम्हारे घर से चुरा कर ले गये थे, जिनसे तुमने वायदा किया है कि तुम उनको उस पर्वत तक ले जाओगी और अपने पिता द्वारा खोदा हुआ गड्ढा दिखाओगी। विश्वास करो मैं नहीं वे तीन लोग ही तुम्हारे दुश्मन हैं। और उन्हीं से तुम्हें खतरा है।"

"बस, रतन बस ! ज्यादा नाटक मत करो। मैं तुम्हारी इन बातों से बहुत धोखा खा चुकी हूँ। मैं सचमुच मूर्ख थी जो इतनी देर तक तुम्हारा विश्वास किया। तुम्हें दोस्त माना।

उफ़, कितनी गल्ती की मैंने। अब और नहीं। मेरा लाकेट मुझे वापस कर दो। इसी में तुम्हारी भलाई है।"

"वह तो तुम्हें मिलेगा ही किन्तु एक शर्त पर ही।"

"मेरी अपनी चीज के लिए कोई शर्त नहीं।" वह क्रोध से काँप रही थी।

"लेकिन मैं शर्त पर ही तुम्हे यह वापस करूँगा। वेवकूफ लड़की ! जरा अक्ल से सोचने की कोशिश करो। उन लोगों के साथ जाने का विचार छोड़ दो नहीं तो भारी धोखा खाओगी।"

"तुम्हें इतना सब कहने का अब भी साहस है धोखेबाज ! यदि मैं कहूँ कि मैं तुम्हारी बात नहीं मानती तब ......?

"तब तुम्हें यह वापस नहीं मिलेगा। इसलिए नहीं कि मुझे इसकी आवश्यकता है बल्कि इसलिए कि यह उन्हें चाहिए जिन्होंने इसे तुम्हारे घर से चुराया था और जिनसे मैंने यह लिया है।"

व्यंग्य से ओठों को टेढ़ा करके श्यामली ने कहा—"तुम समझते हो कि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास कर के तुम्हारी बात मान लूँगी ? मैं उनके साथ जरूर जाऊँगी। मैं जिससे जो वायदा करती हूँ उसे निभाती हूँ ! यदि तुम लाकेट नहीं दोगे तो लो मैं जा रही हूँ।"

"नहीं श्यामली नहीं ! मत जाओ, मेरी पूरी बात सुन लो, नहीं तो पछताओगी।"

कड़वाहट से हँस कर वह बोली—"मैं नहीं रतन तुम पछताओगे। सुबह सूरज की किरणों के फूटने से पहिले ही तुम्हें इसका पता लग जायेगा। लाकेट तो मैं ले ही लूँगी किन्तु दूसरे तरीके से। तुमसे छीना झपटी करना मेरी जैसी रानी को शोभा नहीं देगा। अभी तो मैं जा रही हूँ।"

"होश में आओ श्यामली ! मैं अच्छे, सच्चे दोस्त की तरह कह रहा हूँ।" रत्नाकर उसे जाने को तैयार देख कर स्वर में अधिक-से-अधिक सच्चाई भर कर बोला।

"दोस्त शब्द का मजाक मत उड़ाओ ! दोस्त तुम्हारी तरह नहीं होते।" कह कर वह तुरन्त पलटी और चली गयी।

"रुको नादान लड़की ! रुको ! फिर मत कहना कि मैंने तुम्हें खतरे से सावधान नहीं किया। अब भी विश्वास करो कि मैं तुम्हारा शुभचिन्तक हूँ।"

किन्तु श्यामली तो क्रोध में पागल-सी पानी में छपाक से कूद गयी। जाते-जाते उसने सुना रत्नाकर उससे कह रहा था—

"यदि कभी मेरी जरूरत पड़े और खतरा महसूस करो तो मिंकू को भेज कर मुझे बुलवा लेना। याद रखना वे लोग ही तुम्हारे दुश्मन हैं और मैं तुम्हारा मित्र।"

लेकिन श्यामली फिर भी नहीं रुकी। मछली की तरह तैरती हुई वह किनारे की ओर बढ़ गयी।

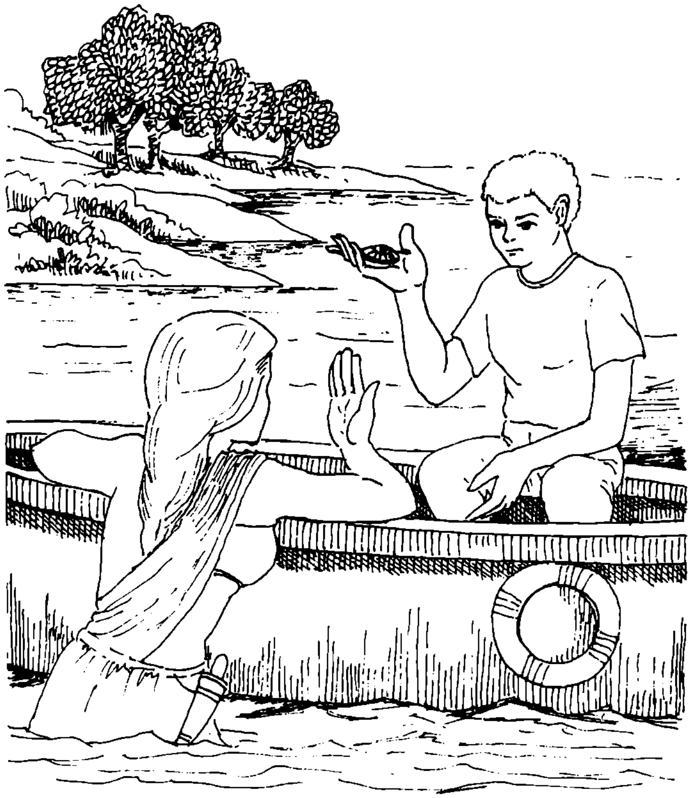

रत्नाकर ने निराशा से सिर हिलाया। ओठों को कस कर दाँतों से दबा लिया। दुःख और क्रोध से उसकी आँखें भर आयीं। श्यामली ने लेकिन एक बार भी पलट कर नहीं देखा। वह तो तीर-सी तैरती चली गयी। रत्नाकर के आखिरी शब्द "यदि मेरी जरूरत पड़े और खतरा महसूस करो तो मिंकू से बुलवा लेना।" उसके कानों में घंटी की तरह बज रहे थे।

"नहीं, उसको अब अपने बारे में कोई खबर नहीं दूँगी। उसकी शक्ल भी अब नहीं देखूँगी। और लाकेट तो उससे मैं ले ही लूँगी।"

रत्नाकर मुसीबत में

रत्नाकर के पास से क्रोध में भरी श्यामली सीधी उन गोरे आदमियों के कैम्प में आयी जिनसे वह पहिले मिल चुकी थी जिन्होंने अपने को उसके पिता का मित्र बताया था। वह सोच रही थी—

"ये ही लोग मेरे सच्चे मित्र हैं रत्नाकर तो चोर और धोखेबाज है। मेरा भला चाहनेवाला वह कभी नहीं हो

सकता। मुझे अपना लाकेट अपने मित्रों की सहायता से किसी तरह वापस लेना ही चाहिए।"

जब वह उनके डेरे में आयी तब अकेले रौबिन ही वहाँ था। उसके दोनों साथी वहाँ नहीं थे। कैम्प के सामने आग जल रही थी जो अंधेरे में दूर से दिखाई दे रही थी। इतनी रात में उसे देख कर रौबिन ने आश्चर्य और उत्सुकता से उसकी ओर देखा। जब उसने उसे लाकेट की चोरी की सारी बातें सुनायी तब एक चमक उसकी आँखों में दिखायी दी जिसका अर्थ लड़की नहीं समझ पायी। वह बोली—

"रौबिन, वह चोर लड़का क्या कह रहा था मालूम है तुम्हें ?"

रौबन ने प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

"वह कह रहा था कि रौबिन और उसके साथियों ने ही लाकेट मेरी गुफा से चुराया है और यह भी कि तुम लोग ही मेरे दुश्मन हो और वही अकेला मेरा मित्र है।"

रौबिन यह सुन कर व्यंग्य से हँसा।

"कितनी अजीब बात है। हम कैसे वह लाकेट चुरा सकते हैं जबकि हमें उसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं था कि ऐसी कोई वस्तु तुम्हारे या किसी के पास है भी। हम तो अभी पहिली बार तुम्हारे मुख से इसके बारे में सुन रहे हैं। लेकिन एक बात तय है कि रत्नाकर को ढूँढ कर पकड़ना होगा। उसकी हरकतों को रोकना जरूरी है, नहीं तो वह हम लोगों की योजना को जिसके लिए तुम्हारे पिता ने इतनी दूर से हमें भेजा है चौपट हो जायेगी। वह हमारे कामों में अड़ंगा लगायेगा। हमें आगे बढ़ने से रोकेगा। और ······ यही समय है कि उसे पकड़ कर उसका अंत कर दिया जाय।"

"क्या मतलब है तुम्हारा कि···?" रौबिन के अन्त, शब्द पर श्यामली ने कुछ भय से चौंक कर पूछा। रौबिन हँसा—"नहीं कुछ डर की बात नहीं, हम केवल उसे पकड़ कर बन्द कर देंगे जिससे वह हम लोगों को और आगे नुकसान न पहुँचा सके। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि मैं भी तब तक परेशान रहूँगा जब तक कि वह उस लाकेट को अपने पास लिये आजादी से घूम रहा है। इसके पहिले कि वह अपनी मोटरबोट में बैठ कर कहीं भाग जाय हमें उसे पकड़ लेना चाहिए नहीं तो मोटरबोट में एक बार बैठने के बाद हम इन मामूली नावों से पीछा करके उसे नहीं पकड़ सकेंगे। समझ में आया न ?"

श्यामली ने भी स्वीकृति में सिर हिलाया। वह भी यह जानती थी कि धुआँ उगलनेवाली तेज नाव का पीछा नहीं किया जा सकता। लेकिन और तरीकों से उसे पकड़ा जा सकता है। उसे उसके अन्तिम शब्द याद आये—"जरूरत पड़े तो मिंकू से खबर भेज देना मैं आ जाऊँगा"। इसे सुन कर रौबिन जोश से खड़ा हो गया।

"वाह ! सचमुच वह तुम्हारे बुलाने से आ जायगा ? तब तो इस मौके को खोना नहीं चाहिए। तुम मिंकू को बुलाओ और मैं अपने साथियों को तैयार करके उसके पीछे भेजूँगा।"

वह ग्रैहम और जेम्स को बुलाने दूसरे कैम्प की तरफ चला गया। श्यामली खड़ी सोचने लगी कि क्या इस प्रकार रत्नाकर को धोखे से बुलाना ठीक होगा ? लेकिन तुरन्त ही लाकेट की चोरी की बात याद आने पर वह फिर क्रोध से भर गयी। उसने उसके साथ भी तो धोखेबाजी की है। खैर उससे लाकेट लेना है कोई नुकसान उसे नहीं पहुँचाना है और वह मुझे मूर्ख नहीं बना सकता यह तो उसे सिखाना ही है।"

वह थोड़ी दूर आगे बढ़ी और साँस खींच कर उसने अपने फेफड़ों में हवा भरी। फिर मुख से एक तेज सीटी की आवाज निकाली। आवाज पेड़ों और झाड़ियों में से गुजरती हुई पूरे जंगल में गूँज गयी। थोड़ी देर में ही, उसकी आवाज के उत्तर में चीते की गरज दूर से आती हुई सुनायी दी और दूसरे ही क्षण चीतू और मिंकू उसके पास आकर खड़े हो गये। दोनों को ले कर वह उन तीनों आदमियों के पास आयी जो डेरे में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

"अरे, तुमने इस बन्दर को खूब बुला लिया ! अब देखना है कि रत्नाकर अपनी बात का कितना पक्का है। लड़की अब तुम अपना संदेश लिख डालो।"

जैसा रौबिन ने बताया लड़की ने लिखना शुरू किया। और कागज कलम उन्होंने ही उसे ला दिया।

"यदि तुम सचमुच मेरे मित्र हो तो तुरन्त मिंकू के साथ चले आओ।"···श्यामली।

"बिल्कुल ठीक, अब यह बताओ कि क्या तुम्हारा बन्दर तैरना जानता है ? और इस कागज को पानी में भींगने से कैसे बचाओगी ?" रौबिन ने जानना चाहा।"

"मैं जैसा कहूँगी वैसा ही मेरा मिंकू करेगा। यद्यपि पानी उसे अच्छा नहीं लगता लेकिन मेरी आज्ञा से वह तैर कर रतन की मोटरबोट तक जायगा और कागज को पानी से बचाने के लिए भी मैं एक उपाय करती हूँ।"

उसने वहीं के पेड़ से अपने भाले से छाल का एक टुकड़ा काटा। पतले-पतले दो टुकड़े छील कर बनाये, फिर उनके बीच में कागज को दबा कर दोनों टुकड़ों को फँसा कर इस प्रकार कर दिया कि उसमें पानी की एक बूँद भी नहीं जा सकती थी। फिर मिंकू के कान में फुसफुसा कर कुछ कहा और लकड़ी की डिबियानुमा चीज उसके हाथ में पकड़ा दी। जिस भाषा में उसने मिंकू से बात की तीनों पास खड़े आदमियों की समझ में एक शब्द भी नहीं आया। मिंकू

श्यामली की बात सुन कर चीं-चीं करने लगा जैसे वह उसकी आज्ञा मानने से हिचक रहा हो फिर बेमन से उसने वह संदेश अपनी पतली पतली मुलायम उँगलियों के बीच दबाया और नदी की तरफ दौड़ गया।

रौबिन ने धीरे से कहा—"अब हम लोगों को उसे रास्ते में ही पकड़ना है। श्यामली तुम यहीं खड़ी हो कर हम लोगों का इन्तजार करो। हम जल्दी ही उसे ले कर आते हैं।"

श्यामली वहीं रुक गयी और वे लोग आगे बढ़ कर आँख से ओझल हो गये। वह कुछ परेशान और थकी-सी वहीं बैठ गयी। बहुत जल्दी ही मिंकू संदेश पहुँचा कर वापस आ गया और उसके थोड़ी देर बाद ही ....अंधेरे में चार छायाएँ आती दिखायी पड़ीं। रौबिन, ग्रेहम और जेम्स के बीच में रत्नाकर लड़खड़ाता और गिरता पड़ता आ रहा था। उसके दोनों हाथ मजबूती से पीछे की ओर बँधे थे।

"रतन !" कुछ दुःखी स्वर में श्यामली मुँह-ही-मुँह बुदबुदायी। एक ठंडी साँस उसके मुख से निकल गयी। रत्नाकर को इस प्रकार कैदी के रूप में आता देख कर उसके मन में कहीं कुछ खटक रहा था। ऐसा लगता था कि कैदी बनने के पूर्व रत्नाकर उन तीनों से लड़ा था।

श्यामली संकट में

दूसरे दिन प्रातःकाल तीनों गोरे आदमी और श्यामली खड़े थे। लाकेट श्यामली को मिल गया था। रौबिन ने कुछ लापरवाही और रूखे स्वर में कहा—

"लड़की, यह लाकेट अगर तुम्हें बुरा न लगे तो मुझे दे दो अब।"

ये लोग अपने डेरे से कई मील दूर जंगल में पर्वत के गड्ढे के रास्ते में थे जिसे श्यामली के पिता ने खुदवाया था। रत्नाकर को ये लोग अपने डेरे के एक कैम्प में बाँध कर छोड़ आये थे और कुछ आदिवासियों को पहरे पर रख आये थे। श्यामली ही तीनों गोरों का मार्ग दर्शन कर रही थी। रात की घटना के बाद वह उदास हो गयी थी। रत्नाकर को धोखे से पकड़वाना, उसे कैद में रखना, उसे लग रहा था कि कहीं कुछ गलत हुआ है। लेकिन सही क्या था यह भी तो वह नहीं समझ पा रही थी। वह परेशानी और उलझन में थी। अब इसके अतिरिक्त कि वह उन तीनों को जो स्वयं को उसका शुभचिन्तक और मित्र कह रहे थे, पिता के खोदे हुए गड्ढे की ओर ले जायें कोई और रास्ता नहीं था। उसका लाकेट उसे मिल गया था। रौबिन ने रात को ही उसे सौंप दिया था। किन्तु रत्नाकर के दुर्भाग्य पर वह मन-ही-मन दुःखी थी।

लेकिन अब जब रौबिन ने उससे लाकेट माँगा तब वह चौंकी और ठिठक कर दूर खड़ी हो गयी। उसके शब्द उसके कान में तीर की तरह चुभ गये। उसकी आवाज में अब दोस्ती नहीं आज्ञा के भाव भरे थे।

"तुम्हें मेरे लाकेट से क्या करना है ? यह मेरा है। तुम्हें इसकी जरूरत क्यों है ?"

"ओह मुझे इसकी बहुत जरूरत है।" रौबिन ने सामने पर्वत की ओर आँखें उठाये हुए कहा—"यह मेरे लिए बहुत महत्व का है। अब इसे मुझे ही दे दो।"

एक कुटिल मुस्कुराहट उसके अधरों पर फैल गयी उसकी आवाज में आग्रह नहीं आज्ञा भरी थी।

"और अगर मैं कहूँ कि मैं नहीं देती तब ?" श्यामली ने भी कड़ेपन से पूछा।

"नहीं, तुम इसे मना नहीं कर सकती। तुम्हें मुझे इसे देना ही पड़ेगा। यह मेरे लिए बहुत काम की वस्तु है लड़की। समझी।"

यह कह कर वह आगे बढ़ा तभी पास ही घास पर बैठा चीतू गुर्राया, लेकिन उसने उसकी गुर्राहट पर कोई ध्यान नहीं दिया। इसके पूर्व कि श्यामली सँभलती लाकेट रौबिन के हाथ में था। एक चीख उसके मुख से निकल गयी। लाकेट

रौबिन ने उसे झपट्टा मार कर छीन लिया था।

तभी चीतू गुर्राता हुआ हमले के लिए अगले पैरों पर झुक गया—उसकी मिचमिचाती तीखी दृष्टि रौबिन पर थी। तुरन्त ही रौबिन का हाथ भी कमर में लटकी पिस्तौल पर गया। ठीक उसी समय चीतू उछला। श्यामली भय से चीखी।

"चीतू।"

किन्तु तभी रौबिन की पिस्तौल से एक शोला निकला। उसने देखा कि उसका प्यारा चीतू हवा में कराहता हुआ उछला और जमीन पर कुलाटी खाता जा गिरा। रौबिन ने फिर गोली मारने के लिए पिस्तौल उठायी।

"नहीं ! नहीं ! रौबिन नहीं।" श्यामली ने झपट कर रौबिन का हाथ जिसमें पिस्तौल थी पकड़ लिया। जंगल की लड़की के शक्तिशाली हाथों ने उसके हाथ को पकड़ कर मरोड़ दिया। पिस्तौल छूट कर दूर जा गिरी। गुस्से में भर कर रौबिन घूमा और उसके कन्धों को पकड़ कर उसे जोर का धक्का दिया। वह उछल कर दूर कराह कर गिर पड़ी। किन्तु तुरन्त ही फुर्ती से फिर खड़ी हो कर उस तरफ दौड़ी जहाँ चीतू गिरा था। उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि चीतू का वहाँ कोई निशान नहीं था। इन दोनों की लड़ाई के बीच वह कहीं भाग गया था।

"चीतू, चीतू !" दु:खी स्वर में उसने पुकारा। वह समझ गयी कि चीतू भाग गया। "तो क्या चीतू बुरी तरह घायल हो गया ? क्या वह नहीं बचेगा ?"

रौबिन, ग्रेहम तथा जेम्स तीनों को वह भूल गयी और मुड़ कर चीतू के लिए पागल-सी भागी। वह भूल गयी कि अभी अभी उसके साथ कैसी खतरनाक घटना घटी थी। वह जैसे होश में नहीं थी कि तभी एक पेड़ से मिंकू चीं-चीं करता हुआ उसके कन्धे पर आ कूदा। वह चीख-चीख कर सामने की ओर इशारा कर रहा था।

वह समझ गयी कि मिंकू ने सब कुछ देख लिया है कि किस प्रकार रौबिन ने उससे लाकेट छीना, चीतू को मारा और चीतू घायल हो कर भाग गया।

"मिंकू अपना चीतू कहाँ गया रे ?" रोते हुए उसने पूछा।

मिंकू ने जिधर चीतू गया था हाथ उठा कर संकेत किया। पता नहीं कब क्या कुछ और न घट जाय सोच कर वह घबरा कर परेशान-सी सोचने लगी। उसकी आँखों के आगे अब सब कुछ स्पष्ट था। अब वह समझ गयी कि सचमुच कौन दोस्त और कौन दुश्मन है। लेकिन अफसोस, बहुत देर हो गयी थी। अब उसके सामने से परदा हट गया था। कितनी मूर्ख है वह ? खुद ही अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार ली और अब अपने ही बिछाये हुए जाल में फँस गयी थी। रत्नाकर नहीं ये तीनों ही उसके असली दुश्मन हैं। इनसे ही उसके भला चाहनेवाले बौनों ने उसे सावधान किया था। यह रौबिन ही उसका असली दुश्मन है और रत्नाकर उसका सच्चा मित्र है। लेकिन अब वह क्या करे ? उसका प्यारा चीतू आखिर उसे इस प्रकार छोड़ कर कहाँ चला गया ? जिन्दा तो है वह ? बहुत दु:खी-सी वह चलते चलते नदी के किनारे तक पहुँच गयी थी। किन्तु चीतू कहीं दिखायी नहीं दिया। अब वह क्या करे ? कहाँ जाये ? चीतू कहाँ मिलेगा। काश, इस समय रतन होता। उसका ध्यान आते ही पश्चात्ताप से उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। अचानक कुछ सोच कर उसका मुख आशा से चमक उठा। मिंकू को प्यार से पकड़ कर उसने अपनी भाषा में जिसे मिंकू ही अच्छी तरह समझता था कहा—

"सुन रे मिंकू तू उस कैम्प में चला जा जहाँ अपना रतन बँधा पड़ा है। तू उसे ढूँढ़ कर उसकी रस्सियों को काट डालना और उसे यहाँ बुला ला।"

प्यार से उसने मिंकू को थपथपाया और छोड़ दिया। बन्दर उत्साह से कूदने लगा वह समझ गया कि उसे क्या करना है। पहिली बार की तरह अब वह झिझका नहीं, खुशी से पेड़ों-पेड़ों कूदता हुआ आँखों से ओझल हो गया।

श्यामली को अब उन तीनों आदमियों के पास जाने की जरूरत नहीं थी। वह जान गयी थी कि अगर वह उनके पास गयी तो वे लोग उसके साथ क्या व्यवहार करेंगे। शायद वे लोग उसके हाथ पैर भी उसी प्रकार बाँध देंगे जैसे रतन के बाँधें थे या वे उसे जान से ही मार दें। अब उन्हें श्यामली की आवश्यकता नहीं थी। उसने उन्हें पर्वत का रास्ता बता दिया था। उनका मतलब जब पूरा हो गया तब उसको उन्होंने दूध

की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया।

मिंकू को रत्नाकर के पास भेज कर वह कुछ देर तक सोचती हुई खड़ी रही फिर जिधर रौबिन की पार्टी गयी थी उसी ओर बिना सोचे विचारे, बिना किसी उद्देश्य के चल दी।

धीरे-धीरे दो घंटे बीत चले थे। वह छिपती-छिपती पर्वत की ओर जा रही थी। पहाड़ की तलहटी से उसने देखा कि वे तीनों उस लाकेट की सहायता से पहाड़ के गड्ढे के पास पहुँच गये थे। वह ऐसी जगह खड़ी हो गयी जहाँ से वे तीनों साफ दिखाई दे रहे थे किन्तु वहाँ से वे उसे नहीं देख सकते थे।

गड्ढे के किनारे पहुँच कर रौबिन कह रहा था—"यही है वह हीरों की खान जिसको उस लड़की के बुड्ढे बाप ने दस वर्ष पूर्व खुदवाया था। मूर्ख लड़की का मूर्ख बाप।" वह ठठा कर हँसा। बाकी दोनों भी हँसने लगे।

श्यामली ने क्रोध से अपने ओंठ दाँतों से दबा लिये। "शैतान के बच्चे !" वह बुदबुदायी "तो इन हीरों के लिए ही उसका प्यारा पिता इतना परिश्रम कर रहा था ? इनके लेने के लिए ही ये डाकू यहाँ आये हैं ? और अब उसके पिता के परिश्रम और जीवन भर की कमाई को ये लूट कर ले जायेंगे ? हाय पिता जी ?"

रोना रोकने के लिए उसने मुख पर हाथ रख लिया। दुःख से वह छटपटा रही थी किन्तु विवश थी। उसके सामने ही ये दुष्ट उसके पिता के परिश्रम से कमाई बहुमूल्य सम्पत्ति लूट रहे थे और वह कुछ नहीं कर पा रही थी ! उसका प्यारा चीतू भी उसके पास नहीं है। उसका सच्चा दोस्त रतन भी संकट में है। अब वह अकेली क्या कर सकती है ? सिवा इसके कि वह इस प्रकार छिप कर इनके कामों को चुपचाप, विवश देखती रहे। उसकी आँखों से आँसू टपक कर गाल पर बह रहे थे। तभी उसे सुनायी दिया—

"ग्रेहम रस्सी तो देना।"

उसने देखा, ग्रेहम से रस्सी ले कर रौबिन ने अपनी कमर मे लपेट कर बाँधी और जेम्स और ग्रैहम ने पकड़ कर उसे गड्ढे में उतार दिया। रौबिन अब गड्ढे के अन्दर खड़ा था। उसकी खुशी से भरी आवाजें उभर रही थीं। ऊपर दोनों साथियों के मुख भी जोश और खुशी से चमक रहे थे। श्यामली ने दाँत पीस लिये। काश, उनके पास आग उगलने वाला हथियार न होता तो वह और उसका चीतू दोनों मिल कर इन तीनों को चटनी बना देते। तभी⋯⋯उसे अपने पीछे कुछ शोर सुनायी दिया।

चौंक कर उसने पीछे मुड़ कर देखा।

"अरे मिंकू ?"

सचमुच मिंकू था जो कूदता, चीखता, किलकारी मारता चला आ रहा था। उसके पीछे उसका प्यारा चीतू था जिसका काला शरीर धूप में चमक रहा था। इसके बाद श्यामली ने जो कुछ देखा उससे तो आश्चर्य और खुशी से उसकी आँखें चमक उठीं, मुख खुला रह गया। उसे लगा कि इतनी अधिक खुशी से उसके दिल की धड़कनें बन्द हो जायेंगी। बदहवास, घबराया सा रत्नाकर मिंकू और चीतू के पीछे-पीछे भागा चला आ रहा था।

चीतू भयानक रूप से गरज रहा था। वह बहुत क्रोध में था। उसके कान खड़े थे, नाक सिकुड़ी हुई और पूँछ हवा में ऊँची उठी हुई थी। दाँत सब बाहर निकले थे। उसका ऐसा भयानक रूप श्यामली ने पहले कभी नहीं देखा था। उसकी गुस्से में भरी गरज सुन कर गड्ढे में झाँक रहे जेम्स और ग्रेहम घबरा कर पीछे मुड़े। उनके मुख से भय की चीखें निकल पड़ीं, तभी—चीतू बिजली की तरह उछला और ग्रेहम पर टूट पड़ा। ग्रेहम चीतू के एक ही धक्के से घायल हो कर गड्ढे में जा लुढ़का। इसके पहिले कि जेम्स सँभलता और पास पड़ी बन्दूक उठाता रत्नाकर गुस्से से दाँत पीसता बढ़ा

और एक तगड़ा घूँसा जेम्स के मुख पर मारा। ऐसा जोरदार घूँसा था वह कि आदमी तो क्या उसे खा कर मजबूत भैंसा भी झूम जाता। जेम्स भी गेंद-सा चक्कर खाता ग्रेहम के पीछे लुढ़क गया। अब तीनों ही हीरों के गड्ढे में थे जिनके लिए उन्होंने इतनी कोशिशें और चालबाजियाँ की थीं। अन्दर से तीनों की डरावनी और कष्ट भरी चीखें निकल रही थीं। गड्ढे के ऊपर रत्नाकर चौड़ा सीना ताने कमर पर हाथ रखे, शेर की तरह खड़ा था। क्रोध और जोश से उसकी साँसे जोर-जोर से चल रही थीं, आँखें जल रही थीं। उसके लाल, तमतमाये मुख पर विजय के भाव उभर रहे थे।

श्यामली आगे बढ़ी और पागल-सी दौड़ कर रत्नाकर से लिपट गयी। अभी तक रत्नाकर ने उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया था। उसने श्यामली को प्यार से पकड़ कर सांत्वना से थपथपाया। अब उसके मुख का तनाव हट गया। वह मुस्करा उठा। श्यामली प्रसन्नता और कुछ पाश्चात्ताप से भर कर रो पड़ी। रत्नाकर ने कहा—"अब सब ठीक हो गया श्यामली। घबराओ मत, तुम्हारे दुश्मन अब तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इन्हें इसी तरह गड्ढे में पड़े चिल्लाने दो कुछ देर। जल्दी ही तुम्हारे बौने मित्र भी आ रहे होंगे। मैंने उन्हें तुम्हारी सहायता के लिए रात को ही खबर भेज दी थी। मुझे नहीं मालूम था कि इतना सब बखेड़ा इतनी जल्दी खड़ा हो जायेगा और तुम इतनी जल्दी खतरे से घिर जाओगी।

और हाँ श्यामली, तुम्हारे इस बन्दर ने तो बड़ा कमाल का काम किया। इसने रस्सियों को दाँतों से काट कर मुझे कैद से छुड़ा लिया। जैसे ही घायल चीतू मेरे पास पहुँचा कि थोड़ी देर बाद ही यह भी पहुँच गया। चीतू के पैर में गोली लगी थी। लेकिन चिंता की बात नहीं है अब वह ठीक है। गोली मैंने उसके पैर से निकाल दी है। इसे निकालने में ही देर हो गयी नहीं तो और पहिले ही आ जाते हम लोग।"

"ओह रतन, तुमने मेरे चीतू को बचा लिया। मेरे पिता के हीरों को भी बचा लिया जब कि मैंने तुम्हें भारी धोखा दिया। तुम्हें इन दुष्टों से पकड़वा कर कैद करवा दिया ?" वह बहुत दुःखी थी।

रतन हँसा—"हाँ, मैंने यह सब इसलिए किया कि मैं तुम्हारी भलाई चाहनेवाला हूँ। मैं तुम्हारा मित्र हूँ, शुभचिन्तक हूँ। मैंने पता लगा लिया था कि ये लोग तुम्हें फँसाने के लिए जाल बिछा रहे हैं। ये तुम्हें लूटने का षड्यन्त्र कर रहे थे। ये तुम्हारे पिता के हीरों को लूट कर ले जानेवाले थे। मैं शुरू से ही इनके पीछे जासूस की तरह लगा हुआ था। मैंने निश्चय कर लिया था कि जैसे भी होगा तुम्हारी रक्षा करूँगा और इसीलिए तुम्हें बार-बार सावधान कर रहा था श्यामली !"

"तो मेरा लाकेट तुमने उन्हीं लोगों के पास से लिया था क्या ?"

श्यामली ने प्यार से उसे देखते हुए पूछा।

"हाँ, तुमने जब मुझे लाकेट की चोरी की बात बतायी और मेरे ऊपर शक किया तभी मैं समझ गया था कि किसने उसे चुराया होगा और मैंने उनके कैम्प से उसे चुरा लिया। अब एक बात और तुम्हें बताऊँगा बहुत जरूरी, बहुत खुशी की, कि तुम्हारे पिता जी मरे नहीं हैं, जीवित हैं।

श्यामली चीख-सी पड़ी—"सच ?"

खुशी से वह काँपने लगी। उसने कस कर रतन के दोनों हाथ अपने हाथों में पकड़ कर दबा लिये। वैसे पहिले भी रौबिन ने उसके पिता के जीवित होने की बात कही थी किन्तु तब उसे इतना यकीन नहीं हुआ और कुछ देर पूर्व तो बिलकुल नहीं।

"सच कह रहे हो मेरे मित्र ? बोलो, बोलो क्या यह सच है कि मेरे पिता सचमुच जीवित हैं ? कहाँ है वे ?"

वह सिसकी भर कर रोने लगी। खुशी जैसे उसके दिल में समा नहीं रही थी। उसने अपने को एक ऐसा अनाथ समझ लिया था जिसका दुनिया में चीतू और मिंकू इन दो जानवरों के अतिरिक्त कोई अपना नहीं था। उसे जल्दी विश्वास नहीं हो रहा था कि इतनी ढेर सी खुशियाँ एक साथ उसके सामने बिखर जायेंगी। उसका सुख दुःख का साथी चीतू भी जिन्दा और सकुशल है। उसके दुश्मनों का अन्त हो गया है। वे उसके सामने गड्ढे में पड़े तड़प रहे हैं। उसका सच्चा मित्र रत्नाकर सकुशल उसके पास खड़ा है। और सबसे बड़ी खुशी की बात यह है कि उसके पिता जो दस वर्ष पूर्व अपनी नन्हीं बच्ची को छोड़ कर एकाएक गायब हो गये थे और जिनके जीवित रहने की कोई आशा बाकी नहीं रह गयी थी वह जीवित हैं। वह फिर अपने प्यारे पिता को देख सकेगी। फिर उनके गले में हाथ डाल कर छोटी बच्ची की तरह जैसे दस वर्ष पूर्व किया करती थी झूल सकेगी ! उफ कैसे ये सब बातें एक साथ घट गयीं ? अभी-अभी कुछ ही घंटे पहिले उसकी क्या हालत थी ? उसके सामने अंधेरा था। उसके दुःख का अन्त नहीं दिखता था और अब अचानक सब कुछ खुशी में बदल गया ? सब दुःखों का अन्त हो गया और चारों ओर खुशी ही खुशी ! जैसे बादलों को चीर कर चाँदी की किरनें फूट पड़ीं हों। जैसे कुछ जादू हो गया हो !

रत्नाकर मुस्कराता हुआ उसके चेहरे के उतार चढ़ावों को देख रहा था। उसने उसके आँसुओं को पोंछा और प्यार से बोला—

"धैर्य रखो श्यामली ! तुमने इन पिछले चौबीस घंटों के

अन्दर बहुत कष्ट उठाये हैं। बहुत कुछ सहा है। तुमने समझदारी से काम लिया वरना ये दुश्मन तो तुम को जान से मारने में भी न हिचकते और यहाँ से वापस लौट कर तुम्हारे पिता जी को तो निःसंदेह समाप्त कर ही देते। किन्तु अब ईश्वर की कृपा से सब ठीक हो गया है। अब तुम्हें बहुत जल्दी तुम्हारे पिता से मिलवा दूँगा। इसी जंगल से उनको दस वर्ष पूर्व कुछ जंगली लोग पकड़ कर ले गये थे। नौ वर्ष तक उनको कैद में रहने के बाद वे किसी प्रकार छूट कर भागे और एक दिन छिपते-छिपते, गिरते-पड़ते रौबिन के डेरे में पहुँच गये। जहाँ एक दिन रात में तुम्हारे दुःखी और परेशान पिता ने नींद में इस पर्वत और हीरे की खदान का रहस्य बड़बड़ा कर खोल दिया। रौबिन को रास्ता मिल गया। अब वह तुम्हारे पिता को आजाद नहीं छोड़ सकता था। उसने उन्हें फिर अपना कैदी बना लिया और सपने में बताये उस रहस्य का पता लगाते-लगाते यहाँ तुम्हारे जंगल में आ गया। तुम्हारे पिता वहीं रौबिन के डेरे के एक कैम्प में अभी भी कैद हैं।"

रत्नाकर बात कर ही रहा था कि पीछे से बहुत से लोगों का शोर सुनायी दिया।

"लो, तुम्हारे दोस्त बौनों की फौज आ पहुँची। अब वे लोग गड्ढे में पड़े चीखते इन शैतानों को अपने ढंग से समझ लेंगे। अब हमें दूसरा काम करना है।"

श्यामली ने उत्सुकता से उसके मुख की ओर देखा। रत्नाकर ने हँस कर कहा—

"तुम्हें तुम्हारे पिता जी के पास ले जाना है न ! तुम्हें इतनी बड़ी, जंगल की रानी के रूप में देख कर कितने खुश होगें वे ? और फिर मेरी एक बात भी तुम्हें माननी होगी जंगल की शेरनी ; अरे नहीं-नहीं रानी श्यामली !"

श्यामली अब पहिली बार हँसी—"अब क्या शर्त है तुम्हारी रतन ? तुम जीते मैं हार गयी। तुमने जो कुछ कहा सच निकला और तुमने जो कुछ किया सब ठीक और सही किया। मूर्खता मैंने ही की। तुम्हारी हर शर्त मुझे मंजूर है। बोलो अब क्या शर्त है तुम्हारी ?"

कुछ रुक कर रत्नाकर ने गम्भीरता से स्वर में अपनत्व और प्यार भर कर कहा—

"दूर, भारत के उत्तर में एक अकेला युवक रत्नाकर अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहता है, उसे तुम्हारी जैसी एक लड़की मित्र की अत्यन्त आवश्यकता है। तुम्हें वहाँ चलना होगा। चलोगी न जंगल की बहादुर रानी मेरे देश ? मेरी माँ के पास ! मेरे साथ ?"

एकाएक शरमा गयी श्यामली। उसने मुस्करा कर सिर नीचे कर लिया। और धीरे किन्तु उल्लास भरे स्वर में बोली—"चलूँगी रतन ! मुझे तुम पर पूरा विश्वास है। तुम्हीं मेरे सच्चे मित्र हो।"

रत्नाकर ने खुशी से श्यामली के हाथ पकड़ लिये। मिंकू कूद कर उसके कंधे पर जा बैठा। चीतू प्यार से श्यामली के हाथ पर अपना मुँह रगड़ने लगा। श्यामली झुकी और चीतू के गर्दन पर अपना मुख रख कर उसने सुख से आँखें बन्द कर लीं। आज जैसा सुख उसे जीवन में कभी नहीं मिला था। एकदम नया, विचित्र सुख जो उसके दिल में समा नहीं रहा था।

रत्नाकर ने उसे स्नेह से पकड़ कर उठाया—"श्यामली चलो, अब पिता जी के पास चलें। उन्हें भी अपनी खुशियाँ भेंट करें। उन्हें कैद से छुड़ाएँ और उन्हें उनके हीरों की खदान सौंपें और......उन्हें उनकी प्यारी बेटी श्यामली से मिलाएँ !"

बेला चली घूमने

उस दिन खूब सुहानी सुबह थी। ठंडी हवा चल रही थी। बेला ने सबके साथ बैठ कर मेज पर दूध पिया और बिस्कुट खाये। भला ऐसे अच्छे मौसम में कोई घर में बैठना है ! बेला भी निकल पड़ी घूमने। स्टेशन के पास ही क्वार्टर था। बेला को छुक-छुक रेल गाड़ी देखना अच्छा लगता है। भीड़ देख कर भी उसे मजा आता है। वह अकेली स्टेशन की तरफ चल दी। किसी का ध्यान उसकी तरफ नहीं गया।

इधर-उधर देखती हुई स्टेशन के फाटक के अन्दर जा कर बेला प्लेटफार्म पर खड़ी हो गयी। एक ट्रेन कलकत्ता की तरफ जा रही थी। मुसाफिर उतर चढ़ रहे थे। कोई कुली को आवाज दे रहा था, कोई चायवाले को बुला रहा था। बेला लोगों की दौड़-धूप देख कर बड़ी खुश हो रही थी। इसी बीच पता नहीं क्या सोच कर वह भी एक जनाने डिब्बे में कूद कर चढ़ गयी।

डिब्बे में केवल एक स्त्री बैठी थी। बेला को देख कर वह मुस्करायी, किन्तु बेला ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह उसी के बगल में खिड़की के पास बैठ गयी। अच्छा ही था कि डिब्बे में भीड़ नहीं थी, नहीं तो उसे बैठने को भी जगह नहीं मिलती। गार्ड ने सीटी दी और ट्रेन चल पड़ी, छुक, छुक, छुक ! उसे लगा वह झूले पर बैठी है। खिड़की पर सिर रख कर वह मगन हो कर बाहर के खेत, मैदान और पेड़ देखने लगी। ट्रेन के साथ जैसे सब चल रहे हों। घर से निकले उसे काफी देर हो गयी है, इसका उसे ध्यान ही नहीं रहा। डिब्बे में बैठी महिला ने उसकी तरफ एक बिस्कुट बढ़ाते हुए मुस्करा कर पूछा—''भूख लगी है ? ले खा ले !''

भूख तो सचमुच लग आयी थी ! उसने बिना कुछ कहे बिस्कुट खा लिया। शायद शरम के मारे वह चुप थी।

इतने में स्टेशन आ गया। गाड़ी रुकी और टिकट-चेकर डिब्बे के अन्दर आया। उसने महिला से टिकट माँग कर चेक किया। बेला के पास टिकट नहीं है वह यह भाँप गया था इसीलिए उसने उसकी तरफ मुस्करा कर देखा और उसके सिर पर हाथ फेर कर चला गया। चलो मुसीबत टली। यदि कहीं उसने बेला से भी टिकट माँगा होता तब तो वह मुसीबत में फँस जाती। गाड़ी फिर चल दी। वह गाड़ी के साथ हिचकोले खाती ऊँघने लगी। थोड़ी देर में दूसरा स्टेशन आया। गाड़ी रुकते ही स्टेशनमास्टर अन्दर आया। उसे शायद किसी ने बेला के बारे में खबर कर दी थी। वह बोला—

''लो यह शैतान यहाँ बैठी है और बड़े साहब कब से परेशान हो कर फोन कर करके सबसे पूछ रहे हैं !''

यह कह कर उन्होंने बेला की ओर हाथ बढ़ाया, बेला कूद कर उनकी गोद में चढ़ गयी। उसको भी अब घर की याद आ रही थी।

म्याऊँ ! म्याऊँ, कहती हुई वह स्टेशन मास्टर के कोट के अन्दर मुँह घुसाने लगी। शायद शरमा रही थी।

अमरूद ने टमाटर खाया

नरेन्द्र की नाक लम्बी है इसीलिए लोग उसे अक्सर नक्कू भी कहते हैं। कहते हैं बड़ी नाकवाले अक्ल के तेज होते हैं। नरेन्द्र के दिमाग में भी कोई-न-कोई नयी बात आती ही रहती है। उसके घर में एक छोटा सा बगीचा है जिसमें तरकारी और फलों के पेड़ लगे हैं।

एक दिन नरेन्द्र की माँ ने देखा कि अमरूद के पेड़ की जड़ में टमाटर कटे पड़े हैं। उन्होंने सोचा कि यह काम चूहों का होगा। यह सोच कर वह चुप हो गयी किन्तु दूसरे, फिर तीसरे दिन भी और ज्यादा टमाटर पड़े देख कर उन्होंने इसकी चर्चा नरेन्द्र के पिता जी से की। शाम को सब लोग साथ बैठे चाय पी रहे थे तब माँ ने कहा—

''कई दिनों से देख रही हूँ, कोई अमरूद के पेड़ की जड़ में टमाटर तोड़-तोड़ कर डाल देता है।''

नरेन्द्र ने सुना तो तपाक से बोला—''टमाटर तो मैं डालता हूँ अमरूद में ····'' माँ ने आश्चर्य से पूछा—''तू यह काम कर रहा है ? लेकिन क्यों भला ?''

नरेन्द्र ने कहा—''देख नहीं रही है कि अपना अमरूद का पेड़ कितना कमजोर है ! कई साल का हो गया, लेकिन न उसमें फूल आ रहे हैं न फल !''

माँ ने बीच में ही टोक कर पूछा—''अमरूद में

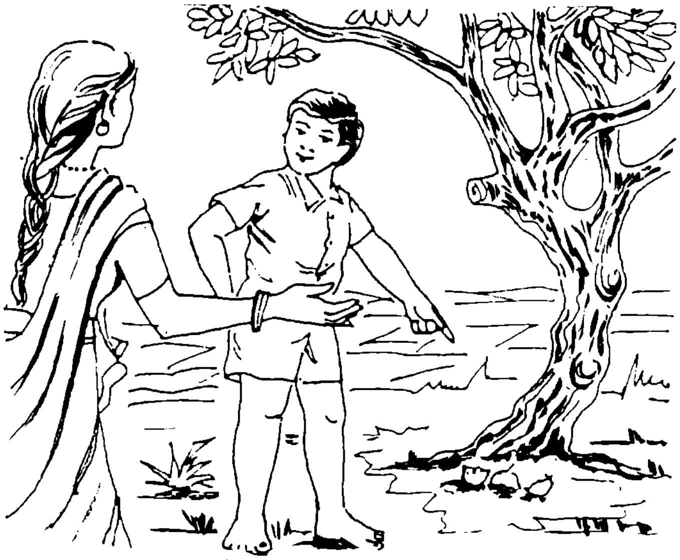

फल-फूल न आने और टमाटर डालने से क्या सम्बन्ध है?"

"माँ तुम कुछ भी नहीं समझती। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि टमाटर विटामिनों से भरा है। एक दिन हमारे मास्टर साहब कह रहे थे कि टमाटर खाने से मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है। ताकत भी आती है, तो मैंने सोचा कि अमरूद को भी ताकत देने के लिए यदि टमाटर खिलाये जायँ तो वह जरूर फूलने-फलने लगेगा। इसीलिए उसकी जड़ों में मैं रोज टमाटर तोड़ कर डाल देता हूँ।"

नरेन्द्र अपनी बातें इतने जम कर कह रहा था कि उसके सब भाई-बहन उसके रोआब में आकर प्रशंसा से उसका मुँह देखने लगे। उसके पिता जी ने तो उठ कर उसकी पीठ ठोंक दी और मुस्करा कर बोले—"वाह बेटा नक्कू ! कमाल कर दिया तूने तो ?"

शाबाश मोती

बंटू और मोती वैसे तो पक्के दोस्त थे, किन्तु बंटू को बड़ी जल्दी क्रोध आ जाता था और वह अपने दोस्त को कभी-कभी पीट भी देता था। फिर भी मोती उसका साथ नहीं छोड़ता था।

उस दिन जब बंटू घूमने चला तो मोती भी साथ हो लिया। बंटू ने मना किया तो वह ठिठक कर खड़ा हो गया, किन्तु जब बंटू आगे चला गया तो वह भी उसके पीछे चल दिया। बंटू ने उसे जोर का धक्का दिया। बेचारा मोती लुढ़कनियाँ खा गया। बंटू तालाब की तरफ चल दिया। वैसे तो मोती उम्र में अपने दोस्त से छोटा था किन्तु समझदार उससे ज्यादा था।

बंटू तालाब के किनारे आकर बैठ गया। तब मोती भी छिपता हुआ उसके पीछे जा कर खड़ा हो गया। बंटू ने देखा तो हाथ का डंडा उसकी पीठ पर मार दिया। मोती दर्द से चीख उठा। बंटू ने डंडा तालाब में फेंक दिया—

"जा मूर्ख डंडा निकाल कर ला।"

मोती तुरन्त तालाब में कूद पड़ा और डंडा उसके सामने रख कर अलग खड़ा हो गया। उसके भीगे शरीर को देख कर बंटू ने बुरा-सा मुँह बनाया। मोती की समझ में नहीं आ रहा था कि अपने दोस्त को वह कैसे खुश करे। वह उससे नाराज क्यों है, यह भी वह नहीं जानता था। वह तो उससे कुछ बोल भी नहीं रहा था लेकिन बंटू था कि गुस्सा किये ही जा रहा था। कुछ भी हो मोती उसे तालाब के किनारे अकेला छोड़ कर जाना भी नहीं चाहता था।

पता नही बंटू को क्या सूझा कि उसने मोती को पानी में ढकेल दिया। मोती अपने दोस्त की इस निर्दयता पर बहुत दुःखी हुआ और अब शायद वह उसे छोड़ कर चला भी जाता, किन्तु तभी बंटू का पैर फिसल गया और वह भी पानी में जा गिरा। एक छोटे बच्चे के लिए किनारे का पानी ही काफी था। वह डुबकी खाने लगा। नाक और मुँह में पानी भरने लगा। वह चिल्लाया—"मोती, मोती !"

मोती और बंटू को घर से आये काफी देर हो गयी थी। बिना किसी को बताये बंटू घर से चला आया था। उसके पापा उसे ढूँढ़ते हुए वहाँ पहुँचे तो देखा कि मोती बंटू की कमीज पकड़े तालाब से बाहर घसीट कर ला रहा था। पापा ने दौड़ कर बेटे को बाहर निकाला। कपड़े कीचड़ में सन गये थे। मुँह में पानी भर गया था। वह छटपटा कर रो रहा था। पापा ने उसे गोद में उठा कर चुप कराया। मुँह पोंछ कर साफ किया फिर मोती की पीठ थपथपा कर प्यार किया—

"शाबाश मोती आज तो तूने बंटू को बचा कर कमाल

कर दिया।"

मोती अपना अपमान और दुःख भूल कर कूँ-कूँ करता हुआ खुशी से पूँछ हिलाने लगा।

धोखेबाज मगर

"अरे मित्र आज कैसे उदास पड़े हो ?"

कौए ने एक मगर को नदी के किनारे छिछले पानी में लेटे हुए देख कर पूछा।

मगर ने उत्तर दिया—"क्या बताऊँ दोस्त ! गर्मी आ गयी है और नदी का पानी कम होने से अब यहाँ रहने में आनन्द नहीं आता।"

चालाक कौए के दिमाग में शैतानी सूझी। वह मगर की मक्कारी जानता था। कितनी बार उसके दोस्त खरगोश को वह पकड़ चुका था। यह तो चालाक खरगोश था कि किसी-न-किसी प्रकार बच जाता था। आज मगर को भी वह मजा चखाना चाहता था। उसने कहा—

"मित्र क्यों चिंता करते हो जब कि मुश्किल से आधी मील पर ही एक गहरी नदी बह रही है। तुम एक जवान, तन्दुरुस्त जानवर हो। मेरा विचार है कि इतनी दूर तो तुम आसानी से जा सकते हो।"

मगर ने खुश हो कर कहा—"कितने अच्छे मित्र हो तुम ! मुझे तुरन्त वहाँ तक ले चलो। मैं आधा मील क्या कई मील चल सकता हूँ। चलो, जल्दी चलो।"

कौए ने हँस कर कहा—"बस ! अभी से थक गये ? अभी तो मुश्किल से सौ या पचास गज ही हम चले होंगे। तुम्हारे जैसा तन्दुरुस्त जवान क्या इतना-सा चल कर ही थक सकता है ? चले चलो बहादुर।"

मगर शरमा गया और फिर जोश के साथ चल पड़ा यद्यपि उसकी हालत खराब थी। गरम जमीन से उसका पेट चटकने लगा। गला सूखने लगा। अब तक वे लोग करीब तीन मील चले आये थे। मगर बेहोश-सा हो कर सड़क पर लुढ़क गया। अब एक कदम भी आगे वह नहीं बढ़ सकता था। कौआ उसकी हालत पर ठठा कर हँसा—"अरे मोटे मूर्ख मगर, अब यहीं पड़ा रह मैं जाता हूँ। यहाँ न कोई नदी है न तालाब। मेरे मित्रों को तंग करने का और धोखा देने का मजा तुझे मिलेगा अब।"

कौआ उड़ गया। तभी एक बैलगाड़ी उधर से निकली। मगर ने गाड़ीवाले से विनती की कि वह उसे नदी तक छोड़ आये, नहीं तो वह मर जायेगा। मगर के बहते आँसू देख कर गाड़ीवाले को दया आ गयी और वह उसे ले जाने को राजी हो गया। लेकिन उसने पहले मगर को मोटी रस्सी से बाँधा तब गाड़ी पर रखा और नदी तक ले गया। किनारे पहुँच कर मगर ने कहा—"दयालु गाड़ीवाले मैं चलने में बिलकुल लाचार हूँ, इतनी कृपा और करो कि गाड़ी पानी में थोड़ी दूर तक ले चलो। तब मेरी रस्सी खोल कर पानी में ढकेल देना। मुझसे एक कदम भी आगे नहीं चला जायेगा।

गाड़ीवाला सीधा और दयालु था। वह गाड़ी को कुछ दूर और, जब तक बैलों के आधे पैर पानी में नहीं डूब गये,

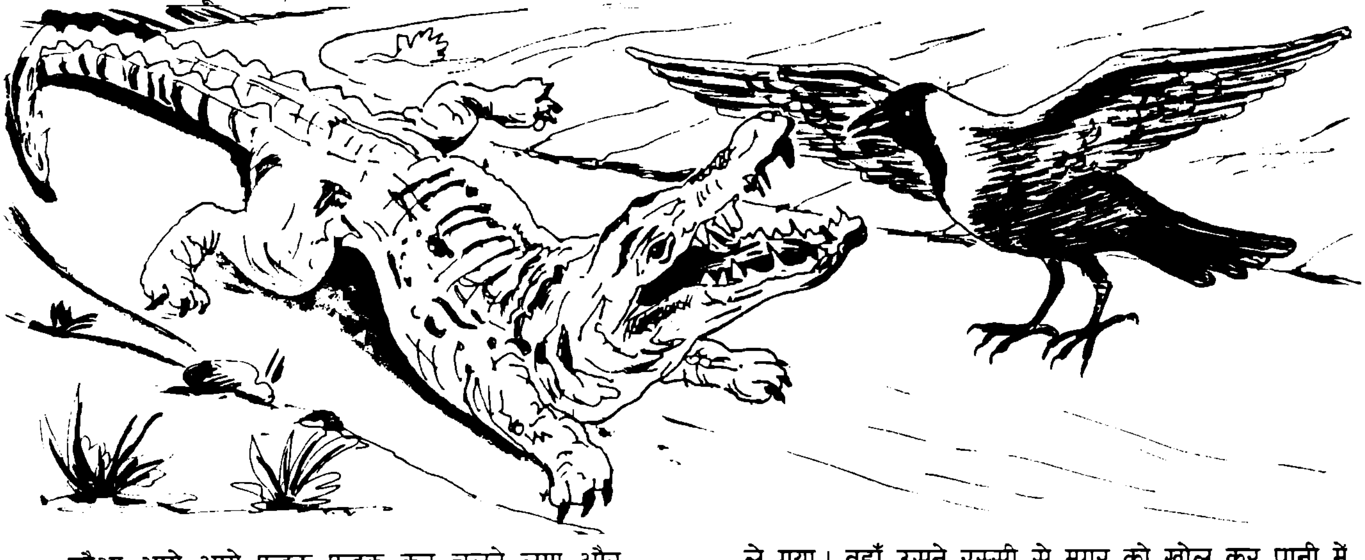

कौआ आगे-आगे फुदक-फुदक कर चलने लगा और मगर को रास्ता दिखाने लगा। गर्मी की कड़कती धूप और तपती जमीन पर करीब एक मील तक चलने के बाद मगर ने हाँफते हुए पूछा—"और कितनी दूर है तुम्हारी गहरी नदी ? एक मील तो हमने पार कर लिया होगा।"

ले गया। वहाँ उसने रस्सी से मगर को खोल कर पानी में छोड़ दिया। धोखेबाज मगर ने पानी में उतरते ही एक बैल की टाँग पकड़ ली। बैल चिल्लाया। गाड़ीवाले ने कहा—"अरे मक्कार जानवर ! मेरे अहसान का यही बदला दिया तूने ? मेरे बैल को छोड़ दे।" लेकिन भला वह

हाथ में आया शिकार क्यों छोड़ता।

तभी मगर को ढूँढ़ता हुआ कौआ अपने मित्र खरगोश के साथ वहाँ आ गया। बैल की जान आफत में देख कर उसने कहा—"अरे गाड़ीवाले अपनी लाठी मगर की नाक पर जोर से मार नहीं तो तेरा बैल तेरे हाथ से चला जायेगा।"

गाड़ीवाले ने जोर-जोर से मगर की नाक पर लाठी मारनी शुरू की। कौए को देख कर मगर वैसे ही घबरा गया था, और लाठी की मार से दर्द के मारे उसने बैल का पैर छोड़ दिया। गाड़ीवाले ने फुर्ती से गाड़ी पानी से बाहर निकाली और भाग गया। कौआ और खरगोश जोर से हँसने लगे। मगर शरमा कर पानी में डुबकी लगा कर छिप गया। उसे अपनी मक्कारी की सजा मिल गयी।

मेल का मीठा फल

गंजू सबेरे से खेत जोत रहा था। जब दोपहर को सूरज आसमान पर ठीक सिर के ऊपर चढ़ आया तब गंजू ने थक कर हल से बैल खोल दिये। दोनों बैलों, कल्लू और मल्लू को उसने पीपल के पेड़ में एक ही रस्सी से बाँध दिया। दोनों के लिए भूसे की डलिया अलग-अलग रख दी और अपनी रोटी निकाल कर वह भी पीपल के नीचे बैठ कर खाने लगा।

कल्लू, मल्लू भी भूखे थे। भूसा देख कर कल्लू अपनी डलिया की तरफ बढ़ा। मल्लू भी भूखा था। वह भी अपनी तरफ का भूसा खाने के लिए लपका। लेकिन यह क्या ? रस्सी छोटी थी। दोनों एक-दूसरे को खींच रहे थे। कोई भी अपने भोजन पर मुँह नहीं रख पा रहा था। काफी देर तक

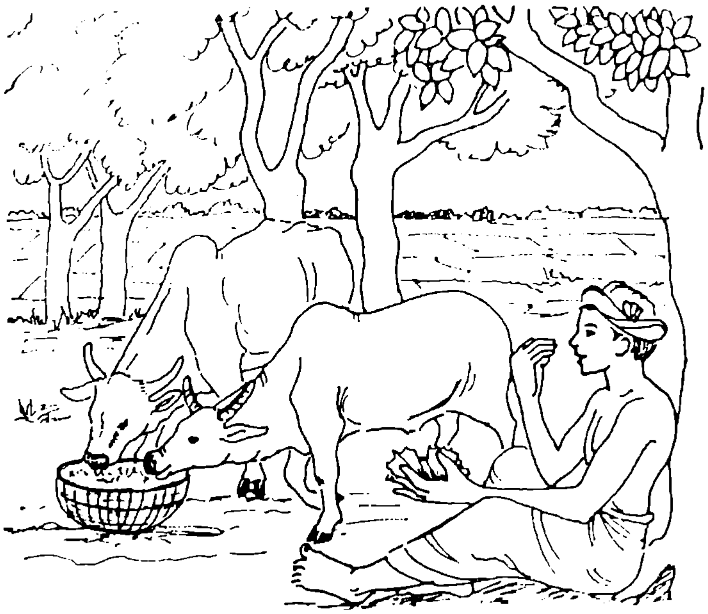

यह खींचा-तानी चलती रही।

कल्लू ने मल्लू से कहा—"मल्लू मैं भूखा हूँ। तुम अपनी तरफ खींचना बन्द करो तो मैं कुछ खा लूँ।"

मल्लू ने कहा—"वाह ! क्या मैं भूखा नहीं हूँ ? तुम अपनी रस्सी खींचना रोको तो मैं अपनी भूख मिटा लूँ।"

लेकिन किसी ने एक-दूसरे की बात नहीं मानी। दोनों ने फिर जोर लगाया। किन्तु कोई भी खाना न खा सका। बड़ी देर तक इस तरह खींचा-तानी चलती रही। दोनों थक कर हाँफने लगे। सबेरे से हल चला कर दोनों ही थके और भूखे थे। आखिर हार कर कल्लू ने कहा—"ठीक है मल्लू पहले तुम्हीं खा लो। हम यदि ऐसे ही खींचा-खाँची करते रहे तो शाम तक भी दोनों को खाना नहीं मिलेगा और अभी थोड़ी देर में मालिक फिर हमें हल में जोत देगा।"

मल्लू खुश हो कर बोला—"वाह कल्लू भाई, मैं ही क्यों अकेला खाऊँ पहले। आओ पहले मेरी तरफ आओ। हम दोनों इधर का भूसा खा लें। उसे खत्म करके फिर तुम्हारी तरफ दोनों मिल कर खा लेंगे।"

कल्लू प्रसन्न हो कर बोला—"अरे यह बात हमें पहले क्यों नहीं सूझी ? कितने मूर्ख थे हम।"

इतना कह कर वह मल्लू की तरफ मुड़ गया। दोनों ने मिल कर एक तरफ का भूसा खत्म किया। फिर दोनों कल्लू की तरफ का भूसा खाने लगे। आज दोनों ने सीख लिया था कि मेल का फल कितना मीठा होता है।

तीन मूर्ख

जंगल के सभी जानवरों में खरगोश को सबसे बुद्धिमान और समझदार माना जाता है। एक बार वह एक पेड़ की ठंडी छाँह में घास का तिनका मुख में दबाये फिलासफर की तरह बैठा कुछ सोच रहा था। वह अपने आप बड़बड़ा कर बोला—"उफ् यह दुनिया तो रहनेलायक नहीं है। कभी यहाँ आँधी और तूफान आते हैं। कभी इतना पानी बरसता है कि सिर पर आसमान ही गिर पड़ता है। हाय, कभी अकाल पड़ जाता है और लोग भूख से मरने लगते हैं। कभी चोर और डाकू हमारी सम्पत्ति लूट ले जाते हैं। दुःख-ही-दुःख है, इस दुनिया में।"

यह सब कहता हुआ खरगोश उठा और एक तरफ चला गया। उसकी बातों को कुछ और प्राणियों ने भी सुना। उनमें टिटहरी, केचुआ और बंदर भी थे। खरगोश के विचारों से ये बहुत परेशान और दुःखी हुए।

टिटहरी सोचने लगी—"विद्वान, ज्योतिषी और

फिलासफर खरगोश ने कहा है कि कभी आसमान सिर पर ही आ गिरता है। हे भगवान् ! यदि ऐसा हुआ तो मैं क्या करूँगी। यदि जागती रही और आसमान गिरने लगा तो मैं उड़ कर किसी तरह बच भी सकती हूँ, लेकिन यदि कहीं मेरे सोते समय आसमान गिरा तब तो मैं दब कर मर ही जाऊँगी।''

टिटहरी यह सोच कर दु:ख और डर से चीख-चीख कर रोने लगी। फिर थोड़ी देर बाद वह चुप हुई, आँसू पोंछ कर बोली—''रोने से काम नहीं चलेगा। न संकट दूर होगा रोने से। मुझे सोते समय भी सावधान रहना पड़ेगा। आज से मैं टाँगें ऊपर करके सोऊँगी। यदि आसमान कभी गिरे तो मैं अपने पैरों पर उसे रोक लूँगी।''

टिटहरी यह कह कर प्रसन्न हो गयी और अब वह रात को पीठ के बल अपनी लम्बी टाँगों को ऊपर उठा कर सोती है। कितनी अक्लमन्द है वह।

केचुए ने भी खरगोश की बात सुनी थी। वह भी चिंता में पड़ गया। ''हाय राम यदि कभी अकाल और भुखमरी आ गयी तो मैं क्या करूँगा ? क्या मुझे भूखा मर जाना पड़ेगा ? नहीं...नहीं...मैं भूखा नहीं मरना चाहता। मैं मरना नहीं चाहता।''

केचुआ दु:ख के मारे सिकुड़ कर गुड़ी-मुड़ी हो कर रोने लगा। थोड़ी देर बाद वह कुछ सोच कर बोला—''मैं ऐसा अकाल अपने लिए आने ही नहीं दूँगा। मैं अपने भोजन मिट्टी को खत्म नहीं होने दूँगा। मैं जिंदा रहूँगा। मैं भूखा नहीं मर सकता।''

उस दिन से केचुआ जितनी मिट्टी खाता है उतनी ही बाहर निकाल देता है। इस प्रकार वह सोचता है कि मिट्टी की कभी कमी नहीं होगी और दुनिया में उसके लिए भुखमरी की नौबत कभी नहीं आयेगी।

उधर बंदर खरगोश की बातों पर गंभीरता से विचार करता रहा। वह टिटहरी और केचुए की तरह रोया नहीं। उसने सोचा—''विद्वान खरगोश की बात गलत नहीं हो सकती। मुझे सोच समझ से काम लेना चाहिए। मेरे लिए यह पृथ्वी अनमोल है। मैं इस पर कूदता हूँ। दौड़ता हूँ। खेलता हूँ। यदि इसे चोर और डाकू चुरा ले गये या लूट ले गये तो मेरे लिए मरने की बात होगी यह। मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा। मेरे जिन्दा रहते न इसे चोर चुरा सकेगा और न डाकू इसे लूट सकेगा। लेकिन हाँ, रात को जब मैं पेड़ पर सोता हूँ तब कहीं चोर आये, तब क्या करूँगा मैं ?''

वह बड़ी देर तक अपने सिर पर हाथ रखे सोचता रहा। फिर इस नतीजे पर आया कि वह रात को जब पेड़ पर रहेगा तब बीच-बीच में तीन-चार बार उतर कर जमीन टटोल कर देख लेगा कि कहीं कोई जमीन चुरा कर तो नहीं ले गया।

तब से वह रात को पेड़ से उतर कर जमीन छू कर देख लेता है और विश्वास होने पर कि जमीन सही सलामत है, ऊपर चला जाता है।

मन की राह

एक आदमी घोड़े पर किसी गाँव को जा रहा था। रास्ते में एक बूढ़ा आदमी मिला जो सिर पर एक बड़ी सी गठरी लिए धीरे-धीरे चल रहा था। घोड़े वाले को देख कर उसने पूछा—

"बेटा तू कहाँ जा रहा है ?"

घोड़े वाले ने कहा—"यही अगले गाँव मोहनपुर जा रहा हूँ बाबा।"

बूढ़ा बोला—"मैं भी वहीं जा रहा हूँ, लेकिन इस भारी गठरी को ले कर चलते नहीं बन रहा है। बेटा ! यदि तू इसे अपने घोड़े पर रख ले तो मैं हल्का हो कर जल्दी गाँव पहुँच जाऊँगा।"

"लेकिन बाबा मैं तो घोड़े पर जल्दी गाँव पहुँचूँगा और तुम पैदल पता नहीं कब तक पहुँचोगे। मैं कब तक तुम्हारा रास्ता देखूँगा। मोहनपुर मुझे ज्यादा रुकना भी नहीं है। मैं तुम्हारी गठरी नहीं ले सकता।" यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

लेकिन थोड़ी दूर जाने के बाद ही वह लौट पड़ा। उसने सोचा—"पता नहीं उस गठरी में क्या था। शायद बूढ़े की जिन्दगी भर की कमाई हो उसमें, मुझे वह रख लेना चाहिए। यदि उसमें धन होगा तो मैं बूढ़े के पहुँचने के पहले ही ले कर भाग जाऊँगा। बूढ़ा न मुझे पकड़ पायेगा न मेरा पता ही लगा पायेगा।" और तब बूढ़े के पास आकर उसने कहा—"बाबा लाओ तुम्हारी गठरी ले चलूँ। मुझे दुःख है मैंने पहले मना कर दिया।"

बूढ़े ने कुछ सोच कर उसकी ओर देखा फिर बोला—"नहीं, अब अपनी गठरी मैं खुद ही ले जाऊँगा।"

आदमी बोला—"अरे अभी थोड़ी देर पहले तो तुम दे रहे थे अब क्या हो गया ?"

बूढ़ा हँसा—"जिसने तुझे इतनी दूर से वापस भेजा और कहा कि बुड्ढे की गठरी ले आ, उसी ने मुझसे कहा कि उस अजनबी को अपना सामान मत देना।"

वह आदमी झेंप कर चला गया।

सच है, एक के मन की बात दूसरे तक चली जाती है। घोड़ेवाले के मन की बेईमानी बूढ़े ने भाँप ली थी।

चूँ-चूँ

एक किसान था। उसने अपने खेत में कांगनी (एक प्रकार का चावल) बोयी। उसकी मेहनत से कांगनी खूब पैदा हुई। चिड़ियों ने देखा तो खेत पर उतर आयीं और छक-छक कर खाने लगीं। किसान को बड़ा क्रोध आया। वह उन्हें पकड़ने दौड़ा। सब तो फुर्र-फुर्र उड़ गयीं। लेकिन एक चिड़िया उसकी पकड़ में आ गयी। उसने उसे पिंजड़े में बन्द कर दिया और पेड़ पर टाँग दिया।

चिड़िया बड़ी दुःखी हुई। वह पछता रही थी कि कांगनी तो सब ने खायी, लेकिन पकड़ी वह अकेली गयी। उसने किसान से बहुत विनती की कि वह उसे छोड़ दे, लेकिन किसान का तो बहुत नुकसान हुआ था। उसने उस चिड़िया को नहीं छोड़ा।

इतने में खेत के पास से राजा की सवारी निकली। सब से पहले ऊँट पर एक सवार दिखा। चिड़िया ने उसे पुकारा—

"ऊँट पर के भइया रँग चूँ-चूँ।
सब मिल खायी कांगनी रँग चूँ-चूँ।
मैं बिचारी बन्द पड़ी रँग चूँ-चूँ।"

सिपाही को दया आयी बोला—"किसान भाई तुमने क्यों इस छोटी सी चिड़िया को बन्द कर रखा है। छोड़ दो न !"

किसान बोला—"वाह, क्यों छोड़ दूँ इसे ? क्या तुम मेरा नुकसान भर दोगे ?"

"मैं क्यों नुकसान भरूँगा ?" यह कह कर सिपाही चला गया। उसके पीछे घोड़े पर दूसरा सिपाही आया। चिड़िया ने उससे भी प्रार्थना की—

"घोड़े पर के बीरन रँग चूँ-चूँ।
सब मिल खायी कांगनी रँग चूँ-चूँ।
मैं अकेली बन्द पड़ी रँग चूँ-चूँ।"

इस सिपाही ने भी किसान से चिड़िया को छोड़ देने को कहा लेकिन जब किसान ने उससे अपने नुकसान का पैसा माँगा, तो वह भी चुप हो कर आगे बढ़ गया।

उसके पीछे हाथी पर राजा की सवारी निकली। चिड़िया ने उसे भी पुकार कर रोका—

"हाथी पर के राजा रँग चूँ-चूँ।
सब मिल खायी कांगनी रँग चूँ-चूँ।
मैं अकेली बन्द हुई रँग चूँ-चूँ।"

राजा को चिड़िया पर बड़ी दया आयी। उसने किसान को आज्ञा दी—"इस चिड़िया को फौरन छोड़ दो।"

किसान ने हाथ जोड़ कर विनती की—

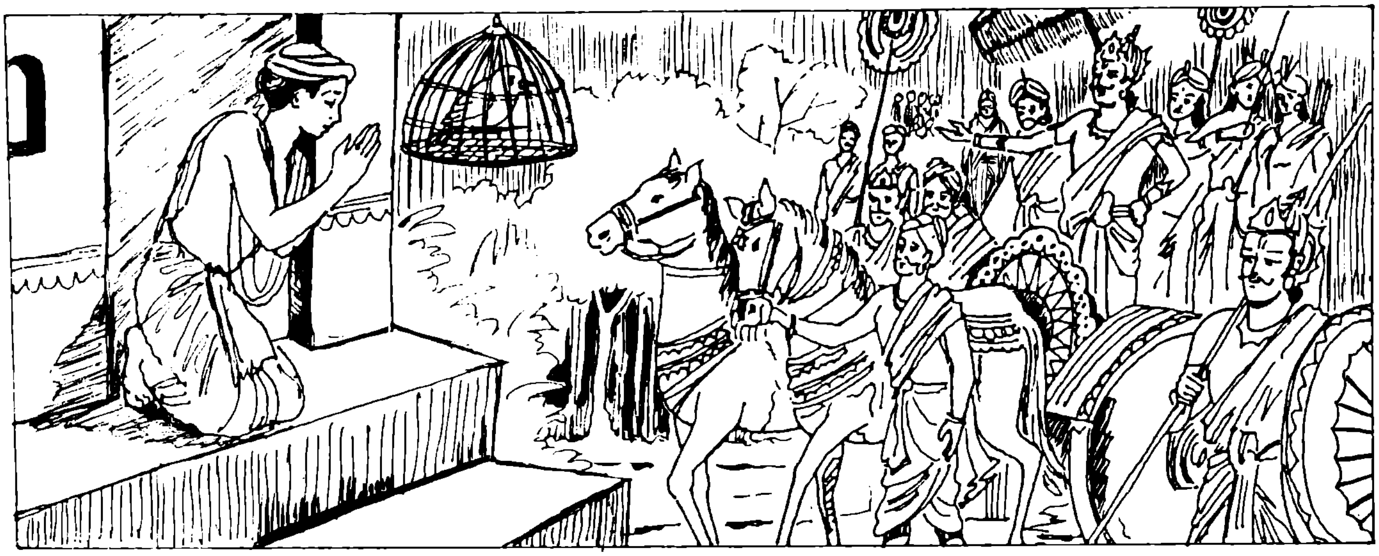

"महाराज चिड़ियों ने मेरी बहुत कांगनी चुग डाली है। क्या महाराज मेरा नुकसान पूरा कर देंगे ?" राजा के लिए भला कौन सी कमी थी ! मंत्री से बोला, "इस किसान को एक हजार रुपये दे दो।" किसान इतने ढेर से रुपये पा कर बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त पिंजड़ा खोल दिया। चिड़िया बाहर आ गयी। उसने राजा के पास पहुँच कर धन्यवाद दिया—

"हाथी पर के बीरन रँग चूँ-चूँ।
तुमने मुझको छुड़ा दिया रँग चूँ-चूँ।
मैं सलोनी खुश हुई रँग चूँ-चूँ।
राज्य तुम्हारा खूब फूले रँग चूँ-चूँ।"

मित्रता की शुरुआत

एक घने जंगल में बहुत तरह के रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े पक्षी रहते थे। उन लोगों में एक बड़ी खराब आदत थी। वे हमेशा आपस में लड़ते रहते थे। मेल से रहना जानते ही नहीं थे वे।,जैसे ही एक-दूसरे को देखता, कहता—

"मैं तुम से सुन्दर हूँ।"

दूसरा तुरन्त गुस्से में भर कर कहता—"कौन कहता है तुम सुन्दर हो। मैं हर तरह से तुम से कई गुना अच्छा हूँ।" बस उन दोनों में लड़ाई शुरु हो जाती। फिर उन लोगों के साथ और पक्षी भी लड़ने आ जाते।

एक बार एक तीतर कहीं दूसरे जंगल से भटकता हुआ उस जंगल में आ पहुँचा। शाम हो चुकी थी। सब चिड़ियों के बसेरा लेने का समय था। तीतर अपने घर लौटता तो बीच में ही रात हो जाती। वह थका और परेशान-सा एक पेड़ पर बैठ गया। वहाँ एक कौआ अपने परिवार के साथ रहता था। एक नये पक्षी को अपने पेड़ पर बैठते देख कर उसकी भौंहें तन गयीं। लेकिन तीतर ने उसे देख कर प्रसन्नता से कहा, "नमस्कार भाई ! अच्छी तरह से तो हो। तुम्हें अपने बाल-बच्चों के साथ देख कर बड़ा अच्छा लग रहा है। कैसे प्यारे हैं तुम्हारे ये दोनों बच्चे।" कौआ उसकी मीठी बातें सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। उसे तीतर अच्छा भी लगा।

"नमस्कार भाई ! कहाँ से चले आ रहे हो पहले तो तुम्हें कभी नहीं देखा यहाँ ?" कौए ने पूछा।

"हाँ कौए भाई ! मैं बड़ी दूर से आ रहा हूँ। रास्ता भूल गया और इधर निकल आया, थका भी हूँ। तुम्हें और इस छायादार पेड़ को देख कर आराम करने का मन हुआ और आ गया तुम्हारे पास। मेरे यहाँ बैठने से तुम्हें कष्ट तो नहीं होगा भाई ?"

"नहीं ! नहीं !! मुझे तो तुम बहुत अच्छे लग रहे हो, एक बहुत शरीफ पक्षी। अब शाम हो गयी है और रात होने वाली है। तुम हमारे पास ही रुक जाओ न आज ?"

बस तीतर उसी पेड़ पर कौए के परिवार के पास सो गया। सुबह उठ कर उसने कौए को धन्यवाद दे कर विदा माँगी, तब कौए ने कहा—"मित्र तीतर ! तुम अब कहीं मत जाओ। हमारे साथ ही रहो। मैं देखता हूँ कि तुम देखने-सुनने में मुझसे कहीं ज्यादा सुन्दर हो, परन्तु जरा

सा भी घमंड तुममें नहीं है।"

तीतर बोला—"अरे, कौन कहता है मैं तुमसे सुन्दर हूँ। कितने चमकीले, काले चमकदार पंख हैं तुम्हारे ! और मैं एक तितिर-बितिर रंगों के पंखोंवाला पक्षी ! भाई मुझे शरमिंदा मत करो और हाँ, मेरा मन भी तुम्हे छोड़ कर जाने को नहीं कर रहा है। अब मैं तुम्हारे पास ही रहूँगा।"

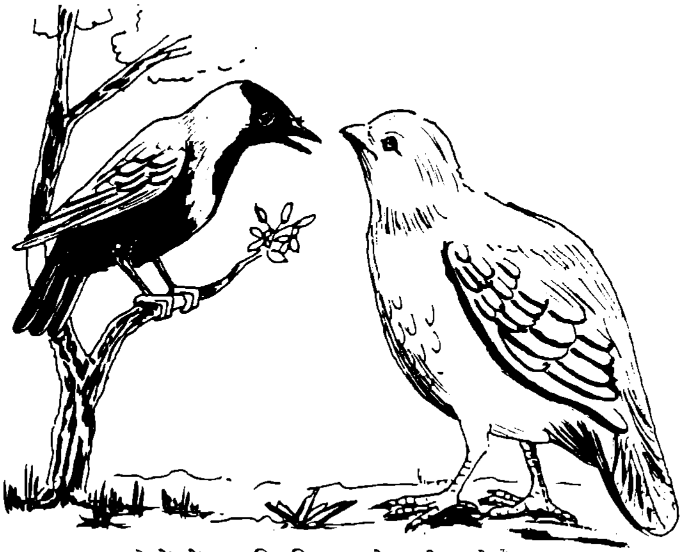

बस दोनों में पक्की मित्रता हो गयी। दोनों साथ-साथ रहते, घूमते और खाते। अब उस पेड़ पर कभी लड़ने की आवाज नहीं आती। कोई दूसरा पक्षी भी वहाँ आकर लड़ने का साहस नहीं करता। लेकिन यह बात सबको अच्छी नहीं लगी। सब मन-ही-मन कौए और तीतर को मेल से रहते देखते तो जलते थे। एक दिन कुछ पक्षी कौए के पास गये। उस समय तीतर वहाँ नहीं था। वे बोले—

"भाई कौए ! हम तुम्हें सावधान करने आये हैं। इस बाहरी पक्षी को तुमने क्यों अपने पास रख लिया है ? कितना बदसूरत और बेकार का पक्षी लगता है वह। भगा दो उसे, नहीं तो कभी धोखा खाओगे।"

कौआ उनकी बात सुन कर दुःखी हुआ और बोला—"ऐसा मत कहो मेरे मित्र के लिए। वह मुझसे हर बात में सुन्दर है, अच्छा है। मैं उसका साथ कभी नहीं छोड़ सकता।"

जब कौए ने उनकी बात नहीं मानी, तब वे पक्षी एक दिन अकेले में तीतर के पास गये और बोले—

"अरे भोले तीतर, तू इस काले कलूटे कौए का साथ छोड़ दे। बड़ा कड़वा और दुष्ट स्वभाव का है यह, तू तो इतना सुन्दर है, क्यों इस गंदे के साथ रहता है ?"

तीतर ने उनकी बातें सुन कर पहले कान बंद कर लिये, फिर बोला—"कैसी बातें करते हैं आप लोग ? कहाँ मेरा मित्र और कहाँ मैं ! वह सब बातों में मुझसे अच्छा है। मैं अपने मित्र से अलग नहीं रह सकता।"

हार कर सब वापस चले गये, लेकिन उनके मन पर दोनों की बातों का बड़ा असर पड़ा। उन्होंने भी अब मेल से रहने का विचार किया।

लड़ने से कोई अच्छा फल नहीं मिलता यह उन्हें अब मालूम हो गया और अब वे लोग भी मेल से रहने लगे। कौए और तीतर ने उन्हें मित्रता करना सिखा दिया था।

मनहूस चिड़िया

दादी नानू को कहानी सुना रही थी—

चिड़ियों का झुंड खाने की खोज में उड़ चला। किन्तु उस दिन पता नहीं क्या बात थी, किसी को एक दाना भी खाने को नहीं मिला। वे अब चार झुड बना कर अलग-अलग दिशा में उड़ चलीं। तीन झुंड को तो भोजन मिल गया, किन्तु चौथे को तो फिर भी कुछ नहीं मिला। इस दल की चिड़ियाँ भूख से परेशान भटकती रहीं। दल के मुखिया ने कहा—

"लगता है हमारे दल में कोई ऐसी चिड़िया है जिसके भाग्य में आज खाना नहीं है। चलो सब अलग-अलग भोजन ढूँढ़ने चलें।" और सचमुच एक को छोड़ कर सबको कुछ-न-कुछ खाने को मिल ही गया। जिसको कुछ नहीं मिला था वह थकी, घबरायी और भूखी अभी तक दाना ढूँढ़ने में इधर-उधर भटक रही थी। सबने चिल्ला कर कहा—"यही है वह मनहूस चिड़िया जिसके कारण आज हम सब इतनी देर तक भूखे और परेशान रहे।"

फिर क्या था सब उसे चोंच मारने लगीं। इतने में उसके परों में उलझा एक नाखून का टुकड़ा धरती पर गिर पड़ा। सब चिड़ियाँ उस नाखून के टुकड़े को घूर कर देखने लगीं। मुखिया ने भी देखा और चिल्ला कर कहा—"बस बस, मत मारो इस बेचारी को। यह मनहूस नहीं, यह गन्दा नाखून मनहूस है। इसी के कारण इस बेचारी को इतना दुःख उठाना पड़ा। आओ हम सब मिल कर इसके लिए भी दाना ढूँढ़ कर लायें।"

मार खानेवाली चिड़िया भी भूख और मार का दुःख भूल कर उस नाखून के टुकड़े को घूर-घूर कर देखने लगी।

कहानी खत्म हुई। नानू ने आश्चर्य से पूछा—"दादी क्या सचमुच नाखून के कारण सब चिड़ियों को भोजन का दाना नहीं मिला ?"

दादी ने हँस कर कहा—

"अरे नहीं रे ! यह तो बचपन में मेरी नानी ने मुझे शिक्षा देने के लिए कहानी बनायी थी। मैं बचपन में अपने दाँतों से नाखून काटती रहती थी और कैंची से भी नाखून काट कर इधर-उधर फेंक दिया करती थी। बात असल में यह है कि नाखून के अन्दर हर तरह की गंदगी भरी रहती है। इससे तरह-तरह की बीमारियाँ फैलने का डर रहता है। कटा हुआ नाखून उसी प्रकार गन्दा होता है जैसे एक हड्डी। यह भी एक प्रकार की हड्डी ही तो है। नाखून काटते समय एक कागज नीचे रख लेना चाहिए। काटने के बाद नाखून कूड़े में फेंक कर अच्छी तरह हाथ भी धो लेना चाहिए।"

नानू ने कहा—"समझ गया दादी ! मैं भी अब ऐसा ही करूँगा। कभी दाँत से नाखून नहीं काटूँगा। कैंची या कटर से काट कर बाहर फेंक दूँगा।"

दादी मुस्करायीं—"मेरा अच्छा नानू बेटा।" और उन्होंने उसे गले से चिपटा लिया।

खूब बचे

रामधुन वैसे तो गाँव में अपनी तेज बुद्धि के लिए मशहूर थे, किन्तु कहीं-कहीं, कभी-कभी वे अपनी इसी तेज बुद्धि के कारण सनकी भी कहलाते थे।

एक दिन रामधुन की पत्नी ने जो गाँव की सीधी सादी स्त्री थी अपने पति की कमीज धो कर बाहर आँगन में सुखा दी। कमीज की बाँहें रस्सी पर अच्छी तरह फैला दीं जिससे सिकुड़न न पड़े। शाम को कमीज धोयी थी इसीलिए सूखी नहीं थी। रात भर रस्सी पर आँगन में पड़ी रही। किसी काम से रात को रामधुन कमरे से बाहर निकला तो आँगन पर निगाह पड़ते ही चौंक कर ठिठक गया। उसने देखा अँधेरे में कोई आदमी हाथ फैलाये आँगन में खड़ा है। रामधुन डर के मारे काँपने लगा। लेकिन जल्दी ही वह सँभल गया। उसने मन में कहा—जरूर यह चोर है। हम लोगों को सोता हुआ समझ कर चोरी करने आया है। मैं अभी इसका अंत करता हूँ। उसने पलट कर धीमे से पत्नी से कहा—"जल्दी से दूसरे कमरे से खूँटी पर टँगी मेरी बंदूक तो ले आना।" आज्ञाकारी पत्नी ने उसे बंदूक ला कर पकड़ा दी—"धाँय-धाँय !!" एक नहीं दो-दो गोलियाँ रामधुन ने चोर की छाती पर दाग दी और फिर ठहाका मार कर हँसा—

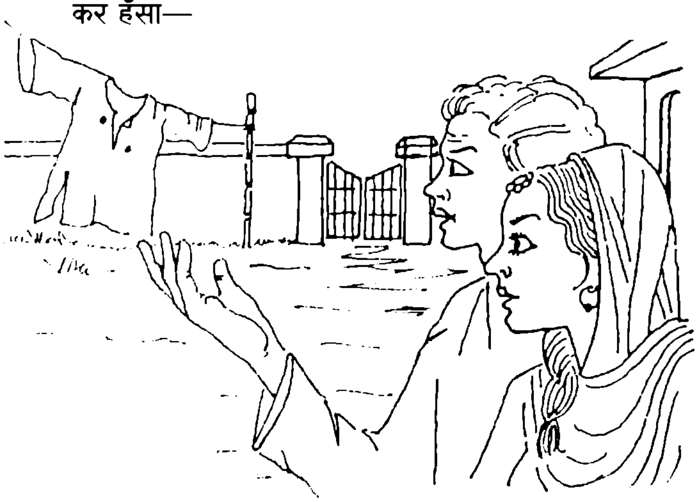

"बड़ा आया था चोरी करने ! गया न अपनी जान से ! अरे ! रामधुन के यहाँ चोरी करने की हिम्मत चाहिए थी मूर्ख।"

फिर पत्नी से बोला—"चलो मुन्ने की अम्मा अब बेफिक्री से सोयें। सबेरे देखेंगे इसकी लाश को।"

पत्नी ने भी गर्व से कहा—"कितने बहादुर हो मुन्ने के बापू तुम।"

सुबह जब रामधुन उठा तो उसकी कमीज में दो छेद थे। जहाँ रात को चोर खड़ा था वहाँ वह कमीज अभी भी फैली बाँहों के साथ टँगी थी। पहिले तो वह बड़े आश्चर्य में पड़ गया, किन्तु फिर समझते देर नहीं लगी कि रात को जिसे चोर समझा था वह तो उसी की टँगी हुई कमीज थी। गोली उसने किसी चोर के सीने पर नहीं कमीज के बीचो-बीच दागी थी। यह सोचते ही वह बहुत गंभीर हो गया और पत्नी से बोला—

"देखा मुन्ने की अम्मा, ईश्वर ने मुझे कैसा बचाया ? जरा सोचो तो यदि कहीं मैं यह कमीज पहिने खड़ा होता तो अब तक यमलोक पहुँच जाता न ?"

पत्नी ने आँखें फाड़ कर रामधुन को देखा। फिर भगवान् को हाथ जोड़ कर बोली—"सचमुच प्रभो ! तुम कितने दयावान हो।"

छोटा मुसाफिर लम्बा सफर

भटका मुसाफिर

सूनसान जंगल। दोपहर की चिलचिलाती धूप। एक तेरह या चौदह वर्ष का बालक परेशान-सा घूम रहा था। वह भटक गया था। उसे नहीं सूझ रहा था कि वह किधर जाय, उसका सही मार्ग कौन-सा है। उसके घुँघराले बालों में धूल भरी थी। सुनहरे काम की मखमली जाकेट मटमैली हो गयी थी। उसकी कमर में एक सोने की पेटी बँधी थी जिसमें एक सोने की मूठवाला खंजर लटका था, शायद जंगल में मौके-बे-मौके काम आने के लिए।

लड़का बहुत थका और चिन्तित दिखाई दे रहा था। चेहरे पर घबराहट झलक रही थी। बदन पर जगह-जगह झाड़ी और काँटों की खरोंचें लगीं थीं। वस्त्र काँटों में उलझने के कारण कई जगह फट गये थे। सूरज आसमान पर चढ़ आया था। बालक के चेहरे पर घबराहट, थकान और गरमी के कारण पसीने की बूँदें झलक रही थीं। सफेद दूधिया आँखों की काली-काली पुतलियाँ चिन्ता और परेशानी में चंचल थीं किन्तु फिर भी चेहरे पर एक दृढ़ निश्चय झलक रहा था जो बता रहा था कि, ''थका हूँ तो क्या हुआ, मैं हारा नहीं हूँ। अपना रास्ता ढूँढ़ ही लूँगा।''

असहाय अवस्था में भी बालक असाधारण दिख रहा था। उसके मुख का तेज, उसकी चाल और चेहरे का गाम्भीर्य बता रहा था कि वह कोई साधारण बालक नहीं है। रास्ता भूलने के कारण वह चिंतित था। बहुत चलने और भटकने के कारण थका भी था, और शायद उसने दिन भर से कुछ खाया भी नहीं था। लेकिन यह सब कठिनाइयाँ झेलने पर भी वह दीन और हारा नहीं था। रास्ते की खोज में वह बराबर सतर्क हो कर इधर-उधर घूम रहा था। उसकी आँखें कह रही थीं—'' परेशान हूँ और भटका हुआ हूँ मगर अपनी मंजिल को पा कर रहूँगा।''

बहुत-बहुत पुरानी बात है। राजा बर्बरीक को उसकी प्रजा देवता की तरह पूजती थी। वह बड़ा न्यायी राजा था। गलती की सजा देने में वह अपने सगे पराये का भेद नहीं रखता था। दुष्ट, अपराधी, चोर, डाकू उसके नाम से थर्राते थे। वह गरीब-अमीर सबको एक दृष्टि से देखता था। गुणी लोगों का वह आदर-सत्कार करता था। सब अपने अच्छे राजा को प्यार करते थे। पशु-पक्षी तक उसका गुणगान करते थे। उसका नाम प्रदेश के कोने-कोने में फैला था। प्रजा निडर हो कर रहती थी। किसी को किसी का डर नहीं था। उसके राज्य में सर्वत्र अमन-चैन था। नदियाँ जल से भरी थीं। घाटियाँ फल-फूलों से लदी थीं। मुसाफिरों के लिए स्थान-स्थान पर ठहरने और खाने-पीने की सुविधाएँ थीं। गरीबों और अपाहिजों को राजा की ओर से भोजन और वस्त्र दिये जाते थे। हाँ, दूर घने जंगलों में कुछ डाकू इतना प्रबन्ध होने पर भी अभी छिपे हुए थे। राज्य के सिपाही बराबर उनका पता लगाने की चेष्टा में रहते थे। उनमें से कितने ही पकड़ कर बन्दी बना लिये गये थे और कितने ही लड़ाई में मारे गये थे।

राजा बर्बरीक की कई संतानें थीं जिनको अच्छी शिक्षा दी जाती थी। राजा स्वयं अपने राजकुमारों की परीक्षा समय-समय पर लेता रहता था और ऐसे कार्यक्रम बनाता था जिससे राजकुमारों को अनुभव भी प्राप्त हो और शिक्षा भी मिले।

उसके सबसे छोटे राजकुमार का नाम गगन था। पिता ने उसकी शिक्षा तथा अपने प्रदेश की जानकारी के लिए उसे अकेले भ्रमण के लिए भेज दिया, किन्तु साथ ही उसकी सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखा। मार्ग-प्रदर्शन के लिए एक सुनहरी डोर उसके हाथ में पकड़ा दी और कहा—''बेटा गगन इस अलौकिक सुनहरी डोर को पकड़ कर तुम कहीं भी जा सकते हो। इसे थामे हुए तुम समुद्र भी पार कर सकते हो। घने-से-घने जंगल में भी यह तुम्हें मार्ग दिखायेगी, भयानक पशु-पक्षी भी इसके रहते तुम्हें खतरा नहीं पहुँचा सकते। यह तुम्हें कभी गलत रास्ते पर नहीं जाने देगी बशर्ते इसकी आज्ञा मानो और इसे कभी हाथ से न जाने दो। मेरी आज्ञा यही है कि तुम इसे किसी भी अवस्था में छोड़ना नहीं अन्यथा खतरे में पड़ जाओगे। जाओ और इस पवित्र डोर को पकड़ कर सुरक्षित यात्रा से लौट कर घर आओ। मैं तुम्हारे सकुशल लौटने की प्रतीक्षा करूँगा।''

इस प्रकार गगन अपनी यात्रा पर चल दिया। उछलता कूदता इतराता, मुस्कराता अकेले यात्रा करने के गर्व का अनुभव करता हुआ वह चलता गया। पिता ने उसे बिना

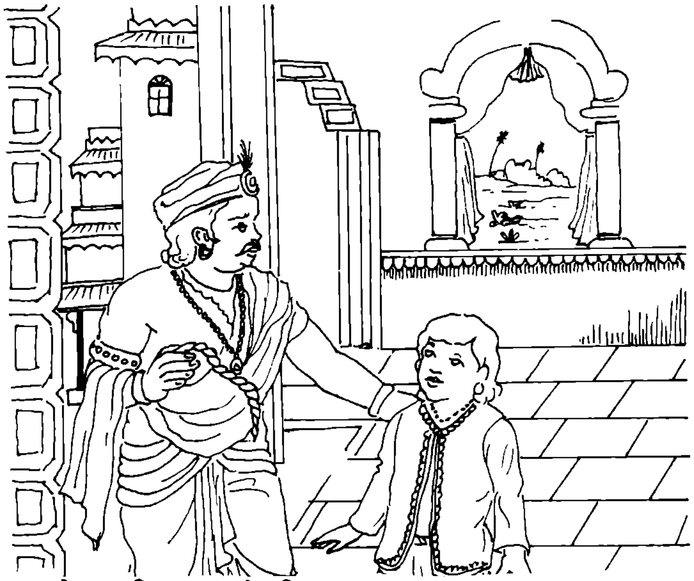

बताये उसकी सुरक्षा के लिए स्थान-स्थान पर प्रबन्ध कर रखा था। गगन इस बात से बिलकुल अनजान था। वह तो प्रसन्नता से गाता, गुनगुनाता जा रहा था। कभी किसी तितली के पीछे तो कभी किसी खरगोश के पीछे वह भागता। कभी फूल को सूँघता, कभी तोड़ कर अपनी मखमली जाकेट पर लगाता। तितली जब पकड़ में नहीं आती और फुर्र से उड़ जाती तो वह खिलखिला कर हँस पड़ता। कहीं झरने पर बैठ कर पानी पीता, ठंडे जल से मुँह धो कर अपनी थकान मिटाता। उसे अच्छी तरह समझा दिया गया था कि सुनहरी डोर ही उसको राह बतायेगी और उसी के अनुसार उसे आगे बढ़ते जाना है किन्तु सब कुछ समझने पर भी गगन ने लापरवाही से डोर की आज्ञा नहीं मानी और उसे छोड़ कर वह दूसरी तरफ बढ़ गया। बस डोर छूट कर उसकी आँखों से ओझल हो गयी, जैसे कोई हाथ में आयी चिड़िया छोड़ दे और वह फुर्र से उड़ कर पहुँच से दूर चली जाय। डोर खो जाने से ही गगन का रास्ता भी खो गया। उसे किस तरफ जाना है, किस तरफ नहीं, कौन-सा रास्ता उसे सुरक्षित घर पहुँचायेगा, यह सब उसे अब कुछ भी नहीं मालूम था।

दोपहर का समय था, हवा गरम थी, धूप खूब तेज थी। झड़ी हुई सूखी पीली पत्तियों का सागर-सा उसके सामने उमड़ रहा था। कभी-कभी धूल के कारण उसे आँखें बन्द कर लेनी पड़ती थीं। हरियाली भरा रास्ता अब कहीं नजर नहीं आ रहा था। सूखी कँटीली झाड़ियाँ, थोड़ी-थोड़ी दूर पर उजड़े टीले, बस यही दूर तक फैले हुए थे। पानी का कहीं नाम नहीं था। चारों तरफ सन्नाटा फैला था। अपने ही पैरों की चाप उसके कानों में पड़ रही थी। जब वह रुक जाता तब अपने दिल की धड़कन भी उसे साफ सुनायी देती। न कहीं कोई घर; न गाता हुआ कोई पक्षी और न फुदकता हुआ जानवर।

धीरे-धीरे आसमान पर बादल घिरने लगे, तेज हवा ने अंधड़ का रूप ले लिया, छोटे-छोटे पेड़ तो जैसे डर के मारे थर्रा रहे थे, बड़े-बड़े पेड़ भी ऐसे हिल रहे थे मानो अब गगन के ऊपर ही गिर पड़ेंगे।

गगन साहसी लड़का था। वह जानता था कि यदि वह डर गया तो अवश्य कोई विपत्ति उसे घेर लेगी। कायर और हिम्मत हारनेवालों पर ही मुसीबतें ज्यादा आती हैं। वीरों से मुसीबतें डरती हैं। लेकिन गगन ने गलती की थी। पिता के उपदेशों और आज्ञा की अवहेलना करके सुनहरी डोर को छोड़ दिया था। इसी कारण वह भयभीत था। गलती करने वाला व्यक्ति ही डरता है। सही और सच्चे मार्ग पर चलने वाला कभी नहीं डरता है। यह उसके पिता ने उसे कई बार बताया था।

अजनबी से भेंट

वह थक कर एक जगह हताश हो कर बैठ गया। एक कदम भी आगे बढ़ना अब उसके लिए कठिन हो रहा था। संध्या घिरती आ रही थी, अंधेरा होने के पूर्व उसे किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाना चाहिए। उसकी नजरें किसी ऐसे पेड़ को ढूँढ़ रही थीं जिस पर चढ़ कर वह रात बिता सके और जंगली जानवरों से बचा रहे। वह अभी इसी सोच में पड़ा था कि उसे कहीं से गाने की आवाज सुनायी पड़ी। कोई सामने के टीले के पीछे से गाता हुआ आ रहा था। आवाज पास आती मालूम हुई, वह ध्यान से उसी तरफ देखने लगा। यद्यपि गाना जंगली था लेकिन उसको लगा जैसे कोई बड़ा सहारा मिल गया हो। उसने देखा एक लड़का उम्र में उससे कुछ बड़ा, फटे-चिथड़े और गन्दे कपड़े पहिने, सिर पर भेड़ की ऊन की टोपी लगाये, हाथ में एक लकड़ी लिये कुछ भेड़ों को हँकाये घर लौट रहा था। मैले बेढंगे बाल उसके माथे और गाल पर लटक रहे थे। वह मस्ती में चिल्ला-चिल्ला कर गा रहा था। बीच-बीच में अपनी भेड़ों को भी जो इधर-उधर कभी भागने की कोशिश करतीं, लाठी पटक कर घेर लेता या कोई गन्दी-सी गाली दे देता। उसने झुक कर एक पत्थर उठा कर एक भेड़ की ओर फेंका—"अरी ओ सूअर की बच्ची, उधर कहाँ जा रही है ? सीधे चल नहीं तो कच्चा ही चबा जाऊँगा।" उसके हाथ में एक मामूली-सी ढपली थी जिसे शायद उसने खुद ही बनाया था। गाने के साथ वह उसे भी बजाता जाता था।

"अरी मोरी दइया बिछुआ ने काटा
शेर दहाड़े हो, हो, हो !
गीदड़ नाचे गाये लोमड़ी
कुत्ता भोंके भों, भों, भों !
अरी मोरी दइया बिछुआ ने काटा
चली हवा मस्तानी रे,
झर झर बरसे पानी रे,
नदिया का पानी मगर पी गया
तब मछली चिल्लानी रे।
अरी मोरी दइया बिछुआ ने काटा !"

अपनी धुन में होने के कारण उसने गगन को नहीं देखा। वह उसकी बायीं ओर जा रहा था। जब कुछ आगे निकल गया तब गगन ने सोंचा क्यों न दौड़ कर उससे रास्ता पूछ लिया जाय और उसके पीछे जा कर उसे पुकारा। जंगली लड़का जैसे आसमान से गिर गया हो, चौंक कर तीखी आवाज में बोला, "तू कौन है रे छोकरे ! यहाँ कहाँ से मरने आ गया है ?"

गगन ने मीठे स्वर में कहा—"मैं रास्ता भूल गया हूँ भाई ! क्या तुम मुझे रास्ता दिखा दोगे ?"

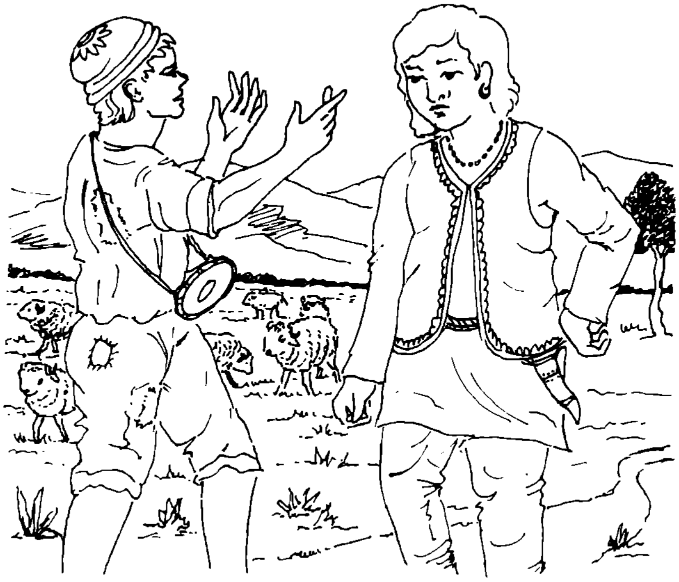

"रास्ता ? भेड़िया सिंह के घर का रास्ता ? हो, हो !"

वह कुटिल हँसी हँसा।

"भेड़िया सिंह कौन है भाई ?"

"मेरा मालिक, इस इलाके का राजा।" जंगली ने अपने मैले दाँत दिखाते हुए कहा।

"मैं रात भर ठहरने के लिये कहीं भी चल सकता हूँ। अगर तुम मुझे मेरे पिता के पास पहुँचा दो तो मैं तुम्हें इनाम भी दे सकता हूँ।"

"कौन है तेरा बाप लड़के ?" उत्सुकता से गगन के ऊपर झुक कर उस गड़रिये लड़के ने पूछा।

"मेरे पिता !" गगन ने गर्व से उत्तर दिया। "मेरे पिता राजा बर्बरीक हैं, और मेरा नाम गगन है।"

"बिलकुल झूठ। यहाँ का राजा तो भेड़िया सिंह है।"

"नहीं लड़के, मेरे पिता ही इस प्रदेश के राजा हैं। मैं सच बोल रहा हूँ। झूठ नहीं बोलता।"

जंगली ने गगन के कीमती वस्त्रों को ध्यान से देखा और कुछ सोच कर बोला—"अच्छा पहले मेरा इनाम दो मैं तुम्हें रास्ता दिखा दूँगा। लाओ, यह सोने की पेटी मुझे दे दो।"

"नहीं, यह पेटी मेरे पिता ने मुझे दी है। यह तो मैं तुम्हें नहीं दे सकता। आज मैंने अपना बहुत कुछ खोया है, अब और कुछ खोने की भूल नहीं करूँगा। हाँ, एक बात बताओ, क्या तुमने एक सोने की डोर तो कहीं पेड़ों के बीच लटकी नहीं देखी ?"

"सोने की डोर ? तुम्हारा क्या मतलब है ? मैंने कुछ भी नहीं देखा। केवल अपनी भेड़ें देखी हैं और तुम्हें भी एक भेड़ ही मान रहा हूँ। मुझे जल्दी अपनी यह पेटी दे दो नहीं तो तुम्हारे साथ वही बर्ताव करूँगा जैसा एक भेड़ के साथ करता हूँ। जल्दी करो, मेरे पास अधिक समय नहीं है। मुझे घर वापस जाना है।" यह कह कर जंगली लड़का अपनी लाठी मजबूती से पकड़ कर गगन के बिलकुल नजदीक आ गया।

"दूर रहो जंगली। खबरदार जो मुझे छुआ।" गगन ने कठोर आवाज में आज्ञा दी।

"क्यों, क्या तुम्हें छूना भी नहीं चाहिए ? और अगर यह मजबूत लाठी तुम्हारे इन घुँघराले बालों पर पटक दूँ तो तुम्हें कैसा लगेगा राजकुमार ? तुम्हारे काले बालों से लाल-लाल खून निकलता बड़ा सुन्दर दिखाई देगा। यदि तुम तुरन्त ही ये सोने की पेटी मुझे नहीं दे देते तो मैं तुम्हें मार कर यह छीन तो लूँगा ही, तुम्हें यहाँ जंगली जानवरों के खाने के लिए भी छोड़ता जाऊँगा। जल्दी निकालो, एक-दो—"

लड़के ने लाठी गगन को मारने के लिए उठायी। लेकिन अब तक गगन लड़ने के लिए तैयार हो गया था। वह डरपोक नहीं था। जंगली के इस व्यवहार ने उस छोटे राजकुमार का खून खौला दिया।

"मैं तुम्हारे साथ लड़ने के लिए तैयार हूँ डाकू लड़के। यह पेटी तुम मुझसे कभी नहीं पा सकते।"

"तीन।" चिल्ला कर जंगली ने लाठी गगन के सिर पर चला दी। गगन ने फुर्ती से उछल कर अपने को बचा लिया। जब तक वह लड़का सँभले उसने दौड़ कर उसे जमीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर चढ़ कर एक

हाथ से उसका गला पकड़ा और दूसरे हाथ से कमर से खंजर निकाल कर कहा, "अब बोल छोटे डाकू ! क्या कहता है ? तू मेरे सिर का खून निकालेगा या मैं तेरा ही खून निकाल दूँ? बोल क्या चाहता है ?" गगन का मुख क्रोध

से तमतमा उठा।

लड़का भयभीत हो गया। गिड़गिड़ा कर बोला—"राजकुमार, तुम मुझसे ज्यादा बलवान हो। मेहरबानी करके मुझे छोड़ दो, मेरा दम घुट रहा है। अब तुम्हें कभी नहीं मारूँगा। मैं वचन देता हूँ, तुम्हें मैं अपने मालिक के घर तक पहुँचा दूँगा।"

गगन ने उसे छोड़ दिया लेकिन उसकी लाठी उसे नहीं दी—"खैर मैं तुम्हारा विश्वास करता हूँ, उठो खड़े हो जाओ; और मुझे रात भर ठहरने के लिए कोई घर बताओ।"

लड़के ने उठ कर अपनी धूल झाड़ी और टोपी जो दूर जा गिरी थी उठा कर सिर पर रखी फिर दबी जबान में बोला—"चलो।"

रास्ते में गगन ने पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मेरा नाम भालू है।"

"भालू, तुम मुझे क्यों मारना चाहते थे भला ?" गगन ने मीठे स्वर में उससे पूछा।

"मै तुम्हारी यह सोने की पेटी चाहता था।"

"लेकिन भालू, क्या तुम्हें किसी ने यह नहीं बतलाया कि इस प्रकार दूसरों की चीजें छीनना, लूटना या चोरी करना बुरी बात है ? तुम्हें ऐसा करते शरम नहीं आती ?"

भालू थोड़ा रुका और बोला—"क्यों मेरे साथ भी तो लोग ऐसा ही करते हैं। यदि मैं इनकी इन भेड़ों को अच्छी तरह नहीं चराऊँ तो वे लोग मुझे जान से ही मार डालें।"

"क्या तुम्हें या उन लोगों को ईश्वर का बिल्कुल भय नहीं लगता ?"

"ईश्वर !" भालू हँसा। उसके दाँत बाहर निकल आये। "यह नाम मेरे मालिक भेड़िया सिंह के सामने मत लेना। वह इन बातों से बहुत चिढ़ता है।"

"और तुम्हारे माँ-बाप भी चिढ़ते हैं ?"

"मेरे माँ-बाप कोई नहीं है। भाई-बहन भी नहीं हैं। ईश्वर को मैं नहीं जानता, केवल इन भेड़ों को जानता हूँ। इन्हीं के संग रहता हूँ, इन्हीं के संग खाता हूँ और इन्हीं के साथ सोता हूँ। इनकी देखभाल करता हूँ, इसी लिए लोग मेरी भी पूछ करते हैं, नहीं तो—"

भालू का गला रुँध गया। वह आगे नहीं बोल सका। उसकी आँखों में आँसू भर आये थे।

गगन ने दया की दृष्टि से देखते हुए कहा—"भालू, मुझे तुम्हारे बारे में जान कर बहुत दु:ख है। मेरे पास एक सोने की मुहर है। इसे मैं तुम्हें देता हूँ और मेरे पास कुछ नहीं है। शायद यह तुम्हारे कुछ काम आये।" यह कह कर उसने एक चमकती सोने की मुहर भालू को दे दी। भालू ने आश्चर्य से उसे ले लिया और अपनी मैली हथेली पर रख कर ललचाई दृष्टि से देखने लगा। उसकी सब उदासी दूर हो गयी। वह उसे ले कर खुशी से नाचने लगा।

"अरी मोरी दइया...
बिछुआ ने काटा—हो ! हो ! हो !"

फिर एकाएक रुक कर उसने उसे टोपी के नीचे अपने उलझे बालों में छिपा लिया।

"राजकुमार मैं बहुत खुश हूँ। मुझे कभी किसी ने ऐसी चीज नहीं दी। यह बहुत कीमती है न ? इससे मैं एक भेड़ खरीदूँगा। अपनी भेड़, मेरी अपनी। राजकुमार मुझे माफ कर देना। अरे हाँ, वह देखो मेरे मालिक का किला। वह ऊँची पहाड़ी पर दिख रहा है। इधर कई मीलों के आस-पास एक यही घर है। पास ही है। जल्दी ही पहुँच जाओगे।" लेकिन वह रुका और धीरे से चारों तरफ देख कर गगन के कान के पास मुँह ले जा कर फुसफुसाया—"मेरे मालिक के पास से जितनी जल्दी निकल सको, निकल जाना। उससे मत कहना कि तुम राजकुमार हो। कहना भिखारी हूँ और यह सोने की पेटी भी छिपा लो। मेरे मालिक से कहना कि तुम हमेशा उस के पास रहोगे। उसके बाद मौका पाते ही भाग जाना। भालू के पास और कुछ नहीं है राजकुमार, केवल यही शिक्षा तुम्हें दे सकता है जो तुम्हारी भेड़िया सिंह से रक्षा करेगा।" उसके स्वर में सहानुभूति थी।

"धन्यवाद भालू ! लेकिन मैं झूठ बोलने का तरीका कभी नहीं पकड़ता। जो कुछ होगा, देखा जायेगा। मर जाऊँगा, झूठ नहीं बोलूँगा। ईश्वर मेरी रक्षा करेगा।"

यह सुन कर भालू ठठा कर हँस पड़ा—

"अच्छा तो भेड़िया सिंह अभी तुम्हें बहुत कुछ सिखायेगा।"

फिर कुछ रुक कर बोला—"राजकुमार मुझे देर हो रही है। भेड़ों को घर पहुँचाना है। अब मेरी लाठी मुझे दे दो न।"

"लेकिन वचन दो कि अब इससे किसी का सिर फोड़ने की कोशिश नहीं करोगे।"

भालू ने झेंपते हुए कहा—"नहीं, अब कभी ऐसा नहीं करूँगा। एक बात मुझे भी कहना है। तुम किसी से यह मत कहना कि यह सोने की मुहर तुमने मुझे दी है ! नहीं तो लोग मुझसे छीन लेंगे। अच्छा अब जाता हूँ। विदा !

और "अरी मोरी दइया बिछुआ ने काटा....हो, हो, हो" गाता हुआ वह तेजी से घर की तरफ चल दिया और देखते-देखते आँख से ओझल हो गया।

डाकुओं के चंगुल में

आसमान में बड़ी जोर से बिजली कड़की। गगन भेड़िया सिंह के घर की तरफ जल्दी-जल्दी चलने लगा। अंधेरा घिर आया था। वह घबरा रहा था कि अगर कहीं पानी बरसने लगा तो वह कहाँ शरण लेगा ! मन-ही-मन उसे भालू का ध्यान आ रहा था। "वह तो बे माँ-बाप का अनाथ लड़का है। बे पढ़ा-लिखा है। उसकी गलती क्षमा के योग्य है किन्तु मैं ऐसा नहीं हूँ। मेरे अच्छे पिता ने कितना समझा कर भेजा था कि मैं कभी सुनहरी डोर को न छोड़ूँ लेकिन फिर भी मैंने उनकी शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया और अब इस भयानक जंगल में रात को भटक रहा हूँ। इतने बड़े महान् राजा का पुत्र मैं, शरण के लिए परेशान हूँ ?"

उसने मन-ही-मन अपने पिता को प्रणाम किया और टीले पर चढ़ने लगा। पहुँचते-पहुँचते उसे रात हो गयी लेकिन दूर से घर की रोशनी दिखाई दे रही थी जिसके सहारे वह बढ़ता गया। काफी सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद वह एक बड़े लोहे के फाटक के पास आया। वहाँ कोई दिखाई नहीं दिया। पानी बरसने लगा था। बिजली भी खूब चमक रही थी। उसने फाटक को खटखटाया लेकिन कोई नहीं बोला। वह खूब जोर से चिल्ला कर आवाज लगाने लगा। अन्दर से एक बड़े कुत्ते की आवाज आयी और थोड़ी ही देर में एक भयानक कुत्ता फाटक पर उछल-उछल कर गगन पर कूदने की कोशिश करने लगा। यदि बीच में लोहे का फाटक न होता तो शायद वह उसको फाड़ खाता। वह काफी बड़ा शिकारी कुत्ता था। उसकी आवाज भी बड़ी भारी और डरावनी थी।

कुत्ते की आवाज पर छत की खिड़की खोल कर किसी ने झाँका और मोटी-रूखी आवाज में पूछा—"कौन है इतनी रात को किवाड़ भड़भड़ा कर तंग कर रहा है ?"

बेचारा गगन उसकी आवाज पर ही घबरा गया। उसका मन हुआ कि वहाँ से भाग कर चला जाय लेकिन फिर मजबूरी देख कर बोला—

"मैं राजकुमार गगन हूँ, राजा बर्बरीक का पुत्र। मैं रास्ता भूल गया हूँ।"

"ओहो हो, यह तो अच्छा मजाक है। राजकुमार की जरा शकल तो देखूँ !"

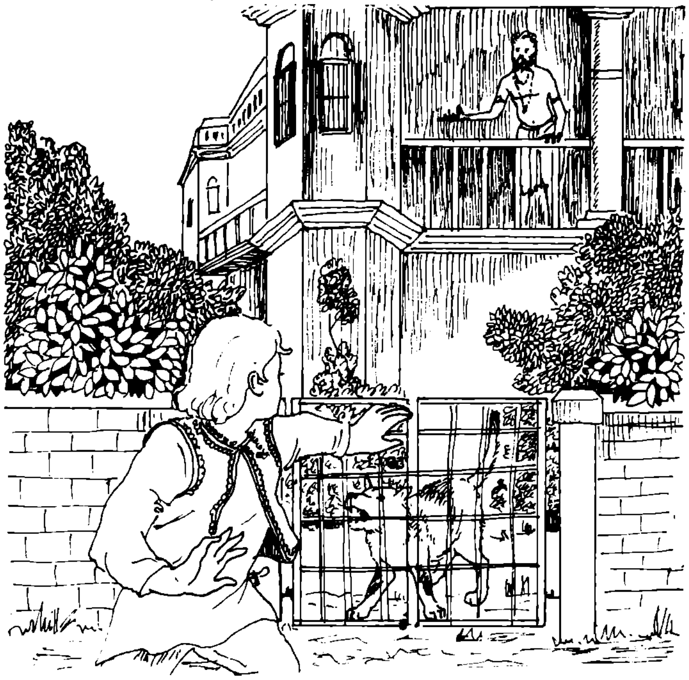

फिर किसी के भारी पैरों की आवाज सीढ़ियों पर सुनायी दी। कोई कुत्ते को चुप कराता हुआ सीढ़ियों से उतर रहा था—"चुप हो जा शेरा ! ....ज्यादा लालची मत बन। देख नहीं रहा है राजकुमार आया है ? क्या तू उसे ही खायेगा ? जा चुपचाप सो जा"

फाटक खोल कर एक लम्बा-चौड़ा भयानक आदमी दिखाई दिया। उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी थी। उसने गगन का हाथ पकड़ कर अन्दर कर लिया और फाटक फिर बन्द कर लिया। हाथ की लालटेन उसके चेहरे पर कर के उसने पहिले तो उसे खूब गौर से देखा फिर उसके बारे में पूछने लगा। गगन ने निडर हो कर सब कुछ अपने बारे में बता दिया। गौर से गगन की बातें सुनने के बाद उसने ताली बजा कर एक बूढ़ी औरत को बुलाया—

"इस लड़के को ले जा कर खाना खिला दे।" दाढ़ी वाले आदमी ने आज्ञा दी।

औरत ने सिर झुका कर गगन को साथ आने के लिए

कहा। बुढ़िया को इतनी रात को उसको खिलाना-पिलाना अखर रहा था। उसके चेहरे पर क्रोध साफ झलक रहा था। बड़बड़ाती हुई वह अंधेरी सीढ़ियों पर चढ़ कर एक छोटे कमरे में आयी जहाँ एक तख्त पड़ा था। उस पर एक मामूली बिस्तर बिछा था। राजकुमार को वहीं रुकने के लिए कह कर वह खाना लेने चली गयी। शेरा भी उनके साथ-साथ ही कमरे में आ गया था। अब वह गगन पर नहीं भोंक रहा था। गगन ने उसे पुचकारा तो वह पास आकर उसका हाथ चाटने लगा। उसने शेरा को थपथपाया, उसकी गर्दन सहलायी तो वह उसकी गोद में ही सिर रख कर पड़ रहा। इतने में बुढ़िया खाना ले आयी और थाली रख कर फिर चली गयी। उसने खाने में से रोटी के टुकड़े शेरा को भी दिये। शेरा ने उससे भी ज्यादा खाया और अपनी चमकीली आँखों से उसकी ओर देखा, मानो उसे धन्यवाद दे रहा हो।

बुढ़िया ने आकर बर्तन उठाते हुए कहा—"लड़के तूने तो इतना खाया है जितना मैं एक सप्ताह में खाती। जा उस बिस्तर पर सो जा।"

गगन उठा और हाथ जोड़ कर घुटने के बल बैठ कर प्रार्थना करने लगा। एकाएक बुढ़िया लौट आयी और झिड़क कर बोली, "लड़के क्या तू हमेशा सोने से पहिले प्रार्थना करता है ?"

गगन ने नम्रता से कहा—"हाँ, हमेशा।"

"किसने सिखाया तुझे ?"

"मेरी माँ ने जो अब नहीं है।"

बुढ़िया ने एक लम्बी ठण्डी साँस भरी जिसका कारण गगन की समझ में कुछ नहीं आया। शायद उसके भी कोई बच्चा रहा होगा या शायद वह भी कभी धार्मिक प्रवृत्ति की रही होगी, प्रार्थना करती होगी और अब बुरी संगत में पड़ कर सब छोड़ दिया होगा। जो कुछ भी हो बुढ़िया उसे छोड़ कर चली गयी। उस कमरे में एक छोटी खिड़की थी। आस-पास से कहीं कोई आवाज नहीं आ रही थी। खिड़की से झाँकने पर भी उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। नीचे किसी पहाड़ी नाले की आवाज आ रही थी। बादल गरज रहे थे और कभी-कभी पेड़ों की चोटियों को छूती हुई बिजली चमक जाती थी। रात बड़ी भयानक थी। इतने में किसी के आने की अवाज सुनायी दी और दाढ़ीवाला आदमी अन्दर आया।

"तुम्हें मालूम है तुम्हारा बाप कहाँ है ?" उसने पूछा।

"नहीं, मैंने आपको बताया न कि मैं आज पूरे दिन घर का रास्ता ढूँढता रहा और जंगल में भटकता रहा और घर नहीं पहुँच सका। लेकिन मुझे विश्वास है कि कल सबेरे आप किसी आदमी के साथ मुझे घर पहुँचवा देंगे। मेरे पिता बहुत प्रसन्न होंगे और आपको बहुत इनाम देंगे।"

दाढ़ी वाले आदमी ने सिर हिलाया—"नहीं, तुम अपने घर से बहुत दूर हो। मुझे शक है कि अब तुम फिर अपने पिता के पास नहीं पहुँच पाओगे। मेरे साथ आओ मैं तुम्हें बहुत अच्छी-अच्छी चीजें दिखाऊँगा जिन्हें देख कर तुम बहुत खुश होगे।"

यही आदमी भेड़िया सिंह था। एक हाथ से गगन का हाथ पकड़ दूसरे हाथ में मशाल लिये वह एक दूसरे कमरे में आया। यहाँ सोने, चाँदी, हीरे, जवाहर और कीमती वस्त्रों के ढेर लगे थे—

"राजकुमार अब मेरे पास ही रहो। यह सब धन-दौलत तुम्हें दे दूँगा। मैं भी एक राजा हूँ। मैं तुम्हें अपना उत्तराधिकारी बनाऊँगा।"

लड़के ने घबरा कर कहा, "नहीं नहीं, ऐसा मैं कभी नहीं करूँगा। मैं अपने पिता को नहीं छोड़ सकता, मुझे मेरे घर पहुँचा दो।"

भेड़िया सिंह ने फिर फुसलाते हुए कहा—"अगर तुम मेरे पास रहोगे तो तुम्हें कभी स्कूल जाने की परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। तुम सबेरे से शाम तक जहाँ चाहे घूम सकते हो, जंगल में शिकार खेलने जाना, घोड़े की सवारी करना, जो चाहे अच्छी-अच्छी चीजें खाना, मेरे ही पास रहो बेटे !

"महाशय आप सचमुच बहुत अच्छे हैं ! लेकिन मैं अपने पिता से अलग नहीं रह सकता। मेरे अच्छे पिता तुम कहाँ हो, अब कभी मैं तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।" गगन अपने पिता को याद कर के सिसकी भरने लगा।

भेड़िया सिंह की त्योरी चढ़ गयी। उसने उसका हाथ कस के पकड़ लिया और बोला, "अच्छा तू मेरे साथ नहीं रहना चाहता तो आ मैं तुझे इसकी सजा दूँगा।"

अब उसका चेहरा सचमुच एक भेड़िया-सा भयानक और खूँखार लग रहा था। चेचक के दाग, काला रंग, लाल आँखें, घनी दाढ़ी ! और कोई लड़का होता तो चीख कर रो पड़ता लेकिन गगन मामूली लड़का नहीं था। वह जानता था उसने गलती की है तो उसका फल भी उसे हिम्मत से भुगतना चाहिए।

भेड़िया सिंह उसे पकड़े जल्दी-जल्दी एक गलियारे से होता हुआ एक हाल में आया। बाहर से ही अन्दर का शोर-गुल साफ सुनायी दे रहा था। कमरे में कई लोग बैठे शराब पी रहे थे। सबके मुख पर दाढ़ियाँ थीं। उनकी आँखें भी लाल-लाल थीं। शराब के नशे में ये लोग चिल्ला-चिल्ला कर गा रहे थे। गगन उन्हें देखते ही भय से सिहर उठा। वे सब जंगली जानवर-से लग रहे थे। लड़के ने मन-ही-मन भगवान् को याद किया किन्तु बाहर से वह गंभीर और निडर था। वह समझ गया कि अब जल्दी ही उसके ऊपर आफत आनेवाली है। डाकुओं और लुटेरों के

बारे में वह सुन तो बहुत कुछ चुका था किन्तु उनके बीच में असहाय और अकेला पड़ने का मौका आज ही आया था। भेड़िया सिंह ने बीच में पड़े एक तख्त पर उसे उसी प्रकार बिठा दिया जैसे वह कोई बेजानदार खिलौना हो।

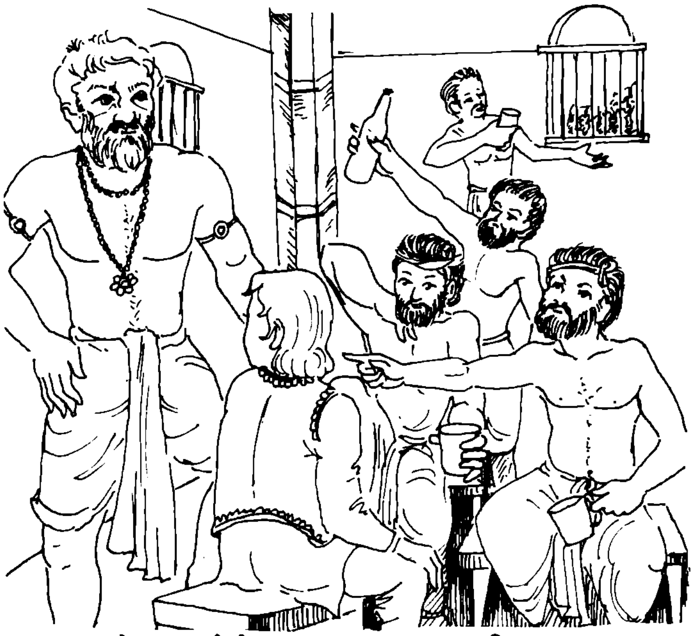

सब ने आश्चर्य से कहा—"सरदार यह किस जानवर को पकड़ लाये ?"

उसने मुस्करा कर कहा—"तुम लोग क्या सोचते हो ? एक राजकुमार है। यह हमारे सबसे बड़े शत्रु राजा बर्बरीक का पुत्र गगन है।"

"राजकुमार ! राजा बर्बरीक का पुत्र ! क्या ही कीमती, मजेदार उपहार है" सब एक साथ खुशी से चिल्ला उठे ! मानो जंगली भेड़ियों ने एक छोटे हिरन के बच्चे को घेर लिया हो और अब उसके मांस से पेट भरना चाहते हों !

"हम अब इसका क्या करेंगे ?" उन्होंने पूछा।

"सबसे पहिले इसका यह सोने का पट्टा लेंगे।" भेड़िया सिंह ने उसकी पेटी खोलते हुए कहा।

गगन ने रोकने की चेष्टा की—"यह मेरे पिता ने मुझे दी है, मैं इसे नहीं दूँगा। भालू ने भी इसे छीनना चाहा था लेकिन मैंने उसे लड़ाई में हरा दिया है। वह इसे नहीं पा सका।"

"भालू एक बहादुर डाकू लड़का है। उसकी बहादुरी के लिए उसे ही यह पेटी दी जायेगी। लेकिन इस समय तो यह मेरी है। समझ में आया लड़के ? साथियो, अब यह बताओ कि इस लड़के का क्या किया जाय ! उसने डाकुओं से पूछा।

"इसके टुकड़े-टुकड़े करके शेरा को खिला दो।" एक ने कहा।

"इसकी आँखें निकाल कर इसे इसके बाप के पास भेज दो।" दूसरे ने कहा।

बालक भय से थर्रा उठा, लेकिन बोला कुछ नहीं।

"यदि इसे धीरे-धीरे भूखा रख कर मारा जाय तो कैसा हो ?" एक ने सलाह दी।

"इसे हम अपनी टोली का सरदार बना सकते हैं, यदि यह हमारे पास ही रहने को राजी हो जाये !" भेड़िया सिंह ने अपनी बात कही।

अब गगन ने दृढ़ता से कहा—"नहीं, कभी नहीं ! मैं तुम लोगों के पास रहने के बजाय मौत पसन्द करूँगा। मैं तुम डाकुओं के पास कभी नहीं रहूँगा।"

"तब इसे मौत ही दी जायेगी। इसके बाप ने मेरे भाई को फाँसी की सजा दी थी क्योंकि उसने एक सैनिक सरदार को मार डाला था।" एक डरावने चेहरेवाले डाकू ने कहा।

भेड़िया सिंह ने किसी की बातों की ओर ध्यान न दे कर कहा—"मैं बताता हूँ इसके साथ क्या करना चाहिए। इसे इस पहाड़ी के एक तहखाने में डाल कर इसके बाप के पास खबर भेज दी जाय कि तेरा प्यारा बेटा यहाँ कैद है। यदि इसे वापस चाहता है तो हमें भारी रकम भेजे नहीं तो हम इसे मार डालेंगे।"

"यह बहुत अच्छा विचार है। डाल दो इसे नर्क में सड़ने के लिए। इसे आँखों के सामने से तो हटाओ। हम इसे देखने से भी घृणा करते हैं।" और भेड़िया सिंह ने उसे फिर हाथ पकड़ कर घसीटना शुरू किया। बेचारा छोटा बालक गगन और कहाँ वह दैत्य-सा भेड़िया सिंह ! वह पहाड़ी से नीचे उतर रहा था। लग रहा था रास्ता खतम ही नहीं होगा। अंधेरी असंख्य सीढ़ियाँ। आखीर में एक लोहे की सीकचों के फाटक के पास आकर वह रुका जिसमें एक भारी लोहे का ताला लगा था। उसने उसे खोल कर गगन को भीतर ढकेल दिया। वह मुँह के बल फर्श पर गिर पड़ा। डाकू ने कहा—"तेरे बाप से मैं घृणा करता हूँ। उसके सिपाही हम लोगों को हमेशा तंग करते रहते हैं। आज तू बड़े भाग्य से हमारे हाथ लगा है। जब तक तू मरता नहीं तब तक यहीं रह। जब तेरा बाप हमें मुहरों की थैली भेज देगा तब तेरा यहाँ से छुटकारा होगा।"

उसने फाटक बन्द कर दिया। बन्द होने की आवाज भी बड़ी भारी थी। वह अंधेरी भयानक रात, उस सड़े सीलन भरे तहखाने में गगन फूट-फूट कर रो पड़ा। उसका धैर्य खो गया था। काश उसने अपने पिता की आज्ञा के अनुसार वह सुनहरी डोर न छोड़ी होती तो वह कब का घूम-घाम कर अपने पिता की गोद में पहुँच जाता। और तब उसे इन भयानक जानवरों के हाथ इस प्रकार मौत का सामना न करना पड़ता। वह मन-ही-मन अपनी लापरवाही और पिता

के आदेशों की अवज्ञा करने के कारण बहुत दुःखी हो रहा था। उसका हृदय दुःख से फटा जा रहा था। इसी समय उसे कहीं से फुसफुसाने की आवाज आयी। आवाज ऊपर एक खिड़की की तरफ से आ रही थी।

"गगन !"

"कौन है ? कौन मुझे बुला रहा है ?" गगन ने चौंक कर पूछा।

"चुप रहो। धीरे बोलो। मैं भालू बोल रहा हूँ ! यहाँ एक छोटी खिड़की है। इसे मैंने बाहर से खोल दिया है। किसी तरह इस पर चढ़ जाओ और अपना जीवन बचाने के लिए इस जेलखाने से भाग जाओ।"

इसके बाद आवाज बन्द हो गयी। वह किसी प्रकार दीवार के ऊबड़-खाबड़ पत्थरों पर पैर रख कर खिड़की तक पहुँच गया। वहाँ से आसमान साफ नजर आ रहा था। अब पानी बन्द हो गया था, तारे निकल आये थे। बाहर अंधेरा था। वह ईश्वर का नाम ले कर खिड़की से कूद पड़ा। किसी ने उसे हाथों में झेल लिया। यह भालू था। जमीन पर पैर रखते ही उसने भालू को बड़ी कृतज्ञता से धन्यवाद दिया।

भालू ने कहा—"यह लो अपनी सोने की पेटी, मेरे मालिक ने यह मुझे दी है लेकिन यह तुम्हारी है। तुमने मुझे सत्य का मार्ग दिखाया है। मैं अब कभी कोई गलत काम नहीं करूँगा। अपने बचाव के लिए जितनी जल्दी भाग सको, यहाँ से भाग जाओ, सबेरे सूरज निकलने से पूर्व भेड़िया सिंह जेलखाना नहीं खोलेगा तब तक तुम इस प्रदेश से दूर चले जाओ, एक पहाड़ी मिलेगी उसे पार कर के तुम बायें तरफ चले जाना। जाओ, शीघ्र भागो, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे !

गगन ने भालू से पेटी ले ली। "तुम कितने अच्छे हो भालू ! मैं जिन्दगी भर तुम्हें नहीं भूल सकता।"

छोटे से गगन को नहीं सूझ रहा था कि वह भालू को कैसे धन्यवाद दे। उसने उसे मौत से बचाया है। उसकी सोने की पेटी उसे वापस कर दी है। लेकिन सोचने-समझने का समय नहीं था। वह तुरन्त वहाँ से भाग चला, एक बार पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा। जितना तेज वह भाग सकता था, वह भागा। उसकी थकावट सब गायब थी। कभी उसे लगता कि उसके पीछे डाकू पकड़ने चले आ रहे हैं। वह और तेजी से भागता एक हिरन की तरह जिसके पीछे शिकारी कुत्ते दौड़ रहे हों। वह भाग रहा था अपनी जान अपनी हथेली पर लिये। पहाड़ी पार करने पर उसे हरी घास का मैदान मिला। अब उसकी हिम्मत छूट गयी थी। अब एक कदम भी वह आगे नहीं बढ़ सकता था। वह वहीं गिर पड़ा। शायद बेहोश हो गया। फिर उसे होश नहीं रहा कि वह कहाँ है, कैसी स्थिति में है।

सुनहरी डोर

शायद वह स्वप्न देख रहा था। कोई बहुत मीठे स्वर में गा रहा था। जैसे माँ लोरी सुनाती है !

सो जा प्यारे मुन्ने सोजा
सो जा राजकुमार !
इस जंगल में पड़ा अकेला
अंधियारी ने तुझको घेरा,
उस पर दुःख की मार।
सो जा राजकुमार !
लेकिन तू तो बड़ा बहादुर,
पिता मिलन को है तू आतुर,
कर कष्टों को पार।
सो जा राजकुमार !
रात अंधेरी खतम हो गयी,
पूर्व दिशा उजियार हो गयी,
चहक उठा संसार।
उठ जा राजकुमार।
अब तू उठ जा राह पकड़ ले,
बिछड़े भाई बहिन से मिल ले।
मिलेगा तुझे पिता का प्यार।
उठ जा राजकुमार !

गगन ने आँखे खोलीं। जैसे जादू भरे प्रदेश में आ गया हो। आकाश में सूरज की लाली छा रही थी। वह हरी-हरी घास पर ऐसे सो रहा था मानो महल के मखमली बिस्तरों पर पड़ा हो। चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल खिले थे। चिड़ियाँ चहक रही थीं। पास के पेड़ की एक डाल पर श्यामा

चिड़िया गा रही थी। उसे स्वप्न का गाना याद आया ! क्या यह श्यामा चिड़िया गा रही थी ! कितना मीठा गाना था—

"मिलेगा तुझे पिता का प्यार !"

क्या वह सचमुच अपने पिता से फिर मिल सकेगा !

प्यारे पिता उसको क्षमा कर देंगे ? उसने आँखें फिर बन्द कर लीं। आँखों से आँसू बह चले। हाथ हिलाने-डुलाने की शक्ति जैसे उसमें नहीं रह गयी थी। फिर वही मीठा स्वर उसके कानों में पड़ा—

"दु:खी अब मत हो राजकुमार !
दिन का भूला जो घर आता,
क्षमा वही ईश्वर से पाता,
सुखी होगा तेरा संसार।
राह पर बढ़ चल राजकुमार !"

राजकुमार गगन अब और नहीं लेट सका। उछल कर खड़ा हो गया। कौन है जो मुझे रास्ता दिखा रहा है ? कौन कह रहा है कि मुझे मेरे पिता मिलेंगे ? मेरा संसार फिर सुखी होगा ! मेरे कष्ट दूर हो गये हैं ! वह जैसे अभी भी स्वप्न देख रहा हो। उसके सामने श्वेत वस्त्रों में एक सुन्दर मुस्कराती स्त्री खड़ी थी। वह उसके माँ के चित्र से, जो उसके महल में टँगी थी, मिल रही थी। तो क्या उसकी माँ ही इसके कष्टों को दूर करने आयी है या यह कोई आसमान की परी है जो आकाश से सूरज की किरणों पर चढ़ कर पृथ्वी पर उतरी है ? गगन आश्चर्य से बिना पलक झपकाये, बिना हिले-डुले, उसे मुग्ध-सा देख रहा था।

स्त्री ने मुस्करा कर कहा—"आश्चर्य न करो गगन ! मैं तुम्हें जानती हूँ। मैंने वह सब भी जान लिया है जो कल दिन भर और रात भर तुम्हारे संग घट चुका है। तुम्हारे पिता ने एक अच्छे उद्देश्य से शिक्षा देने के लिए तुम्हें यहाँ भ्रमण के लिए भेजा था। सुनहरी डोर तुम्हारी रक्षा तथा मार्ग प्रदर्शन के लिए दी थी। लेकिन, तुमने तितलियों के पकड़ने में, खरगोशों के पीछे दौड़ने में उसको छोड दिया और एक बार नहीं, ऐसा तुमने कई बार किया। तुमने अपने मन का किया और पिता के उपदेशों की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। यह एक परीक्षा थी जिसमें तुम्हारे अन्य भाई सफल रहे और हँसते-खेलते सुनहरी डोर को पकड़े फिर अपने पिता के पास वापस पहुँच गये, जब कि तुम्हें कल भारी खतरों का सामना करना पड़ा ! है न यही बात ?"

गगन अपना मुख अपनी हथेलियों में छिपा कर सिसक पड़ा।

"हाँ मैंने गलती की है। क्या पिता मुझे क्षमा कर देंगे ? अब मैं अपनी गलती समझ गया हूँ।"

"हाँ उन्होंने तुम्हें क्षमा कर दिया है। उन्हीं की इच्छा से मैं तुम्हारे पास आयी हूँ। तुमने कल बहुत अच्छी तरह खतरों का सामना किया। तुम अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। डाकुओं के आगे तुम डरे नहीं। तुमने झूठ भी नहीं बोला। इस परीक्षा में तुम बहुत अच्छी तरह सफल हुए। तुमने सत्य का पालन किया। मुझे विश्वास है, अब तुम भविष्य में भी सदैव अपने कर्त्तव्यों का पालन करोगे और अपनी जिम्मेदारी को निभाओगे।"

"हाँ मैं अब सही और गलत को पहिचान गया हूँ। मैं अपनी शेष यात्रा भी जिम्मेदारी से पूरी करूँगा, लेकिन मुझे अब कौन रास्ता दिखायेगा ? मेरी सुनहरी डोर तो ......!"

स्त्री मीठी हँसी में खिलखिला पड़ी—"वह देखो ऊपर क्या है ?"

"अरे यह तो मेरी डोर है !" एक पेड़ से लटकती सुनहरी डोर को गगन ने उछल कर पकड़ लिया और खुशी से उसको चूम लिया।

स्त्री ने कहा—"अब इसके सहारे तुम अपने शेष यात्रा आसानी से पूरी कर लोगे। लेकिन इसे छोड़ने की फिर गलती न करना। और इसी के सहारे तुम शाम तक अपने पिता के पास पहुँच सकते हो। अब की यदि तुमने गलती की तो इसी जंगल में भटक जाओगे या फिर डाकुओं के चक्कर में पड़ कर मारे जाओगे।"

"सच ? मैं आज ही अपने प्यारे पिता से मिल सकता हूँ ?"

"हाँ आज ही शाम को पहुँच सकते हो बशर्ते यह डोर जिधर तुमको ले जाय उधर ही जाओ, और जिधर जाने से रोके उधर न जाओ। इसी में तुम्हारी भलाई है और यह लो, तुम भूखे हो न ?" यह कह स्त्री ने स्वादिष्ट मिठाइयों का एक पैकट गगन के हाथ में दे दिया।

गगन उसे ले कर बहुत खुश हुआ। उसकी मीठी सुगंध से उसके मुँह में पानी आ गया। उसने चाहा कि उस स्त्री को धन्यवाद दे लेकिन सिर उठाते ही उसने देखा वह स्त्री गायब

थी। उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। उसे दुःख हुआ। उसे फिर मीठी आवाज सुनायी दी. "विदा मेरे बच्चे, अब तुम अपने सफर पर चल दो जिससे रात होने के पूर्व घर पहुँच जाओ।" स्त्री एक हरी-भरी झुरमुट की ओट में जा रही थी। वह मन-ही-मन धीरे से फुसफुसा उठा, "मेरी प्यारी माँ, बिलकुल मेरी माँ जैसी।"

सुनहरी डोर को मजबूती से पकड़ कर वह छोटा मुसाफिर फिर अपनी राह पर चल पड़ा। वह फूलों के मैदानों से गुजरा, वह बड़े-बड़े लम्बे आसमान को छूते हुए वृक्षों के नीचे से निकला। उसने खुले मैदानों को पार किया जहाँ चाँदी-सी मन-भावनी धूप बिखरी थी। उसका मन प्रसन्नता से भरा था। उसके पिता सब जान गये हैं ! उन्हें उसका कितना ध्यान है ! अपने गगन को उन्होंने क्षमा कर दिया है ! सुनहरी डोर फिर उसके हाथ में है। उसने अपनी मुट्ठी कस ली, कहीं डोर फिसल कर फिर न छूट जाय। आज संध्या को वह अपने प्यारे घर पहुँच जायेगा। अपने महान् पिता, देश के राजा से फिर मिलेगा। वह दौड़ कर उनसे लिपट जायेगा। वह उसे उठा कर प्यार करेंगे। सब भाई-बहिन उससे मिल कर कितने प्रसन्न होंगे। वह सबको अपनी यात्रा की कहानी सुनायेगा। सब सुन कर कितना आश्चर्य करेंगे !

वह उछल-उछल कर चल रहा था। चिड़ियाँ चहक-चहक कर उसका स्वागत कर रही थीं। एक कौआ उसके सिर के पास से काँव-काँव, करके उड़ गया जैसे कह रहा हो—"सावधान, सावधान।"

"धन्यवाद कौआ काका, अब मैं सावधान ही हूँ !"

छोटी-छोटी फुदकती चिड़ियों को कभी-कभी वह मिठाई के टुकड़े दे देता। चलते-चलते वह एक ऐसे स्थान पर आया जहाँ हरी घास का मैदान था, कोई पेड़ नहीं था; वहीं से एक रास्ता सीधे चला गया था। सुनहरी डोर भी उसी ओर खिंची जा रही थी। वहाँ उसने एक आश्चर्यजनक वस्तु देखी। एक तोते के बराबर चिड़िया सोने के पंखों और चाँदी की कलँगी वाली, उसके पास ही फुदक-फुदक कर चल रही थी। थोड़ी दूर पर घास के बने मुलायम घोंसले में उसके सोने के रंग के तीन अंडे रखे थे। चिड़िया उससे नहीं डरी बल्कि मुड़-मुड़ कर उसकी ओर अपनी चमकीली आँखों से देखती जाती थी, जैसे कह रही हो, "मुझे विश्वास है तुम मेरा कुछ नुकसान नहीं करोगे। मैं तुमसे नहीं डरती हूँ।"

गगन ने सोचा, "क्यों न एक सुनहरा अंडा उठा कर जेब में रख लूँ। सब को दिखाऊँगा ! किसी ने ऐसा अंडा न देखा होगा।"

रास्ते से जरा हट कर वह घोंसला था, उसने हाथ बढ़ा कर एक उठाना चाहा किन्तु उसका हाथ वहाँ तक नहीं पहुँचा और वह डोर भी उस तरफ नहीं जा रही थी, जैसे वह एक कड़ा तार हो। उसने सोचा : "अंडा ज्यादा दूर नहीं है। वह डोर को यदि छोड़ भी दे तो दौड़ कर अंडा ले कर फिर उछल कर उसे पकड़ लेगा। एक मिनिट की ही बात तो है। इस चमकती धूप में यह डोर अब नहीं खो सकती।"

और वह धीरे से डोर छोड़ कर अंडा उठाने के लिए लपका लेकिन जल्दीबाजी में वह हड़बड़ा कर घोंसले पर गिर पड़ा। अंडे फूट कर टुकड़े-टुकड़े हो गये। बेचारी चिड़िया चीख पड़ी और एक तरफ उड़ कर चली गयी। मैदान की चिड़ियाँ भी जो चहक-चहक कर खुश हो रही थीं. अब चीखने लगीं। कहीं से एक उल्लू भी उसके सामने आ कर हू-हू करके उड़ गया। उसका दिल धक्-धक् करने लगा। उसने घबरा कर अपनी डोर को पकड़ने के लिए आँख उठा कर हाथ बढ़ाया लेकिन वह वहाँ नहीं थी। वह काफी ऊपर आसमान में लटक रही थी। वह उछला, और उछला। जितना ऊपर वह उछल सकता था उछला, लेकिन सब व्यर्थ। डोर आसमान में मकड़ी के जाले की तरह झूल रही थी जो उसकी पहुँच से बहुत दूर थी।

पश्चात्ताप

गगन का चेहरा भय से पीला पड़ गया। अब न उसे डोर दिखायी दे रही थी और न आगे का रास्ता ही। उसकी आँखों के सामने अंधेरा-सा छा गया। किस तरफ वह बढ़े ? कहाँ है उसका सही रास्ता ? उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था। वहीं घास पर वह निराश हो कर बैठ गया। उसकी आँखों से आँसू निकल कर गालों पर बह चले, कितना मूर्ख है वह ! सुनहरे अंडों के लिए उसने फिर अपनी डोर खो दी। क्या अब वह फिर भटक जायेगा ? क्या फिर कल की तरह ही उसे मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा ? फिर उसे डाकू घेर लेंगे। वह अब घर नहीं पहुँच पायेगा ? ठंडी हवा

में भी उसको पसीना आ गया। उसे याद आया—"यदि तुमने फिर गलती की और डोर की आज्ञा नहीं मानी तो तुम फिर खतरे में पड़ जाओगे या डाकू तुम्हें मार देंगे।"

"उफ, मैं क्या करूँ ? थोड़े से लालच में आकर मैंने कितनी गलती की। हे भगवान् मुझे क्षमा कर दो !"

वह सचमुच पछता रहा था। कोई उसे देखता तो दया आ जाती। इतने में वही कौआ जो थोड़ी देर पहिले उसे सावधान कर गया था, उड़ कर आया और काँव-काँव, करके एक तरफ उड़ गया। उसे लगा जैसे इस बार उसने कहा—"खोजो, खोजो"।

वह उठ खड़ा हुआ। उसने मन-ही-मन कहा—"मेरे प्यारे पिता अब की मैंने फिर गलती की है। अब कभी नहीं करूँगा। मेरी डोर मुझे दे दो।"

वह अपने चारों ओर डोर को खोजने लगा। उसने देखा ऊपर से डोर धीरे-धीरे नीचे उतर रही है। उसने खुशी से उछल कर उसे पकड़ लिया। वह प्रसन्नता से भर कर रो पड़ा। मन-ही-मन उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और निश्चय किया—"अब कभी भी मैं ऐसी गलती नहीं करूँगा। मैंने सुनहरी चिड़िया के अंडों को फोड़ा, लालच में पड़ कर डोर को छोड़ा, पिता की आज्ञा को टाला, छिः मैंने कितनी गलतियाँ कीं !" मन-ही-मन वह खूब पछताया। थोड़ा रुक कर वह आगे बढ़ा अब फिर रास्ता साफ नजर आ रहा था। कौआ ने फिर आवाज लगायी—"सावधान, सावधान !"

"धन्यवाद कौआ काका, मैं अब बिलकुल सावधान हूँ ! एक मिठाई का टुकड़ा उसने उसकी ओर उछाल दिया और फिर जल्दी-जल्दी चलने लगा जिससे नष्ट हुए समय को वह पूरा कर सके। डोर बिलकुल अनजानी घाटी की ओर उसे लिये जा रही थी। ऊपर ऊँची पहाड़ी थी और नीचे हर-हर, कल-कल करती गहरी नदी बह रही थी। घनी झाड़ियों में आगे का रास्ता बिलकुल दिखायी नहीं पड़ता था। केवल वह सुनहरी डोर ही आग की लौ की तरह चमक रही थी। और कभी-कभी वह भी अंधेरे में नहीं दिखायी देती थी। हाँ, हाथ की पकड़ में वह उसे जरूर महसूस कर रहा था। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहाँ जा रहा था । चट्टानों पर सँभल कर चलना पड़ रहा था। जरा-सी असावधानी से वह नीचे बहती नदी में जा सकता था लेकिन डोर उसे रास्ता दिखा रही थी। गलत कदम पर वह कड़ी हो कर उसे चेतावनी देती और सही रास्ते पर ढीली हो जाती। कहीं तो बस इतनी ही चौड़ी चट्टान मिलती जहाँ वह मुश्किल से अपने छोटे पैर जमा पाता। एकाएक वह रुक गया। सामने चट्टान की एक ऊँची दीवार खड़ी थी। उसने सोचा, "अब मैं आगे नहीं बढ़ सकता। इस ऊँची दीवार को मैं किसी तरह भी पार नहीं कर सकूँगा।"

लेकिन जैसे ही उसने चट्टान को छुआ उसने महसूस किया कि दीवार पर सीढ़ियाँ-सी बनी हैं। उसने एक सीढ़ी पर पैर रखा ; डोर भी उसी ओर बढ़ चली। एक के बाद एक सीढ़ी पर पैर रखता हुआ वह चट्टान की चोटी पर पहुँच गया वहाँ से फिर सीढ़ियाँ नीचे की ओर उतर रही थीं। धीरे-धीरे वह दीवार के उस पार नीचे उतर आया जहाँ पानी की लहरें शोर करती हुई उछल रही थीं। चट्टानों से टकरा कर लहरों का शोर चौगुना हो जाता था।

"अब तो मैं सचमुच ही डूब जाऊँगा। यहाँ से आगे बढ़ना सम्भव नहीं दिखता, लेकिन जो भी हो मैं अब अपनी डोर नहीं छोड़ूँगा ; यह जहाँ भी ले जाये मैं जाऊँगा।" वह पानी के बिलकुल पास आ गया था। लहरों की बूँदें उसके गाल और गर्दन को छू रही थीं अब पानी उसकी गर्दन तक था और वह डूबने ही वाला था कि उसने देखा कि एक पत्थर की कतार-सी बनी थी जो पुलिया का काम कर रही थी। सँभल-सँभल कर उन पत्थरों पर पैर रखता हुआ वह पानी के ऊपर चल पड़ा। जहाँ-जहाँ घुटने तक पानी था वहाँ तो आसानी से पार कर गया और जहाँ पानी गहरा था वहाँ उसे पैर रखने के लिए पत्थर मिलते गये। उसका भय अब दूर हो गया था। सुनहरी डोर जब तक उसके हाथ में है, बड़ा-से-बड़ा खतरा भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, इसका उसे पूरा विश्वास हो गया था। अब वह चलते-चलते बहुत थक गया था। सूरज भी आसमान में काफी ऊपर चढ़ आया था। उसे भूख भी लग रही थी। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह कहीं किनारे पर बैठ कर उस स्त्री की दी हुई मिठाई निकाल कर खा ले लेकिन आश्चर्य, डोर उसे इसकी अनुमति ही नहीं दे रही थी। वह काफी कड़ी थी और स्पष्ट था कि वह नहीं चाहती कि वह रुके। जब भी वह थक कर कहीं बैठना चाहता वह कड़ी हो कर उठने का इशारा करती और वह उसे पकड़ कर उसी प्रकार उठ जाता जैसे वह डोर न हो कर कोई लाठी हो जो उसे सहारा दे रही है। उसे पकड़ कर उसकी थकान दूर हो जाती।

भयानक घाटी और शेर

अब गगन की सबसे कठिन परीक्षा सामने थी। देखना था कि अब उस डोर पर उसका कितना विश्वास टिकता है। वह टेढ़े-मेढ़े घुमावदार रास्ते पर चल रहा था। पहाड़ी पार करने पर जंगल के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष दूर छूट गये थे। अब बिना पत्तियों की छोटी-छोटी झाड़ियाँ जगह-जगह खड़ी थीं। पानी के बीच-बीच में छोटे-छोटे कंकड़ और पत्थरों का बिछौना-सा बिछा था जो लहरों के थपेड़ों से उछल-उछल कर इधर-उधर हो जाते थे। पानी में हिलने-डुलने से पत्थर चिकने तथा गोल-गोल हो गये थे। चट्टानों से बीच-बीच में झरने फूट पड़े थे। काली चट्टानों से सफेद दूध-की सी धाराएँ बड़ी सुहावनी लग रही थीं। ऊँचाई से गिरने पर पानी की नन्हीं-नन्हीं फुहारें ऊपर तक उछलती थीं। सूरज की किरणें पड़ने से जल की बूँदें बिलकुल मोती-सी चमक रही थीं। पानी के गिरने की आवाज के अतिरिक्त वहाँ सन्नाटा था। किसी भी प्रकार की आवाज नहीं आ रही थी, केवल कभी-कभी कौआ ही चौकीदार की तरह काँव-काँव करके सावधान रहने की आवाज लगा जाता था। ऊपर दूर आकाश पर चील भी 'चिल्ल' कि तीखी आवाज लगा जाती थी।

एकाएक गगन इतनी ज़ोर से चौंका कि सँभलता नहीं तो पानी में ही छपाक से गिर जाता। बादल की गरज से भी तेज कहीं बिलकुल पास से ही शेर गरज रहा था। आवाज उधर से ही आ रही थी जिधर वह सुनहरी डोर उसे लिये जा रही थी। अब उसे आगे बढ़ने का साहस नहीं हो रहा था, किन्तु डोर कड़ी हो कर उसी तरफ खींच रही थी। उसने रुकने की चेष्टा की लेकिन डोर ने उसे ऊपर पहाड़ी पर ही खींच कर पहुँचा दिया। यद्यपि वह भयभीत था किन्तु फिर भी ऊपर की ओर चढ़ता गया। एक जगह पर मोड़ था जहाँ पहुँचते ही वह भयानक गरज फिर सुनायी दी और उसे एक गुफा से झाँकते हुए खतरनाक शेर का मुँह दिखाई दिया। जिस रास्ते पर वह चल रहा था उसी पर वह गुफा थी। मुश्किल से एक हाथ की दूरी शेर और रास्ते के बीच थी। रास्ता भी सँकरा था। एक तरफ गुफा और शेर; दूसरी तरफ गहरी खाई जिसमें गिर कर मनुष्य की हड्डी-पसली कुछ न बचती। उसके दिमाग में एक बार तो आया कि वह डोर को छोड़ दे और पीछे भाग जाय लेकिन उसके अन्दर से आवाज आयी—"बहादुर बनो गगन ! डरो मत।" उसका विचार बदल गया। वह अभी कुछ देर पहिले अनुभव कर चुका था कि डोर छोड़ते ही विपत्ति घेर लेती है और डोर उसे संकट में कभी नहीं डाल सकती बल्कि सफाई से बचा ले जाती है। पिता ने भी यह डोर उसकी सुरक्षा के लिए ही उसे पकड़ायी थी, उस स्त्री ने भी उसे आत्मा और ईश्वर पर भरोसा करने को कहा था। उसको पालनेवाली दाई ने भी उसे सिखाया था—

"सत्य मार्ग को पकड़ चलोगे
तो तुम होगे सागर पार,
गलत कार्य करनेवाले ही
जीवन में खाते हैं हार !"

ये सब बातें गगन के दिमाग में एक क्षण में ही कौंध गयीं और उसने निश्चय किया कि वह जरूर आगे बढ़ेगा चाहे शेर के मुँह में ही क्यों न उसे जाना पड़े। यह निश्चय करते ही उसने सामने देखा। प्रसन्नता और खुशी से उसकी आँखें चमक उठीं। एक नन्हा सफेद खरगोश अपने लम्बे कान उठाये गुफा के पास ही खड़ा गगन की ओर अपनी गोल-गोल, लाल, चमकीली आँखों से देख रहा था। उस समय उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया कि वह शेर से क्यों नहीं डर रहा है। लेकिन उसने मन में सोचा "जब यह नन्हा जानवर इससे नहीं डर रहा है तो मैं क्यों डरूँ" और वह आगे बढ़ चला। उसका छोटा-सा दिल धक्-धक् कर रहा था। डोर उसे पास और पास, शेर के बिलकुल पास, खींचे लिये जा रही थी। अब एक ही कदम बाकी था कि वह या तो शेर के मुख में या नीचे गहरी अंधेरी खाई में। वह बढ़ता ही गया। अब तो शेर की साँस का स्पर्श भी वह अपने बदन पर अनुभव कर रहा था कि अचानक एक

भयानक आवाज के साथ वह खतरनाक जानवर उस पर झपटा। उसने गगन की तरफ अपना नुकीला पंजा बढ़ाया कि वह उस छोटे से बच्चे को दबोच कर टुकड़े-टुकड़े कर दे। बेचारे गगन ने डर से आँखें बन्द कर लीं और भगवान् के भरोसे अपने को बिलकुल छोड़ दिया, एकाएक शेर पीछे खिंच गया। एक मोटी लोहे की जंजीर से बँधे होने के कारण वह आगे नहीं बढ़ सका। गगन एक उछाल में ही खतरे से बाहर पहुँच गया।

आकाश की ओर देख कर उसने हाथ जोड लिये। उसकी आँखें आँसू से छलछला उठीं और वह पहाड़ी के नीचे की ओर तेजी से उतर चला। पीछे शेर की गरज बराबर सुनायी दे रही थी। पहाड़ी के नीचे ही हरा, साफ मैदान था जहाँ स्थान-स्थान पर फूल से भरे पौधे लहलहा रहे थे। उसका मन कह रहा था कि वह सबसे बड़ी परीक्षा में सफल हुआ और अब आगे मैदान साफ है। हाँ, वह थकावट से हाँफ रहा था। उसका दिल भी धक्-धक् कर रहा था।

अब उसकी समझ में अच्छी तरह आ गया था कि शेर के जंजीर में बँधे होने के कारण ही खरगोश उसके पास बैठ कर भी खतरे से बाहर था।

एक अखरोट के पेड़ के नीचे जैसे ही वह पहुँचा कि सुनहरी डोर फैल कर ढीली हो गयी और जमीन पर गिर पड़ी। गगन इस संकेत को समझ गया और वह भी वहीं विश्राम करने के लिए घास पर बैठ गया। अब उसने अपना मिठाई का डिब्बा खोल कर स्वादिष्ट मिठाइयाँ खायीं और पास के झरने से पानी पिया। पेड़ के चारों ओर अखरोट बिखरे थे। उन्हें बीन-बीन कर उसने मन भर खाया। अब उसका दिमाग हलका था। कहीं कोई खतरा नहीं दिखाई दे रहा था। वह आराम से उस मखमली घास पर पैर-हाथ फैला कर लेट गया।

वृक्ष की हरी पत्तियों से भरी शाखाएँ उसके ऊपर छाया कर रही थीं। नीले आकाश पर कहीं-कहीं सफेद रुई के-से बादलों के टुकड़े दिखाई दे रहे थे। सफेद संगमरमर की चट्टानें उठी हों। वृक्ष की टहनियों पर घने बालों वाली गिलहरियाँ पूँछ उठाये एक टहनी से दूसरी टहनी पर कूद-कूद कर खेल रही थीं। कुछ नीचे उतर कर अखरोट कुतर रहीं थीं। कुछ ऊपर से खा-खा कर नीचे गिरा रही थीं। गगन को हलकी नींद-सी आ गयी। भयानक खतरे की जगहों से गुजर कर आने के कारण उसका शरीर ही नहीं, दिमाग और मन भी थक गया था। उसे अभी काफी रास्ता चलना है और रात के पहिले ही घर भी पहुँचना है यह बात वह नहीं भूला था।

ऊपर वृक्ष पर एक छोटी गिलहरी 'किट-किट' कर रही थी। कुछ सोते हुए कुछ जागते हुए गगन को लगा कि वह गा रही है—

''मैं नन्हीं गिलहरी वृक्ष की
डाल-डाल पर जाऊँ !
मीठे-मीठे फल तोड़ूँ
कुछ खाऊँ और गिराऊँ !
वर्षा में पानी से खेलूँ,
पंजे से अपना मुख धो लूँ,
खुली धूप में दौड़ूँ कूदूँ
आँधी से घबराऊँ।
चिड़ियाँ मेरी सखी सहेली,
चूहा मेरा है हमजोली;
काला कौआ भला न लगता
उसे देख चिल्लाऊँ।
प्यारे लगते छोटे बच्चे,
जब हँसते तब लगते अच्छे;
उन्हें रिझाने को मैं अपना
किट-किट गीत सुनाऊँ।''

उसने अंगड़ाई ली और आँखें खोल दीं। मुस्करा कर उसने गिलहरी की तरफ देखा। उसे जगा हुआ देख कर गिलहरी 'किट-किट' करना छोड़ कर वृक्ष के ऊपर की डाल पर कूद कर बैठ गयी, मानो गगन को खेलने का निमंत्रण दे रही हो।

गगन ने कहा—''छोटी किट्टी सचमुच मेरा भी तुम्हारे साथ खेलने को मन कर रहा है। जी चाहता है तुम्हारी तरह मैं भी डाल-डाल पर चढ़ूँ और कूदूँ, लेकिन अभी मुझे बहुत काम करना है। अब मैं पहिले जैसा खिलाड़ी और लापरवाह लड़का नहीं हूँ। कब खेलना चाहिए, कब काम करना चाहिए, यह मैं अच्छी तरह जान गया हूँ।''

यह कह कर वह उछल कर खड़ा हो गया। उसकी डोर भी अब कड़ी पड़ गयी थी। उसे कस कर पकड़े हुए वह अपने आगे के सफर पर चल पड़ा। कुछ देर आराम करने के बाद उसकी थकावट और आलस्य दूर हो गया था। उसे अन्दर से लग रहा था कि आगे का रास्ता खतरनाक नहीं है। अभी थोड़ी दूर भी नहीं गया था कि उसने सामने बहती नदी में कुछ तैरता हुआ-सा देखा। साथ ही किसी की चीख सुनायी दी। लगा, जैसे कोई मदद के लिए पुकार रहा हो। वह समझ गया कि कोई डूब रहा है और मदद चाहता है। एक बार उसका मन हुआ कि डोर छोड़ कर वह नदी की तरफ भाग कर पानी में कूद पड़े, लेकिन डोर स्वयं तन कर उसे नदी की ओर खींच ले चली। वह भी जितनी जल्दी दौड़ सकता था, दौड़ चला। नदी के किनारे पहुँच कर उसने पानी में किसी आदमी का सिर देखा जो कभी ऊपर आता

था कभी पानी के अन्दर डूब जाता था। कभी पानी की सतह पर आ कर तैरने की कोशिश में हाथ पैर मारता, लेकिन फिर शीघ्र ही थक कर डूबने लगता और बिलकुल पानी के अन्दर चला जाता, तब केवल उसके हाथ की उँगलियाँ ही पानी के बाहर दिखतीं। देखते-देखते वह पूरा पानी में चला गया और आँखों से ओझल हो गया।

भालू की रक्षा और भेड़िया सिंह से भेंट

डोर को मजबूती से पकड़ कर गगन नदी में कूद पड़ा और डूबनेवाले को ढूँढ़ने लगा। वह काफी गहरे तक चला गया। कभी डुबकी लगाता, कभी फिर बाहर आ जाता। आखिर उसके हाथ में डूबनेवाले के बालों का गुच्छा आ गया जिसे पकड़ कर वह सतह पर आया और उसे पकड़े-पकड़े ही किनारे की तरफ तैरने लगा। किनारे पर ला कर उसने डूबने वाले को लिटा दिया। अभी तक उसका मुँह ठीक से नहीं देखा था, लेकिन जब उसे लिटा कर उसका मुँह देखा तब चीख पड़ा—"अरे यह तो भालू है !"

लड़के ने भी आँखें खोल कर बड़ी मुश्किल से आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—"कौन....ग...ग...न तुम.... राजकुमार ?"

बेचारे भालू के नाक, कान, आँख, मुँह सब में पानी भर गया था। वह हाँफ रहा था और साँस लेने में भी कठिनाई अनुभव कर रहा था। गगन ने उसे उलटा लिटा कर पीठ को दबाया। पेट का पानी निकल गया। उसके कान, नाक साफ किये। मुख और बालों को पोछ कर पानी सुखाया। भालू को आराम मिला।

"भालू, आज तुम्हें बचा कर मुझे कितनी खुशी हो रही है, यह मैं नहीं बता सकता। ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद है कि मैं ठीक समय पर पहुँच गया। नहीं तो पता नहीं क्या होता ?" गगन ने कहा।

भालू को थोड़ी देर लेटने के बाद शक्ति आ गयी। धीरे-धीरे उसने अपना सारा हाल बताया कि गगन के कैद से छूट कर भागने के बाद सबेरे अपने कैदी को न पा कर भेड़िया सिंह ने भालू को ही पकड़ा। वह समझ गया कि यह काम उसी का है। रात को जब भालू गगन से बातें कर रहा था तभी बुढ़िया ऊपर की खिड़की से देख रही थी। उसी ने भेड़िया सिंह को सब बता दिया था। जब भालू से उसने वह सोने की पेटी माँगी तब वह न दे सका क्योंकि उसे तो वह पहिले ही गगन को दे चुका था। इसके पहिले कि वह भालू को सजा देने का निश्चय करता, उसे कैदखाने में डालता या जो कुछ भी करता, भालू अपनी जान हथेली रख कर वहाँ से भाग आया। आज लगातार सबेरे से वह भागता आ रहा है और अन्त में पानी में कूद कर वह इस हालत में पहुँच गया कि यदि थोड़ी ही देरी और हो जाती तो वह निश्चय ही डूब कर मर गया होता।

"गगन, अब हमें जितनी जल्दी हो सके भाग चलना चाहिए। मुझमें अब चलने लायक ताकत आ गयी है। मुझे डर है कि भेड़िया सिंह के आदमी हम दोनों को ही ढूँढ़ने आ रहे होंगे।"

दोनों जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा कर वहाँ से चल दिये। रास्ते में गगन ने भालू को थोड़ी मिठाई खाने को दी। उसने उसे वह सुनहरी डोर भी दिखायी जिसके बारे में उसने उससे पहिली भेंट में ही पूछा था। किस प्रकार उसे पकड़ने के बाद वह सब खतरे से बचता आया है; कैसे उसने अपने पिता की शिक्षा और उपदेश न मान कर उसे खो दिया था, इत्यादि। सब कुछ उसने भालू को बताया। गगन से मिल कर भालू बहुत खुश था। अपने गीले बालों को जो बार-बार उसके मुख पर आ जाते थे, वह हाथ से पीछे हटाता जाता। उसने बताया कि यदि वह न भागता तो कुत्ते की मौत मारा जाता। भेड़िया सिंह उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता।

"गगन, मेरे अन्दर की आवाज ने मुझसे कहा कि भालू, भाग कर गगन के पास चले जाओ।"

और वह झूम-झूम कर चलता हुआ अपना पुराना गीत

गुनगुनाने लगा —

"अरी मोरी दइया
बिछुआ ने काटा
शेर दहाड़ा हो, हो, हो।"

दोनों ही एक-दूसरे से मिल कर प्रसन्न थे। गगन को दोहरी खुशी थी: भालू से मिलने की और उसकी जान बचाने की। यदि सुनहरी डोर उसे सहायता न दिये होती तो वह उसे पानी से निकालने में कभी सफल न हो पाता। एकाएक कुछ आवाज सुन कर भालू चौंक कर रुक गया।

"सुनो, सुनो, तुम्हें कुछ सुनायी दे रहा है गगन ?"

"नहीं तो, बात क्या है ?"

"हुश चुप हो जाओ। देखो फिर सुनायी दिया।"

"हाँ, किसी कुत्ते के भोंकने की-सी आवाज है।"

दोनों ने रुक कर सुना। दूर जंगल में कोई कुत्ता भौंक रहा था—'भौं, भौं, भौं !'

भालू भय से काँपता हुआ बोला—"भाग चलो गगन, जितनी जल्दी भाग सको, भागो।"

"भौं, भौं, भौं !" आवाज और पास आ गयी।

"लेकिन क्या बात है भालू जो तुम इस कुत्ते की आवाज से इतना डर रहे हो ?"

"यह भेड़िया सिंह के खूनी शिकारी कुत्ते की आवाज है। यह हमें ढूँढ़ता हुआ आ रहा है। मुझे तो वह पहिचानता है, कुछ नहीं बोलेगा लेकिन वह तुम्हें जरूर नुकसान पहुँचायेगा।"भालू ने घबरा कर कहा।

दोनों साँस खींच कर तेजी से दौड़े। गगन ने अपनी डोर को कस कर मुट्ठी में पकड़ लिया। आगे एक ढलुआ पहाड़ी आयी जिस पर चढ़ना और उतरना इतनी जल्दी में कठिन था।

"जल्दी करो गगन, किसी पेड़ पर ही चढ़ जाओ।"

"नहीं, मैं अब कुछ नहीं करूँगा। जो कुछ होता है होने दो। मैं अपनी यह डोर मजबूती से पकड़े हूँ।"

आवाज पास और पास होती आ रही थी। उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा। जंगल से पेड़ों और झाड़ियों के बीच से एक भयानक बड़ा-सा कुत्ता भौंकता हुआ उन्हीं की तरफ चला आ रहा था। जैसे ही उसने इन लोगों को देखा, वह तेजी से इनकी ओर लपका।

"मैं उसे आगे जा कर रोकता हूँ जिससे वह तुम्हें चोट न पहुँचा सके।" यह कह भालू कुत्ते की तरफ दौड़ चला।

"शेरा, शेरा ?"

शेरा ने भालू को सूँघा और उसे छोड़ कर गगन की तरफ दौड़ा। भालू डरके मारे काँप उठा। वह जानता था कि गगन शेरा से बच नहीं सकता। हाय, कहीं सचमुच ही वह गगन पर झपटा तब ? यह सोचते ही वह सिहर उठा। लेकिन जैसे ही गगन के पास वह खूँखार कुत्ता पहुँचा उसे भी सूँघ कर वह पूँछ हिलाने लगा और हाँफ-हाँफ कर उसके ऊपर प्यार के मारे चढ़ने लगा। दो-चार मिनट ऐसा कर के वह फिर तेजी से भाग गया। उसके व्यवहार से लग रहा था जैसे जिनकी तलाश में वह इतनी तेजी से दौड कर आया है, ये वे लोग नहीं हैं, और उसकी सब मेहनत बेकार गयी। अब वह फिर किसी की तलाश में दौड़ गया।

भालू आश्चर्य से यह सब देख कर दंग रह गया। गगन ने बताया कि इस कुत्ते से उसकी मुलाकात पहिले भेड़िया सिंह के यहाँ हो चुकी है और उसने उसे खाना भी खिलाया था ; इसी कारण आज उसकी जान बच गयी। दया और भलाई कभी व्यर्थ नहीं जाती, इस बात को भालू जैसे जंगली लड़के ने भी आज अच्छी तरह अनुभव किया। जब से गगन ने उसे पानी से निकाला था तब से उसके अन्दर कोई कह रहा था, "तूने गगन के प्राण बचाये थे न, आज उसी का अच्छा फल तुझे मिला है।" पशु-पक्षी भी अपने रक्षक और दुश्मन को पहिचानते हैं। वे भी भलाई का बदला चुकाना जानते हैं, यह बात आज उसने प्रत्यक्ष देख ली।

अब दोनों लड़के खतरे से बाहर थे क्योंकि भेड़िया सिंह का राज्य अब समाप्त ही हो रहा था। गगन ने बताया कि अब उसका घर भी पास आ गया है। भालू फिर अपनी मस्तानी चाल पर आ गया और गड़रियावाला गीता गाने लगा "अरी मोरी दइया, बिछुआ ने काटा।"

"अरे हाँ, एक बात पूछना तो भूल ही गया।" भालू ने पूछा—"क्या तुम्हें वह बड़ा शेर रास्ते में नहीं मिला ?"

"ओह, वह डरावना शेर ! मिला था। उसे तो देखते ही मेरी जान ही निकल गयी थी।"

"बड़े भाग्यशाली हो जो बच कर आ गये। भेड़िया सिंह उसे ले कर शिकार को निकलता है। जो कोई उसके राज्य से गुजरता है, वह उसे मार डालता है। अपने मालिक को छोड़ कर वह किसी की आज्ञा नहीं मानता। मैंने उसकी दहाड़ सुनी थी। वह भूखा है। एक बार उसने मेरी एक भेड़ खा ली थी। वह मुझे भी खा डालता यदि पहिले ही एक भेड़ खाकर पेट न भर लिये होता। मुझे तब तक बचने का मौका मिल गया और मैं भाग कर एक पेड़ पर चढ़ गया।"

इस प्रकार बातचीत करते हुए दोनों निर्भीक चले जा रहे थे। भालू को भूख लगी थी अतः गगन ने अपने पास की शेष मिठाई भी उसे खिला दी। यद्यपि उतनी मिठाई से उस गड़रिये लड़के का पेट तो नहीं भरा लेकिन काफी सहारा मिला। उसने उसके लिये अपने साथी को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। पहाड़ी के पार नीचे उतरने पर उन्होंने एक खूबसूरत छोटा-सा घर देखा। इन लोगों को देख कर घर में से एक बुढ़िया और एक सुन्दर लड़की बाहर आयी।

"स्वागत है छोटे बच्चों। लगता है, तुम लोग लम्बी यात्रा से चले आ रहे हो। मुँह पर थकावट नजर आ रही है। आओ, हमारे इस छोटे से घर में कुछ देर ठहर कर आराम कर लो।" दोनों ने आगे बढ़ कर मुस्कराते हुए कहा।

भालू उसके इस निमंत्रण पर खुशी से उछल पड़ा, "कितने भाग्यशाली हैं हम लोग।"

गगन ने भी कहा—"आप लोग कितनी अच्छी और दयावान है।"

लेकिन अचानक सुनहरी डोर तन गयी और गगन को उस घर से दूर ले जाने लगी। अब वह भालू की ओर घूम कर धीरे से बोला—"मुझे अफसोस है कि मैं इन लोगों के घर में नहीं जा सकता। मुझे मेरी डोर वहाँ जाने की आज्ञा नहीं दे रही है।"

"आओ प्यारे दोस्तों, हम लोग तुम्हारा मन बहलायेंगी। जो कुछ तुम्हें अच्छा लगता हो, वह खाना। जब तक तुम्हारा मन लगे यहाँ रहना, मैं तुम्हें गाना सुनाऊँगी, नाच दिखाऊँगी। आओ, अन्दर आओ।" यह कह कर उस सुन्दर लड़की ने गगन की तरफ अपना हाथ बढ़ाया।

"मुझे विश्वास है तुम मना नहीं करोगे। तुम कितने सुन्दर हो ! तुम्हारे बाल कैसे सुनहरे और घुँघराले हैं ! आँखें कैसी प्यारी और चमकीली हैं। ऐसी खूबसूरत पेटी जैसी तुम पहिने हो मैंने पहिले कभी नहीं देखी।"

"आओ न मेरे बेटे।" बुढ़िया ने अपना हाथ भालू के कमर में डाल कर दुलारते हुए कहा।

भालू ने कहा—" मेरे दिल से पूछो तो मैं कहूँगा कि मैं सचमुच थका हूँ, भूखा हूँ और ठहरना चाहता हूँ। तुम्हारा जैसा आग्रह और मीठा निमंत्रण सब को सदैव नहीं मिलता।"

लेकिन गगन को वह सुनहरी डोर दूसरी ओर ही खींच रही थी। वह सबको दिखलाई नहीं देती थी, अस्तु वे दोनों औरतें उसे नहीं देख पा रहीं थीं। गगन ने भालू से कहा—"मैं इन लोगों के यहाँ नहीं जाऊँगा फिर उन लोगों की ओर मुड़ कर उसने पूछा—"आप लोग कौन हैं ? अपना परिचय देने की कृपा करें।"

"हम लोग राजा के शुभचिन्तकों में से हैं और अच्छे खानदानी लोग हैं।"

"क्या आप राजकुमार गगन को जानती हैं ?"

"खूब अच्छी तरह !" लड़की जल्दी से बोली—"वह तो मेरा बहुत अच्छा मित्र है। लम्बा, सुन्दर नवयुवक ! वह मुझसे बहुत प्यार करता है।"

"झूठ, बिलकुल झूठ ! तुम उसे नहीं जानती हो। इस प्रकार साफ झूठ मत बोलो।"

गगन ने रुखाई से कहा, लेकिन उसने उन्हें यह नहीं बताया कि वही राजकुमार गगन है। उसने भालू को भी इशारे से मना कर दिया।

"मै तुम्हारे घर के अन्दर कदम भी नहीं रख सकता। मेरी आत्मा मुझे मना कर रही है।"

यह सुन कर वे दोनों ठहाका मार कर हँसने लगीं—"इस बचकाने मुँह से आत्मा की बात तो सुनो। अरे यह तुम्हारे खेलने-खाने के दिन हैं। फिर, हम तुम्हें तुम्हारे कर्तव्य से हटा तो नहीं रही हैं। केवल यह चाहती हैं कि तुम सुस्ता लो और ताजे हो जाओ।"

"हाँ, हाँ, चलो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। आओ न गगन !" मूर्ख भालू ने उत्साह से कहा।

गगन ने उसके कान में फुसफुसा कर कहा—"भालू सुनो, मैं बिलकुल नहीं जाऊँगा। मेरा कर्तव्य है कि मैं अपनी इस डोर के इशारे पर चलूँ। यह मुझे यहाँ ठहरने को मना कर रही है और मैंने देख लिया है कि यह अच्छी स्त्रियाँ नहीं हैं। न ये राजा को जानती हैं और न उनके राजकुमारों को। आत्मा और कर्तव्य की बात का यह मजाक उड़ाती हैं। सुनो भालू जो मैं कह रहा हूँ वह मानो और मेरे साथ आओ।"

लेकिन मूर्ख भालू तो उन लोगों की बातों पर पूरा विश्वास कर रहा था, बोला—"केवल एक घंटे के लिए ही रुक जाओ गगन।"

"एक मिनट के लिए भी नहीं। यदि मुझसे ज्यादा तुम्हें इनकी बातों पर विश्वास है तो तुम इनके साथ जाओ।

लेकिन याद रखना हम फिर कभी एक-दूसरे से नहीं मिल सकते।''

भालू घबरा कर बोला—''नहीं, नहीं। मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगा। शायद तुम्हारी बात ही ठीक हो, मेरा दिल भी यही कह रहा है। मैं इनके साथ नहीं जाऊँगा। तुम्हें मैं नहीं छोड़ सकता।''

और दोनों अपनी राह पर चल पड़े। अब तो बुढ़िया गुस्से से चीख पड़ी। लड़की ने दोनों को तरह-तरह की गालियाँ देनी शुरू कर दीं। उन्हें बेवकूफ कह कर उनकी खिल्ली उड़ाने लगी और उन पर पत्थर फेंकने लगी। भालू को भी गुसा आ गया। वह मुड़ा और अपनी लकड़ी को घुमा कर उन्हें मारने दौड़ा। दोनों अपने घर में घुस गयीं। बुढ़िया ने अन्दर से अपना घूँसा दिखा कर कहा—''मैं जल्दी ही भेड़िया सिंह को तुम्हें पकड़ने भेजूँगी।''

''ओह, तो यह मामला है ? अब यह रहस्य समझ में आया ! राजकुमार गगन तुम कितने समझदार हो। मैं तो कुछ समझ ही नहीं पाया था इन लोगों की चालों को।'' भालू ने कहा।

''लेकिन मैं तो पहिले ही सब कुछ समझ गया था कि इन दोनों से मित्रता करके केवल नुकसान ही होगा, लाभ नहीं। मेरी प्यारी डोर ने पहिले ही मुझे मना कर दिया था।''

''आखिर वे लोग हमारे साथ क्या करना चाहती थीं, अपने घर में बुला कर?''

''मैं कुछ कह नहीं सकता। हो सकता है कि जितनी दयालु हो कर मुस्करा-मुस्करा कर ये हमें अपने यहाँ बुला रहीं थीं, बाद में उतनी ही निष्ठुरता से हमारे साथ व्यवहार करतीं। शायद भेड़िया सिंह से भी ज्यादा बुरी तरह। मैं बहुत खुश हूँ कि मैं अपनी डोर मजबूती से पकड़े रहा और इनके बहकावे में नहीं आया।''

और दोनों फिर अपनी राह पर जल्दी-जल्दी बढ़ चले।

कालू काका

चलते-चलते गगन और भालू ऐसी जगह पहुँचे जहाँ सामने सुन्दर पहाड़ नजर आ रहे थे। जिन पर सीधे, गर्व से सिर उठाये चीड़ और देवदार के वृक्ष कतार से खड़े थे। ऐसा मालूम पड़ रहा था मानो पहाड़ के पहरेदार खड़े हों। इन पहाड़ों के भी और ऊपर काफी दूर तक आसमान को छूनेवाली पहाड़ की कतारें थीं जिनकी चोटियाँ बर्फीली होने के कारण सफेद स्वच्छ दिखलाई पड़ रही थीं। बर्फ पर सूरज की किरणें पड़ रही थीं। बहुत सुन्दर और सुहावना दृश्य था।

''अहा, भालू ! उधर देखो हमारे कालू काका का घर दिखाई पड़ रहा है। यह मेरे पिता जी का बहुत समझदार और ईमानदार आदमी है। मेरी डोर भी मुझे उसी ओर खींचे ले जा रही है। अब तो आज ही मैं अपने पिता से मिल लूँगा।''

गगन ने भालू को उस घर की तरफ इशारा कर के दिखाया। कालू का घर एक टीले पर बना था जो चारों तरफ पानी से घिरा था। शायद डाकुओं से बचने के लिए ही उसने ऐसी जगह को चुना था।

''भालू, अब हमें किसी प्रकार का भय नहीं है। अब हम एक प्रकार से घर ही पहुँच गये हैं।''

और दोनों ढाल पर दौड़ कर उतरने लगे। दोनों को अपनी थकान का ध्यान ही नहीं रहा। पानी के किनारे आकर उन्होंने नाव के लिए आवाज लगायी। कालू हमेशा एक नाव तैयार रखता था। जो कोई भूला-भटका उस तरफ आता, उसे वह शरण देता। चट्टान काट कर उसने अपने घर तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बना रखी थीं। इन दोनों की आवाज सुन कर उसके दो लड़के घर से बाहर आये और जल्दी से नाव खोल कर किनारे की तरफ खे कर ले चले और थोड़ी ही देर में गगन और भालू के पास आकर खड़े हो गये। गगन की सुनहरी पेटी और भालू गड़रिये को वे आश्चर्य से देखने लगे।

''ओह रामू, क्या तुम मुझे नहीं पहिचान रहे हो ?''

"अरे आप, राजकुमार !" और रामू तथा रघु दोनों गगन और भालू को बड़े प्रेम से अपने नाव पर बिठा कर घर की तरफ बढ़ चले। रास्ते भर उन्होंने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। उन्होंने बताया कि उनका पिता घर पर ही है और कुछ ही देर पहिले, गगन के पिता, राजा से भी मिला था। राजा जी अपने पुत्र, गगन की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहे हैं। फिर रघु जोश से बोला—"भइया गगन, मेरे एक और छोटा भाई हुआ है। हमने एक ऊदबिलाव पाला है जो झील से मछली पकड़ कर लाता है।"

रामू बोला—"और एक गाय भी पाली है, उसका छोटा-सा बछड़ा भी है। गाय खूब दूध देती है।"

गगन बड़ी रुचि से सब सुन रहा था।

ऊपर घर में बूढ़ा कालू नाव में बैठे दोनों मेहमानों को गौर से देख रहा था। जैसे ही नाव किनारे लगी, उसने गगन को पहिचान लिया। वह उन पत्थर की सीढ़ियों पर से दौड़ता हुआ उतरा और गगन का हाथ पकड़ कर नाव से उतार कर अपनी छाती से चिपका लिया।

"राजकुमार मैं जानता था, तुम जंगल में हो लेकिन महाराज तुम्हारे बारे में और कुछ बताते ही नहीं थे केवल इसके कि वे तुम्हें देखने को बेचैन हैं। अरे, यह तुम्हारे साथ कौन लड़का है ?"

मुस्करा कर गगन बोला—"यह मेरा एक मित्र है, कालू काका।"

भालू ने स्वयं ही कहा—"मेरा नाम भालू है।"

"भालू ! मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हें कहीं पहिले भी देखा है ! नहीं—हाँ, जरूर तुम्हें पहिले देख चुका हूँ।"

बूढ़ा भालू को गौर से देखने लगा। कभी जंगल में शिकार करते या डाकुओं के साथ लड़ते समय शायद वह उसे देख चुका था।

गगन ने कहा—"कालू काका, बेचारे भालू को परेशान न करो, इसे घर के अन्दर जाने दो और तुम मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें अपनी यात्रा के दिनों की बहुत-सी बातें बताऊँगा।"

रामू और रघु दोनों भालू को अपने साथ भीतर ले गये। वहाँ खाना बन रहा था।

गगन और बूढ़ा कालू बाहर ही एक चट्टान पर बैठ गये। गगन उसे अपनी यात्रा की कहानी विस्तार से सुनाने लगा। कालू आश्चर्य से सब सुनता रहा। कभी आश्चर्य से उसकी आँखें चमकने लगतीं; कभी क्रोध से भौंहें चढ़ जाती; कभी गगन के दुःख से दुःखी और उदास हो जाता; कभी खिलखिला कर हँस पड़ता तो कभी जोश में आकर उछल कर खड़ा हो जाता। जब गगन ने उसे बुढ़िया और लड़की के बारे में बताया तब उसने कहा—

"अरे, केवल ये दोनों ही नहीं और भी अनेक ऐसे लोग उस प्रदेश में हैं। बुढ़िया को लोग जादूगरनी कहते हैं। वह लोगों को पानी में डुबा कर या विष दे कर मार डालती है। भेड़िया सिंह के आदमियों में से वह भी एक है। वहाँ से गुजरनेवालों को मीठी बातों में फँसा कर वह उन्हें भेड़िया सिंह को सौंप देती है। उनसे बचने का एक ही तरीका है कि वीरता और दृढ़ता से अपने मन को लालच से रोके और मन जो सही बातें कहे उन्हें माने। प्यारे राजकुमार तुमने सब काम सही ही किया है। खैर, जो हुआ वह हुआ। आओ, अब हम घर के अन्दर चलें। रामू की माँ इन्तजार कर रही होगी।"

कालू गगन को अपने घर में ले गया। उसकी पत्नी ने उसका स्वागत वैसे ही किया जैसे एक माँ विदेश से लौटे हुए अपने पुत्र का करती है। उसकी पीठ पर अपना हाथ फेरा। उसके माथे को चूमा। सब बच्चे भी अपने राजकुमार को घेर कर बैठ गये। बीच में बैठा वह बहुत ही सुन्दर और प्यारा लग रहा था। वह भी इन सबसे मिल कर प्रसन्न था।

कालू का घर देवदार के ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की कतारों से घिरा था। घर के कमरों की खिड़कियाँ खुलने पर पानी का दृश्य साफ दिखायी देता था। तैरती हुई बत्तखें एक सीध में अपनी गर्दन और चोंच उठाये ऐसी लगती थीं मानो किसी ने उन्हें एक कतार में तैरने की शिक्षा दी हो। पनडुब्बी चिड़िया जब झपट्टा मार कर पानी में से मछली पकड़ कर निकलती थी तब उसे देखते ही बनता था।

इस घर के थोड़ी दूर पर ही एक घर और था। यहाँ भी राजा का एक सेवक-परिवार रहता था। दोनों घरों के बच्चे एक साथ खेलते और नाव चलाने की होड़ लगाते थे। रविवार की शाम को कालू इन बच्चों को एकत्र करता और उन्हें कहानियाँ सुनाता, अच्छी-अच्छी बातें बताता। देश-प्रेम और राजभक्ति के गाने सुनाता। वह थोड़ा पढ़ा लिखा भी था अस्तु, रविवार को वह इन बच्चों को पढ़ाता भी था। इन सब कारणों से कालू उस टापू का प्रिय और सम्माननीय व्यक्ति बन गया था। राजा की आज्ञा से उस पहाड़ी पर एक अतिथि-गृह भी बना था। यहाँ आने-जानेवाले मुसाफिरों को ठहरने और खाने-पीने का मुफ्त प्रबन्ध था। अतिथियों का स्वागत और रोगियों की सेवा करने में पहाड़ी के बच्चे भी बहुत उत्साह दिखाते थे।

सब बड़े प्रेम और एकता से वहाँ रहते थे। एक-दूसरे के सुख और दुःख में शामिल होते थे। इन लोगों ने अपने परिश्रम से उस जंगल को फलफूलों से भर कर मंगलमय कर दिया था।

घाट पर दो नावें सदैव तैयार रहती थीं। बिना कोई मूल्य दिये लोग उसका उपयोग कर सकते थे। वहाँ किसी

को किसी से दुश्मनी या वैर नहीं था। बच्चे बड़ों का आदर करते और बड़े बच्चों को प्यार करते थे। त्योहारों पर सब एकत्र हो कर पूजा-पाठ, भजन और कीर्तन करते थे। कोई ढोल बजाता तो कोई मंजीरा; कोई वंशी तो कोई करताल बजाता। सब के सम्मिलित स्वर और बाजों की थाप जंगल में दूर-दूर तक गूँजती। पहाड़ी के नीचे गुजरनेवाले मुसाफिर जिन्हें सुन कर ठिठक जाते और मुग्ध हो कर उनका गाना सुनते तथा नाच देखते।

राजकुमार गगन और भालू दोनों ने कालू की पत्नी द्वारा बनाया भोजन बड़ी रुचि और चाव से खाया। दोनों सचमुच ही बहुत भूखे थे। भालू को तो अपने जीवन में पहिली बार ही इस प्रकार एक परिवार के साथ भोजन करने का अवसर मिला था। अभी तक तो वह अनाथ लड़का भेड़ों के साथ ही खाता और सोता आया था। समाज में इस प्रकार एक साथ मिल-जुल कर बैठने और खाने का सौभाग्य उसे आज ही मिला था।

पिता-पुत्र का मिलन

एकाएक वह डोर हिली और फिर तन गयी। अभी तक तो वह ढीली हो कर तार की तरह भूमि पर फैल गयी थी लेकिन अब तन कर उसने संकेत दिया कि गगन को अपनी शेष यात्रा पर चल देना चाहिए। राजकुमार मुस्करा कर खड़ा हो गया और भालू से बोला—

"भालू, अब कुछ दिन तुम्हें यहाँ रघु और रामू के साथ रहना है। कालू काका भी तुम्हें साथ रखने को उत्सुक हैं। यहाँ समाज में रह कर तुम खेती करना, नाव चलाना आदि काम सीख कर एक सभ्य आदमी बन जाओगे। यहाँ तुम्हारे रहने, खाने-पहिनने सब का अच्छा प्रबन्ध मेरे पिता की तरफ से होगा। कुछ दिन बाद अवसर आने पर मेरे पिता की आज्ञा से तुम मेरे पास ही आ जाना।"

भालू का सिर दुःख से लटक गया। बोला—"लेकिन यदि यहाँ भी भेड़िया सिंह आ गया तब ?"

उसकी बात पूरी होने के पहिले ही कालू ने तमक कर कहा—"वह दुष्ट यहाँ आने की हिम्मत कभी नहीं कर सकता। मैं तो चाहता हूँ कि वह एक बार किसी प्रकार आये तो, फिर यहाँ से जिन्दा वापस जाने का मौका उसे नहीं मिल सकता। यह टापू एक मजबूत किला है। यहाँ का हर जवान इसका पहरेदार है, यह बात भेड़िया सिंह और उसके साथी भली प्रकार जानते हैं। जंगल में मेरी उससे कई बार भेंट हो चुकी है। बहुत जल्दी ही मैं उसे और उसके साथियों को खतम कर दूँगा। भालू, तुम यहाँ राजकुमार की कृपा से बिलकुल सुरक्षित रहोगे। किसी प्रकार से भी डरने की जरूरत तुम्हें नहीं है; और राजकुमार गगन, तुम भालू को मेरे पास निश्चिन्त हो कर छोड़ दो। मैं इसे एक आदमी बना दूँगा ! अब राजकुमार मैं एक प्रार्थना तुमसे करूँगा। तुम हमारी संध्या की पूजा के बारे में जानते ही हो। यदि तुम्हें तुम्हारी यह सुनहरी डोर अनुमित दे तो मैं चाहूँगा कि आज की प्रार्थना में तुम भी शामिल होओ।"

"जरूर, जरूर, कालू काका ! हम और भालू भी आज की प्रार्थना तुम सब के साथ ही करेंगे।" गगन ने उत्साह से कहा।

सब पूजाघर में आये। यह एक काफी बड़ा कमरा था। धूप और अगरबत्ती की खुशबू से वहाँ का वातावरण बड़ा शान्त और पवित्र लग रहा था। कमरे की खिड़कियाँ और दरवाजे खुले थे। खिड़कियों से बाहर झील का पानी दिखायी दे रहा था जो शाम के समय डूबते हुए सूरज के प्रकाश में लाल हो रहा था। उसमें पहाड़ी के पेड़ों और चट्टानों की झलक साफ दिखायी दे रही थी। कमरे में सब बच्चे, स्त्रियाँ, पुरुष शान्त हो कर अपने-अपने स्थान पर बैठ गये। कालू ने सब लोगों से गगन का परिचय कराया और कहा—"हम सब लोग आज अपने इस छोटे लेकिन वीर और नेक राजकुमार की उन्नति और सकुशल अपने पिता से मिलने की शुभ कामनाएँ करेंगे। हमारे राजकुमार ने अपने पूज्य पिता की आज्ञा से एक कठिन यात्रा पूरी की है। रास्ते की कठिनाइयों को, साहस के साथ झेला है। बुराइयों से लड़ा है। हमें विश्वास है अपने पूज्य राजा अपने पुत्र को इस यात्रा की परीक्षा में उत्तीर्ण देख कर बहुत प्रसन्न होंगे और उत्साह से अपने प्यारे बेटे का स्वागत करेंगे।"

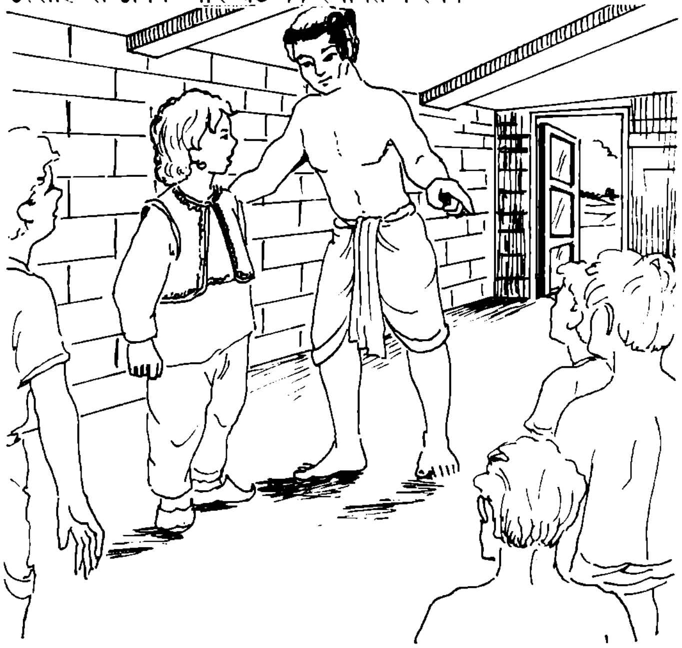

सबने एक साथ राजकुमार गगन की जय-जयकार की। इसके बाद कालू ने प्रार्थना के गीत गाये जिसे सबने एक साथ दोहरा कर गाया—

"हे प्रभु जग के स्वामी
हम सब तुझको शीश झुकाते हैं।
तूने पर्वत नदी बनाये,
भाँति-भाँति के फूल खिलाये,
किलक चहक कर ये पशु-पक्षी
तेरा ही गुण गाते हैं।
हे प्रभु जग के स्वामी.....
पथ भटके को राह बताना,
दुखियों के सब कष्ट मिटाना,
हमको देना बुद्धि ज्ञान,
प्रभु यही प्रार्थना गाते हैं।"

गाने के बाद सबने आँखें बन्द कर मौन प्रार्थना की और खड़े हो गये। सब ने देखा कि भालू अभी भो आँखें बन्द किये प्रार्थना कर रहा है। उसके गालों पर आँसू की धाराएँ बह रही हैं। थोड़ी देर में वह उठा, अपने आँसू पोंछे और गगन से बोला—

"अभी मैंने शायद एक सपना देखा है राजकुमार। मैंने देखा कि एक पालकी में एक सुन्दर स्त्री बैठी रो रही है। वह मुझे गोद में चिपकाये है और उसको चारों ओर से भेड़िया सिंह और उसके डाकू सरदार घेरे हुए हैं।"

यह कह कर भालू खोया-खोया सा खिड़की के बाहर शून्य में देखने लगा। गगन ने सहानुभूति से उसके कंधे पर हाथ रखा। अभी भी सपने की याद में उसकी आँखें आँसुओं से भरी थीं।

कालू ने गगन से धीरे से कहा—"बेचारा गरीब भालू ! मुझे ऐसा लगता है कि डाकुओं ने इसे किसी अच्छे घर की धनी स्त्री की गोद से छीन लिया है। शायद उसे मार डाला होगा। भालू जरूर किसी अच्छे खानदान का लड़का है। आज पहिली बार प्रार्थना करने से इसका मन साफ हो गया है। इसे अपने बचपन की घटना जो यह भूल गया था आज एकाएक याद हो आयी है जिसे यह सपना कह रहा है।" यह कह कर वह भालू के पास आया—

"बेटा भालू आओ अब अपने मित्र राजकुमार को विदा करो।

भालू चौंका जैसे नींद से जगा हो और गगन के पास आया। गगन ने कहा—

"मुझे विदा दो भालू ! मुझे आशा है, मैं तुमसे एक दिन अपने पिता के महलों में ही मिलूँगा। तब तक तुम मेरा इन्तजार करना।"

भालू कुछ नहीं बोला और अपने कुर्ते की बाँह से अपने बहते आँसुओं को पोछने लगा।

"हँसो भालू। मुझे हँस कर विदा करो मित्र। मुझे विश्वास है, तुम यहाँ सुखी रहोगे।" गगन ने कहा।

"भालू अभी भी सुखी और प्रसन्न है, राजकुमार गगन। मैं यहाँ इन सब लोगों की भेड़ें चराऊँगा। इन लोगों की सेवा करूँगा।" फिर उसने अपनी छड़ी गगन को देते हुए कहा—"राजकुमार मेरी यह छड़ी जो मुझे बहुत प्यारी है मेरी याद में तुम इसे ले लो। तुम्हें देने के लिए मेरे पास और कुछ नहीं है। सोने की मुहर तो भेड़िया सिंह ने पहिले ही छीन ली थी।"

"बहुत बहुत धन्यवाद प्यारे मित्र ! यह छड़ी तुम अपने पास ही रखो, तुम्हारे काम आयेगी। तुम मुझे ऐसे ही याद रहोगे। मैं नहीं भूल सकता कि डाकुओं के चंगुल से मुझे तुमने ही छुड़ाया था।" गगन का दिल भालू के भोलेपन से भर आया।

"राजकुमार, जंगल में मैंने तुम्हारे साथ जो व्यवहार किया था उसके लिए मुझे क्षमा कर देना और अपने इस भालू को कभी भूलना नहीं। याद रखना कि भालू तुम्हें हृदय से प्यार करता है।"

यह कह कर भालू रोने लगा। राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ लिया—

"मुझे अच्छी तरह मालूम है भालू कि तुम मुझे प्यार करते हो। मुझे विश्वास है कि हम दोनों एक-दूसरे को नहीं भूल सकते। अच्छा अब देर हो रही है, मुझे चलना चाहिए। विदा भालू।"

गगन को नाव तक पहुँचाने सब लोग आये। नाव पर केवल कालू गया बाकी सब लौट गये। गगन ने मुस्करा-मुस्करा कर सबसे विदा ली। उसके मुख पर विश्वास और सन्तोष की झलक थी। घर लौटने की खुशी और अपने पिता के द्वारा ली हुई परीक्षा में सफल होने के कारण उसके मुख पर गर्व की एक चमक आ गयी थी। वह बहुत सुन्दर लग रहा था, डूबते सूरज का प्रकाश उसके मुख पर पड़ रहा था। भालू उस प्यारे सुन्दर राजकुमार को एकटक देखे जा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह इस दुनिया का नहीं, स्वर्ग का कोई देवदूत है। उस गगन में, जो अपने कर्त्तव्य की सुनहरी डोर छोड़ने के कारण डाकुओं के चंगुल में फँस गया था और इस गगन में जो सब कठिनाइयों को पार करके अपने घर वापस लौट रहा था, जमीन और आसमान का अन्तर था। तब वह एक अनाथ भटका हुआ लड़का था जिसने अपनी पिता की आज्ञा को टाल दिया था और अब वह एक राजकुमार है जिसे सब प्यार कर रहे हैं, आदर से देख रहे हैं।

नाव से पार उतर कर यह लोग एक दूसरी बड़ी चौड़ी नदी के किनारे आये, जिसके किनारे एक सफेद रंग की सुन्दर और शाही नाव खड़ी थी। नाव पर बैंगनी रंग के मखमल की मुलायम गद्दी एक सिंहासन की तरह बनी चौकी पर बिछी थी। उस पर एक शानदार सुनहरे काम का चँदोवा था जिसमें बहुमूल्य रत्न जड़े थे। मोतियों की झालर उसके चारों ओर लटक रही थी। उसमें दो व्यक्ति सफेद वस्त्रों में जिन पर सुनहरी पट्टियाँ लगी थीं, बैठे थे। उनके सिर पर एक विशेष प्रकार की लम्बी टोपी थी, जो यह बता रही थी कि वे राजा के खास सेवकों में से हैं। गगन को देखते ही वे नाव से कूद कर किनारे आ गये और बड़े कायदे से झुक कर सम्मान प्रकट किया किन्तु कुछ बोले नहीं। गगन ने कालू की ओर देखा मानो विदा माँग रहा हो और अपनी डोर को पकड़े हुए नाव में कूद कर बैठ गया। वह भी उन सफेद वस्त्रोंवाले सेवकों से कुछ नहीं बोला किन्तु समझ गया था कि ये लोग उसके पिता की आज्ञा से उसे लेने आये हैं। नाव में कदम रखते ही नाव अपने आप चल पड़ी। उसे खेने की आवश्यकता नहीं पड़ी। दोनों किनारे दोनों सेवक बैठ गये, और सिंहासन पर गगन। डोर ढीली हो कर नाव में फैल गयी। बिना किसी आवाज के नाव पानी पर चल रही थी। उसकी चाल तेज थी किन्तु फिर भी इतनी सरलता से चल रही थी कि बैठनेवालों को यह अनुभव ही नहीं हो रहा था कि यह चल भी रही है। पानी को चीरती हुई वह एक सफेद परवाले हंस की तरह तैर रही थी। नदी के दोनों किनारों पर आँखों को भानेवाले दृश्य थे। पर्वत की चट्टानों से दूध की तरह झरने फूट रहे थे जो बहते हुए उसी नदी में आकर गिर रहे थे। जगह-जगह फूलों से भरे पौधे थे। ऊँचे-ऊँचे, बड़ी-बड़ी पत्तियोंवाले वृक्ष खड़े थे, जिन पर बसेरे लेनेवाले पक्षी चहक रहे थे, मानों वे महत्वपूर्ण यात्रा से लौटे हुए अपने नन्हें राजकुमार का स्वागत कर रहे हों।

गगन बिलकुल शान्त और गंभीर था। उसे यह भी नहीं मालूम था कि यह नाव उसे कहाँ ले जा रही है। वह केवल इतना जानता था कि यह उसके पिता की ही भेजी हुई है और उसके पिता जो उचित होगा वही करेंगे। इस नदी पर इस प्रकार की नाव में वह पहिले कभी नहीं बैठा था। चलते-चलते नाव ऐसे स्थान पर आयी जहाँ ऊपर से दो काली-ऊँची चट्टानों ने छत-सी बना दी थी। नाव उस छत के नीचे से निकलती गयी। उसमें से निकलने के बाद नाव खुले प्रकाश में आयी और किनारे जा लगी। किनारे पर साफ सफेद रेत बिछी थी। सुनहरी डोर तन कर किनारे की तरफ बढ़ने लगी और गगन उछल कर जमीन पर खड़ा हो गया। सामने चौड़ा रास्ता था जिसके दोनों ओर यूकेलिप्टिस के लम्बे वृक्ष कतार में लगे थे। ऊपर दोनों ओर के पेड़ों की शाखाएँ आपस में मिल कर छाया कर रही थीं। गगन जल्दी-जल्दी चलने लगा। उसके पीछे बड़े अदब और कायदे से कदम से कदम मिलाये सैनिकों की चाल से दोनों आदमी चल रहे थे। काफी दूर चलने के बाद संगमरमर की सीढ़ियाँ नजर आयीं। गगन की आँखों में प्रसन्नता की चमक भर गयी। उसके प्यारे पिता का महल सामने ऊँचाई पर दिखलायी दे रहा था। महल में चारों ओर दिवाली हो रही थी। दूर से ही वह ऐसा चमक रहा था मानो वहाँ कोई उत्सव की तैयारी है। बाग में फव्वारों से पानी उछल कर गिर रहा था। कही हंस और कहीं मछली और मगर की मूर्तियाँ बनी थीं जिनके मुख से पानी की धाराएँ निकल रही थीं। फव्वारों के कुंड में रंग-बिरंगी मछलियाँ तैर रही थीं। किसी में कमल के फूल खिले थे। आखिर वह अपने घर पहुँच ही गया ! उसका हृदय खुशी से धड़कने लगा। वह एक बड़े फाटक के सामने पहुँचा। द्वार पर सोने के हैंडल लगे थे। एक बड़ा घंटा दरवाजे पर लटका था जिसमें चाँदी की जंजीर लगी थी। इसे खींचने पर जोर की आवाज गूँजती थी और फाटक खुल जाता था। वहाँ एक गोल सोने का लट्टू लटक रहा था। सुनहरी डोर फाटक के पास आते-आते छोटी होती गयी। इसका दूसरा छोर उसी लट्टू में था। जैसे ही गगन फाटक के पास पहुँचा डोर एकाएक उसके हाथ से खिंच कर अलग हो गयी और उसी लट्टू के अन्दर समा गयी। वहाँ मोतियों से लिखा था "इसको पकड़ने वाला जीवन में विजय प्राप्त करता है।"

डोर के छूटते ही एक मधुर संगीत बजने लगा। गगन ने घंटे की जंजीर पकड़ कर खींच ली। टन-टन, टन-टन, की

गंभीर आवाज से सारा वातावरण गूँज उठा। ऐसा मालूम पड़ रहा था मानो किसी मन्दिर में आरती हो रही है। फाटक एकाएक खुल गया। सामने एक लम्बा गलियारा था जिसके दोनों ओर रंगीन रोशनी के झाड़-फानूस लटक रहे थे। बड़े-बड़े शीशों में वहाँ से गुजरनेवाले का चित्र झलकता था। मुस्कराता, आत्म-विश्वास से भरा हुआ गगन शान से आगे बढ़ा। शीशों में दोनों तरफ गगन ही गगन दिख रहे थे। अन्दर एक बड़े कमरे में पहुँचते ही शोर होने लगा। ये उसके भाई बहिनों की आवाजें थीं जो उसकी प्रतीक्षा में व्याकुल थे। घंटा बजते ही वे समझ गये थे कि उनका प्यारा भाई अपनी यात्रा से लौट आया है। कमरे के बीच में एक सोने का सिंहासन था जिसमें हीरे-पन्ने जड़े हुए थे। सिंहासन के दोनों ओर दो सफेद संगमरमर की बहुत ही सुन्दर स्त्रियों की मूर्तियाँ बनी थीं मानो सिंहासन की रक्षा कर रही हैं। कमरे में घुसते ही घंटे और शंख बजने लगे। सिंहासन पर महाराज बर्बरीक बैठे थे। गगन को देखते ही वे मुस्करा कर आगे बढ़े। गगन ने झुक कर पिता के चरण छुए। पिता ने चरणों पर झुके गगन को उठा कर छाती से चिपका लिया और प्यार से बोले—

"मेरा भटका हुआ बेटा अन्त में फिर मेरे पास आ गया। गगन तुम मेरी ली हुई परीक्षा में सफल हुए इसका मुझे गर्व है।"

प्रसन्नता से पिता और पुत्र दोनों की आँखें छलछला रही थीं।

पास में ही वह महिला भी खड़ी मुस्करा रही थी जो जंगल में उस दिन सबेरे गगन को मिली थी और उसे खाने को मिठाई का डिब्बा दिया गया था। वहाँ सभी की आँखों में उत्साह और स्वागत के भाव थे।

भाई-बहनों ने गगन को चारों ओर से घेर लिया। यद्यपि गगन के वस्त्र मैले हो गये थे और जंगल की झाड़ियों में अटकने के कारण कहीं-कहीं फट भी गये थे फिर भी गगन सब लोगों में निराला दिखलायी दे रहा था। सोने की पेटी केवल उसी के पास थी जो उसका महत्व बता रही थी। यह वह चिह्न था जो यह बताता था कि उसे पहिनने वाला ही आज का नायक है।

सब भाई-बहनों ने उसके चारों ओर घेरा बना लिया और हँस-हँस कर गाने लगे—

"आओ प्यारे भाई आओ !
बहुत दिनों के बिछड़े भाई,
याद तुम्हें अब घर की आयी;
आओ अब हम में मिल जाओ।
आओ प्यारे भाई आओ।
दूर गगन में चन्दा चमके,
झिलमिल झिलमिल तारे दमके,
तुम भी प्यारे 'गगन' आज
अपने इस घर को चमकाओ !

आओ, प्यारे भाई आओ।
हम सब भाई, बहिन मिले हैं,
रंग-बिरंगे फूल खिले हैं।
हँसो-हँसो प्यारे इस घर की
बगिया को महकाओ।
आओ प्यारे भाई आओ।

शेरू की वीरता

चाचा प्रताप की गुस्से और झुँझलाहट भरी आवाज नीचे बरामदे तक साफ आ रही थी। हाँ उनकी बेटी नीली का स्वर कुछ दबा हुआ था। वह चाचा से कुछ कह रही थी जिसे चाचा काट रहे थे या नहीं मान रहे थे। शेरू नीचे खड़ा था। अपना नाम बार-बार चाचा के मुख से सुन कर वह चौकन्ना हो गया। उसके कान खड़े हो गये। उसने अपने सिर को झटका और खड़ा हो गया। पूरी बात तो वह बेचारा समझने में असमर्थ था किन्तु इतना तो समझ ही गया कि जरूर उसी को ले कर कुछ बात हो रही है। आखिर बात का पता लगाना ही चाहिए और वह ऊपर की ओर चल दिया जहाँ चाचा और नीली थे। दो-तीन सीढ़ी ही चढ़ा होगा कि उसने देखा कि बिल्लू मुख में कुछ दबाये चला आ रहा है। शेरू को देख कर वह ठिठक गया।

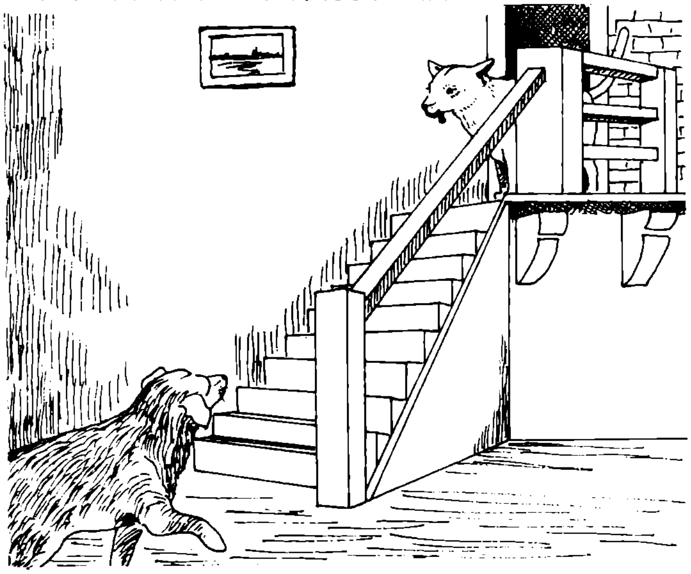

शेरू अपने बेट बिल्लू की शैतानियों से खूब परिचित था। बिल्लू जितना चंचल और शैतान था उतना ही प्यारा भी था। झबरा, गोल-मटोल बिलकुल एक बड़ी गेंद जैसा था। शीशे की तरह चमकदार गोल-गोल आँखें थीं उसकी। वह चाचा प्रताप का पाइप चबा रहा था। भूरा, कड़ा हड्डी की तरह पाइप को चबाने में उसे मजा आ रहा था। वह पाइप चाचा की मेज पर रखा था। किसी तरह वह उछल कर मेज पर चढ़ कर उसे उठा लाया था। जरूर कुछ गिराया-लुढ़काया भी होगा। पाइप उठा कर वह शेरू के पास दौड़ा आ रहा था किन्तु उसे ऊपर आते देख कर वह ठिठक कर खड़ा हो गया। शेरू ने जब चाचा का पाइप उसके मुख में देखा तो गुर्रा कर उस पर झपटा। बिल्लू ने भागने की कोशिश की किन्तु बेटे की बाप के आगे नहीं चली। शेरू ने एक पंजा उसके मुख पर मारा और पाइप छीन कर अपने मुख में दबा कर ऊपर की तरफ चढ़ने लगा। उसने सोचा कि पाइप चाचा को दे कर वह उन्हें खुश कर देगा। तभी फिर से सुनायी दिया—

"अच्छी तरह समझ लो नीली, मैं इन दोनों कुत्तों को किसी भी तरह शाम की पार्टी में नहीं ले जा सकता। कभी कहीं कुत्तों को भी पार्टी में दावत खाते देखा है ? बिलकुल पागलपन की बातें करती हो तुम। मुझे कुत्तों से घृणा है।"

"लेकिन चाचा घर में कोई और है भी तो नहीं। मैं इन्हें अकेले घर में इतनी देर के लिए तो छोड़ नहीं सकती। आप इन्हें अन्दर मत ले जाइएगा। इन्हें कार में ही छोड़ देंगे। ये कार की रखवाली करते रहेंगे।"

नीली ने समझाया किन्तु चाचा और भड़क उठे।

"उँह कार की रखवाली करेंगे ये कुत्ते ? तुम्हें हो क्या गया है नीली ?

शेरू को इतना समझ में आ गया कि ये लोग उसे छोड़ कर कहीं जाने की बात कर रहे हैं। नीली के प्यार पर तो उसे पूरा विश्वास था किन्तु चाचा पता नहीं क्यों उससे और बिल्लू से नाराज रहते थे। पाइप देने का उत्साह शेरू का गायब हो गया। उठी हुई दुम नीचे लटक गयी। वह दबे पैरों से आगे बढ़ा। किवाड़ को पंजों से खरोंचा। मुँह में तो पाइप था, भौंक नहीं सका। किवाड़ बन्द नहीं थे, खुल गये। नीली पार्टी में जाने के लिए अपने और चाचा के कपड़े प्रेस कर रही थी।

शेरू को देख कर मुस्करा दी किन्तु चाचा का चेहरा कड़ा पड़ गया।

"उफ् मेरा पाइप ! हद हो गयी नीली। बर्दाश्त के बाहर है यह।"

नीली ने भी देखा तो उलझन में पड़ गयी। चाचा को समझाने लगी—

"चाचा, प्लीज, क्रोध मत करिये शेरू पर। आप अक्सर अपनी चीजें इधर-उधर रख कर भूल जाते हैं और फिर ढूँढ़ते फिरते हैं। शेरू ने इसे कहीं पड़ा पाया होगा तब आपके पास उठा कर ला रहा है। है न शेरू ?"

"नहीं, मैंने अपना पाइप मेज पर रखा था। अगर ये कुत्ते मेरे कमरे में गये होंगे तो"—चाचा ने दृढ़ता से कहा।

"शेरू कभी आपके कमरे में नहीं जाता चाचा। वह जानता है कि आप उसे पसन्द नहीं करते।"

चाचा ने पाइप को घुमा-फिरा कर देखा—"कम्बख्त ने इसे जगह-जगह से खुरच डाला है। नालायक ! कान खोल कर सुन लो नीली मैं अब तो इन्हें कार में पैर तक नहीं रखने दूँगा। ये घर में ही रहेंगे। पक्की बात है।"

"ओह चाचा कितनी ज्यादती करते हैं आप इन बेचारों के साथ।" नीली ने दुःखी हो कर कहा।

क्रोध भरे चाचा कमरे से बाहर चले गये। नीली ने ठंडी साँस भर कर शेरू को थपथपाते हुए कहा—

"एक पुराने पाइप के लिए इतना महाभारत मचाना क्या अच्छी बात है शेरू ? तुम भी बुड्ढे बन कर ऐसे ही न बन जाना। खैर कार चाचा की है जिसे चाहें बैठायें जिसे चाहें न बैठायें। मेरी मित्र रानू की जन्म दिन पार्टी न होती तो मैं भी तुम्हें छोड़ कर न जाती। जो भी हो तुम्हें तो आज घर पर रहना ही पड़ेगा।

शेरू ने कूँ कूँ किया। उसे अकेले घर में नीली को छोड़ कर रहना बिलकुल पसंद नहीं था। तभी उसने मुँह ऊपर किया और झटके के साथ खड़ा हो गया।

चाचा कुर्सी पर अखबार छोड़ गये थे। भूल गये थे शायद। वे अक्सर अखबार मोड़ कर बगल में दबा कर चलते थे। शेरू पूरी बात तो चाचा और नीली की नही समझा किन्तु इतना तो समझ ही गया कि चाचा उससे नाराज है और ये लोग कहीं बाहर जा रहे हैं उसे छोड़ कर। कितना अच्छा होता यदि वह उन्हें प्रसन्न कर लेता। उसने मौका देखा और मुड़ा हुआ अखबार धीरे से मुख में दबा कर उन्हें देने चला।

"समझ गयी। तुम अखबार चाचा को देने जा रहे हो न ? इसे यहाँ भूल कर अब चारों तरफ ढूँढेंगे। तुम दोगे तो वे जरूर खुश हो जायेंगे। बहुत समझदार बच्चे हो। जाओ।"

शेरू कमरे से बाहर निकल गया तभी बिल्लू भी उसे ढूँढता हुआ ऊपर आ रहा था। उसे देख कर वह भी पूँछ हिलाता हुआ पीछे दौड़ा मानो कह रहा हो—"रुक जाओ मेरे प्यारे बाप, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।" किन्तु शेरू गुर्राया—"वहीं रहो। मेरे साथ मत आओ।"

बिल्लू रुक गया। शेरू चाचा के पढ़ने के कमरे में गया। दरवाजा उढ़का हुआ था। धक्का दे कर वह जल्दी से अन्दर घुस गया। किन्तु यह क्या ? वहाँ चाचा नहीं कोई अजनबी खड़ा था। दरवाजे की तरफ उसकी पीठ थी। मुख पर वह मफलर लपेटे था और चाचा की मेज की ड्राअर में जल्दी-जल्दी कुछ ढूँढ रहा था। शेरू उसका मुँह नहीं देख पाया।

उस अजनबी आदमी ने मेज के ऊपर और अन्दर की सब चीजें उथल-पुथल कर डालीं थीं कुछ ढूँढ़ने के लिए। एकाएक खुशी की दबी-सी आवाज उसके मुख से निकली—"वाह मिल गयी !"

ठीक उसी समय शेरू अन्दर घुसा था। समझदार शेरू को यह समझते देर नहीं लगी कि यह आदमी मित्र नहीं कोई दुश्मन या गलत आदमी है। चाचा के दोस्त तो कभी इस प्रकार मुख छिपा कर अकेले कमरे में नहीं आते, न कमरे की चीजें छूते, उठाते हैं। ऐसे आदमी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह भी वह जानता था। मुँह का अखबार वहीं जमीन पर छोड़ कर गुर्रा कर उस अजनबी पर झपटा। आदमी ने पलट कर देखा तो डर से पीला पड़ गया। वह खतरा समझ गया। उसने जल्दी से एक कुर्सी उठा कर शेरू पर फेंकी और एक लिफाफा उठा कर खुली खिड़की की तरफ बढ़ा।

कुर्सी लगने से शेरू दर्द से दुहरा हो गया किन्तु हिम्मत नहीं हारी और उठ कर अजनबी को पकड़ने झपटा। किन्तु आदमी तब तक बाहर कूद चुका था। खिड़की का पल्ला पकड़ कर कूदने से एक पल्ला बन्द हो गया था। शेरू ने भी

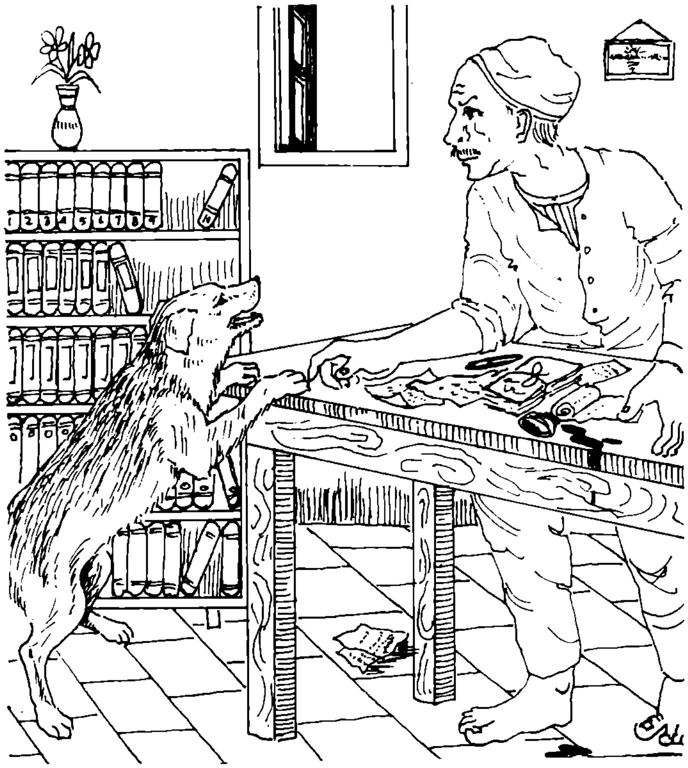

खिड़की से छलाँग लगा दी। एक पल्ला बन्द होने से तगड़ा एलसेशियन शेरू खिड़की के काँच से जा टकराया। शीशा उसकी पीठ को घायल करता हुआ टूट गया। किन्तु अपने घाव की परवाह न करता हुआ वह भी बाहर घास पर आदमी के पीछे कूद गया।

इधर जब चाचा पाइप धो कर पोंछते हुए अपने कमरे में पहुँचे तो कमरे की हालत देख कर वे चिल्ला उठे।

"नीली ! नीली ! जल्दी तो आओ यहाँ।"

चाचा की घबराहट की आवाज सुन कर नीली ने अपने हाथ का काम छोड़ा और—"कहाँ हो चाचा तुम ?"—कहती हुई नीचे भागी। कमरे में पहुँच कर सबसे पहले उसने देखा कि चाचा बिल्लू की गर्दन पकड़े मेज के पास खड़े थे। नीचे फटा हुआ अखबार पड़ा था। मेज की चीजें लुढ़की पड़ीं थीं। स्याही की दावात से स्याही नीचे लुढ़क रही थी। कलम, पेंसिल सब इधर-उधर बिखरी थीं। नीली कमरे की हालत देख कर भौचक्की और भयभीत हो गयी। चाचा बिल्लू को पकड़े क्रोध से दाँत पीस रहे थे।

"अरे बिल्लू यह सब क्या किया तूने ?" नीली ने दु:खी हो कर कहा। अब उसे भी विश्वास हो गया था कि यह सब काम बिल्लू ने ही किया है। उसे क्रोधित चाचा की पकड़ में देख कर उसका और किसी तरफ ध्यान ही नहीं गया। चाचा जब कमरे में घुसे तब बिल्लू मजे में अखबार फाड़ रहा था और मेज का सामान तो बिखरा पड़ा ही था। इसलिए चाचा का ध्यान भी दूसरी तरफ नहीं गया। दोनों बिल्लू को ही अपराधी समझ रहे थे। नीली की बात सुन कर चाचा ने कहा—

"क्या नहीं किया इसने ! मेरा पाइप काट-काट कर बर्बाद कर दिया। अखबार के चिथड़े कर दिये और मेज की हालत तो तुम देख ही रही हो।"

"लेकिन चाचा पाइप तो शेरू लाया था और वह कभी मेज पर चढ़ कर इस प्रकार चीजें उलट-पुलट नहीं कर सकता। इतनी समझ तो शेरू में भी है।"

नीलू के समझाने पर चाचा ने कहा—

"चलो, मैं मान लेता हूँ कि यह शेरू ने नहीं किया। किन्तु यह बदमाश बिल्लू तो कर सकता है। शेरू इसी से पाइप छीन कर लाया होगा।"

"जी नहीं, शेरू बड़ा समझदार है।"

चाचा फिर भड़क उठे शेरू की तारीफ सुन कर—

"क्या कहना है उसकी समझदारी की। तुम तो बिल्लू के लिए भी यही कहोगी। ले जाओ इसे मेरी आँखों के सामने से। इसकी कस कर पिटाई की जाय तो सब अक्ल आ जायेगी।"

फिर चाचा मेज के कागजों को इधर-उधर करते चिंता से बोले—"किन्तु नीली इन लोगों को चाहे जितना भी पीट लो मेरा तो जो नुकसान हो गया है वह तो कभी पूरा नहीं हो सकता। हाय ! अब क्या करूँ मैं ?"

नीली भी चिंतित हो उठी—"क्या कुछ खो गया चाचा ?"

बड़ी गंभीरता से चाचा ने कहा—"बहुत जरूरी चीज। तुम्हारी दादी की वसीयत जो इसी ड्राअर में रखी थी नहीं दिखायी दे रही है।"

दु:ख से उनका चेहरा मुरझा गया। नीली भी भय से पीली-सी पड़ गयी। सचमुच क्या इन कुत्तों ने —?

बात चिंता और भय की थी भी। कुछ वर्षों पहिले दादी, चाचा प्रताप अर्थात् अपने पुत्र से नाराज हो गयी थीं और अपने पुत्र का नाम जायदाद से काट दिया था। सब जानते थे कि चाचा को दादी एक पैसा भी अपनी सम्पत्ति का नहीं देगीं किन्तु मृत्यु से पूर्व उन्होंने इरादा बदल दिया। वे बेटे की सेवा और श्रद्धा से शायद प्रसन्न हो गयी थीं। अपनी पोती नीली के प्यार ने भी उनके विचार बदल दिये थे जिसकी माँ भी उसे छोटी-सी ही छोड़ कर मर गयी थी। नयी वसीयत के अनुसार सारी जायदाद उन्होंने पुत्र प्रताप और पौत्री नीली के नाम कर दी थी। इसके कारण चाचा के कई रिश्तेदार दुश्मन हो गये थे। यही वसीयत गायब थी। दु:ख से चाचा सिर पकड़ कर बैठ गये।

"यदि वसीयत नहीं मिलती, यदि उसे कुत्तों ने कहीं फाड़ कर फेंक दी तो हम बरबाद हो जायेंगे नीली। हम वैसे ही कर्ज से डूबे हुए हैं। हम भिखारी बन जायेंगे। उफ् अब मैं

क्या करूँ तुम्हीं बताओ नीली।"

नीली की आँखों में भी आँसू-भर आये। उसने बिल्लू की ओर देखा जो डर से दुम दबाये उसके पैरों के पास दुबका बैठा था। वह बोली—

"चाचा, यदि बिल्लू वसीयत का कागज बाहर ले गया होगा तो शेरू जरूर उसे वापस ले आयेगा।"

चाचा फिर भड़क उठे। व्यंग्य से बोले—"जरूर ले आयेगा, उसके टुकड़े तो ले ही आयेगा।"

तभी कुछ आवाज सुन कर नीली ने पलट कर देखा शेरू दाँतों में एक कागज का पुलिन्दा-सा पकड़े हाँफता हुआ तेजी से आया और नीली के पास खड़ा हो गया। नीली खुशी

से चीख पड़ी, "अरे यह तो वसीयत है !"

कहने को तो चोर खिड़की से कूद कर कमरे से बाहर निकल गया था और शेरू काँच से घायल हो कर कुछ देर रुक भी गया था। किन्तु एक या दो मिनट ही का फर्क पड़ा था। शेरू ने तेजी से झपट कर उसे जा पकड़ा। चोर अपने को बचाने के लिए कार की गैरेज में जा घुसा। दरवाजा केवल उढ़का हुआ था। अन्दर घुस कर वह भीतर की सिटकनी लगाने की कोशिश कर ही रहा था कि शेरू पहुँच गया।

गुस्से से गुर्राता शेरू चोर के हाथ से वसीयत का कागज छीनना चाहता था और चोर उसे बचाने के लिए हाथ ऊपर किये था। शेरू पिछले पंजों के बल खड़ा हो गया। वह उस आदमी के बराबर ही पहुँच गया था। वह जानता था कि कागज चाचा का है और उसे उसको वापस ले जा कर चाचा को देना है। चोर घबरा गया—"हिश ! हिश ! दूर हट" कह कर वह इधर-उधर कूद कर स्वयं को बचाने की कोशिश कर रहा था। किन्तु शेरू ने झपट कर कागज पकड़ ही लिया दाँतों से। चोर ने उसे अपनी ओर खींचा तो कागज का एक टुकड़ा शेरू के मुख में और आधा आदमी के हाथ में रह गया। हड़बड़ाहट और बचने की कोशिश में उसका हाथ कार की खिड़की के अन्दर चला गया और कागज का टुकड़ा कार के अन्दर गिर गया। शेरू एक मिनट भी गवाँये बिना मुँह का कागज ले कर चाचा को देने के इरादे से गैरेज से निकल कर घर के अन्दर दौड़ गया। बेचारा इतना नहीं समझता कि वसीयत का आधा ही टुकड़ा उसे मिला है। उसने समझा कि चोरी की चीज तो उसे मिल ही गयी है और इसी की लड़ाई तो उसने जीती है।

इधर चोर यह देख कर कि उसकी मेहनत बेकार गयी वह कुत्ते के पीछे दौड़ा। उसने सोचा कुत्ते से किसी प्रकार कागज छीन लें तो कार के अन्दर पड़ा कागज भी वह बाद में आ कर निकाल लेगा। उसने शेरू का पीछा किया किन्तु शेरू उससे तेज दौड़ रहा था। वह अन्दर घुस गया। खिड़की के पास खड़े हो कर चोर ने नीली और चाचा को बात करते सुन लिया। अब अन्दर जाने में खतरा था।

वह बड़बड़ाता और गुस्से से दाँत पीसता बाहर ही रह गया। वह मुड़ कर फिर गैरेज की तरफ कार में से आधी वसीयत ही उठाने के लिए मुड़ा। किस्मत उसके खिलाफ थी शायद। उसे किसी के आने की आहट सुनायी दी। वह खम्भे की आड़ में छिप कर खड़ा हो गया। चौकीदार आ रहा था।

यह एक संयोग ही था कि कार साफ करने के लिए चौकीदार ने गैरेज का ताला खोला था तभी किसी ने उससे मिलने वाले ने फाटक से आवाज लगायी। वह दरवाजा ऐसे ही उढ़का कर बाहर चला गया। उसने सोचा कि फाटक पर तो वह खड़ा ही है अभी वापस आ जायेगा। बँगले का अहाता बड़ा होने से फाटक काफी दूर था गैरेज से। वापस आने पर उसने गैरेज का दरवाजा पूरा खुला देखा तो चौंक गया। उसने सोचा मालिक किसी काम से आये होंगे। वह बड़बड़ाया—

"लापरवाही की भी हद है ! भला दरवाजा इस तरह खुला छोड़ना चाहिए। कुछ हो जाता तो सारा दोष मेरे ऊपर आ जाता।" लेकिन सचमुच कुछ हो गया है यह बेचारे को नहीं मालूम था।

उसने दरवाजा बन्द करके ताला लगा दिया। चोर मजबूर-सा छिपा खड़ा देखता रहा। कार में पड़ी आधी वसीयत भी उसके हाथ से निकल गयी। उसके सब परिश्रम पर पानी फिर गया। निराश हो कर वह बगीचे के पेड़-पौधों

की आड़ लेता हुआ बँगले से बाहर कूद कर निकल गया।

"नीली जाओ वसीयत को ढूँढ़ो, बिना इसके हम कहीं के नहीं रहेंगे। इन बदमाशों ने ही उसे कहीं फेंक दी है।"

किन्तु नीली चाचा की बात पर ध्यान न दे कर खिड़की की तरफ आश्चर्य से देख रही थी जिसके दोनों पल्ले बाहर की ओर खुले थे। वह सोच रही थी कि खिड़की तो उसने बन्द कर दी थी फिर यह कैसे खुली। उसी समय शेरू अन्दर आया था। वसीयत हाथ में लेते ही वह दुःख से बोली—"उफ्, लेकिन यह तो उसका एक टुकड़ा ही है।"

चाचा ने जल्दी से नीली के हाथ से कागज झपट लिया। शेरू सोच रहा था कि चाचा कागज पा कर उसे शाबाशी देंगे। उसकी पीठ थपथपायेंगे किन्तु चाचा तो क्रोध से लाल आँखें किये उसे घूर कर देखने लगे। वह सहम कर नीली के पास खड़ा हो गया। दया से उसकी तरफ देख कर नीली ने पूछा—

"तूने यह कागज कहाँ पाया शेरू ? चल दिखा मुझे वह जगह।" वह बाहर निकलने को बढ़ी। शेरू भी दरवाजे से निकलने को हुआ कि नीली रुक गयी। उसने खिड़की से झाँका। टूटे काँच के टुकड़े बाहर बिखरे पड़े थे।

"चाचा जरूर कोई अन्दर आया था और इसी खिड़की से कूद कर भाग गया है। मेरी बात मानो चाचा।"

किन्तु चाचा को उसकी बात पर ध्यान नहीं था। वह सोच रहे थे कि नीली शेरू को निर्दोष साबित करना चाह रही है। हमेशा ही वह उसका पक्ष ले कर उसे बचाने की कोशिश करती है। नीली उस समय न होती तो वे शेरू और बिल्लू दोनों की अच्छी मरम्मत करते। नीली ने निराशा से सिर हिलाया और शेरू के साथ बाहर निकल गयी वसीयत ढूँढ़ने।

शेरू जिस रास्ते से चोर बाहर निकला था उसी तरफ सूँघता-सूँघता दौड़ रहा था किन्तु चोर तो भाग कर निकल चुका था। नीली भी बेकार में उसके पीछे दौड़ रही थी। उसने पूछा—

"तूने यह कागज कहाँ पाया यह बता ?"

शेरू चोर को न पा कर परेशान-सा गैरेज के पास आकर खड़ा हो गया। वहाँ ताला लटका था। दोनों को कुछ समझ में नहीं आया। उसने खिड़की से गैरेज के अन्दर झाँक कर देखा। वहाँ कुछ भी नहीं दिखायी दिया। लेकिन शेरू पंजे से बराबर दरवाजे को खरोंच रहा था जिसका अर्थ नीली को समझ में नहीं आया। तभी चाचा ने आवाज लगायी—"क्या कर रहे हो तुम लोग बाहर ? वहाँ नहीं मिल रहा है तो यहाँ अन्दर आकर ढूँढो।"

"चाचा शेरू मुझे यहाँ लाया है किन्तु यहाँ तो ताला पड़ा है लेकिन है कोई बात जरूर।"

"तुम दोनों पागल हो। उसकी हर बात में तुम्हें कोई जरूरी बात लगती है। अब अन्दर आ जाओ ईश्वर के लिए।"

चाचा कमरे से बाहर आ गये थे। नीली और शेरू भी अन्दर आ गये। वहाँ बिल्लू कोने में खड़ा कूँ कूँ कर रहा था। नीली ने सहम कर पूछा—"तुमने क्या इसे मारा है चाचा ?"

"हाँ, हाँ, मारा है। इन दोनों के मारे मैं अब परेशान हो गया हूँ। जल्द ही इनसे छुटकारा ले लूँगा अब।"

"क्या मतलब ? तुम्हारा इरादा क्या इन्हें किसी को देने का है ?"

चाचा ने कुछ झेंपते हुए से कहा—"मुझे यही करना पड़ेगा अब।"

किन्तु नीली तन कर खड़ी हो गयी—"नहीं, तुम यह कभी नहीं कर सकते। इन्हें मुझसे दूर करके तुम इन पर और मुझ पर दोनों पर अन्याय करोगे। तुम क्या इतने कठोर हो सकते हो ? मुझे पूरा यकीन है इस बेचारे बिल्लू ने वसीयत हरगिज नहीं फाड़ी है।"

"तब किसने फाड़ी है मैंने या तुमने ? मुझे इसका दूसरा टुकड़ा मिलना ही चाहिए तब शायद मैं अपना इरादा बदल दूँ। नहीं तो अच्छी तरह जान लो कि इन्हें घर में नहीं रहने दूँगा।"

चाचा झल्लाते हुए ऊपर चले गये।

पूरे दिन वसीयत की तलाश में नीली और चाचा परेशान रहे। आखिर यह तय किया कि पार्टी में चलना है। चिंता से कुछ छुटकारा ही मिलेगा। मन बहल जायगा। शाम को जब चाचा कार बाहर निकाल रहे थे शेरू उत्सुकता से देख रहा था। वह जब-जब भी उसके नजदीक जाने की कोशिश करता चाचा उसे छड़ी से दूर हटा देते घुड़क कर।

"समझ में नहीं आता कि इन जानवरों को कार में बैठने में क्या मजा आता है।"

लेकिन शेरू नाक से सूँ-सूँ करता बार-बार कार की तरफ बढ़ रहा था। आखिर उसने अपने अगले पैर कार के फूट-बोर्ड पर जमा दिये और अन्दर झाँक कर सूँघने लगा। उसे पता लग गया कि चुराई हुई चीज अन्दर है। वह चाचा को भी यह बताना चाहता था। इधर चाचा उसकी हरकतों से बेहद चिढ़ रहे थे। शेरू ने दीनता से उनकी तरफ देखा। लेकिन उन्होंने उसे समझने की कोशिश नहीं की। हाथ के झाड़न को जिससे वे कार के दरवाजे को पोंछ रहे थे उसे कार के अन्दर ही फेंक कर वे शेरू को गले के पट्टे से पकड़ कर घर के अन्दर ले जाने लगे। झाड़न कार में जहाँ वसीयत पड़ी थी ठीक उसी पर गिरा और उसे पूरी तरह ढँक दिया। शेरू एक बार फिर उधर देख कर जोर से

भूँका। किन्तु वह चाचा की मजबूत पकड़ से मजबूर था। तभी नीली तैयार हो कर बाहर निकली।

"ले जाओ, इस बदतमीज कुत्ते को अन्दर बन्द कर दो।"

नीली ने उसे ले जा कर अन्दर कर दिया और बाहर से दरवाजा बन्द कर के कार में बैठ गयी। बिल्लू मार खा कर पूरे दिन सहमा-सहमा-सा था। चुपचाप पड़ कर सो गया किन्तु शेरू बेचैन-सा बराबर पूरे घर का चक्कर लगाने लगा। हार कर वह खिड़की पर मुँह रख कर बाहर कार को जाते देखने लगा। इस प्रकार अकेले घर में रह कर तो भूखे होने पर भी वह खाना छोड़ देता था। आज का पूरा दिन उसका खराब बीता था। उसकी पीठ का घाव भी दर्द कर रहा था। किन्तु बड़े बालों में किसी को वह दिखायी नहीं दिया। किसी का ध्यान भी उधर नहीं गया।

चाचा और नीली को गये अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि चाचा के कमरे में कुछ खटका हुआ। शेरू धीरे से कमरे के उढ़के दरवाजों को ढकेल कर अन्दर आकर खड़ा हो गया। सुबहवाला आदमी फिर वसीयत लेने आया था। खिड़की के टूटे काँच से उसने खिड़की खोल ली थी। घर के लोग बाहर चले गये हैं देख कर वह इत्मीनान से अपना काम करने आया था। कुत्ते की आदत ऐसे समय भौंकने की होती है किन्तु शेरू समझदार था भौंका नहीं। खिड़की के नीचे जा कर चुपचाप मुँह ऊपर करके खड़ा हो गया। चोर को कुछ मालूम नहीं हुआ। वह तो समझे था कि हमेशा की

तरह कुत्ते भी कार में गये होंगे। उसने खिड़की से कूदने के लिए पैर लटकाये ही थे कि शेरू ने उसकी टाँग पकड़ कर खींच ली। चोर घबड़ा गया। शेरू ने गुस्से से पूरे दाँत उसके पैर में गड़ा दिये थे। इस बार वह बहुत गुस्से में था उससे सुबह का बदला लेना चाहता था। आदमी ने बचने के इरादे से खिड़की के पास रखी किताबों की बड़ी-सी रेक पकड़ ली। किन्तु शेरू के खींचने से वह आदमी तो नीचे आकर गिरा ही। वह रेक भी किताबों सहित उसके सिर के ऊपर आ गिरी। भारी रेक और ढेर-सी किताबें ! सिर पर भारी चोट लगने से वह गिरते ही कराह कर बेहोश हो गया। शेरू ने एक दो-बार उसके पैर को पकड़ कर झकझोरा किन्तु उसे तो होश ही नहीं था। पैर से काफी खून भी निकल आया था। शेरू उसके खड़े होने का इन्तजार करने लगा। उसने उसके पास जा कर सूँघा भी। वह परेशान था कि यह उठता क्यों नहीं। वह हिलता-डुलता तो वह उससे लड़ता भी किन्तु इस सोये हुए आदमी के साथ उसे क्या करना चाहिए उसे समझ में कुछ नहीं आ रहा था। चारों तरफ किताबें बिखरी पड़ी थीं। कुछ आदमी के ऊपर भी पड़ीं थीं। तभी उसे नीली की याद आयी। वह खुली खिड़की से कूद कर बाहर आ गया। वह कहाँ गयी है, यह तो वह नहीं जानता था किन्तु जिस ओर धुआँ छोड़ती कार गयी थी वह उसी ओर दौड़ पड़ा।

जाड़े की शाम ! बड़ी जल्दी देखते-देखते सूरज डूब जाता है और कुहरा छा जाता है। चाचा और नीली को चले अभी थोड़ी ही देर हुई थी और थोड़ी दूर गये भी थे कि अँधेरा छा गया। पुरानी कार घर्र ···· घर्र करती धुआँ उगलती चली जा रही थी। चाचा कार तेज चला रहे थे जिससे पार्टी में समय से पहुँच जायँ। उन्हें समय का बहुत ध्यान रहता था। घर से चलने में भी देर हो गयी थी।

"चाचा हम लोग जरा धीरे चलें तो अच्छा होगा।"

नीली को कार की तेज रफ्तार से हमेशा डर लगता था। इतने में सामने से एक कार आती दिखायी दी। उसकी हेड लाइट से चाचा की आँखें चौंधिया गयीं। उन्होंने अपनी कार बगल में करने की कोशिश की। सड़क ऊबड़-खाबड़ और ढलवी थी। सड़क से हट कर ढलान पर कार उतर गयी। सामनेवाली कार तेजी से आगे निकल गयी। उसके जाने के बाद चाचा ने अपनी कार फिर सड़क पर लाने की कोशिश की। आगे-पीछे करने और अच्छी तरह धुँधुलका में दिखाई न देने के कारण कार का पिछला पहिया एक गड्ढे में फँस गया। झटका लगने से नीली का सिर सामने बोर्ड से जा टकराया। उसके मुख से चीख निकल गयी। चाचा भी डर गये। उन्होंने तुरन्त कार रोक दी। "चोट तो नहीं लगी नीली ?" चाचा ने चिंता से पूछा।

नीली भी घबरा गयी थी—"मुझे तो नहीं लेकिन चाचा आपको तो कुछ नहीं हुआ ?"

"नहीं बेटा मुझे तो कुछ नहीं हुआ। मै तो तुम्हारे लिए घबरा गया था। बाल-बाल बचे।"

सचमुच उस ठंड में भी चाचा के माथे पर पसीना आ गया था। दोनों कार से बाहर निकल आये।

"अभी हम घर से बहुत दूर नहीं आये हैं। घर पैदल भी वापस जा सकते है। कार निकालने की कोशिश करना बेकार है। हाँ, यदि कोई कार इधर से निकले तो अभी भी पार्टी में पहुँच सकते हैं। थोड़ी देर रुक कर देख लेते हैं।"

उन्होंने तसल्ली देने के लिए नीली के कंधे को प्यार से थपथपाया और फिर कार के अन्दर ही बैठ कर दोनों किसी कार के आने की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन जब कुछ देर तक कोई कार नहीं आती दिखायी दी तब नीली बोली—

"अच्छा हो हम घर वापस चलें। इधर तो किसी कार के आने के लक्षण नहीं दिखायी देते चाचा !"

"ठीक है।" चाचा ने अपनी तरफ का दरवाजा खोला और नीली ने अपनी तरफ का। तभी दूर से कुत्ते के भौंकने की आवाज आयी।

दूसरे ही क्षण शेरू हाँफता-हाँफता पहुँच गया।

चाचा ने कहा—"उफ्—फिर शेरु।"

नीली लेकिन आश्चर्य से कार से बाहर निकल आयी। शेरू उछल कर अन्दर चला गया। बड़ी देर में उसे मौका मिला था। सारे दिन वह परेशान रहा था। उसने झपट कर झाड़न का कपड़ा हटा कर वसीयत का कागज मुँह से उठा लिया। यह सब इतनी जल्दी किया उसने कि चाचा और नीली न कुछ कर सके न समझ सके। नीली जरूर मन ही मन शेरु के आने के कारण को समझने की कोशिश कर रही थी। उसके मुख में कागज देख कर वह खुशी से चिल्ला पड़ी। —"चाचा वसीयत।"

चाचा ने चौंक कर देखा। वे भी प्रसन्नता से चीखे—"कमाल है ! यह तो सचमुच वसीयत है। शेरू आज तो तूने हमें डूबते से बचा लिया।"

उन्होंने शेरू को प्यार करना चाहा किन्तु उसे तो अभी बहुत कुछ करना था। वह कार से बाहर निकल कर घर की तरफ मुँह करके भौंकने लगा और उधर ही भागने लगा। बीच-बीच में रुक-रुक कर मुड़ कर पीछे देखने लगता और अपने पीछे आने को दोनों को इशारा करता।

"चाचा शेरु हमें घर चलने का इशारा कर रहा है। जरूर कोई खास बात है।"

"चलो-चलो।" चाचा ने कहा और फिर दोनों शेरु के पीछे-पीछे भागने लगे। अभी फाटक खोल कर वे अन्दर घुसे ही थे कि शेरू खिड़की की तरफ उछल-उछल कर भूँकने लगा। दोनों ने देखा कि एक आदमी खिड़की से निकला और चहार दीवारी पर चढ़ कर बाहर गली में कूद गया। शेरु ने भी पीछा किया और दीवार पर चढ़ने की कोशिश की किन्तु वह बहुत ऊँची थी। चोर भाग चुका था। उसे पकड़ना अब संभव नहीं था। चाचा ने शेरु को वापस बुला लिया। इत्तफाक ही था कि उस दिन चौकीदार रात को दस बजे तक की छुट्टी ले कर चला गया था। चाचा ने सोचा कि पार्टी से वे लोग जल्दी आ जायेंगे, उसे छुट्टी दे दी। फिर कभी किसी तरह की घटना आज तक बंगले में कभी नहीं हुई थी। इसलिए किसी प्रकार का डर भी किसी को नहीं था।

आदमी को भागते देख और खिड़की खुली देख कर चाचा ने फिलासफर की तरह सिर हिलाते हुए कहा—"समझ गया, अब समझ गया सब। तो यह मामला था ? हमें बर्बाद करने की चाल थी किसी की। इस आदमी को वसीयत चुराने के लिए किसी ने भेजा था और मैं इन वफादार कुत्तों को दोषी बना रहा था। शेरु आज तूने ही हमें बर्बाद होने से बचाया है। लाख लाख धन्यवाद है भगवान् का ! नीली आज तेरे इन शैतानों ने कमाल का काम कर दिया है। अब कोई चिन्ता की बात नहीं। मैं अभी फोन करके टैक्सी बुलाता हूँ। हम जरूर पार्टी में जायेंगे और

प्यारे शेरू और बिल्लू को भी ले जायेंगे। —"चलोगे न शेरू ?"

अपना नाम सुन कर और चाचा को खुश देख कर शेरू तो चाचा पर उछलने लगा, पूँछ हिलाने लगा। चाचा ने भी उसका मुँह पकड़ कर खूब प्यार किया। शेरू को दिनभर की मेहनत का इनाम मिल गया। नीली की आँखों में तो खुशी के आँसू झलक आये थे। वह बिल्लू को गोद में लिये प्यार कर रही थी।

टैक्सी से ये सब लोग पार्टी में पहुँचे। अपनी कार के लिए कारखानेवालों से कहते गये।

पार्टी में पहुँच कर शेरू के कारनामें सुन कर सब उसकी प्रशंसा कर रहे थे। सब उसके पास जा-जा कर उसे थपथपा रहे थे। सब ने अपनी-अपनी प्लेट से उसे अच्छी-अच्छी चीजें खाने को दी। उस दिन की पार्टी का शेरू खास मेहमान था। उस दिन का हीरो बन गया था वह !

अपने ही घर में

"राकेश कुछ और लो न यार ! तुमने तो कुछ खाया ही नहीं। क्या अम्मी के हाथ की सेवईं तुम्हें पसन्द नहीं आयी ?"

"कितना खिलाओगे नईम ? क्या आज यहीं पर मेरा बिस्तर बिछाना है ? देख रहे हो न कि मेरा पेट तन कर फुटबाल बन गया है।"

गोल-मटोल स्वस्थ राकेश ने कुरता उठा कर अपना पेट दिखाना चाहा कि नईम के अब्बा ने उसका हाथ रोक पीठ ठोंक दी-हँस कर बोले—"बस, बस, बेटे नजर लग जायेगी तुम्हारे पेट को। इसे ढँक कर ही रखो। अल्लाह तुम्हारी सेहत को बरक्कत दे !"

नईम के घर राकेश ईद की मुबारकवाद देने आया था। ईद को गुजरे तो तीन दिन बीत चुके थे किन्तु राकेश शहर से बाहर था। आज सुबह ही लौटा था। घर उसका दूर था इसीलिए तीन बजे ही वह नईम से मिलने चला आया जिससे शाम होते ही घर लौट जाय। राकेश अक्सर यहाँ आता रहता है। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। अच्छे दिली दोस्त हैं। नईम के माता-पिता भी राकेश को बहुत प्यार करते हैं। बिलकुल अपने लड़के की तरह मानते हैं। इत्तफाक से दोनों दोस्तों के पिता भी एक ही आफिस में आफिसर के पद पर काम करते हैं। नईम के अब्बा यद्यपि पुराने विचारों के कट्टर मुसलमान हैं लेकिन राकेश से घर में कोई परदा नहीं करता। नईम की बहन भी राकेश को भाईजान कह कर बुलाती है। राकेश भी उसे अपनी सगी बहिन की तरह ही मानता है। कभी उसे "बिल्ली" कह कर चिढ़ाता है तो कभी "छिपकली"। वह भी उसे मोटू कह कर उसका मजाक उड़ाती है। तब राकेश सचमुच चिढ़ जाता है—

"ऐ बिल्ली सुन ले कान खोल कर यदि मुझे मोटू कहा तो मैं तेरी शादी पाकिस्तान के ही एक मोटू मियाँ से कर दूँगा। इतनी दूर से तुझे न मैं और न नईम कोई बुलाने भी नहीं जायेगा।"

नईम की बहिन, फहमीदा तब चिढ़ कर अपनी अम्मी से शिकायत कर देती। अम्मी कहती—"पगली क्यों बुरा मानती है इस शैतान की बात का। हम लोग इसके लिए भी इसी की तरह एक गोलमटोल मारवाड़ी सेठ की लड़की ढूँढ कर लायेंगे। अच्छी जोड़ी रहेगी न ?"

सब लोग खिलखिला पड़ते। फहमीदा ताली पीटने लगती।

उस दिन राकेश को खाते और बातें करते काफी देर हो गयी। छः बजने को आये। शाम घिरने लगी। राकेश ने कहा—

"नईम अब घर जाना चाहिए। इतने दिनों में मैं बाहर से आया हूँ, अभी तो माँ के पास कुछ देर बैठ भी नहीं पाया।"

दोनों घर से बाहर निकले। लेकिन यह क्या ! सड़क पर कुछ मुसलमान लाठी हथियार लहराते शोर मचाते चले आ रहे थे। दंगा हो गया था। मुसलमानी मुहल्ला था। नईम

ने खतरा भाँप लिया। अभी किवाड़ खोल कर ड्योढ़ी नहीं लाँघी थी उन्होंने। राकेश का हाथ पकड़ कर नईम ने उसे अपनी आड़ में कर के कमरे में धकेल दिया। राकेश कमरे में फर्श पर जा गिरा। दो मिनट नईम ने अपनी शक्ल बाहर वालों को दिखा कर खुद भी अन्दर घुस कर किवाड़ लगा लिये। सड़क पर घूम रहे गुंडों की नजर उस पर पड़ी। मुसलमान भाई है, सोच कर आगे बढ़ गये। नईम ने राकेश को छिपाने में इतनी जल्दी की थी कि किसी की नजर उस पर नहीं पड़ी नहीं तो भगवान् जाने क्या होता।

खतरे का अन्दाज लगा कर नईम का दिल बुरी तरह धड़क रहा था। अन्दर आकर उसने कहा—

"चोट तो नहीं लगी राकेश ?"

लेकिन वह तो भौचक्का-सा उसका मुँह देख रहा था। यह सब इतनी जल्दी हुआ था कि सीधे-सादे राकेश को कुछ समझ में ही नहीं आया। वास्तव में सब अन्दर किवाड़ बन्द किये बैठे थे। जब राकेश जाने लगा तो नईम ने ही आगे बढ़ कर किवाड़ की सिटकनी खोली थी। वही पहले बाहर निकला था। राकेश तो अम्मीजान से आदाब करने में दो कदम पीछे ही था। कहीं किसी मुसलमान की उस पर नजर न पड़ जाय, नईम ने उसे जोर से वापस कमरे में ढकेल दिया था। उसे उठा कर नईम की अम्मी ने कुर्सी पर बिठाया। दो-चार मिनट तो किसी को कुछ अन्दाज ही नहीं लगा। किन्तु अब सब शीशे की तरह साफ था। बाहर "मारो-काटो" का शोर हो रहा था। हिन्दू-मुसलमानों का झगड़ा शुरू हो गया था। खिड़की-दरवाजे सब बन्द करके पूरा घर चुपचाप एक कमरे में आ बैठा।

नईम घबरा रहा था राकेश के लिए। यदि किसी को मालूम हो गया कि एक हिन्दू लड़का मुसलमान के घर में बैठा है तो गजब हो जायेगा। ये जंगली मजहब और धर्म के अंधे ऐसे दंगे के समय अपना-पराया सब भूल जाते हैं। जिन्दगी भर की दोस्ती भूल कर ये एक-दूसरे की पीठ में छुरा भोंकने में जरा भी नहीं हिचकते।

राकेश का भी घबराहट से बुरा हाल था। उसकी माँ क्या सोच रही होगी। क्या उसके मुहल्ले में भी दंगा हो गया होगा ? तब तो माँ और पिता जी राकेश के लिए छटपटा रहे होंगे। माँ और दादी जरूर बिलख-बिलख कर रो रही होंगी। कहीं पिता जी उसे ढूँढने बाहर न निकल पड़ें। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। अजीब-सा सन्नाटा छाया था कमरे में। रात के आठ बज गये। शोर कुछ कम हो चला था। बाहर पुलिस का सायरन सुनायी दिया। पुलिस की जीप दौड़ रही थी। स्थिति शायद वश में हो गयी थी। कर्फ्यू लगा दिया गया था। घर में यदि कोई नहीं घबराया था तो वह नईम के अब्बा थे। वे दूसरे कमरे में फोन पर बैठे बराबर कोतवाली से सम्बन्ध मिलाये थे। जब यह पता लग गया कि अब शहर की हालत ठीक है, झगड़ा बन्द हो गया है तो वे इतमीनान से उठे। खतरा टल चुका था। उन्होंने कोतवाली फोन करके अपने दोस्त दरोगा जो हिन्दू ही था उसको राकेश के बारे में बताया।

"दरोगा साहब राकेश मेरे घर में हैं। खतरे से बाहर है। मेरे बेटे की तरह मेरे पास हिफाजत से है किन्तु उसके माँ-बाप का क्या हाल होगा इसका अन्दाज एक बेटे का बाप होने के नाते मैं लगा सकता हूँ इसलिए या तो आप आ कर उसे अपने साथ उसके घर पहुँचा दें या उसके घर किसी तरह खबर कर दें। उसके बाप से कहें कि उनका बेटा मेरे पास है। उसका बाल भी बाँका नहीं होगा। जब तक मेरा नईम जिन्दा है राकेश भी सब खतरे से बाहर है।"

"मेरे सच्चे मुसलमान भाई मैं आपको यहीं से प्रणाम करता हूँ। आप एक सही इंसान हैं। जब तक आप जैसे हिन्दू या मुसलमान भारत में हैं कोई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं अभी एक आदमी राकेश के घर भेजता हूँ। उनकी जैसी इच्छा होगी आप को बताऊँगा।"

फोन रख कर मुस्कराते हुए नईम के अब्बा अब उस कमरे में आये जहाँ सब लोग डरे सहमे से बैठे थे। उन लोगों को कुछ पता नहीं था कि फोन पर किससे और क्या बात हो रही थी।

"अरे क्या मनहूसियत छाई है यहाँ ? बेगम जरा गरम चाय तो बनाओ सब लोगों के लिए। कितनी देर से कुछ खाया-पिया नहीं।"

ताज्जुब से उनका मुख देखती हुई हिचकती हुई नईम की अम्मी चुपचाप चाय बनाने के लिए उठ कर रसोई घर में चली गयीं। नईम के अब्बा ने एक रहस्य भरी दृष्टि से राकेश को देखा। राकेश कुछ समझ नहीं पाया कि वे क्यों इतनी गम्भीरता से उसको देख रहे हैं—"हे भगवान् ! क्या इनके मन में भी हिन्दू और मुसलमान का फर्क आ गया है ? इतनी देर तक ये कहाँ बैठे थे ? चाय बनाने के बहाने से क्या इन्होंने अम्मी को यहाँ से हटा दिया है ? सुनते हैं मजहबी दंगों में कोई किसी का नहीं होता। पुराने-से-पुराना रिश्ता ये लोग ताक पर रख देते हैं। मैं कहाँ आ फँसा ? हे राम !"

नईम के अब्बा आगे बढ़ कर उसके पास आकर खड़े हो गये। वह मुस्कराये और उसकी पीठ को थपथपाते हुए बोले—"कहो बेटे राकेश क्या हाल है ? एक मुसलमानी मुहल्ले में एक मुसलमान के घर में बैठे हो यही सोच रहे हो न कि कहीं कुछ हो न जाय। अपनी जान का डर लग रहा है ?"

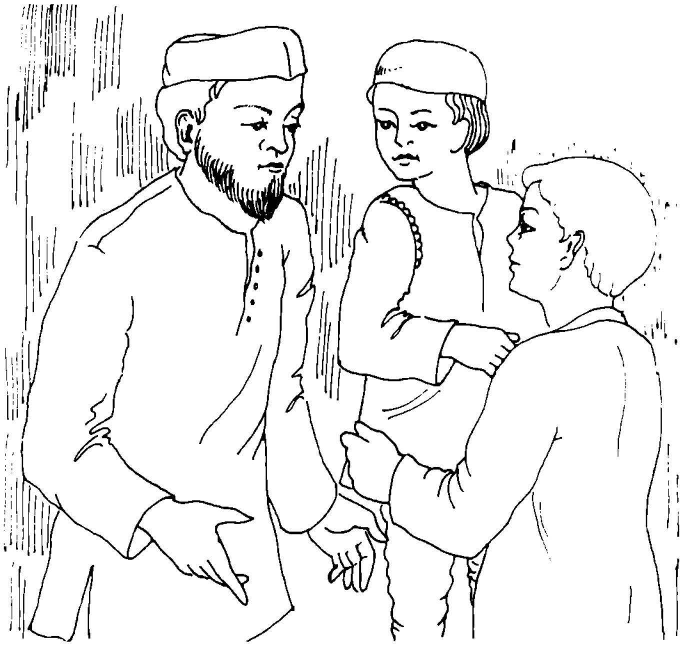

राकेश घबरा कर उठ खड़ा हुआ। जैसे स्वप्न देखते-देखते चौंक पड़ा हो। उसने नईम के अब्बा के मुख की ओर देखा जैसे उसने कुछ नहीं सुना और न समझा हो। उसकी हालत देख कर अब्बा को हँसी भी आ रही थी और दया भी। उन्होंने उसे पकड़ कर छाती से लगा लिया।

"पगले अपने ही घर में, अपनों के ही बीच बैठ कर भी कोई तेरी तरह घबराता है ? क्या तू अभी तक हम लोगों को नहीं पहिचान पाया ? लाख हिन्दू-मुसलमानों का झगड़ा या दंगा हो लेकिन अपने घर में हम तुझ पर आँच नहीं आने दे सकते। जब तक हममें से कोई भी जिन्दा है तुझे कोई खतरा नहीं हो सकता।"

राकेश ने दोनों हाथों से नईम के अब्बा को लपेट लिया था। घबराहट और भय की हालत में अब्बा के प्यार के बोध ने उसे सचमुच रुला दिया। इतने में फोन की घंटी बजी। अब्बा ने दौड़ कर उठाया। दरोगा साहब बोल रहे थे—

"भाई जान जरा राकेश को बुलाइए अपने पिता जी से बात कर लें। मैं उन्हीं के मुहल्ले से बोल रहा हूँ।"

राकेश ने फोन पकड़ा—"बेटे राकेश, ईश्वर को शत-शत धन्यवाद दो कि आज इस नाजुक घड़ी में तुम नईम के घर में हो।"

राकेश ने पूछा—"पिता जी क्या मैं घर आ जाऊँ ?"

"अरे नहीं पगले। जितना सुरक्षित तू भाईजान के घर में है उतना तो अपने घर में भी नहीं रह सकता। समझ ले कि तू अपने पिता के ही घर में है।" उन्होंने फोन रख दिया।

राकेश ने सिर उठा कर देखा। दरवाजे पर अम्मी चाय की ट्रे लिये खड़ी मुस्करा रही थीं। सबका डर और घबराहट समाप्त हो चुकी थी। फहमीदा ने कहा—

"क्यों भाई नईम ये मोटे इतने डरपोक क्यों होते हैं ?"

राकेश घूँसा तान कर मारने दौड़ा—"ठहर बिल्ली कुछ ज्यादा ही......."

फहमीदा जीभ निकाल कर उसे चिढ़ाती हुई दूसरे कमरे में भाग गयी।

गुलमुहर

"क्यों रो रहा है बेटा ?"

सेठानी ने बच्चे के कंधे पर हाथ रख कर प्यार से पूछा। बच्चे ने आँसू भरी आँखों से सिर उठा कर सेठानी की तरफ देखा। अपनी मैली कमीज से आँखे पोंछते-पोंछते वह और सिसक पड़ा।

सेठ रामरतन और उनकी पत्नी आशा देवी रोज सुबह घूमने जाते थे। अपनी कोठी से लगभग एक किलोमीटर जाना और लौटना उनका नित्य का नियम बन गया था। आज लौटने में कुछ देर हो गयी थी। पार्क में दोनों सुस्ताने के लिए बैठ गये थे। जब घर वापस जाने के लिए उठ कर सड़क पर आये तब चाय की दुकान के सामने खड़े लगभग आठ या नौ वर्ष के एक बालक को रोते देख कर रुक गये। लड़के के गन्दे गालों पर आँसू की लकीरें बन गयीं थीं। आशा देवी दयावश उसकी ओर बढ़ गयीं। सेठानी की सहानुभूति से लड़के का मन और भर गया और वह सिर नीचा कर फफक कर रो पड़ा। सेठानी ने उसका मुँह पकड़

कर ऊपर उठाया। बच्चे के मुख से रुलाई के कारण शब्द नहीं निकल रहे थे।

"क्या नाम है तेरा ? रो क्यों रहा है ?" सेठानी ने कई प्रश्न एक साथ कर डाले। लड़के ने बड़ी मुश्किल से अपनी रुलाई रोक कर धीरे से कहा—"नंदलाल।"

"कहाँ रहता है ?"

उसने थोड़ी दूर पर एक छप्पर की टूटी-सी कोठरी की ओर इशारा किया । "क्या करते हैं तेरे माता-पिता ?" इस प्रश्न पर लड़के ने दोनों हाथों से मुँह ढँक लिया फिर सिसक कर रोने लगा। सेठ जी चुपचाप खड़े थे। सेठ और सेठानी को लड़के के पास खड़े देख कर चायवाला दूकान से उतर कर उनके पास आया। लड़के की तरफ इशारा करके बोला—

"भाग्य का मारा लड़का है बाबू जी। माँ तो इसे पैदा करके ही मर गयी थी, एक महीना हुए बाप भी राम को प्यारा हो गया। दुनिया में अब इसका कोई नहीं है।"

लड़के की छोटी-सी दुःखभरी कहानी सुन कर सेठानी की आँखें सहानुभूति से भर आयीं। उन्होंने उसे अपने पास खींच लिया। उसका भोला चेहरा देख कर उस अनाथ बच्चे के लिए उनके दिल में दया उमड़ने लगी। चाय वाले ने फिर कहा—

"माँ जी इसे अपने पास रख लीजिए। बनिये का बेटा है। आपकी कुछ सेवा-टहल कर दिया करेगा। दोनों समय आपके यहाँ पेट भर रोटी तो मिल जायेगी इसे। यहाँ तो बाप के मरने के बाद इसे एक वक्त खाना भी नसीब नहीं होता। आपके यहाँ दस का पेट भरता है एक इसका भी भर जायेगा।"

दूकानदार की बात सुन कर सेठ जी ने लड़के से पूछा—"तू हमारे पास रहेगा बेटे ?"

लड़के ने आँखें नीची करके स्वीकृति में सिर हिला दिया।

"तब चल हमारे साथ।"

सेठ जी ने एक रिक्शा इशारे से रोका। आशा देवी ने निःसंकोच धूल भरे लड़के को अपनी गोद में बिठा लिया। रिक्शा चलने से पूर्व सेठ रतनलाल ने पूछा—"तेरे घर में और कोई है क्या ? किसी से कहना-सुनना तो नहीं है ?"

"मैं अकेला ही हूँ घर में। सबेरे ताला लगा कर निकल जाता हूँ घर से।" सेठानी ने उसके सिर पर हाथ फेरा—"तब कोई बात नहीं। कल आकर देख लेना यदि कुछ लाना हो तो......."

रिक्शा चल पड़ा। सेठ-सेठानी को नौकर नहीं एक पुत्र मिल गया नन्दलाल के रूप में और नन्दलाल को तो केवल घर, खाना, कपड़ा ही नहीं, माता-पिता का प्यार भी मिला। अँधेरी रात में भटकनेवाले को जैसे सुबह की सूरज की रोशनी मिल गयी हो। इसके साथ-साथ नंदलाल को छोटे भाई के रूप में सेठ जी का पुत्र रमेश भी मिल गया। जैसे किसी भिखारी को अचानक खजाना मिल गया हो।

घर पहुँच कर आशादेवी ने उसे नहला-धुला कर नये कपड़े पहिनाये। सेठ जी ने रमेश के साथ उसके पढ़ने का प्रबन्ध भी करवा दिया। घर में वह सेठ रतनलाल के बड़े पुत्र की तरह रहने लगा। अकेले रमेश को भी एक बड़ा भाई मिल गया। खेलने-खाने के लिए एक प्यारा साथी मिल गया। नंदलाल की बुद्धि अच्छी थी। नये वातावरण को उसने बड़ी जल्दी अपना लिया। वह सुशील, आज्ञाकारी और मीठे स्वभाव का समझदार बालक निकला। सभी उससे प्रसन्न रहते। धीरे-धीरे दिन बीतते गये। सेठ जी के साथ नंदलाल ने व्यवसाय की भी बहुत सी बातें सीख लीं। बनिये का पुत्र था। व्यवसायी बुद्धि भी थी उसमें।

नंदलाल अब जवान हो गया था। सेठ ने पास के एक गाँव में उसके लिए एक छोटी-सी कपड़े की दुकान खुलवा दी। समझदार, ईमानदार तो नंदलाल था ही वह परिश्रमी भी था। उसे अभी तक बचपन के कष्ट के दिन याद थे। उन्हें वह भुलाना भी नहीं चाहता था। वे दिन उसे आगे बढ़ने और धैर्य रखने की प्रेरणा और शिक्षा देते थे। सेठ रतनलाल और आशा देवी की उदारता, अपने लिए उनका पिता और माता का प्यार भी वह एक क्षण को नहीं भूलता था। इन सब बातों को वह कीमती हीरे की तरह हमेशा हृदय में सुरक्षित रखता था।

बड़ी लगन और परिश्रम से उसने गाँव की दूकान चलायी। दूकान चली ही नहीं दौड़ पड़ी। ग्राहकों से उसका मीठा व्यवहार, परिचितों और मित्रों के दुःख-सुख में हमदर्दी ने नंदलाल को बहुत शीघ्र गाँव में सबका प्यारा बना दिया। जिस दिन नंदलाल ने पहिली बार दूकान की कमाई लाकर अपने धर्म के माता-पिता को दी तो प्रसन्नता से उनका हृदय भर आया। उन्हें लगा कि उनके लगाये हुए पौधों ने जमीन में जड़ें जमा ली हैं। अब वह लहलहाने लगा है। उनका पौधा लगाना और उनको उतने दिन तक सींचना और देखभाल करना सफल और सार्थक हो गया। उन्होंने संतोष की साँस ली। सेठ जी ने उसके रुपए उसे लौटाते हुए प्यार से कहा—

"बेटे नंदलाल, ये रुपये तुम्हारे लाभ के हैं इन्हें अपने पास ही रखो। इनसे अपनी दूकान को बढ़ाओ और भविष्य के लिए कुछ धन संचित करते जाओ।"

नंदलाल रो पड़ा—"पिता जी क्या ये रुपए मेरे हैं ? यह तो आप की ही वस्तु आपके चरणों में चढ़ा रहा हूँ। जैसे भगवान् के फूल भगवान् को चढ़ाये जाते हैं। आपने मुझे

हर तरह से योग्य बना दिया है। पैरों पर खड़े होने की शक्ति दे दी है। दूकान के सहारे मैं आगे ही बढ़ता जाऊँगा। क्या लोग जो फल का वृक्ष लगाते है उसका फल नहीं खाते ?''

सेठ और सेठानी ने उसकी भेंट उसकी बातें सुन कर रख लीं और अब समय देख कर अपने ही रिश्तेदार की एक सुशील कन्या से उसका विवाह भी कर दिया। बहू को उन्होंने अपनी ओर से अच्छे वस्त्राभूषण दिये। शादी भी धूमधाम से की। जिसने देखा उसी ने सेठ की उदारता की सराहना की। आशा देवी तो बहू को पा कर फूली नहीं समायीं। सुन्दर, सुशील और गृहस्थी के कामों में चतुर थी नंदलाल की बहू। आशादेवी ने कहा—

''बहू रानी हमारा बेटा गाँव में अकेला रहता है। उसे खाने-पीने का कष्ट होता होगा। दूकान से दिन भर के बाद लौटने पर सूने घर में कोई उसको प्यार से नाश्ता-पानी भी देनेवाला नहीं है इसलिए अब तुम उसके साथ जाओ और अपनी गृहस्थी सँभालो जिससे हमारा नंदलाल निश्चिन्त हो कर अपनी दूकान का काम देखे।''

बहू को ले कर नंदलाल गाँव आ गया। थोड़े दिनों में ही उसकी दूकान खूब चल निकली और गाँव में वह एक सम्पन्न व्यक्ति माना जाने लगा। लोगों में उसका मान और सम्मान था। कल का सड़क पर खड़ा रोता हुआ अनाथ नंदलाल आज एक इज्जतदार संभ्रान्त नागरिक माना जाता था। वह तो निश्चिन्त था ही उधर शहर में सेठ-सेठानी भी उसकी तरफ से निश्चिन्त हो गये थे।

किसी के जीवन में हमेशा रात नहीं रहती उसी प्रकार दिन भी हमेशा नहीं रहता। आदमी रात होने के पहिले अपने जरूरी सब काम निपटा लेता है। किन्तु सेठ जी के जीवन में अचानक अँधेरा घिर आया जिसके लिए कोई तैयार नहीं था। दिल का दौरा पड़ने से एक दिन सेठ जी की हृदय गति रुक गयी। पूरे परिवार को बिलखता छोड़ कर सेठ रतनलाल संसार छोड़ कर चल बसे। सेठानी पर तो जैसे बिजली टूट पड़ी। पुत्र रमेश अभी इस योग्य नहीं हुआ था कि पिता का व्यवसाय सँभाल सके। सेठ जी ने उसे अभी इसकी शिक्षा भी नहीं दी थी। सोचते थे इतनी जल्दी भी क्या है ? धीरे-धीरे सब समझ जायगा। किसको मालूम था कि एक दिन अचानक रमेश इस प्रकार अनाथ हो जायेगा। उसकी जीवन की नाव मँझधार में आ पड़ी थी।

अभी पूरी तरह से सेठ जी के जाने का दुःख लोग भूले भी नहीं थे कि एक दिन गोदाम में आग लग गयी। सेठ का रुई का व्यवसाय था। देखते-देखते लाखों का माल जल कर स्वाहा हो गया। पिता की छाया उठ जाने से रमेश वैसे ही अपने को अनाथ अनुभव कर रहा था अब तो कंगाल भी हो गया। व्यापार में देना-लेना लगा ही रहता है। लोगों के पास पैसे फँसे रहते हैं। सेठ जी के भी लाखों रुपए लोगों के पास थे और लोगों को भी सेठ से हजारों वसूलने थे। कौन यह हिसाब करता ? देनेवाला तो कोई ईमानदारी से देने नहीं आया किन्तु लेनेवाले रोज सेठ के घर चक्कर काटने लगे। बेचारा रमेश कुछ भी इस प्रकार का हिसाब-किताब नहीं जानता था। न वह किसी से उधारी वसूल कर पाता था न किसी का उधार चुकाने के लिए उसके पास पूँजी थी। बच्चा समझ कर लोग उसे दबाने की चेष्टा करते थे। सेठानी आशादेवी दुःख और चिन्ता से टूट गयीं। उन्होंने चारपायी पकड़ ली। यह सब कुछ ही महीनों में घट गया। जिस हवेली में दिन रात नौकर-चाकर तथा आने-जाने वालों की चहल-पहल रहती थी अब भाँय-भाँय करने लगी। रमेश ने घर से बाहर निकलना बंद कर दिया। तकाजेवालों का आना-जाना लगा रहा।

नंदलाल की ससुराल बरेली में थी और सेठ कानपुर में रहते थे। जिन दिनों में कानपुर में सेठ जी के स्वर्गवास के बाद रमेश और आशादेवी पर विपत्ति का पहाड़ टूटा था नंदलाल अपनी सास को ले कर बद्रीनाथ की यात्रा पर गया हुआ था। उन दिनों बद्रीनाथ की यात्रा इतनी आसान नहीं थी। काफी पैदल चलना पड़ता था। महीनों लग जाते थे तीर्थ यात्रा में। नंदलाल को सेठ जी की मृत्यु और घर की दुर्दशा का कुछ भी पता नहीं लगा। यात्रा से लौट कर जब वह अपने गाँव आया, जहाँ उसकी दूकान थी और वहाँ उसने अपना एक मकान भी बनवा लिया था। जब उसे सेठ के घर की सब खबर लगी तो पछाड़ खा कर गिर पड़ा। वह तुरन्त कानपुर रवाना हो गया।

सेठानी सूख कर काँटा हो गयीं थी। रमेश के मुख की चमक भी गायब हो गयी थी। हवेली की रौनक तो समाप्त हो ही गयी थी। नंदलाल आते ही आशादेवी को पकड़ कर बच्चों की तरह बिलखने लगा। उसके मुख से बोल ही नहीं फूट रहे थे। आशादेवी के धैर्य का बाँध भी टूट गया। नंदलाल को छाती से लगा कर वे बड़ी देर तक रोती रहीं। बड़ी मुश्किल से नंदलाल की बहू ने दोनों को अलग किया।

''माँ मैं कितना अभागा हूँ। जन्म का अभागा हूँ। छोटेपन में ही माँ-बाप को खो दिया था तब सेठ जी जैसे दयालु पिता को पा कर सब दुःख भूल गया था किन्तु अब वे भी मुझे छोड़ कर चले गये। मैं उनकी कुछ सेवा भी नहीं कर सका। अन्तिम समय उनके दर्शन भी नहीं कर सका और माँ तुम्हारी यह क्या हालत हो गयी है ? मेरे और रमेश, दो-दो बेटों के रहते तुम्हारी यह दशा ? धिक्कार है मुझे !''

नंदलाल की सिसकियाँ रुक ही नहीं रही थीं। दुःख

उसके हृदय में जैसे समा ही नहीं रहा था। कभी रमेश का चिपटा लेता कभी उसे गोद में समेट लेता। उसकी हालत देख कर उसकी छाती फटी जा रही थी। आखिर आशादेवी ने ही उसे समझा कर चुप कराया। कुछ शांत हो कर नंदलाल ने घर का सब हाल पूछा। वह उठा और अपना संदूक खोल कर उसने एक थैली निकाली। थैली में से हजार-हजार रुपयों की नोटों की गड्डियाँ निकाल कर उसने माँ आशादेवी के चरणों पर बिखेर दीं।

"माँ यह सब आपका है। आपके पुण्य का ही यह फल है कि मैं आज इस योग्य बन सका हूँ। अब मुझे भी अपनी कुछ सेवा करने का अवसर दीजिए। जिसका जो कुछ लेना-देना हो आज अभी चुका दें। कल से कोई तकाजा करनेवाला अपने दरवाजे पर नहीं दिखायी देना चाहिए। जो कुछ कम होगा मैं शीघ्र ही एक-एक पैसा चुका दूँगा। मेरे जैसे जवान बेटे के रहते माँ यदि कर्जदार हो तो बेटे को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।"

नंदलाल की आदर और प्यार भरी बातें सुन कर आशादेवी की आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे। उनके मुँह से कुछ शब्द नहीं निकल पा रहे थे। रमेश को लग रहा था जैसे उसके पिता ही लौट आये हैं कि अब वह बेसहारा या अनाथ नहीं है और उसे अब चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि सेठ जी के व्यवसाय की नाव जो मँझधार में फँसी डूबनेवाली थी उसे नंदलाल ने किनारे पर लगा दिया। सेठ-सेठानी के पुण्य का गुलमुहर फूलों से लदा लहलहा रहा था।

साँप की कुंडली

आलोक एक सीधा सरल लड़का है। अभी छोटा ही है। वह 12 वर्ष का पूरा भी नहीं हुआ है। माता-पिता का अकेला पुत्र होने के कारण घर में लाड़-प्यार भी बहुत होता है उसका। वह नियम से स्कूल जाता है। उसके माता-पिता उसे इधर-उधर के बेकार लड़कों की संगत से बचाते हैं। लेकिन स्कूल में तो सभी तरह के लड़कों को वह देखता है। वह देखता है कि कुछ लड़के बड़े शान से घूमते रहते हैं। उन्हें स्कूल में किसी का डर नहीं रहता। टीचर का भी नहीं। कपड़े भी कीमती रंग-बिरंगे पहिन कर आते हैं और सबसे बड़ी बात है कि ये लोग अक्सर खोमचेवाले से चाट और मिठाई भी ले कर खाते रहते हैं।

आलोक सोचता है—"मुझे तो माँ रोज-रोज पैसे नहीं देती। देती भी है तो इतना नहीं कि खूब चाट और मिठाई खाऊँ और अपने मित्रों को भी खिलाऊँ। मुझे अपने शिक्षकों से कितना डर लगता है। मैं अपने से बड़ी कक्षा के लड़कों से भी दबता हूँ। क्या मैं डरपोक हूँ ? क्या ये लोग बहादुर हैं ?"

आलोक को अभी अच्छे और बुरे का भेदभाव ही नहीं मालूम है। उसकी उत्सुकता धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। अब कभी-कभी वह ऐसे लड़कों के आसपास घूमने लगा है, उनकी बातचीत सुनने की कोशिश करता है। धीरे-धीरे हिम्मत करके वह उनके पास भी खड़ा हो जाता है और अब तो आलोक का उन लड़कों के साथ रहने का भी मन करने लगा। उसकी अन्दर की हिचक खत्म हो गयी है। स्कूल में शम्भू नाम का एक ऐसा लड़का है जो स्वयं तो दिन भर आवारा घूमता ही है दूसरे सीधे-सादे लड़कों को भी अपने में मिला कर उन्हें गलत रास्ते पर लाने की कोशिश करता है। घर से तो वह स्कूल जाने के नाम से नियम से निकलता है किन्तु उसे पढ़ने-लिखने से कोई मतलब नहीं है। उसकी अपने जैसे साथियों की एक टोली है। यदि कोई लड़का उसका कहना नहीं मानता या उससे किसी बात पर झगड़ा हो जाता है तो शम्भू अपने साथियों से उसे पिटवा भी देता है। भला ऐसे लड़के से कौन नहीं डरेगा ? कौन उसे छेड़ेगा ? उससे झगड़ा मोल लेना बर्रे के छत्ते को छेड़ना है।

स्कूल के टीचर भी उससे कुछ नहीं कहते। चाहे वह स्कूल में आये या न आये। कक्षा में बैठे या न बैठे। वे कुछ नहीं कहते।

शम्भू अपने से छोटे बच्चों को चोरी करना भी सिखाता है। उनके घर से चीजें और पैसे चोरी से मँगवाता है। कोयले की कोठरी में यदि कोई साफ कपड़े पहिन कर जाय तब कितनी ही सावधानी से अपने वस्त्र या हाथ पैर बचाये किन्तु बिना गन्दे हुए, साफ-सुथरा वापस नहीं आ सकता। हाथ पैर और कपड़ों में कालिख लगे बिना नहीं रह सकती। शम्भू भी कोयले की कोठरी ही था। उसके साथ रह कर हर लड़का गंदी आदतें सीख ही लेता है।

ऐसे शम्भू का साथ दुर्भाग्य से आलोक का भी हो गया। आलोक के पिता एक क्लर्क हैं। साधारण खाता-पीता परिवार है। वह अपने पुत्र का बराबर ध्यान रखते हैं कि कहीं वह गलत रास्ते पर न जाये किन्तु स्कूल में कैसे देख सकते हैं कि उनका पुत्र क्या कर रहा है या किसके साथ घूमता-फिरता है। परीक्षा में अच्छी तरह पास हो जाता है तब चिन्ता करने की भी कोई खास बात नहीं है।

आलोक के घर से शम्भू दूर नहीं रहता। उसने देखा कि आलोक उसको अक्सर प्रशंसा की दृष्टि से देखता रहता है। बस वह समझ गया कि मछली जाल में फँसने ही वाली है। वह आलोक को देख कर मुस्कुरा देता। बातचीत होने लगी। वह कहता—

"अरे रट्टू तोते कभी-कभी समय निकाल कर हमारे साथ भी आ जाया कर। ले टाफी खा ले।"

आलोक शरमा कर टाफी ले लेता। शम्भू के साथ चलने में उसे गौरव का अनुभव होता। वह देखता कि उसकी जेब भी हमेशा टाफियों और लेमन ड्राप्स से भरी रहती है। रोज नयी-नयी तरह की फाउण्टेनपेन उसकी कमीज की जेब में लगी रहती है। उसने भी अपने पिता जी से कहा कि उसे एक और अच्छी पेन ला दें तो उन्होंने उत्तर दिया—"तुम्हारे पास एक तो है उसे सँभाल कर रखो। क्या और अच्छी पेन मिल जायगी तो तुम और अच्छा लिखने लगोगे ? यदि तुम्हारा दिमाग अच्छा होगा, पढ़ाई अच्छी करोगे तो मामूली कलम से भी अच्छा लिख लोगे नहीं तो कीमती कलम रहते हुए भी फेल हो सकते हो।"

पहले पिता जी की ये बातें आलोक को संतुष्ट कर देती थीं किन्तु अब वह मन मसोस कर रह जाता है। उसे नहीं मालूम था कि शम्भू और उसके मित्र अपने घर से माता-पिता की चीजें और रुपये चुरा कर अपनी शान बढ़ाते हैं। लोगों में अपनी धाक जमाते हैं। स्कूल से छूटते ही वह शंभू की पार्टी के साथ मिल जाता। अब वह ठीक समय से घर नहीं लौट पाता। शाम को पिता जी जब कहीं चले जाते वह सीधे शंभू के पास चला जाता।

एक दिन शंभू हाथ में एक सिगरेट लिये बड़ी स्टाइल से हीरो की तरह खड़ा था। उसने आलोक से पूछा—"पियेगा रे सिगरेट ?"

"नहीं ! नहीं ! मैं नहीं पीता सिगरेट। मैंने कभी नहीं पी।"

आलोक शंभू के प्रश्न से ही घबरा गया। शंभू ठठा कर हँस पड़ा—"अरे क्या कोई पेट से जन्म लेते ही सिगरेट पीने लगता है ? बड़े होने पर ही तो पीता है। तू भी अब दूध-पीता बच्चा नहीं है। जरा पी कर तो देख इसका मजा।"

"नहीं शंभू, अगर पिता जी को पता लग गया तो मेरी खैर नहीं होगी।"

"बड़ा बुद्धू है रे तू। तेरा बाप क्या यहाँ तुझे सिगरेट पीते देखने आयेगा ? डरपोक कहीं का। अच्छा न पी, मेरी सिगरेट तो सुलगा देगा न।"

डरते-डरते आलोक ने माचिस जला कर उसके मुख में लगी सिगरेट से छुआई, हाथ काँप गया। तीली नीचे गिर गयी। "चल हट" कह कर शंभू ने सिगरेट खुद ही सुलगाई और स्टाइल से पीने लगा। वह घूम-घूम कर पीने लगा और मुँह ऊपर करके धुएँ के छल्ले बनाने लगा। आलोक उसे गौर से देख रहा था। "कैसे खींच कर कश ले रहा है यह ? बिल्कुल बड़े लोगों की तरह। सिनेमा के हीरो की तरह लग रहा है। कितना साहसी है। सचमुच मैं बुद्धू हूँ। यदि मैं भी पी लेता तो पिता जी या माता जी को क्या मालूम होता।"

उसे अपनी ओर ललचाई दृष्टि से देखते हुए शंभू मुस्कराने लगा। वह आलोक के मन की बात ताड़ गया। उसके नजदीक आया और प्यार से उसके होंठों से सिगरेट लगा दी—"एक फूँक मार कर देख मुन्ना ?" सकुचाते हुए आलोक ने एक जोर का कश खींच लिया। जैसा कि वह शंभू को खींचते देख रहा था इतनी देर से। किन्तु जैसे ही धुआँ गले के नीचे उतरा उसका दम घुटने लगा। जोर से खाँसी आ गयी। चक्कर खा कर वह जमीन पर गिर पड़ा। खाँसते-खाँसते उसे उल्टी हो गयी। दुबला-पतला आलोक बिल्कुल निढाल-सा उसी उल्टी में पड़ा रहा। दुनिया उसे घूमती नजर आने लगी। उसकी बुरी दशा हो गयी।

शंभू ने देखा तो घबरा कर उसे जमीन पर पड़ा छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। वह घबरा गया कि कहीं आलोक को कुछ हो गया तो वह पकड़ा जायेगा या कहीं किसी ने इसके पिता जी से कह दिया और उन्होंने मेरे पिता जी से कह दिया तो—इसके पूर्व यह सब झगड़ा खड़ा हो मैं ही क्यों न आलोक के घर जा कर इसकी शिकायत कर दूँ।

वह दौड़ा हुआ आलोक के घर पहुँचा। घर पर उसकी माँ मिलीं—

बड़ा दुखी सा मुँह बना कर उसने नम्रता से कहा—

"माता जी आलोक जमीन पर पड़ा है बेहोश-सा। मेरे मना करने पर भी उसने सिगरेट पी ली और अब उसे उल्टियाँ हो रही हैं।"

माँ घबरा गयीं —"कहाँ है मेरा बेटा ?"

पार्क के पास उस टूटे घर की आड़ में पड़ा है।

यह कह कर शंभू वहाँ से भाग खड़ा हुआ। माँ दौड़ी हुई गयीं। आलोक बैठा हुआ था। उठ कर चलने की शक्ति उसमें नहीं थी। पास में ही उलटी पड़ी थी। उसके कपड़े भी उलटी से सन गये थे। माँ को देख कर उसने आँखे नीची कर लीं और सिसक कर रोने लगा। माँ भी उसकी हालत देख कर दुःख से फूट-फूट कर रो पड़ीं। रिक्शे में बिठा कर उसे घर लायी।

"बेटा तू ऐसा भी कर सकता है मुझे नहीं मालूम था। अपने दूध पीने के दिन में ही तू बीड़ी-सिगरेट पीने लगा ? कल तू इन कामों के लिए घर से पैसे चुरायेगा। फिर आगे दूसरों के घर में भी चोरी करेगा। छिः छिः क्यों हुआ तू मेरा बेटा ! क्या ऐसे बेटे के लिए ही मैं और तेरे पिता जी अपने खून पसीने की कमाई से तुझे पढ़ा-लिखा रहे हैं ? काश ! तुझे जन्म देने के पूर्व ही मैं मर जाती।"

माँ के आँसू रुक ही नहीं रहे थे। आलोक एक टक अपनी माँ का मुँख देखता रहा फिर एकाएक उठा और उसके पैर पकड़ कर फफक कर रो पड़ा।

"एक बार क्षमा कर दो माँ। तुम्हारे चरणों की कसम

खा कर कहता हूँ कि अब ऐसा कभी नहीं करूँगा। जिन्दगी में कभी तुम्हें शिकायत करने का मौका नहीं दूँगा। मैंने खुद नहीं पी शंभू ने ही पिलायी थी। कितना मूर्ख और गन्दा हूँ मैं, बस एक बार मुझे क्षमा कर दो।"

माँ ने अपने आँसू पोंछे और बेटे को छाती से चिपटा लिया।

"मैं जानती हूँ मेरा बेटा अच्छा है। गलती करके यदि कोई उसे पहिचान लेता है तो वह दूर हो जाती है।"

माँ ने आलोक का मुँह हाथ धुलाया, कपड़े बदले। दूसरे दिन जब आलोक स्कूल गया तो पता लगा कि शंभू स्कूल नहीं आया है। उसके पड़ोसी लड़के ने बताया कि उसे कल पुलिस पकड़ कर थाने ले गयी थी। वहाँ उसकी अच्छी तरह पिटाई की गयी थी। उसने अपने से छोटे एक लड़के से उसकी माँ की अँगूठी चोरी करवाई थी जिसे बेच कर उसने और उसके साथियों ने सिनेमा देखा और मिठाई खायी थी। स्कूल से भी शंभू को निकाल दिया गया। अँगूठी मिल गयी थी और पुलिस ने शंभू की कम उम्र देख कर जेल नहीं भेजा किन्तु उसके बाप को बुला कर चेतावनी दे दी थी। आलोक सोच रहा था—किस जहरीले साँप की कुंडली से बच कर वह निकल आया है।

माँ

अरुण अपनी माँ की एकमात्र संतान है। पिता का स्वर्गवास, जब वह गोदी का शिशु ही था, हो चुका था। पति के न रहने पर कितनी ही मुसीबतें झेल कर, तन के एक-एक गहने बेच कर माँ ने अपने पुत्र का लालन-पालन

किया था। उसके मन में एक आशा सदैव पलती रही थी कि बड़ा हो कर उसका अरुण अच्छी शिक्षा प्राप्त करेगा, उच्च पद का अधिकारी बनेगा, देश की सेवा करेगा और भारत का सच्चा सपूत बनेगा। आज ईश्वर ने उसकी सभी आशाएँ पूरी कर दी थी। उसके सपने सच होने का समय आ गया था। माँ के प्यार और आदर्शों की छाँह में पला अरुण एक सुन्दर पौधे की तरह पनप कर लहलहा रहा था।

चीन के भारत पर आक्रमण का समय था। अरुण सेना में उच्च अफसर के पद पर चुन लिया गया था। किन्तु मालूम नहीं क्यों खुश होने पर भी माँ की आँखों से सावन-भादों की वर्षा हो रही थी।

अरुण कालेज में प्रोफेसरों का प्यारा शिष्य और मित्रों का दुलारा साथी था। पढ़ने में तेज और स्वभाव का मीठा था वह। मिलेटरी में कमीशन पद पर चुने जाने की घोषणा आज ही हुई थी। अरुण ने सोचा था कि यह खुश खबरी वह स्वयं जा कर माँ को देगा किन्तु उसके घर पहुँचने के पहिले ही उसके मित्र मिठाई की लालच में यह सूचना माँ को पहुँचा आये। मिठाई भी खा आये। उधर कालेज में अरुण के मित्र घेर कर उसे बधाई दे रहे थे। प्रोफेसर भी उसे शाबाशी दे रहे थे। माँ ने सुना। वह अधरों से हँसी किन्तु आँखों से रो दी। यह तो वह अच्छी तरह समझती थी कि देश पर संकट के समय एक युवक का क्या कर्तव्य है। अपने बेटे के चुनाव पर उसे गर्व भी था। फिर ये आँसू क्यों ? यह बात उसे खुद ही समझ में नहीं आ रही थी।

जब उसकी आँखों का तारा अरुण उससे दूर चला जायेगा तब वह कैसे दिन काटेगी ? किसके लिए भोजन बना कर वह प्रतीक्षा करेगी ? सुबह होते ही वह किसको जगाने जायेगी ? जितना वह सोचती थी उतना ही उसका दिल भर-भर आता था। पल्ले को मुख में दबा कर वह फफक कर रो उठी। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अरुण सचमुच उसे अकेला छोड़ कर बहुत दूर चला जायेगा। वह सोच रही थी कि जब उसका प्यारा बेटा दूर चला जायेगा और उसका मन उसे देखने को छटपटायेगा तब वह क्या करेगी ? उसे सामने बिठला कर जब तक वह भोजन नहीं कराती तब तक न अरुण का पेट भरता है और न माँ का मन।

वहाँ दूर, उसे कौन इतने प्यार से खिलायेगा ? कौन रात को उठ-उठ कर उसके शरीर पर चादर ओढ़ायेगा ?

अनजाने ही आँसू उसके गालों पर बहे जा रहे थे। इतने में द्वार खोलते हुए अरुण अन्दर आ गया। माँ ने रगड़ कर अपनी आँखें पोंछ ली और खडी हो कर मुँह धोने के लिए बढ़ी ही थी कि पीछे से अरुण ने उसे बाँहों में लपेट लिया और हँसते हुए अपनी दुबली पतली माँ को ऊपर उठा लिया।

"अरे छोड़, छोड़ ! क्या कर रहा है पगले ?" कहते-कहते माँ का गला फिर भर गया।

अरुण ने उसे भूमि पर खड़ा करके आश्चर्य से उसका मुख देखा।

"तुम रो रही हो अम्मा ?"

"नहीं तो रे। मैं तो खुश हूँ। तू अफसर बन गया है न ?"

अरुण को समझते देर नहीं लगी माँ के रोने का कारण क्या है ?

वैसे वह अपनी माँ के ऊँचे विचारों को समझता था। वह जानता था कि देश की रक्षा में पुत्र को युद्ध में भेजने में उसकी माँ कभी पीछे नहीं हटेगी। कभी उसे मना नहीं करेगी। तभी तो उसने बिना किसी झिझक के सेना में नाम लिखवा दिया था। फिर यह आँसू क्यों ?

फिर माँ के रोने का कारण उसकी समझ में ठीक से नहीं आ रहा था।

"अम्मा क्या तुम मेरे सेना में जाने के कारण रो रही हो ? सच बताना क्या तुम नहीं चाहती कि मैं वहाँ जाऊँ ? एक बार कह तो दो कि अरुण तू वहाँ नहीं जायेगा फिर देखना जो मैं एक कदम भी आगे बढाऊँ ? तुम्हें दुःखी करके मैं कहीं नहीं जाऊँगा। स्वर्ग का सुख भी मिले तब भी नहीं। एक माँ को दुःखी करके क्या मैं दूसरी माँ को सुखी कर सकता हूँ ? कभी नहीं। अम्मा, मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा....... ।"

कहते-कहते अरुण का गला भी भर आया।

माँ ने उसका सिर पकड़ कर छाती से लगा लिया। उसकी आँखें बरस-बरस कर पुत्र का सिर भिगोने लगीं। थोड़ी देर में शांत हो कर वह बोली—

"अरुण बेटा ! क्या तू आज तक मुझे नहीं समझ पाया ? तू यह सोचता है कि मैं इसलिए रो रही हूँ कि तू मातृभूमि की रक्षा करने जा रहा है ? पागल, मुझे तो गर्व हो रहा है कि मेरा नन्हा अरुण आज इतना बड़ा और योग्य हो गया है कि भारत माँ की रक्षा का भार उठाये। एक माँ को छोड़ कर तू करोड़ों भारतीयों की माँ के कष्टों को दूर करने जायेगा। क्या इस बात पर मैं रोऊँगी ? मुझे तो सुख और प्रसन्नता हो रही है अपने इस बेटे के चुनाव पर।"

माँ ने बेटे का मस्तक चूम लिया।

"मुझे तो बस इसलिए रुलाई आ रही है कि तू मुझसे दूर चला जायेगा। थोड़ी देर की रुलाई बस। तू अपनी माँ को छोटा मत समझ बेटे। मैं एक योग्य, वीर बेटे की माँ हूँ। जब तू दुश्मनों को खदेड़ कर लौटेगा तब मैं तेरी आरती उतारूँगी और दुनिया से कहूँगी कि मेरे बेटे ने मेरे दूध की

लाज रख ली है। जा बेटा जा, मेरा आशीर्वाद संकट के समय तेरी रक्षा करेगा।"

अरुण का सिर माँ की बातें सुन कर गर्व से ऊपर उठ गया। फिर उसने अपने उठे हुए सिर को झुका कर माँ के चरणों पर रख दिया।

करोड़पति भिखारी

यशमणि एक सुन्दर, सुशील और शिष्ट युवक था। स्वस्थ, लम्बा गोरा, चौड़ा सुडौल माथा, काले घुँघराले बालों ने उसके रूप को इतना आकर्षक बना दिया था कि लोग उसे देखते ही आकर्षित हो जाते थे। पूरे नगर में उसका जैसा दूसरा युवक नहीं था। बोली में तो जैसे मिश्री घुली थी। कभी किसी से कठोर शब्द नहीं कहता। हृदय ऐसा उदार और दयालु था कि बूढ़े और गरीब उसे आशीर्वाद देते नहीं थकते। सभी की वह सहायता करने को तत्पर रहता। बच्चे भी उसके साथ बात करके और खेलने के लिए अवसर ढूँढ़ते थे। किन्तु यशमणि कोई विद्वान् नहीं था और न इसके लिए वह चिन्तित ही था। वह बड़ा आनन्दी स्वभाव का युवक था। किसी काम को देर तक लग कर करने से वह कतराता था। अधिक परिश्रम करने से वह बड़ी जल्दी ऊब जाता था। सुन्दर सुशील होने पर भी उसे एक अकर्मण्य युवक कहा जा सकता था। उसके ऊपर कोई जिम्मेदारी भी नहीं थी। माता-पिता दोनों का स्वर्गवास हो चुका था। कोई खराब आदत नहीं थी उसमें। स्वभाव का संतोषी था। उसके पास खूब धन-सम्पत्ति होनी चाहिए इसकी उसे कभी इच्छा नहीं हुई। जब उसके पिता मरे थे तब सम्पत्ति के नाम एक अच्छा बड़ा सुसज्जित बगीचेवाला घर, कुछ पुस्तकें तथा पुरखों की एक बंदूक छोड़ गये थे। यशमणि ने पुस्तकें आलमारी में बन्द कर दीं। पढ़ने-लिखने का उसे विशेष शौक था नहीं। बंदूक उसने एक खूँटी से टाँग दी। शिकार खेलने से उसे चिढ़ थी। पशु और पक्षियों से प्यार किया जाता है, उन्हें मारा नहीं जाता है ऐसा वह सोचता था।

यशमणि की एक धनी बुआ थी जो विधवा थी। उसके कोई सन्तान भी नहीं थी। वह हर माह उसको नियम से दो सौ रुपये भेजती थी। वह संतोष के साथ उतने रुपयों में ही अपना गुजर करता और प्रसन्न रहता था। उसके मुहल्ले में ही कुछ दूर पर एक बनिया व्यापारी रहता था जिसकी एक मात्र संतान लतिका थी। जिस प्रकार पूरे नगर में यशमणि अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध था उसी प्रकार लतिका जैसी सुन्दर और सुशील कन्या उस नगर में दूसरी नहीं थी। बचपन से ही यशमणि और लतिका में मित्रता थी। दोनों

एक स्कूल में पढ़े और साथ-साथ खेले थे। लतिका की माँ यशमणि को बहुत चाहती थी। उसकी इच्छा थी कि वह अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दे। यशमणि की भी यही इच्छा थी। लतिका भी यशमणि को चाहती थी किन्तु

उसका पिता एक लालची आदमी था।

पहाड़ी प्रदेश में जहाँ ये लोग रहते थे वहाँ लड़कीवाले लड़केवालों से रुपये ले कर अपनी लड़की की शादी करते थे। यद्यपि लतिका का पिता भी यशमणि के स्वभाव और उसकी सुन्दरता के कारण उसे बहुत चाहता था किन्तु वह कहता था—

"यशमणि तुम यदि मुझे बीस हजार रुपये ला कर दे दो तो मैं लतिका का विवाह तुम्हारे साथ कर सकता हूँ।"

बेचारा यशमणि कहाँ से इतनी बड़ी रकम ला कर देता ! इतना धन जुटाना उसके वश की बात नहीं थी। उस नगर में कई ऐसे लोग थे जो यशमणि के साथ अपनी कन्या का विवाह खुशी से करने को तैयार थे किन्तु वह तो केवल लतिका से विवाह करना चाहता था। इसीलिए उसकी शादी टलती आ रही थी और वह चिंतित और दुःखी रहता था इसी कारण।

यशमणि का एक घनिष्ठ मित्र नीलाम्बर था जो उसी शहर में रहता था। वह कुशल कलाकार था। ऐसी सजीव मूर्तियाँ बनाता था कि उन्हें देख कर ऐसा लगता था जैसे वे अब बोलने ही वाली हैं। यशमणि को नीलाम्बर बहुत प्यार करता था। उसका निश्छल व्यवहार और मौजी स्वभाव उसे पसन्द था। यशमणि भी नीलाम्बर से बहुत प्रेम करता था। अपने मन की सब बातें उससे कह देता था। लतिका के बारे में भी उसने सब कुछ अपने मित्र को बता दिया था। दोनों जितना अधिक पास आते गये उतना ही एक-दूसरे को समझने और चाहने लगे। यशमणि नीलाम्बर की कला से प्रभावित था और नीलाम्बर उसके स्वभाव, सुन्दरता और उदारता से।

एक दिन यशमणि नीलाम्बर के घर गया। उस समय वह एक भिखारी की मूर्ति बना रहा था। काफी दिनों से वह इस मूर्ति को बनाने का कार्य कर रहा था। अब मूर्ति लगभग पूरी हो चुकी थी। केवल उसमें अन्तिम निखार देना बाकी था। भिखारी को सामने बैठा कर, वह उसकी मूर्ति बना रहा था। वह फटे-चिथड़े कपड़ों में दीन और उदास खड़ा था। नीलाम्बर ने उसकी बिलकुल सजीव मूर्ति बनायी थी। यशमणि बड़ी देर तक कभी भिखारी को तो कभी उसकी मूर्ति को प्रशंसा से देखता रहा किन्तु सबसे ज्यादा भिखारी की दीन दशा पर उसका ध्यान था। उसे देख कर वह हृदय से दुःखी हो रहा था। वह उठ कर अपने मित्र के पास गया और उसके कान में फुसफुसा कर बोला—

"नीलाम्बर वह भिखारी तो बहुत गरीब और दुःखी मालूम पड़ता है।" मूर्ति बनाने के काम को बिना रोके ही मित्र ने कहा—

"हाँ यह तो है ही। तुम क्या एक वृद्ध भिखारी से सुखी और प्रसन्न होने की आशा करते हो ?"

यशमणि ने फिर पूछा—"तुम उसे यहाँ बुला कर उसकी मूर्ति बनाने के लिए क्या पारिश्रमिक देते हो ?"

"दो रुपये प्रति घंटा देता हूँ उसे।"

"और मूर्ति बनाने के बाद तुम्हें इसका क्या मिलेगा ?"

अब की नीलाम्बर ने सिर उठा कर यशमणि की तरफ देखा और मुस्करा कर कहा—"करीब दो हजार रुपये तो मिल ही जायेंगे। मूर्ति भी तो सुन्दर बनी है न।"

"हाँ इसमें कोई संदेह नहीं कि तुमने इसकी बेजोड़ मूर्ति बनायी है। कमाल की कला दिखाई है तुमने ! किन्तु तुम तो इससे हजारों रुपये कमा लोगे और जिसकी मूर्ति तुम बना रहे हो वह भिखारी का भिखारी ही रहा। क्या इसके साथ यह अन्याय नहीं है तुम्हारा नीलाम्बर ?"

"यशमणि तुम यह भूल रहे हो कि एक मूर्ति बनाने में मुझे कितना परिश्रम करना पड़ता है। रात-दिन छेनी-हथौड़े चला कर खून-पसीना एक हो जाता है मूर्ति बनानेवाले का।"

यशमणि चुप हो गया। वह चुपचाप बैठ कर मित्र का मूर्ति बनाना देखता रहा। इतने में बाहर से किसी ने नीलाम्बर को आवाज लगायी। वह कमरे से उठ कर चला गया और जाते-जाते यशमणि से कहता गया—मैं अभी आता हूँ। तुम बैठो "मेरे आने के पूर्व चले मत जाना।"

भिखारी आराम करने की दृष्टि से पास रखे स्टूल पर बैठ गया। यशमणि को लगा कि वह थका ही नहीं भूखा भी है। उसका हृदय दया से भर गया। उसने सोचा कि इसे कुछ देना चाहिए। किन्तु उसके पास केवल तीन रुपये जेब में थे और कुछ खुले पैसे भी । बस इतनी ही पूँजी उसके पास थी। अभी बुआ के पास से रुपये आने में कई दिन बाकी थे। उसने सोचा इस सामने बैठे गरीब आदमी को इन रुपयों की मुझसे ज्यादा आवश्यकता है।

वह उठा और कोने में बैठे उस भिखारी के पास जा कर जेब से तीन रुपए निकाल कर उसके कटोरे में धीरे से डाल दिये। उसे लग रहा था कि जो कुछ वह दे रहा है वह बहुत थोड़ा है किन्तु इससे अधिक उसके पास था भी नहीं। इसी का संकोच था उसे। उसकी आँखें भिखारी के प्रति दया और संकोच से भरी थीं। वह कटोरे में रुपए डाल कर शीघ्रता से आँखें नीचे किये लौट रहा था कि भिखारी ने चौंक कर उसकी तरफ प्रसन्नता से देखा और धीरे से कहा—

"ईश्वर तुम्हारा भला करे !"

यशमणि इसके बाद वहाँ नहीं रुक सका और नीलाम्बर के आने के पूर्व ही उठ कर घर की तरफ चल दिया। अब सवारी के लिए उसके पास पैसे नहीं थे इसलिए उसे पैदल ही घर जाना पड़ा।

लगभग एक सप्ताह बाद यशमणि की भेंट फिर नीलाम्बर से एक पार्क में हुई। दोनों एक स्थान पर बैठ कर बात करने लगे—"तुमने मूर्ति पूरी कर ली मित्र ?"

नीलाम्बर ने कहा—"अरे मैंने तो उसे परसों बेच भी दिया। यहाँ के नामी सेठ जीवनदास ने उसके पाँच हजार रुपए मुझे दिये और हाँ वह भिखारी तुमसे बड़ा प्रसन्न मालूम पड़ता था। तुम्हारे बारे में बहुत कुछ पूछ रहा था।"

यशमणि की आँखों के आगे भिखारी की शक्ल घूम गयी। बोला—"बेचारा कितना गरीब और दुःखी था ! कितने फटे-चिथड़े कपड़े पहने था। नीलाम्बर, मैं उसे अपने कुछ कपड़े देना चाहता हूँ। वह ले लेगा न ?"

नीलाम्बर उसकी बात सुन कर मुस्कराया—"मैं उससे पूछूँगा। वैसे वह उन्हीं कपड़ों में जँचता है।"

यशमणि उसकी बात सुन कर कुछ झुँझला-सा गया।

"तुम कलाकार हो कर भी कितने कठोर हो नीलाम्बर !"

"नहीं यशमणि मैं कठोर नहीं हूँ। हम कलाकार गरीब और अमीर दोनों को उन्हीं की अवस्था में स्वीकार करते हैं और तभी उनकी सही नकल बना सकते हैं। ख़ैर छोड़ो इन बातों को। यह बताओ कि लतिका के साथ तुम्हारे विवाह का क्या हुआ ? वह मेरा भिखारी भी इस विषय में बहुत उत्सुक है। लतिका को वह देखना भी चाहता है। तुम्हें देख कर तो वह प्रभावित है ही।"

यशमणि बुरी तरह से चौंक गया।

एक भिखारी मेरे और लतिका के बारे में पूछ रहा है ? आखिर क्यों ? उसने नीलाम्बर से पूछा—"क्या तुमने उससे मेरे और लतिका के विषय में बातें की थी ?"

"हाँ मैंने उसे तुम लोगों के बारे में सब कुछ बता दिया है। वह लतिका के बाप को अच्छी तरह जानता है। वह लालची और कठोर पिता अपनी पुत्री के विवाह के लिए बीस हजार रुपये की माँग कर रहा है मैंने यह भी उसे बता दिया है।"

"क्या हो गया है नीलाम्बर तुम्हें ? एक भिखारी को मेरे या लतिका के बारे में क्यों दिलचस्पी हो सकती है ? तुम्हें हमारे संबंध में सब बातें उसे बताने का कोई अधिकार नहीं था। आखिर मेरी व्यक्तिगत बातें बताने के लिए वह भिखारी ही मिला था तुम्हें ?"

लेकिन यशमणि के क्रोध की जैसे नीलाम्बर को कोई चिन्ता नहीं थी। वह हँस रहा था।

"तुम जानते हो यशमणि मेरा वह भिखारी कौन है ? वह साधारण आदमी नहीं है। अपार सम्पत्ति का स्वामी वह देश का सबसे धनी व्यक्ति है। सोने-चाँदी के ख़जाने हैं उसके पास !"

यशमणि ने अविश्वास से पूछा—"क्या कह रहे हो तुम ?"

"हाँ मैं सच कह रहा हूँ। मेरे इस करोड़पति भिखारी को अपनी मूर्ति तरह-तरह की वेशभूषा में बनवाने का शौक है। मैं कई मूर्तियाँ उसकी बना चुका हूँ। तुम्हें याद होगा मैंने एक साधू की मूर्ति बनायी वह भी मेरे करोड़पति भिखारी की ही थी। जब वह मेरे पास आता था तब भिखारी का वेश धारण कर लेता था। वह बहुत अच्छा अभिनय भी कर लेता है। भिखारी बन कर कैसी दीनता और गरीबी के भाव उसके चेहरे पर उभरे थे तुमने तो देखा ही था। अब मैं तुम्हें बता ही दूँ कि वह भिखारी और कोई नहीं स्वयं सेठ जीवनदास है।"

यशमणि हड़बड़ा कर खड़ा हो गया। उसे लगा जैसे वह आसमान से गिर पड़ा हो। उसने अपना सिर पकड़ लिया।

"हे भगवान्, सेठ जीवनदास को मैंने उस दिन तीन रुपयों की भीख दी थी ? क्या किया मैंने यह ?"

अब नीलाम्बर के चौंकने की बारी थी—"क्या तुमने सेठ को तीन रुपयों की भीख दी ?"

एकाएक वह ठठा कर हँसने लगा। हँसते-हँसते उसका बुरा हाल हो रहा था वह पेट पकड़ कर बैठ गया।

"कितने भोले हो मित्र तुम ! सेठ जीवनदास और तीन रुपये ?" वह हँसता चला जा रहा था।

"हाँ नीलाम्बर मैंने सचमुच उसे भिखारी समझ कर तीन रुपए उसके भिक्षा पात्र में डाले थे। हाय मैं कितना मूर्ख था ! काश ! मैं जानता कि वह सेठ जीवनदास हैं। आखिर तुमने मुझे पहिले क्यों नहीं बताया नीलाम्बर ? मैं ऐसी मूर्खता तो नहीं करता।"

वह दु:खी हो कर वहीं थका-सा बैठ गया। उसकी आँखें शर्म से झुक गयी थीं।

नीलाम्बर ने हँसते हुए कहा—"मुझे क्या मालूम था कि तुम ऐसी उदारता दिखाओगे। फिर मैं भिखारी के रूप में बैठे इतने बड़े सेठ का तुमसे परिचय भी कैसे कराता और तुम उस दिन रुके भी नहीं मेरे वापस आने तथा सेठ के वेश बदलने के पूर्व ही उठ कर तुम चल दिये थे। तुमसे कुछ कहने-सुनने का मौका ही कहाँ मिला मुझे।"

"हाय ! सेठ मुझे कितना मूर्ख समझते होंगे ?" पछताते हुए यशमणि ने कहा।

नीलाम्बर बोला—"नहीं मित्र ऐसी बात नहीं है। वह तुमसे बहुत प्रसन्न और प्रभावित हैं। इसका कारण वह तुम्हारी तीन रुपये की भिक्षा थी। यह मुझे नहीं मालूम था, न सेठ ने ही मुझे बताया। वह बहुत समझदार और दयालु व्यक्ति हैं। कभी-न-कभी किसी रूप में वह तुम्हारे इस उदार और निश्छल व्यवहार का बदला चुकायेंगे जरूर।"

"हे राम ! अब मैं क्या करूँ ? मैं तो कभी उनके सामने सिर भी नहीं उठा सकता। मैं घर जा रहा हूँ अब।"

नीलाम्बर ने समझाया—"इतने दु:खी होने की क्या बात है मित्र ? आखिर तुमने अनजाने में अपनी सज्जनता का ही तो परिचय दिया। इतनी जल्दी घर जाने की भी क्या जरूरत है ? रुको, हम लोग नदी के किनारे चल कर बैठते हैं।"

"नहीं नीलाम्बर मैं अब कहीं नहीं जाऊँगा।" यह कह कर वह घर चला गया। वह सचमुच बहुत लज्जित था।

दूसरे दिन प्रात:काल वह सो कर उठा ही था कि किसी ने उसका द्वार खटखटाया। उसने द्वार खोला तो एक वृद्ध व्यक्ति, सुनहरा चश्मा लगाये खड़ा था। उसके बाल बिलकुल सफेद थे। यशमणि ने बिना कुछ सोचे-विचारे जल्दी से पूछा—"क्या आपको सेठ जीवनदास ने भेजा है ?" व्यक्ति मुस्कराया—"हाँ सेठ ने।"

यशमणि ने उसे अपनी बात पूरी नहीं करने दी। वह तो रात भर सेठ की और अपनी बातें ही सोचता रहा था। उसने व्यक्ति की बात बीच में काट दी—

"मैं अपनी मूर्खता के लिए बहुत लज्जित हूँ। मैं उस दिन सचमुच उन्हें नहीं पहिचान पाया। मैं उनसे किसी दिन क्षमा माँगने आऊँगा। क्षमा कर देंगे न वे मुझे ?"

वृद्ध की आँखों में एक चमक झलकी। वह यशमणि के चेहरे की ओर देख कर मुस्कराया और बोला—"तुम उनसे जरूर मिलना, वे प्रसन्न होंगे। हाँ सेठ जीवनदास ने तुम्हें एक पत्र दिया है।"

यह कह कर एक बन्द लम्बा लिफाफा यशमणि के हाथ में थमा कर वह तुरन्त उलट कर चल दिया। यशमणि कुछ बातें और करता शायद किन्तु उसके इतनी जल्दी चले जाने पर उसे अजीब-सा लगा। उसने पत्र खोला। संक्षिप्त-सा पत्र था—

"तुम्हारे और लतिका के विवाह के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।"

पत्र के साथ बीस हजार रुपयों का चेक रखा था। एकाएक यशमणि जैसे सोते से जाग पड़ा। उसे लगा—"अरे

यह स्वय सेठ जीवनदास ही तो नहीं थे कहीं ?"

दूर गाड़ी जाने और घोड़ों के टापों की आवाज आ रही थी।

"हाय मैं कितना मूर्ख हूँ। बार-बार धोखा खा जाता हूँ। उनको अपने दरवाजे पर भी नहीं पहिचान सका मैं ?"

यशमणि हाथ में चेक पकड़े अपने शुभचिन्तक, उदार सेठ के प्रति मन-ही-मन नतमस्तक हो गया।

उसके और लतिका के विवाह के बीच की बीस हजार की बाधा की दीवार को सेठ ने गिरा दिया था।

"बालक नेपोलियन की डायरी"

विश्व विख्यात वीर सम्राट नेपोलियन के बचपन की बात है। एक दिन वह सुबह-सुबह ही घर से निकल गया। दोपहर हो गयी। खाने का समय हो गया और वह घर नहीं लौटा माँ को चिन्ता हुई। जब पुत्र ने खाना नहीं खाया तो माँ कैसे खाती ? उसका मन आशंकाओं से भर गया—"किसी विपत्ति में तो नहीं पड़ गया मेरा बेटा ? लेकिन वह तो बहुत समझदार है। बहादुर है। आज तक किसी से भी दबा नहीं। साथियों में उसकी धाक है। फिर आज क्या हो गया उसे ? कहीं आवारा लड़कों का साथ तो नहीं हो गया उसका ? लेकिन ऐसा है तो नहीं मेरा बेटा। उसके साथियों को मैं जानती हूँ। मुझ से कुछ छिपाता भी नहीं वह। फिर क्या बात हो सकती है ?"

शाम घिर आयी। बर्फीली हवा बहने लगी। अभी तक नेपोलियन लौट कर घर नहीं आया। माँ घबराने लगी। तभी द्वार खुला। माँ ने घूम कर देखा हाथ में पेंसिल और एक नोट बुक लिये नेपोलियन ने प्रवेश किया। थका हुआ था। धूल से कपड़े भरे थे, बाल बिखरे हुए थे। वह सीधा माँ के पास आ कर खड़ा हो गया। हमेशा की तरह निर्भीक। इतनी देर तक घर से बाहर रहा उसकी कोई सफाई नहीं। कोई पछतावा भी नहीं। माँ ने सोचा कितना ढीठ हो गया है ? उसे आकर मुझसे क्षमा माँगनी चाहिए थी। माँ को क्रोध आ गया। उसने उसे घूर कर देखा और आगे बढ़ कर उसके गाल पर कस कर थप्पड़ मार दिया।

"मुझे बहुत दुःख है नेपोलियन तू अच्छा लड़का नहीं है।" किंतु बेटे की मुख-मुद्रा पर दुःख का कोई चिह्न नहीं उभरा। उसने उफ् तक नहीं किया। आँखें भी नहीं डबडबायीं। क्षमा याचना या पश्चात्ताप का भाव भी नहीं था मुख पर। उसने आँखें भी नहीं नीचे कीं। अपने स्थान से पीछे भी नहीं हटा। हाँ गंभीर हो गया। गर्दन ऊपर उठा कर बोला—"मैं बुरा लड़का नहीं हूँ माँ। मुझे भी दुःख है कि तुमने मेरे साथ न्याय नहीं किया।। क्या तुम जानती हो कि सागर की लहरें एक घंटे में कितनी बार तट से टकराती हैं ?"

माँ ने आश्चय से बेटे को देखा, "नहीं, मुझे नहीं मालूम।"

"तो सुनो माँ आज दिन भर, समुद्र तट पर अकेला बैठा मैं लहरों का तट से टकराना ही गिनता रहा था। अपनी डायरी में मैंने सब नोट कर लिया है। मुझे विश्वास है कि तुम इस काम के लिए नाराज नहीं होगी। क्या यह कोई अनुचित काम था माँ ?"

अब वह थोड़ा आगे बढ़ा। माँ के बिलकुल पास आकर प्यार से बोला—"मुझे दंड देने से पूर्व मुझसे पूछ तो लेती प्यारी माँ कि मैं कहाँ था और क्या कर रहा था।"

माँ के मुख पर अब पश्चात्ताप के भाव थे। उसने अपने थके बेटे को कस कर छाती से चिपटा लिया। हृदय का क्रोध आँखों में पानी बन कर बेटे के मस्तक पर बह आया और बेटे की खुशी के आँसू माँ की छाती पर बहने लगे।

आशीर्वाद

दिसम्बर के जाड़े की रात, लगभग 11 बजे थे। किसी ने दरवाजे को थपथपाया। मीना सो गयी थी। उठने में कष्ट हुआ। आश्चर्य भी कि इतनी रात को कौन हो सकता है ? दरवाजा खोलने के पहले खिड़की से झाँका।

"कौन है ?"

भारी-भरकम आवाज आयी—"मैं हूँ मौसी, बब्बू।"

सकते में आ गयी मीना। दो पल तो सोचने में लग गये। किवाड़ खोले या न खोले। बब्बू उसके गाँव का आदमी था। एक चोर। बचपन से वह खराब संगति में पड़ गया था। माँ मर चुकी थी। सुना था कि किसी बड़े आफिसर के घर में चोरी करते पकड़ा गया था और इलाहाबाद में ही तीन साल से जेल काट रहा था। यहीं मीना की नौकरी भी एक म्यूनिस्पिल बोर्ड के स्कूल में लग गयी थी। एक लड़का था जो मेरठ में नौकर हो गया था। अब वह अकेली एक किराये के मकान में रहती थी। बब्बू मीना को गाँव के नाते मौसी

कहता था। उसे जेल में ही पता लग गया था कि मीना मौसी इलाहाबाद में नौकरी कर रही हैं।

"किवाड़ तो खोलना ही होगा। न खोलने का बहाना भी क्या कर सकती हूँ ? क्या कहूँ कि मैं घर में अकेली हूँ और क्योंकि तुम एक चोर हो इसलिए मैं डरती हूँ। छिः ! कितनी बुरी बात होगी यह कहना। दरवाजे पर खड़े आदमी को कैसे लौटा सकती हूँ ?"

यह सोच कर मीना ने किवाड़ खोल दिये। खट-खट। बैसाखी को बगल में दबाये बब्बू मुस्कराता हुआ अन्दर कमरे में आ गया। अच्छा तन्दुरुस्त हो कर जेल से लौटा था। हाँ कपड़े गन्दे थे। घुँघराले बालों में धूल भी भरी थी। आते ही उसने मौसी के पैर छुए। मीना बिना कुछ बोले उसका मुख देख रही थी।

"आज सुबह ही जेल से छूटा हूँ मौसी। रात होने का इन्तजार कर रहा था। अब छिप कर आया हूँ। इस कटे पैर और बैसाखी के कारण सबकी निगाहों में जल्दी जम जाता हूँ। जिसने एक बार देख लिया मुझे फिर नहीं भूलता। तुम्हें तो सभी यहाँ पहिचानते हैं मौसी। मुहल्ले में आकर भटकना नहीं पड़ा। बस एक से तुम्हारा नाम ले कर पता पूछा और सीधे यहाँ आ गया।"

एक साँस में वह सब बता गया। मीना यह नहीं पूछ सकी कि—भई जेल से लौट कर यहीं आने की क्या जरूरत थी ? क्या पूरी दुनिया में पहिचान की यही एक मौसी मिली थी शरण लेने के लिए ? अकेले घर में वह ताला लगा कर स्कूल चली जाती है और शाम को चार बजे ताला खोलती है। अभी पिछले महीने ही अकेला घर देख कर किसी ने दिन दहाड़े ताला तोड़ कर जो कुछ उसके गहने-कपड़े थे चोरी कर लिये थे। अब कोई आया भी है तो एक चोर। मीना को अपने भाग्य पर हँसी आ रही थी।

शराफत के नाते मीना ने पूछा—"बब्बू अच्छे तो हो न ? कुछ खाया-पिया है सुबह से या नहीं ? अब आगे क्या करने का इरादा है तुम्हारा ?"

बब्बू हँसा—"10 बजे सुबह छूटा था जेल से, तब जेल वालों ने ही कुछ खिला दिया था। पाँच रुपये भी अपने पास से दिये थे। दो-चार रुपये जब जेल में लाया गया था तब मेरी जेब में पड़े थे उन्हें भी जेलर ने मुझे वापस कर दिये। नैनी से यहाँ का रिक्शा किराया दिया। एक होटल में रुक कर रोटियाँ खायीं। फिर अब तो घर में ही आ गया हूँ। सबेरे ही खाऊँगा मौसी। अब तुम्हारे यहाँ मुझे कोई चिन्ता नहीं है।"

भला भाँजे को मौसी के घर में क्या चिंता हो सकती है ?

वैसे न मौसी ही कुछ बुड्ढी थी और न यह भांजा बब्बू ही कुछ बच्चा था। लेकिन मौसी तो मौसी। मीना को अपने पद का मान रखना ही था। एक कम्बल, दरी और दो मोटी चादरें बब्बू को दे दीं। कमरे के फर्श पर बिस्तर बिछा कर बब्बू सो गया। मीना इस अचानक आये बब्बू बेटे को देख कर समझ गयी कि अब उसका कुछ दिनों तक इसी घर में डेरा जमेगा। छोटी सी नौकरी, थोड़ा सा वेतन। लेकिन इससे क्या होता है ? घर आये मेहमान का, चाहे वह कैसा भी क्यों न हो, निरादर तो नहीं कर सकती थी मीना। चोर है तो उसका क्या ले जायेगा ? अपने ही घर में कोई सेंध नहीं लगाता। बच्चों की बात दूसरी है कि थोड़ी-बहुत चोरी कर ली। अपने मन को समझा कर मीना सो गयी। दूसरे कमरे में बब्बू भी निश्चिंत हो कर जल्दी ही खर्राटे भरने लगा। दिन भर का थका-माँदा था। जेल के कष्टों को भोगा हुआ था।

सुबह जब मीना उठी। बब्बू नहा-धो कर साफ कपड़े पहिन कर बैठा बीड़ी पी रहा था। बिना मीना को जगाये उसने ढूँढ़ लिया था कि कहाँ शौचालय या स्नानघर है। रंग बब्बू का खूब साफ था। बाथरूम में रखा तेल अपने काले घुँघराले बालों में लगा कर कंघी करके वह एक सभ्य, शरीफ इंसान लग रहा था। कोई उसको इस समय देख कर चोर नहीं कह सकता था। वैसे भी किसी के मुख पर नहीं लिखा रहता कि वह चोर है। मीना ने चाय बनायी उसे भी दी फिर वह खाना बनाने की तैयारी करने चली तब बब्बू ने रोका—

"मौसी तुम जाओ अपने पढ़ने-लिखने का काम देखो, खाना मैं बनाऊँगा। अच्छा बना लेता हूँ। मेरे हाथ का बना खाना खा कर भी देखना आज। जब तक मैं हूँ तुम्हें रसोई घर में आने की जरूरत नहीं। बस यह बता दो कि कहाँ क्या रखा है और क्या-क्या बनाना है।"

लो भाई बब्बू ने रसोई भी देख ली। महीना पूरा होने को अभी दस-बारह दिन बाकी थे।

राशन जो लगभग पन्द्रह दिन का रखा था बब्बू के आने पर आठ दिन में ही समाप्त हो गया।

एक दिन बब्बू बड़े सहज ढंग से बोला—"मौसी बीड़ी खत्म है। पैसे दे दो, दो-तीन बंडल ले आऊँ। बनियान भी मेरी फट गयी है एक लानी ही होगी।"

चुपचाप मीना ने उसे पैसे दे दिये बीड़ी के लिए। बनियान वह खुद ही स्कूल से लौटते में ले आयी। वह सोचती थी कि जो इतने अपनत्व से माँग रह रहा है उसे वह कैसे कह सकती है कि तुम्हारी जरूरत के लिए पैसे मेरे पास नहीं हैं या तुम्हारा खर्च मैं नहीं उठा सकती।

भला जायेगा भी कहाँ वह ? कौन है यहाँ उसका ? यदि कहीं जायेगा तो फिर चोरी करेगा ?

एक दिन जब बब्बू ने सुना कि मौसी के गहने आदि कोई चुरा ले गया है तब उसे बड़ा दुःख हुआ। कहने लगा—

"तुम कहो तो मौसी मैं तुम्हारी चोरी का पता लगा दूँ। ये पुलिसवाले तो खुद चोरों से मिले रहते हैं। तुम आज्ञा दे दो तो मैं दो दिन में ही चोर को ला कर तुम्हारे पास खड़ा कर दूँ। लेकिन इसके लिए मुझे चोरों से दोस्ती करनी पड़ेगी। उनके कामों में हाथ बँटाना पड़ेगा। समझ लो। मुझे खुद भी चोरी करनी पड़ेगी। यहाँ के कई नामी चोरों को मैं जानता हूँ।"

मीना बोली—"नहीं ! नहीं ! बब्बू। मुझे चोरों का पता नहीं लगाना है। अपना चोरी गया सामान भी मुझे नहीं चाहिए। वह सब मेरे भाग्य का होता तो चोरी ही क्यों होती ? मैं नहीं चाहती कि मेरे लिए तुम फिर चोरी जैसा गंदा काम शुरू करो। यही करना था तो यहाँ आने की क्या जरूरत थी ?"

बब्बू की आँखों में एक चमक उभर आयी। वह गम्भीर हो गया।

वह बोला—"मौसी कोई आदमी जन्म से चोर या डाकू नहीं होता। वह बनाया जाता है। मेरे घर में भी सुनारी का काम होता था। मैं अपने बाप और बड़े भाइयों को ग्राहकों के सोने-चाँदी की चोरी करते देखता था। झूठ बोलना, चोरी करना मैंने घर से ही सीखा था। सौतेली माँ का दुर्व्यवहार, पिता की डाँट और मार ने मुझे आवारा और चोर बना दिया। तुम्हारे साथ रह कर आज मुझे महसूस हो रहा है कि मैं चोर नहीं, एक सही, शरीफ, इंसान हूँ। यहाँ मुझे लग रहा है कि मैं भी एक इज्जतदार आदमी हूँ। मैं अपनी मेहनत की कमाई खाना चाहता हूँ। यहाँ लोग मुझसे मान-सम्मान से पेश आते हैं। मैं अब चोरी नहीं करना चाहता मौसी। एक अच्छा इंसान बनना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि तुम्हारा पवित्र भोजन और ईमान की कमाई का अन्न खा कर मेरे अन्दर का सोया हुआ शरीफ इंसान जाग रहा है मौसी।"

बब्बू कहते-कहते भावुक हो उठा। उसकी बातें सुनकर जैसे, मीना का सिर भी गर्व से ऊँचा उठ गया। उसे लगा कि इस बब्बू नामक चोर को उस रात अपने घर में शरण दे कर उसने कोई गलती नहीं की बल्कि उसने एक पुण्य का काम किया है।

इस तरह बब्बू एक महीने तक मीना के घर में रहा। उसका रूप-रंग निखर आया। उसके उठने, बैठने, बातचीत करने और व्यवहार में बहुत फर्क आ गया था।

एक दिन वह कहने लगा—"मुझे कुछ पैसे मिल जाते तो मैं कुछ धंधा कर लेता। ट्रेन में मूँगफली-चना ही बेच लेता।"

मीना हँसी—"रेल में फिर जेब काटने का धंधा करने की सोच रहे हो क्या बब्बू ?"

"ओफ हो, मौसी तुम्हें मुझ पर बिलकुल विश्वास नहीं है अब भी ? मैंने कह दिया न कि मैं अब चोरी या पाकेटमारी का काम नहीं करूँगा। मुझे तुम जैसे भी हो सौ-पचास रुपए का इन्तजाम कर दो। फिर देखना मैं कमाई कर लेता हूँ या नहीं।"

और एक दिन मौसी से जिद करके बब्बू सौ रुपये ले कर अपनी नयी मंजिल ढूँढने निकल पड़ा।

एक बात तो बब्बू के बारे में बताने से रह ही गयी।

बब्बू एक कुशल जेब काटनेवाला भी था। चोरी का काम उसने जेब काटने से ही शुरू किया था। ट्रेन में भी कई बार चोरियाँ कर चुका था।

एक बार किसी का सूट केस चोरी करके चलती ट्रेन से कूदने में ही उसकी एक टाँग कट गयी थी। पहिये के नीचे पैर चला गया था। चोरी करना लेकिन उसने फिर भी नहीं छोड़ा था।

हो सकता है आज मौसी का अन्न खा कर ही उसके अन्तर के सद् विचार जो कहीं दबे पड़े थे जाग गये थे। मीना बब्बू के विश्वास पर पूरा घर खुला छोड़ कर स्कूल चली जाती थी। कमरों में ताला लगाना या चीजें अन्दर कमरों में बंद करके बाहर जाना, घर में रह रहे किसी भी आदमी के लिए चाहे वह रिश्तेदार हो या कोई बाहर का आदमी हो

उसका बड़ा भारी अपमान करना है ऐसा मानती थी मीना। उसकी आत्मा भी ऐसा करने को तैयार नहीं थी। वह पूरा घर बब्बू के जिम्मे खुला छोड़ जाती थी। इतना ही नहीं, उसे एक ताला चाभी भी दे जाती थी।

"बब्बू अगर कहीं बाहर जाना हो तो ताला लगा कर जाना लेकिन मेरे लौटने के समय घर पर ही रहना।"

बब्बू ने लेकिन ऐसा कभी नहीं किया। वह बाहर जाता ही नहीं था।

पूरा घर वही सँभालता था। अब तो कभी-कभी मीना को ही उससे पूछना पड़ता था कि कौन सी वस्तु कहाँ रखी है। बब्बू पर इतना विश्वास किसी ने कभी नहीं किया था। इतना भरोसा, इतना सम्मान उसे किसी ने नहीं दिया था। उसके बाप और सगे भाइयों ने भी नहीं। उसके घर के लोग भी उस पर शक करते थे। रुपए-पैसे उससे छिपा कर रखते थे।

बब्बू ने मीना से सौ रुपए ले कर ट्रेन में मूँगफली बेचना शुरू कर दिया। पहिले वह कभी शराब भी पीता था किन्तु जेल जाने के बाद से उसे पीने को मिली ही नहीं थी। अब उसके हाथ में रुपए होने पर भी उसने शराब पीने की बात नहीं सोची। छः महीने बाद एक दिन वह फिर इलाहाबाद मौसी से मिलने आया। उसने अपने लिए कुछ नये कपड़े बनवा लिये थे। मेहनत की कमाई करना उसने सीख लिया था।

"मौसी अब मैं बम्बई की तरफ जा रहा हूँ। मुझे एक ऐसा आदमी मिल गया है जो मुझे वहाँ रात को सोने के लिए जगह दे देगा और कुछ उधार कपड़े भी बेचने के लिए दिलवा देगा। मैं पटरी पर कपड़े बेचने का धंधा करूँगा। मुझे आशीर्वाद दो मौसी। तुमसे, इतनी दूर जाने के पहिले मिलने ही आया हूँ।"

और बब्बू मौसी का आशीर्वाद ले कर चल दिया। बीच में उसका एक पत्र आया था कि वह कुशल पूर्वक है। काम कर रहा है। फिर सालों बीत गये उसकी कोई खबर मीना को नहीं मिली।

मौसी से लिए उधार रुपए भी वापस करना है यह उसके दिमाग में शायद आया ही नहीं। न मीना ने ही उसके बारे में सोचा।

मीना को अपनी एक रिश्ते की बहन के पुत्र की शादी में एक बार बड़ौदा जाना पड़ा। बहू के लिए कुछ गहने और कपड़े खरीदने वह बहिन के साथ एक दिन बाजार जा रही थी कि किसी ने पीछे से आवाज दी—"मौसी।"

चौंक कर मीना ने घूम कर देखा। टेरीकाट का कुर्ता और साफ, सफेद धोती एक पैर में पालिश किया हुआ चमचमाता जूता पहने बैसाखी पर टिका बब्बू खड़ा था। बैसाखी जमीन पर टिका कर उसने मौसी के पैर छुए। मीना ने देखा अब बब्बू एक सेठ लग रहा था। उसके मुख पर आत्मविश्वास की झलक थी। दस वर्ष पूर्व का चोर बब्बू कहीं गायब हो गया था। आश्चर्य से वह उसे एक टक देखती रह गयी।

बब्बू ने पूछा—"कहाँ ठहरी हो मौसी ? मैं आज ही शाम को तुम्हारे पास आऊँगा। लेकिन अभी तो जरा मेरी दूकान पर चलो न मौसी। अपनी चरण धूल से मेरी दूकान पवित्र हो जाने दो एक बार।" बब्बू ने प्रार्थना की।

मीना हँस दी और बहिन के साथ बब्बू के पीछे-पीछे चल दी। एक छोटी-सी कपड़े की दूकान थी। एक बेंच पर उसने मीना और उसकी बहिन को बिठाया। गरमी के दिन थे। दो ठंडी लेमन की बोतलें मँगाकर उन्हें दी। मीना के मना करने पर वह उदास हो गया। लेकिन मीना की बहिन ने हाथ बढ़ा कर लेमन की बोतलें ले लीं।

मीना ने पूछा—"क्या कर रहे हो बब्बू यहाँ ? कहाँ रह रहे हो ?"

"सब बातें शाम को आकर ही बताऊँगा। यहाँ अभी नहीं। तुम्हारा आशीर्वाद मुझे फल रहा है मौसी।"

शाम को एक टैक्सी मौसी की बहिन के घर के सामने आकर रुकी। बैसाखी लिए बब्बू और उसके पीछे सिर ढके हुए नवयुवती उतरी। गोद में एक गोरा सा गोल-मटोल बच्चा लिये थी वह।

मीना बाहर आयी। उसे समझते देर नहीं लगी कि बब्बू अब शादी कर चुका है और एक पुत्र का पिता भी बन गया है। उन सब को देख कर वह मुस्करा कर आगे बढ़ी। बहू ने आकर मीना के पैर छुए और गोद के बच्चे को उसके पैरों पर डाल कर उससे भी प्रणाम करवाया। बीच में ही बच्चे को गोद में ले कर मीना ने चूम लिया।

हँस कर बब्बू ने बच्चे से कहा—"आशीष यह तेरी दादी है। मौसी तुम्हारे ही आशीर्वाद का फल है यह। इसीलिए इसका नाम आशीष रखा है। तुम्हारी इस बहू के पिता ने मुझे कपड़े की दूकान दिलवा दी है। घर बनवा रहा हूँ। गृह-प्रवेश मैं तुम्हारे हाथों से ही करवाऊँगा।"

"मौसी मैं खुद लेने आऊँगा तुम्हें इलाहाबाद और हाँ घर का नाम भी आशीर्वाद रख रहा हूँ मौसी।"

मीना प्रसन्नता और आश्चर्य से बब्बू, उसकी बहू और बच्चे को देख रही थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह उन लोगों से क्या कहे ?

उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि बब्बू इतनी उन्नति कर लेगा। उसे लगा कि आज से दस वर्ष पहिले उसने जो पौधा लगाया था उसमें फूल ही नहीं फल भी आ गये हैं। उसकी आँखों के सामने दिसम्बर की वह ठंडी रात

घूम गयी जब जेल से छूटे बब्बू ने उसका दरवाजा खटखटाया था। वह यही सब सोच रह थी कि अपनी बहिन की आवाज से वह चौंक पड़ी—''मीना क्या सोचने लगी ? इन लोगों को अन्दर तो चलने को कहो न। बेटे बहू और पोते को कुछ खिलाओगी नहीं क्या ? आओ भाई चलो अन्दर चल कर बैठो। मेरी बहिन तो तुम लोगों को देख कर इतनी खुश हो रही है कि वह अपने खुद को ही भूल गयी।''

सब लोग हँस पड़े।

बैसाखी पर खटखट करता बब्बू अन्दर बढ़ा और पीछे गोद में बच्चा लिये उसकी बहू।

कर्ज का प्रमाण-पत्र

नंदू अपनी गरीबी से बहुत परेशान था। दिन में यदि एक बार भी पेट भर खाना उसे मिल जाता तो वह अपनी जिन्दगी के दिन जैसे-तैसे घसीट ले जाता किन्तु इतना भी उसके भाग्य में नहीं था। कभी-कभी तो कई-कई दिन उसे बिना खाये ही गुजारने पड़ते थे। आखिर उसने निश्चय किया कि वह अपना देश ही छोड़ देगा और किसी दूर देश में जा कर अपना भाग्य आजमायेगा।

एक दिन वह चल दिया अनजानी दिशा को, अनजाने सफर पर। रास्ते में माँगते, खाते, जंगल में फल-फूल जो भी मिल जाता उससे ही पेट भरते हुए वह चलता गया।

इस तरह कई महीनों बाद वह एक दिन एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ के लोग बिलकुल दूसरी तरह के ही थे। उनका रहन-सहन, वेश-भूषा बिलकुल अलग ढंग की थी। यहाँ तक कि उनके नाक-नक्शे, रंग सभी कुछ भिन्न थे। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे, जल भरी नदियाँ थीं। आसमान को छूते पेड़ और रंग-बिरंगे सुन्दर महकीले फूलों से भरी घाटियाँ थीं। खेतों में अनाज लहलहा रहे थे। अच्छे मजबूत खूबसूरत मकान थे जिनके, द्वार और आँगन साफ-सुथरे थे।

उन्हें देख कर लगता था कि लोग सफाई और सुन्दरता पसन्द हैं। उनके चेहरे देख कर ही मालूम हो जाता था कि सभी लोग सुखी हैं और खुश-मिजाज हैं। सम्पन्न भी हैं अन्न और धन से।

कोई फटे हाल नहीं दिखायी देता था। कोई चिड़चिड़ा और रोगी भी नहीं दिखलायी दिया नंदू को। अच्छे हँसते खेलते और कूदते बच्चों को देख कर नंदू को लगा जैसे वह किसी स्वर्ग में पहुँच गया है। थका-हारा, भूखा-प्यासा वह एक छायादार पेड़ के नीचे बैठ कर सुस्ताने लगा।

तभी उसे देख कर एक आदमी उसके पास आया और उससे कुछ पूछने लगा किन्तु उसे उसकी कुछ भी बात पल्ले नहीं पड़ी। उसकी भाषा का एक शब्द भी वह नहीं समझा। आदमी ने इशारे से उससे खाने के लिए पूछा।

नंदू के सिर हिला कर 'हाँ' करने पर वह घर से खाना, फल और पानी ले कर आया। कई दिनों बाद पेट भर खाना मिला तो नंदू के निर्जीव शरीर में जैसे जान पड़ गयी। उसने हाथ जोड़ कर संकेत से उस आदमी को नमस्कार किया और धन्यवाद दिया।

शाम हो चली थी। वह आदमी उसे अपने घर ले गया। उसे सोने के लिए गरम मुलायम बिस्तर दिया। नंदू स्वादिष्ट भोजन करके और आरामदेह बिस्तर पा कर ऐसी मीठी गहरी नींद सोया कि तन बदन की कोई सुधि ही नहीं रही। उसने अनुभव किया कि इस प्रदेश के लोग खुशहाल और सम्पन्न ही नहीं उदार दिल के भी हैं। अतिथि सत्कार भी करना जानते हैं।

वह कई दिनों तक वहाँ रहा। अब उसे वहाँ के लोगों की भाषा कुछ-कुछ समझ में आने लगी थी। टूटी-फूटी वह बोलने भी लगा था।

अपनी गरीबी और मुसीबत का सब हाल उसने अपने दयालु और उदार मेजबान को सुना दिया।

एक दिन उस आदमी ने पूछा—"नंदू तुम कुछ व्यवसाय क्यों नहीं करते ?"

नंदू हँसा—"खाने को तो पास में फूटी कौड़ी भी नहीं है मित्र फिर व्यवसाय कैसे कर सकता हूँ ? खेती के नाम पर गज भर जमीन भी मेरे पास नहीं है।"

"अगर मैं तुम्हें कुछ रुपये दे दूँ तो ?" आदमी ने पूछा।

नंदू प्रसन्नता से खिल उठा—"इससे बड़ी खुशी की और बात क्या हो सकती है मेरे लिए ? मैं तो वैसे ही आपके अहसान से दबा जा रहा हूँ। अब इतने बड़े अहसान को तो जिन्दगी भर नहीं भूल सकता।"

आदमी ने उसे एक थैली ला कर दी, जिसमें चाँदी के सिक्के भरे थे। कृतज्ञता से नंदू की आँखों में आँसू भर आये।

"मेरे अच्छे भाई तुमने मुझ अंधे को दो आँखें दे दी हैं। जिन्दगी भर इसे याद रखूँगा। जैसे ही मैं इस पूँजी से अपना व्यवसाय जमा लूँगा आपका एक-एक पैसा चुका दूँगा। इस कर्ज के लिए आप जैसा ठीक समझें मुझसे प्रमाण का कागज लिखवा लें। अपने पक्ष के गवाह भी बुलवा कर हस्ताक्षर करवा लें।"

नंदू ने बड़ी ईमानदारी से अपनी बात उस आदमी के सामने रखी किन्तु नंदू की बात सुन कर वह आदमी चौंक पड़ा। गंभीर हो कर आश्चर्य से उसने उसे देखा—"क्या तुम्हारे देश में ऐसा ही होता है ?"

"हाँ ! हमारे यहाँ जब कोई किसी को कर्ज देता है तब कर्ज के कागज पर कर्ज लेनेवाले का नाम, पता तथा रकम लिखवा कर उसके हस्ताक्षर करवा लेता है। एक या दो आदमी को गवाह बना कर उनके हस्ताक्षर भी करवा लेता है। यह सब इसलिए जरूरी है कि यदि कभी कर्ज लेनेवाले की नीयत बदल जाय और वह रुपए नहीं लौटाये तो कर्ज देनेवाला उस पर मुकदमा दायर करके, गवाह की सहायता से अदालत के द्वारा मय ब्याज और खर्चे के अपनी पूँजी वसूल कर सकता है।"

नंदू बड़ी सहजता और भोलेपन से अपनी बात उस आदमी को बता रहा था। उसने ध्यान ही नहीं दिया कि उसकी बातें सुन कर उस आदमी की आँखों और चेहरे के भाव कैसे बदलते जा रहे थे। नंदू ने जैसे ही अपनी बात समाप्त की आदमी गंभीर हो उठा। उसने झपट कर उससे अपनी रुपयों की थैली छीन ली।

अवाक्, भौंचक्का-सा नंदू उसे देखता ही रह गया। उसे समझ में ही नहीं आ रहा था कि एकाएक यह दयालु आदमी कैसे इतना बदल गया। उससे क्या कोई गलती हो गयी ? वह तो उसी के लाभ की बात उसे बता रहा था। लेकिन उस आदमी ने बात स्पष्ट कर दी।

वह बोला—"तुम्हारी बातें सुन कर मैं अब तुम्हें एक पैसा भी उधार नहीं दे सकता। लगता है तुम किसी बेईमान देश के नागरिक हो जहाँ के लोग कर्ज ले कर वापस करने की नीयत नहीं रखते। कर्ज देनेवाले को अपना ही पैसा वापस लेने के लिए मुकदमेबाजी करनी पड़ती है ? हमारे यहाँ यह सब कुछ नहीं होता। जिनके पास पैसा होता है वह जरुरतमंद को उधार दे कर उसकी सहायता कर देता है और उधार लेने वाला पैसा आते ही ईमानदारी से बिना माँगे कर्ज चुका देता है। हम न कागज पर रकम लिखवाते हैं, न लेनेवाले के हस्ताक्षर लेते हैं और न गवाह आदि को ही बुलाते हैं। मुझे नहीं मालूम तुम कहाँ से आये हो ? तुम्हारा अता-पता क्या है ? यदि तुम्हारी नीयत रुपए वापस करने की नहीं होगी तो तुम्हारे हस्ताक्षर के प्रमाण-पत्र होने पर भी मैं तुमसे अपनी पूँजी वापस नहीं ले सकता। तुम जाओ और अपने देशवासियों से ही उधार लो।"

उस देश के आदमी की साफ-सुथरी दो टूक बात सुन कर नंदू का सिर शर्म से झुक गया। सच बात है कि ईमानदार के लिए लिखा-पढ़ी की जरूरत नहीं है और बेईमान के लिए लिखा-पढ़ी, प्रमाण-पत्र या गवाही सब व्यर्थ है।

बाल संसार समग्र

(प्रथम भाग)

शकुन्तला सिरोठिया

बाल नाटक (रूपक)

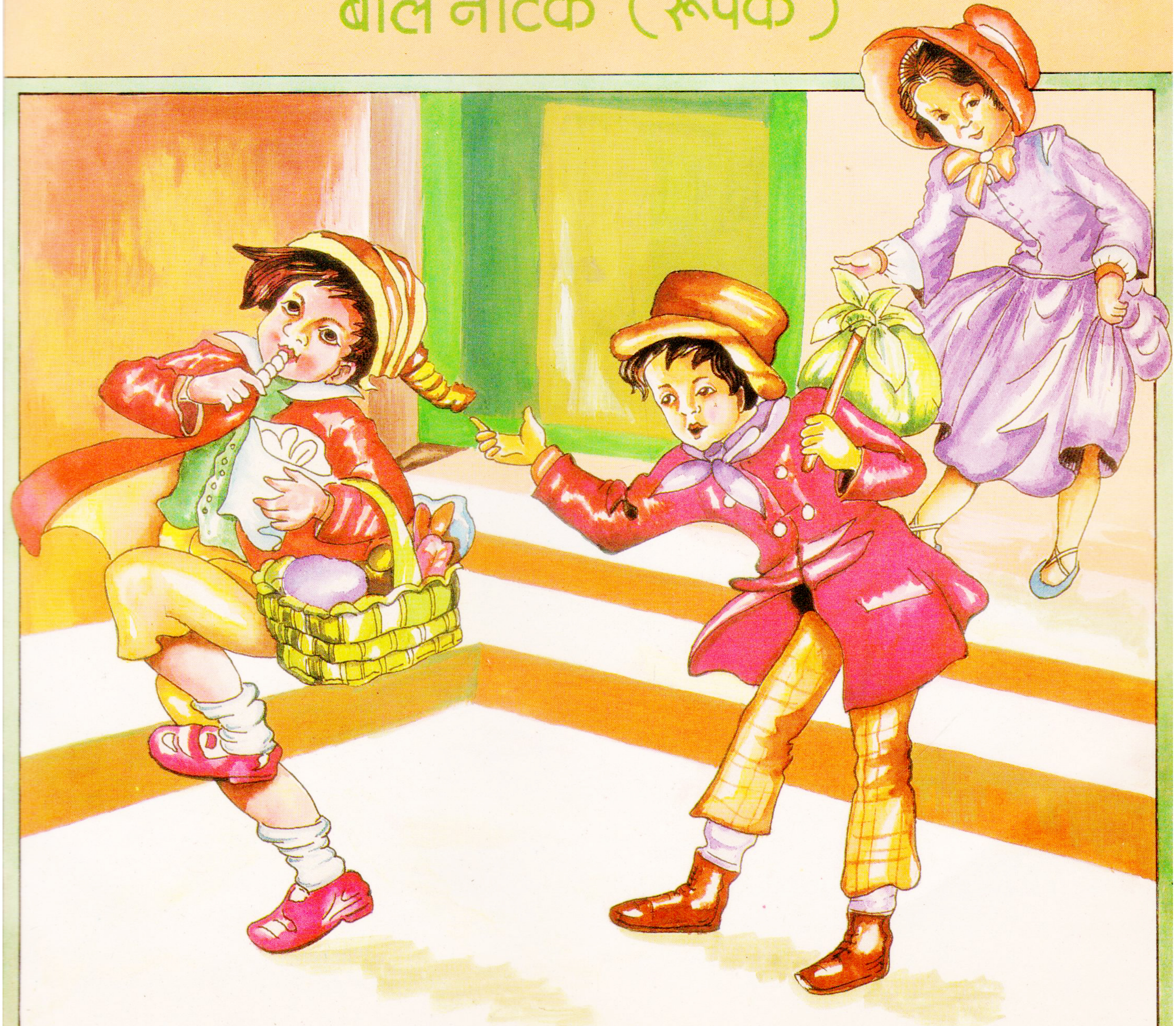

शिशु-नगर (रूपक)

(शिशु नगर का टाऊन हाल। बहुत से बच्चे एकत्र हैं। सहसा विभिन्न कोनों से कोलाहल होता है। अजीत नाम का एक बालक खड़ा होता है।)

अजीत—शान्ति ! शान्ति !! मित्रो, आज हमें बहुत सी जरूरी बातों पर विचार करना है। इन बड़े-बूढ़ों के संसार में हमारी भी हस्ती है। हम उसे खोयेंगे नहीं !

सब—कभी नहीं ! कभी नहीं !! हम उसे खोयेंगे नहीं।

एक आवाज—प्रेसीडेण्ट आलोक कहाँ हैं ? वह अभी तक क्यों नहीं आये ?

एक बालक—भाइयो ! आलोक की ओर से मैं आप सबसे क्षमा माँगता हूँ। आलोक की दीदी ने आज आलोक को स्कूल से जल्दी चले आने के कारण दंड दिया है। उन्हें आज देर से छुटटी मिलेगी। अब आने ही वाले होंगे।

(हँसते हुए एक स्वस्थ चतुर बालक का प्रवेश)

आलोक—मैं आ गया भाइयो ! आप लोगों को इन्तजार करना पड़ा, मुझे इस बात का दुःख है।

(आलोक का सभापति की कुर्सी पर बैठना। सब का ताली बजाना।)

आलोक—(खड़ा हो कर) मित्रो आज हम अपनी संस्था के सब सदस्य यहाँ इसलिए एकत्रित हुए हैं कि हम सब मिल कर अपनी मौजूदा हालत पर गौर करें। आज हम यहाँ एक-दूसरे के दुःख-दर्द को सुनेंगे। उनको दूर करने की तरकीब सोचेंगे। आइए, इसके पहिले हम एक इन्कलाबी गाना गा लें...

(सब मिल कर गाते हैं। एक बार आलोक गाता है। उसके बाद सब बालक। लड़कियों की आवाज अलग मालूम पड़ती है। कुछ बच्चों की बेसुरी आवाजें भी अलग सुनायी पड़ती हैं। गाना कव्वाली की धुन में होता है।)

हमें अब ऐसे शासन से तो नफरत होती जाती है।
न खेलने की कभी छुटटी न घूमने की इजाजत है,
हमें इस कैदखाने से तो नफरत होती जाती है।
कभी स्कूल में मास्टर पकड़ यूँ कान लेता है
कि गदहा और मुर्गा भी झुका कर बना देता है,
हमें अब ऐसे जीवन से तो नफरत होती जाती है।

आलोक—अब अनवर भाई आपको कुछ अपनी आपबीती सुनायेंगे।

सब एक साथ—सुनाइये, सुनाइये, अनवर भाई।

अनवर—भाइयो कल की ही बात है। बात बिल्कुल मामूली है किन्तु मुझे सजा सख्त दी गयी। आप सुनेंगे तो हैरत में आ जायेंगे। आप सभी जानते हैं कि टमाटर में बहुत विटामिन होते हैं।

एक बालक—हाँ, हमें मालूम है। स्कूल में बताया गया था।

एक बालक—कल स्कूल में खाने की छुट्टी में हेडमास्टर ने टमाटर ही खाने को दिये थे।

अनवर—तो दोस्तों मुझे फूलों से बहुत मोहब्बत है।

एक आवाज—मुझे भी बहुत अच्छे लगते हैं फूल।

अनवर—मैं पौधों में खुद पानी डालता हूँ। माली पर मुझे भरोसा नहीं है। मैंने उसे बताना चाहा था कि वह टमाटर से क्या-क्या फायदा उठा सकता है। लेकिन वह उम्र में बड़ा और अक्ल में मुझसे छोटा है। मेरी बात वह जब समझा तो मैं बावर्चीखाने से टमाटर की टोकरी ले आया और फूल के पौधों में टमाटर तोड़-तोड़ कर डाल दिये ताकि पौधों में खूब विटैमिन पहुँच जाये और खूबसूरत बड़े-बड़े रंगीन फूल फूलें।

सब—वाह, बड़ी नयी खोज थी आपकी ? बड़ा सुन्दर विचार था आपका।

अनवर—लेकिन ताज्जुब की बात है कि जब मेरी खाला जान को पता चला कि टमाटरों को आज पौधे खा रहे हैं तो बजाय मेरी पीठ ठोकने के मेरे कान उमेठे, और मेरे गालों पर चपतें रसीद कीं।

सब—चपतें रसीद कीं ? अफसोस ! अफसोस ! खाला जान की ज्यादती थी वह। उन्होंने आपकी कद्र न जानी।

अनवर—एक बात और सुनिए। इसी सिलसिले की बात है। घर के सब लोगों के लिए एक पतीली भर दूध रखा था। उसे मैंने अपने गुलाब को पिला दिया। अम्मी एक दिन बता रही थीं—"बेटा अनवर, अगर खूब दूध पियोगे तो तन्दुरुस्त और खूबसूरत हो जाओगे। तुम्हारे गाल गुलाब से सुन्दर हो जायेंगे। दूध सब चीजों से अधिक ताकतवर और फायदेमन्द है।" तो साहब मैं ऐसी नसीहतों को कभी नहीं भूलता। मैंने सोचा जब दूध मुझ इंसान को गुलाब बना देगा तो गुलाब को कितना सुन्दर न बना देगा। इसीलिए मैंने वह सब दूध एक बार, खाली एक बार, अपने गुलाब को पिला दिया।

एक बालक—गुलाब को पिला दिया ? कैसे पी लिया गुलाब ने दूध अनवर भाई ?

अनवर—मामूली बात है। मैंने सब दूध गुलाब की जड़ में डाल दिया। क्या बताऊँ साहब कि प्यारे गुलाब ने कैसे चाव से पिया वह दूध, डालते-डालते चट गायब हो जाता था। बताइये, क्या यह कोई मेरी गल्ती या नासमझी थी ?

सब—कभी नहीं ! कभी नहीं !!

अनवर—लेकिन उसकी सजा मुझे भुगतनी पड़ी। उस दिन शाम को घर में सब ने कुलफी खायी किंतु मुझे महरूम रखा गया। मेरी पतंग की लटाई ताले में रख दी गयी। रात को नौ बजे तक पढ़ने को बिठाया गया। (बैठ जाता है)

आलोक—आप लोगों ने अभी अनवर भाई की शिकायत सुनी। हमें उनसे पूर्ण सहानुभूति है। अब आपको आशा बहिन अपने जीवन के कटु अनुभव सुनायेंगी। आइए आशा जी, आइए।

(अपनी चोटी के फीते को उँगलियों में लपेटती और खोलती हुई आशा का स्टेज की ओर आना।)

आशा—मेरी बहिन ने जो मुझसे उम्र में काफी बड़ी हैं, मेरी जिन्दगी दूभर कर दी है।

एक आवाज—कैसे आशा जी ? क्या बात है आपकी बहिन में ?

आशा—(महीन आवाज में) मेरी बड़ी बहिन मुझे सख्त दुश्मन मानती हैं। जब देखिए मेरे विरुद्ध खड़ी रहती हैं। जब स्वयं कुछ नहीं कर पातीं, तो माता जी और पिता जी से मेरी शिकायत कर देती हैं।

दूसरी आवाज—ऐसा क्यों करती हैं वह ?

आशा—मेरा विचार है कि मेरी बुद्धि उनसे अच्छी है। शायद इससे उन्हें ईर्ष्या होती है फिर.....(संकोच के साथ रुकते हुए) मैं उनसे सुन्दर भी तो हूँ न ?

तीसरी आवाज—अवश्य आप सुन्दर हैं, बहुत सुन्दर हैं। किन्तु इससे और बहिन से क्या मतलब ?

आशा—इसीलिए तो और चिढ़ती हैं मेरी बहिन मुझसे। मेरी माता जी कहती हैं कि आशा की शादी एक बड़े आफीसर से करूँगी जो आशा के लिए खूब गहने और कपड़े लायेगा। मैं सोचती हूँ, इसकी भी जलन है मेरी बहिन जी को। उस दिन की बात सुनिए। पिता जी उनके लिए एक ब्लाउज का कपड़ा और मेरे लिए एक फ्राक का कपड़ा लाये। बहिन ने अपना ब्लाउज तो उसी दिन बना लिया किन्तु मेरा फ्राक नहीं सिला। भाइयो, मैं काफी बड़ी हो गयी हूँ। स्कूल में हमें सिखाया गया है कि अपना काम स्वयं करना चाहिए। मैंने एक दिन दोपहर को जब बहिन सो रही थी अपना फ्राक काट डाला, छोटा-सा। मुझे पूरा विश्वास है कि जब वह सिल कर तैयार होता (एक उच्छ्वास ले कर) तो बहुत सुन्दर फ्राक बनता। किन्तु भाइयो (रोनी-सी आवाज में) बहिन ने मुझे मारा... (हिचकी ले कर रो पड़ती है) और फ्राक मुझसे छीन कर मुन्नू का जाँघिया बना डाला।

सब—राम, राम, आशा जी के साथ बहुत अत्याचार हुआ। उनका फ्राक भी छिन गया और मार भी पड़ी। हमारे बड़े लोग हम पर अपने शारीरिक बल का दुरुपयोग करते हैं (जोश में शोर-सा होता है।)

आलोक—शान्ति ! शान्ति !! भाइयो, धैर्य से काम लीजिए। जल्दबाजी में काम बिगड़ जाता है। हमें गांधी जी की अहिंसा-नीति का अनुसरण करना है। आप लोगों में से यदि किसी और को कुछ कहना हो, तो स्टेज पर आयें।

एक बालक—जाओ न अविनाश। अभी तो तुम कुछ कहना चाहते थे न ?

(अविनाश आगे बढ़ता है।)

अविनाश—भाइयो ! अपनी दर्द भरी कहानी आपको क्या सुनाऊँ ! आप रो देंगे मेरी आप बीती सुन कर।

एक आवाज—सुनाइये, सुनाइये अविनाश जी ? आज हम पत्थर का दिल बना कर बैठे हैं।

अविनाश—तो सुनिये मित्रो ! मेरे एक बड़े भाई हैं। दादा भाई कहता हूँ उन्हें। उनकी आदत हो गयी है कि वे मेरी हर बात में अड़चने डालें। मेरी हर इच्छा को कुचल दें। आखिर बताइये साहब मैं भी तो इंसान हूँ।

दूसरी आवाज—अवश्य आप इंसान हैं।

अविनाश—मैं चाहता हूँ सबेरे ठंडी हवा में कुछ देर तक सोता रहूँ। ज्यादा नहीं यही नौ बजे तक। जाड़े में तो साहब नौ बजे तक पौ फूटती है। रात को कभी-कभी आँख खुल जाती है तो स्कूल का दृश्य सामने खिंच जाता है। उस समय मारे चिन्ता के नींद कोसों दूर भाग जाती है।

तीसरी आवाज—किस बात की चिन्ता ? कैसी चिन्ता रहती है आपको ?

अविनाश—आप पूछते हैं कैसी चिन्ता ! अरे यही कि कल फिर स्कूल आना पड़ेगा। फिर गुरु जी के आदेशों का बन्धन ! कक्षा में गुलाम की तरह बैठना, न हिल सकते हैं न डुल सकते हैं। क्या यह कम चिन्ता और दु:ख की बात है ? मैं भावुक हूँ मित्रो। भविष्य में मुझे कवि और लेखक बनना है। अभी से मैं हर बात आप लोगों से एक हाथ आगे बढ़ कर सोचता हूँ।

एक आवाज—ऊँचे इरादे हैं आपके। ईश्वर आपको सफलता दे। आगे सुनाइये।

अविनाश—तो भाइयो, मैं सबेरे जरा देर तक सोना चाहता हूँ किन्तु अंधेर यह है कि आठ भी नहीं बजते कि दादा भाई सिर पर खड़े हो कर चिल्लाने लगते हैं। एक दिन मैंने एक स्वप्न देखा कि मैं जंगल में भटक रहा हूँ। रास्ता भूल गया हूँ। इतने में एक भयानक आवाज सुनायी पड़ी...देखता हूँ एक दैत्य-सा आदमी मेरी ओर चिल्ला कर बढ़ रहा है। उसकी चिल्लाहट से कान फटे जा रहे थे किन्तु आप सभी जानते हैं कि मैं डरपोक नहीं हूँ....।

दो-तीन-आवाज—हरगिज नहीं ! आप और डरपोक। दो

विरोधी बातें हैं ये।

अविनाश—मैंने देखा मेरे हाथों में कोई हथियार नहीं और वह दैत्य मुझसे बहुत बड़ा है। तभी मुझे याद आया कि 'छोड़िये न हिम्मत विसारिये न राम।' आखिर 'जै बजरंग बली' कह कर मैंने उस पर हमला बोल दिया और उसके बढ़े हुए हाथ में पूरे दाँत गड़ा दिये। किन्तु भाइयो यह स्वप्न न मालूम कैसे सत्य में बदल गया। जैसे कुछ जादू हो गया। देखा तो भाई साहब खड़े मुझे ढकेल रहे हैं और उनका हाथ मेरे मुँह में दबा है। मित्रो, इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। दादा भाई दैत्य बन कर मेरे स्वप्न में आ सकते हैं, मैंने कभी सोचा भी नहीं था। यह बात तो मेरी कवि कल्पना से भी दूर थी। फिर मैंने जानबूझ कर तो किया नहीं कुछ। आप ही इंसाफ....।

सब—कदापि नहीं, स्वप्न और बेहोशी में तो खून भी माफ है।

अविनाश—किन्तु भाइयो इसके लिए मुझ पर बेहद मार पड़ी। पिता जी ने खाना बन्द कर दिया। नाश्ता तक नहीं दिया सबेरे।

आलोक—ओह बहुत दु:ख मिला अविनाश भाई आपको !

अविनाश—और भी सुनिये मित्रो। मुझे मेरी माता जी ने एक दिन कुछ पैसे दिये। मैं एक सभ्य लड़के की तरह उन्हें खाने-पीने में खर्च न कर एक डमरू ले आया। इतना प्यारा डमरू था वह, इतनी प्यारी आवाज थी उसकी कि मैं उसे बजा कर खुद झूम उठता था। किन्तु न मालूम क्यों दादा भाई को उससे भी चिढ़ थी। उसकी आवाज सुनते ही वे अपना पढ़ना छोड़ कर मुझे मारने और डाँटने चले आते। मैंने भी डमरू और अपनी भलाई के लिए दादा भाई के सामने बजाना ही छोड़ दिया। एक दिन जब वह सो रहे थे, मैंने अवसर देख कर डमरू निकाला और दो झटके दे ही तो दिये अपने डमरू के। कैसी टन्नाके की आवाज निकली उससे ! आखिर मैंने उसे बजाया और खूब बजाया। दादा भाई तो आँखें मीचे ही थे, फिर डर किस बात का था ! किन्तु मुझे यह नहीं मालूम था कि भाई जान को आँखें बन्द करने पर भी दिखाई देता है और सोने पर भी सुनायी देता है। आव देखा न ताव, झपट कर डमरू मेरे हाथ से छीन कर सड़क पर फेंक दिया। मैं चिल्लाता रह गया और डमरू तोते के समान मेरे हाथ से उड़ गया। यह मेरा खोटा भाग्य था भाइयो ! यद्यपि मेरी आत्मा कहती है मैं बेकसूर था। (बैठ जाता है।)

आलोक—भाइयो ! आज की बातें आपने धैर्य के साथ सुनीं न। इसके लिए हम एक-दूसरे के आभारी हैं। किन्तु हमें अब यह विचार करना है कि क्या उपाय किया जाय कि ये अम्मा-पापा, ये खाला जान, ये दादा भाई, हमारे ऊपर और अत्याचार न करें। वे हमें भी कुछ समझें।

अजीत—हम अपनी इन कथाओं को 'अत्याचारों की घटनाएँ' के नाम से प्रकाशित करायें। यह मेरा प्रस्ताव है।

एक बालक—मैं अजीत का समर्थन करता हूँ।

अजय—मेरा प्रस्ताव है कि इन सत्य घटनाओं के पर्चे छपवाये जायें और उन्हें अम्मा, खाला, मौसी, दीदी, भाईजान आदि के हाथों में पहुँचाया जाय तथा उनके कमरों में

चिपकाया जाय, जिससे उन्हें मालूम हो कि जाने और अनजाने कैसे-कैसे अत्याचार किये हैं उन्होंने हमारे ऊपर। हमारे शिशु-नगर की अदालत में इन सब बातों पर विचार हो।

आलोक—उत्तम विचार है। मैं समर्थन करता हूँ इसका। हमारी यह शिशु-उद्धार- नगर-कारपोरेशन इस पर गम्भीरता से विचार करेगी। अपने लिए हम एक नया ही वातावरण चाहते हैं। शिशु-नगर में हम एक नया ही स्कूल बनायेंगे जहाँ हमारे खेलने का प्रोग्राम अधिक होगा।

अविनाश—जहाँ हमारे खाने-पीने की कमी न होगी.... ।

अकबर—जहाँ अविनाश भाई के सोने का प्रबन्ध होगा, जहाँ ये दादा भाई सिर पर खड़े हो कर हमें झकझोरने न आ पायेंगे।

अविनाश—और जहाँ अनवर भाई के नये आविष्कारों को कार्य रूप में परिणित करने का अवसर दिया जायेगा।

आलोक—मैं सेक्रेटरी महोदय से प्रार्थना करूँगा कि वे इन महानुभावों के अमूल्य प्रस्तावों को नोट करते जायें और शीघ्र ही इन्हें अखबारों में प्रकाशन के लिए दे दें। इनकी एक नकल शिशु नगर के सिटी मजिस्ट्रेट के पास भी भेज दें। यह काम जल्दी ही होना चाहिए। अब आज की कार्यवाही समाप्त होती है। हम शीघ्र ही फिर मिलेंगे।

(सब जाते हैं।)

वर्षापति का दरबार

दरबार लगा है। चारों ओर प्रकृति हरी है। वृक्ष लहलहा रहे हैं। उनसे लिपटी लताएँ फूलों के भार से झुकी पड़ रही हैं। दरबार के द्वार पर नीले, लाल, पीले और सफेद फूलों वाली लताएँ बंदनवार का आभास दे रही हैं। उन पर भन-भन करते हुए भौंरों की वंशी बज रही है। दो लम्बे ताड़ प्रहरी से खड़े हैं। सब दरबारी अपने नियत स्थान पर बैठे उत्सुकता से वर्षापति के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सहसा कोकिल जोर से कूक उठती है। सभी चौंक पड़ते हैं और संभल कर बैठ जाते हैं। कबूतर भी, जो अपनी गरदन में चोंच दिये बैठा था, सचेत हो उठता है। तोता पर फड़फड़ा देता है और मंगल स्तोत्र गाने लगता है। दो हंस अपने विशाल सफेद परों को फैला कर सिंहासन के दायें-बायें खड़े हो जाते हैं। ताड़ बड़ी जोर से खड़खड़ा उठते हैं। मोर आकाश की ओर गरदन उठा कर आवाज लगाता है। महाराज आते हैं। उनके वस्त्र नीले बादल जैसे रंग के हैं। पैरों में हरी दूब के रंग के मखमली जूते हैं। मस्तक पर बिजली का चमचमाता मुकुट है। हाथ में फूलों का राजदंड है। महाराज के बायीं ओर वर्षारानी हैं। सुन्दर, पतली-लम्बी आकृति, इन्द्रधनुषी साड़ी पहने हैं। कमर में सोने की करधनी, शोभा दे रही है। वह रंग-बिरंगे फूलों से

श्रृंगार किये हैं। लम्बे काले केश कमर से नीचे लहरा रहे हैं। कानों में दो मछली के आकार के कुंडल झूल रहे हैं। दोनों आगे बढ़ते हैं। मौलश्री अपने पुष्पों को दोनों पर बरसा देती है। दोनों मुस्करा देते हैं।

मयूर आकर रानी के चरणों की वंदना करता है। रानी मुस्करा कर प्यार से उसकी चोंच को अपनी हथेली पर ले लेती है। गरदन को थपथपा कर छोड़ देती हैं। सब पक्षी अपने-अपने ढंग से आकर अभिवादन करते हैं। महाराज और महारानी सब को प्रसन्न मुद्रा में उत्तर देते हैं। पक्षियों के विचित्र कलरव से प्रकृति गूँज उठती है।

महाराज—मित्रो, बड़ा सुहावना समय है आज। आप लोग भी बहुत प्रसन्न दिखलाई पड़ रहे हैं। क्या कोई विशेष कार्यक्रम बनाया है आपने ?

सारस—गरदन ऊँची किये लम्बे पैरों को बढ़ाता हुआ आगे आता है। मयूर नृत्य का आयोजन है, महाराज। आज्ञा हो तो....... ।

महाराज—(प्रसन्नता से) अवश्य। अवश्य। क्यों रानी !

रानी—(किंचित् मुस्करा कर) भला इसमें भी अनुमति की आवश्यकता होती है। (मयूर से) चलो प्रिय मयूर, हम तुम्हारा नृत्य देखने को आतुर हैं।

मयूर अपनी लचकीली गरदन में बल दे कर पंखों को सम्हाले सामने आता है। धीरे से आदर के साथ पंखों को खोलता है। चन्द्राकार पंख फैल जाते हैं। गरदन सीधी तान कर सिर की कलँगी फैला देता है। पक्षी हर्ष-ध्वनि करते हैं। कबूतर गरदन मटका कर गुटर-गूँ करता है। मयूर मस्त हो कर नृत्य करता है। सब स्तब्ध हैं, केवल कबूतर का तबला धमकता है तोते और कोकिल का गान होता है। तोता जोश में कभी-कभी मयूर के ऊपर मँडराने लगता है। कबूतर स्वयं मयूर के अति निकट आकर नाचने लगता है। छोटी-छोटी लाल मुनियाँ और चरखी की चहचहाहट वंशी और झाँझ का आभास देती है, नृत्य रंग पकड़ता है। आकाश में बादल उमड़ आते हैं। वर्षा-रानी मुस्करा देती है, आकाश में बिजली चमक उठती है। पपीहा 'पी कहाँ' चिल्ला उठता है। बगुला और सारस बार-बार अपने पंखों को जोर से फड़फड़ाते हैं। मयूर थक जाता है और धीरे-धीरे अपने पंखों को बन्द कर गरदन को नीची कर रानी के चरणों के पास खड़ा हो जाता है। श्रम से उसके शरीर से स्वेद-पात होता है। रानी प्यार से उसकी गरदन और पीठ को थपथपाती हैं।

महाराज—बहुत सुन्दर मयूरराज ! आज तो तुमने कमाल कर दिया। कुछ माँगो हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं।

मयूर—(नम्रता से) महाराज आपकी कृपा से यह सुहावनी ऋतु यह रिमझिम, ये नीले आकाश पर काले-काले बादलों का घुमड़, यह हरी-हरी घास सभी कुछ मुझे प्राप्त है। इतना ऐश्वर्य तो ऋतुपति भी नहीं दे सके। वसुधा के कण-कण में जीवन आ गया है। अब और किसकी आकांक्षा करूँ, स्वामी ? (रानी के चरणों में झुक कर) इन चरणों की निकटता बनी रहे, यही आकांक्षा है।

महाराज—(प्रसन्न हो कर) एवमस्तु ! तुम बहुत संतोषी और सुशील हो। कुछ दिन और प्रतीक्षा करो, आतप से दुःखी तुम्हारे इन प्राणों को महान् सुख मिलेगा। हम तुम्हारी ग्रीवा को नीलम की गहरी आभा से और सुन्दर बना देंगे। तुम्हारे इन चमकीले पंखों में आकाश का चन्द्र उतार देंगे।

(कोकिल धीरे से आम्र वृक्ष से उतर कर महाराज के सम्मुख आकर खड़ी हो जाती है।)

महाराज—(सस्मित) कहो कोकिले। कुछ कहना है क्या ? तुम्हारे गान से हमारे प्राणों में रस भर गया है। ऋतुपति जाते समय तुम्हें कुछ दिन के लिए हमारे आतिथ्य में छोड़ गये थे। हम उनके हृदय से आभारी हैं। तुम्हें हमारे राज्य में किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं है ? तुम हमारे मित्र की धरोहर हो। हमें तुम्हारा विशेष ध्यान है।

कोकिल—(मीठे स्वर में) आपकी कृपा से उऋण नहीं हो सकती, राजन्। आपके राज्य में मुझे सभी सुख-सुविधाएँ प्राप्त हैं—(रुक जाती है।)

महाराज—कहो, कहो, रुक क्यों गयी ?

कोकिल—महाराज, देश से आये बहुत दिन हो गये। ऋतु में परिवर्तन हो गया है। मुझे अपना घर याद आने लगा है।

महाराज—तुम्हें अभी से विदा करके हमें दुःख होगा। तुम हमारे दरबार की शोभा हो। तुम कहो तो हम तुम्हारे मन की ऋतु ला दें। तुम्हारी इच्छा हो तो अगले सात दिन पानी न बरसे सूर्य फिर चमकने लगे, हवा गरम हो जाये। तुम कहो तो हम फिर ग्रीष्म ऋतु ला दें ? किन्तु यदि तुम्हारी इच्छा जाने की है तो हम कुछ नहीं कहते। कुछ दिन और रुक कर चली जाना।

कोकिल—(संकोच से) जय हो। मैं कुछ दिन और रुक जाती हूँ। आप ऋतु न बदलें। मीठा के बाद नमकीन भी अच्छा लगता है।

(सब हर्ष-ध्वनि करते हैं। हंस आकर सिर झुकाता है।)

हंस—महाराज अभी हमारा सरोवर नहीं भरा। मृणाल पुष्ट नहीं हुए। कमलों में रस नहीं है। मेरा मन अब भी व्याकुल है, प्रभो।

बगुला—(एक पैर से खड़ा होता है। आँख मूँद कर अभिवादन करता है।) यहीं मैं भी निवेदन करना चाहता था, स्वामी। मुझे आहार खोजने में अब भी एक पैर से बड़ी तपस्या करनी पड़ती है।

(महाराज रानी की ओर देख कर हँसते हैं।)

रानी—हमें मालूम है। तुम लोगों का ध्यान हमें बराबर बना रहता है। बहुत शीघ्र ही तुम्हारी सुविधाओं का प्रबन्ध होगा। आज क्या तुमने नहीं देखा कि मयूर ने मेघों को मौन निमन्त्रण भेजा है। पपीहे ने तो खुल कर ही आह्वान किया है। इस पर भी क्या सरस घन रुक सकते हैं ? तुमने कदाचित् अभी मेघों के हृदय को नहीं पहचाना है। ऊपर देखो।

(सब ऊपर देखते हैं। रानी खड़ी हो जाती है। उनका इन्द्रधनुषी आँचल हवा में फहरा उठता है। अपना हाथ आकाश में गोलाकार घुमाती हैं। हवा का एक झोंका रानी के केशों को लहरा देता है। आकाश में काली घटा उमड़ आती है। पश्चिम में क्षितिज पर विशाल इन्द्रधनुष तन जाता है। मोर ऊपर गरदन करके पंख फैला देता है। बगुला जुही के फूल-सा काले बादलों में मिल जाता है। पपीहा 'पी कहाँ' कहता हुआ अज्ञात दिशा को उड़ जाता है। सब जय जयकार करते हैं।)

चतुर ओडीसस

वर्षा हो रही है। एक बड़े कमरे में बहुत-से बालक और बालिकाएँ शोर मचा रहे हैं।

बरसो राम धना धनिया—
खाय किसान झंखें बनियाँ।

एक बालक—(ताली बजा कर) वाह ! बड़ी अच्छी वर्षा हो रही है।

दूसरा बालक—धत्, कहाँ का गँवारू गीत गा रहा है।

पहला—तो तुम्हीं गाओ न अच्छा सा गाना।

दूसरा—अच्छा तो सुनो। तुम समझते हो, मैं नहीं गा सकता।

(सब बालक उसके साथ गाते हैं।)

प्यासी धरती पानी माँगे, बादल पानी लेने भागे,
घुमड़-घुमड़ जल लाये। वर्षा के दिन आये।।

बन में नाचा मोर सुहाना, पक्षी करते कलरव नाना—
पपिहा पी-पी गाये। वर्षा के दिन आये।।

पर्वत भीगे, तरुवर भीगे, पशु भीगे, नर-नारी भीगे,
सरिता भर-भर आये। वर्षा के दिन आये।।

नाचे मुन्ना, मुन्नी नाचे, मीना, सरिता, कुक्कू नाचे।
चुन्नी कजली गाये। वर्षा के दिन आये।।

बादल में से चन्दा झाँके, घूँघट से बिजली भी झाँके,
जुगनू जगमग भाये। वर्षा के दिन आये।।

(सब तालियाँ बजाते हैं।)

एक बालक—अरे, शरद को तो देखो कैसा भींगता चला आ रहा है।

शरद—(हाँफता हुआ) अरे बाहर बगीचे में चल कर देखो पानी से सब पेड़-पौधे नहा गये हैं। मैं भी खूब नहाया हूँ। इस वर्षा में भी घर से भाग आया। दीदी मना कर रही थीं कि ऐसे में मत जा किन्तु भाई मुझसे तो यहाँ आये बिना नहीं रहा गया।

गोपाल—आज तो हम लोग एक नाटक खेलनेवाले थे न ?

चन्दा—फिर देर किस बात की है ? कौन-सा खेल है वह ? मैं तो नाम ही भूल जाता हूँ। ओडिसस और साइक्लोप्स।

बंशी—पुष्पा जी, आप कुछ ओडिसस के बारे में थोड़ा-सा बता दीजिए न।

पुष्पा—भाइयो, आप लोगों ने ग्रीस देश का नाम सुना होगा। ओडिसस वहीं का एक वीर था। वह वीर होने के साथ विद्वान् भी था। वह दस वर्षों तक दुनिया के भिन्न-भिन्न भागों में घूमता रहा है। तरह-तरह की आपत्तियाँ झेलीं, कई खतरनाक घटनाएँ उसके साथ घटीं। यह नाटक उसके साथ घटी हुई घटनाओं के आधार पर है।

बंशी—और साइक्लोप्स कौन था पुष्पा जी ?

पुष्पा—ये दैत्य होते थे, जिनके दो आँखें नहीं होती थीं बल्कि माथे के बीचों-बीच केवल एक आँख होती थी। ये भेड़-बकरियों को तो कच्चा ही खा जाते थे। ये बड़े लम्बे-चौड़े और भयानक होते थे। आइए अब नाटक शुरु करें।

(परदे के पीछे से नाव चलाने की आवाज आती है।)

किश्ती चली रे ! डाँड़ सँभालो रे !
दायें बचा कर बायें देखो, जोर से खींचो रे !
ओ भाई जोर से खींचो रे। किश्ती चली रे !
जोर लगा कर खींचो रे भाई—
डाँड़ संभालो रे ! किश्ती चली रे !
जल्दी जल्दी चलो रे भाई, जोर से खींचो रे !
हो भाई ! ही हो ! ही हो ! ही हो !
किश्ती चली रे !

(नाव चलने की छप-छप आवाज बन्द होती है। नाव तट पर लगती है।)

एक आदमी—ओडिसस, यह हम कहाँ पहुँच गये ? कौन-सा देश है यह ? यहाँ न कोई घर है और न कोई मनुष्य दिखायी देता है।

ओडिसस—यह तो मुझे भी नहीं मालूम भाइयो ! कोई नया

विचित्र देश लग रहा है यह। चलो, हम लोग घूम कर इसे देखें। रास्ते में खाने-पीने के लिए कुछ अपने-अपने झोलों में रख लो।

सब—यह ठीक सलाह है। (बातचीत करते हुए चल देते हैं।) अरे, यह पहाड़ तो देखो। कितनी बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं इसकी और यह गुफा कितनी गहरी और लम्बी है !

ओडिसस—चलो, भीतर चल कर देखें। अपने-अपने बर्छे हाथ में ले लो। अरे यहाँ तो भेड़ें भरी हुई हैं और ये इतने बर्तन रखे हैं जिनमें दूध भरा है। यह मक्खन !

एक साथी—यहाँ तो कोई अमीर आदमी रहता है। चलो, इन भेड़ों के बच्चों को अपनी नावों पर ले चलें। पनीर, मक्खन, सब ले चलो। रास्ते में बहुत दिनों के लिए खाने के काम आयेगा।

ओडिसस—नहीं साथियों, किसी की अनुपस्थिति में उसके घर से सामान उठा ले जाना अच्छा नहीं। हम लोग संध्या तक गुफा के मालिक की प्रतीक्षा करेंगे।

(संध्या को भेड़ों के गले की घण्टी बजती है। एक दैत्य शोर करता, भारी कदम रखता हुआ आता है। गुफा में अंधेरा है।)

ओडिसस—गजब हो गया, गलती से हम लोग किसी दैत्य की गुफा में आ गये हैं। अब तो बिना मौत के मारे गये। आओ यहीं सामान के पीछे छिप जायँ।

दैत्य—हा-हा भेड़ों, भीतर चलो। मैं बहुत थक गया हूँ और तुम सब खूब चर आयी हो। चलो, तुम्हें दुह कर दूध निकालूँ और उसे गरम-गरम पी कर सो जाऊँ।

(दूध दुहता है, आग जलाता है।)

ओडिसस—(धीरे से) अरे यह आग जला रहा है ! अब तो उजाले में हम लोग उसे दिख जायेंगे। भाग भी नहीं सकते। इसने दरवाजे पर भारी चट्टान रख दी है।

दैत्य—(प्रकाश में सबको देख कर) ओ ! हो ! कौन हो तुम लोग मेरी गुफा में ?

ओडिसस—दैत्य साइक्लोप्स, हम लोग मुसाफिर हैं। तूफान ने हमारे जहाज को यहाँ ला पटका है। हम नहीं जानते थे कि यह आपकी गुफा है।

दैत्य—ठीक है ! ठीक है ! बहुत दिन के लिए भोजन मिल गया। (दो को पकड़ कर ककड़ी की तरह तोड़ कर खा डालता है। (चिल्लाहट और रोना।) बड़ा मजेदार भोजन मिला। (डकार लेता है।) अब सोऊँगा मैं।

ओडिसस के साथी—(धीरे-धीरे रोते हुए) अब क्या होगा ओडिसस। यह तो इस तरह हम सबको खा जायगा। क्यों न इसे सोते ही में मार डाला जाय।

ओडिसस—मूर्ख हो तुम सब। इसे मारने के बाद यह भारी चट्टान, जो दरवाजे पर इसने रख दी है, कौन हटायेगा ? हम सब मिल कर भी क्या इसे तिल भर हटा सकेंगे ? सबेरा होने दो। जब यह चला जायगा। तब कुछ तरकीब सोचेंगे।

(सबेरा होता है। मुर्गा बोलता है। चिड़ियाँ चहचहाती हैं। दैत्य के उठने पर भेड़ें मिमियाती हैं। दैत्य फिर दो आदमियों को मार कर खा लेता है और भेड़ें ले कर चला जाता है।)

ओडिसस—देखो, अब यह चला गया है। उफ् कितना भयानक है यह !

साथी—कितना बेरहम है। पाजी ने हमारे चार साथियों को खा लिया। न मालूम अब किसकी बारी आयेगी ? (सब रोते हैं)

ओडिसस—साथियो, केवल आज शाम तक धैर्य रखो। फिर रात को इसका काम खतम कर दिया जायेगा। यह बरछी तेज कर लो। फिर गरम करके इसकी आँख में भोंक देंगे। जब यह अंधा हो जायगा तब हम बाहर निकलने की कोशिश करेंगे।

(पत्थर पर बरछी तेज करते हैं। संध्या को दैत्य आता है।)

सब—तुम बड़े समझदार हो ओडिसस ! हमारी जिन्दगी को तुम्हीं बचा सकते हो।

सब—प्यारे भाइयो, अब फिर हममें से कोई दो जान से हाथ धोयेंगे। (कुछ की सिसकियाँ सुनायी देती हैं।

दैत्य—(गरज कर) ठीक से तो हो मेरे मेहमानो ? इधर तो आओ। आज मैं बहुत भूखा हूँ। (दो को फिर पकड़ता और मार कर खा डालता है।)

ओडिसस—साइक्लोप्स, आज हम तुम्हें बढ़िया शराब पिलायेंगे।

दैत्य—वाह ! ला, दे-(पीता है।) क्या नाम है तेरा रे-मैं तुझे इनाम दूँगा।

ओडिसस—मेरा नाम बेनाम है।

दैत्य—अच्छा बेनाम तेरा इनाम यही है कि तुझे सबसे अन्त में खाऊँगा। अब मैं सोऊँगा। (सो जाता है। खर्राटे की आवाज होती है।)

ओडिसस—(धीरे से) चलो, अब बर्छी गरम कर लें। लो उठाओ। अब भोंक दो इस दुष्ट की आँख में। संभल कर, शोर न हो। मजबूती से पकड़ना। घबराना नहीं। कैसा सो रहा है दुष्ट। भोंक दो सीधे—घबराना नहीं...ठीक—

(सलाख उसकी आँख में भोंक देते हैं। छन्न की आवाज होती है। दैत्य बड़ी जोर से चिल्लाता और हाथ-पैर पटकता है। उठ कर सबको पकड़ने दौड़ता है।)

ओडिसस—भागो, कोई हाथ न आ पाये, बचो।

दैत्य—हाय रे मार डाला ! पाजियो, ठहरो। आज एक को भी न छोड़ूँगा—अरे मरा रे। बेनाम ने मार डाला। अरे बड़ा दर्द है। (हार कर छटपटाता हुआ लेट जाता है।)

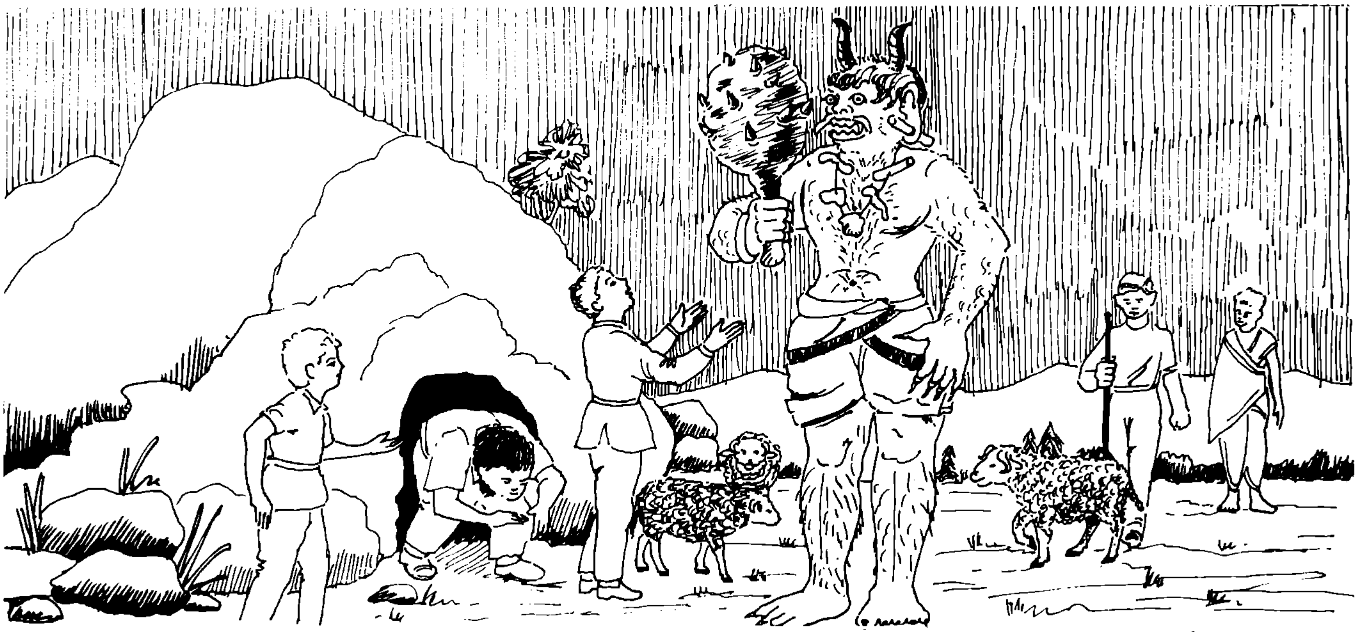

ओडिसस—दुष्ट अब सो गया। जब सबेरे उठेगा तब पत्थर हटायेगा और हम लोग बाहर निकलने की कोशिश करेंगे।

(सबेरा होता है। दैत्य जागता है। चिल्लाता है।)

दैत्य—कहाँ गया, बेनाम ? अरे कुछ दिखायी नहीं देता। दुष्टो, देखूँ तुम कैसे भागते हो ? एक को भी नहीं जाने दूँगा।

ओडिसस—(धीरे धीरे) देखो, कैसा दरवाजे पर हाथ फैला कर बैठा है और भेड़ों को टटोल कर बाहर निकाल रहा है। अब एक ही तरकीब है कि तीन भेड़ों को एक साथ बाँध दो। बीच की भेड़ से एक आदमी चिपक जाय। इस तरह सब बाहर हो जायेंगे। यह ऊपर से भेड़ों को टटोलता है। नीचे नहीं देखता। जल्दी करो। (एक-एक करके सब बाहर आ जाते हैं।) बाहर आकर "ईश्वर, तुझे लाख लाख धन्यवाद है कि हम इस राक्षस के पंजे से जिन्दा बच गये।

ओडिसस—(चिल्ला कर) दैत्य साइक्लोप्स सुन ले। हम लोग बाहर आ गये हैं। तू नाहक हाथ फैलाये बैठा है। अच्छा, सलाम। हम जाते हैं। यदि कोई पूछे कि तेरा यह हाल किसने किया तो कह देना कि ग्रीस के ओडिसस ने। अब बैठ कर अपने कर्मों का फल भोग।

(सब भाग जाते हैं। दैत्य चिल्ला कर पकड़ने दौडता है। नाटक समाप्त होता है।)

लड़के-लड़कियाँ—(ताली बजाते हैं) बहुत अच्छा नाटक रहा। खूब छकाया साइक्लोप्स को। वाह ! ओडिसस बड़ा वीर और चतुर आदमी था। बहुत खूब।

चन्दा—अब तो बहुत रात हो गयी। घर चलना चाहिए।

स्वतंत्रता के पथ पर

पहला दृश्य

(स्थान—बच्चों की एक पाठशाला। शोर गुल से स्थान गूँज रहा है। प्रायः सभी बालक सफेद कुर्ता, चूड़ीदार पायजामा, जवाहर-बासकट और गांधी-टोपी पहिने हैं। प्रत्येक की आयु 9 और 10 के बीच में है।)

मोहन—(एक बालक, मस्ती से गाता चला आ रहा है।)

बंशी—(दूसरी ओर से प्रवेश करके) जय हिन्द मोहन, बड़े प्रसन्न मालूम पड़ते हो ? क्या बात है आज ?

(रंजन पीछे से प्रवेश करता है)

रंजन—क्या कहा ? मोहन प्रसन्न है ? हाँ प्रसन्न क्यों न होंगे। आज आजादी के समारोह में देश-भक्ति के गाने पर इन्हें राष्ट्रपति ने पदक जो दिया है।

बंशी—अच्छा ! तब तो बधाई भैया मोहन। रंजन, कितने भाग्यशाली हैं हम ? हमें मोहन जैसा सहपाठी मिला है।

रंजन—इतना ही नहीं ! इन्हें एक रेशमी झण्डा और महात्मा गांधी के चिह्न का बैज भी मिला है।

बंशी—अच्छा ? कहाँ हैं ये चीजें ? दिखाओ न मोहन !

(मोहन जेब में से पुरस्कार की चीजें निकालता है और बच्चे भी आ जाते हैं। सब मोहन के पुरस्कार को देखते हैं, प्रसन्न होते हैं और सराहना करते हैं)

बंशी—लेकिन तुमने गाना कौन सा गाया था मोहन ? हमें भी सुनाओ न।

सब—हाँ, हाँ मोहन भाई, वही गाना सुनाओ—

रंजन—गाओ मोहन, साथियों की बात तो माननी ही पड़ेगी तुम्हें।

मोहन—लेकिन तुम सब को भी साथ गाना पड़ेगा।

सब—जरूर-जरूर हम सब साथ गायेंगे।

(सब कोरस में गाते हैं)

आ माँ तुझको ताज पिन्हा दें।
कुंकुम और रोली से माता तेरा सूना भाल सजा दें !
हम सोते से जाग उठे हैं, तेरे बंधन काट चुके हैं.
सिंहासन पर तुझे बिठा कर आ माँ सुख का साज सजा दें!
हम गांधी, राजेन्द्र, जवाहर बन सुभाष सब कष्ट मिटा दें !
सेवाव्रत में दीक्षित हो सब जय घोषों से विश्व गुँजा दें।

(गाना जिस समय गाया जाता है पाठशाला के सारे बालक जमा हो जाते हैं। पाठशाला की अध्यापिका झरना दीदी भी वहाँ पहुँच जाती है। कोरस में सब सम्मिलित हो जाते हैं)

एक बालक—(गाना समाप्त होने पर) आज हमारी पाठशाला में भी तो स्वतन्त्रता-स्मृति दिवस मनाया जा रहा है। वह नाटक जो तैयार किया था, उसका क्या हुआ ?

झरना दीदी—धीरज धरो भाई और भी तो बालक आने वाले हैं, नाटक शीघ्र ही प्रारम्भ होगा।

(नेपथ्य में—भारत माता की जय, गांधी जी की जय)

लो वे लोग भी आ गये ! चलो वहीं चले,

कोरस में गाना—

कदम-कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा !
ये जिंदगी है देश की तू देश पर लुटाये जा !

गाना गाते हुए जुलूस के रूप में बालकों का प्रवेश। एक बालक के हाथ में झण्डा है।

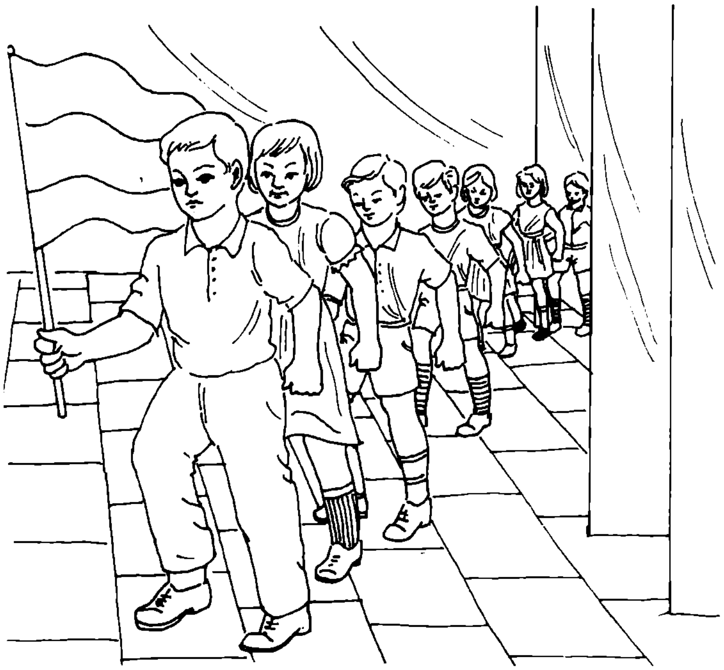

द्वितीय दृश्य

बालक—माँ मुझे जाने दे, देख जुलूस निकल रहा है ! देख माँ, भारत माता की जय के नारे लग रहे हैं। ये मेरे लिए जननी-जन्मभूमि की पुकार है मेरी अच्छी माँ, जाने दे।

माँ—बेटा तू अभी छोटा है, तेरी नन्हीं सी जान तू भीड़ में कुचला जायगा लाल। कहाँ तू और कहाँ यह पागलों की तरह उमड़ती हुई भीड़ ! न, मेरी आँखों के तारे नहीं जाने दूँगी तुझे।

बेटा—माँ यदि ये सब देश पर न्यौछावर होनेवाले पागल हैं तो मैं भी पागल बनूँगा। मुझे रोक मत माँ !

(नेपथ्य में गाना चल रहा है)

(इस झण्डे के नीचे निर्भय लें स्वराज.........)

सुन माँ, देश के झण्डे के नीचे हम अभय हैं, वह झण्डा मुझे बुला रहा है, मुझे जाने दे न !

माँ—नहीं मेरे लाल, तू अकेला वहाँ क्या कर लेगा ? चींटी कहीं पहाड़ का भार उठा सकती है ? देश के लिए प्राण देने वाले बहुतेरे हैं, किन्तु मेरे लिए तू अकेला है। तेरे बिना मेरा संसार सूना हो जायगा।

बेटा—नहीं माँ, तेरे लिए मैं ही अकेला कैसे हूँ ? ये जो इतने बच्चे जुलूस में हैं, क्या तेरे बच्चे नहीं हैं ? ये सारे भारतवासी तेरे बच्चे हैं, माँ। एक मेरे न होने से तू अनेक की माँ बनेगी। हँस माँ, हँस, मुझे हँस करके विदा दे माँ।

माँ—बेटा जिद मत कर, मैं जीते जी तुझे न जाने दूँगी। (नेपथ्य में-नौकरशाही मुर्दाबाद, डायरशाही मुर्दाबाद के नारे लग रहे हैं) देख बेटा देख, आँधी-सी उमड़ी जनता को पुलिस रोक रही है। ये निष्ठुर सिपाही बालक और बूढ़ों में भी फर्क नहीं जानते। उनके जुल्म का शिकार बनने तुझे कैसे जाने दूँ ?

बेटा—उसी तरह से माँ, जिस तरह राजपूतनियाँ अपने प्राणों से प्यारे दूधमुहे बालकों को रणक्षेत्र में भेज देती थीं। मैं नहीं रुक सकूँगा माँ। जुलूस अपने मकान के सामने आ गया है। जुलूस में मेरे साथी भी हैं। (झण्डा उठा कर) मुझे क्षमा करना माँ, मैं जा रहा हूँ। बन्दे...(और बिजली की तेजी से बालक माता के चरणों की धूल माथे पर लगा कर निकल जाता है)

माता—(रोती हुई) हाय, निकल गया, हाथ छुड़ा कर चला गया। हाय, कोई उसे समझानेवाला भी नहीं है ! (बाहर देखती हुई) कैसा तीर-सा भागा जा रहा है ! लो वह सबसे आगे पहुँच गया ! अरे यह झण्डा कहाँ से आ गया उसके पास ?

(माता के मुख पर क्रमशः प्रसन्नता के भाव आते हैं, उसका मुख-मण्डल उद्भसित होता है। नेपथ्य से बालक की

आवाज सुनायी पड़ती है—)

भारत माता की जय।

सारी भीड़ कहती है—

भारत माता की जय।

माता—(स्वगत) जाओ लाल ! देश की पुकार पर तुम जा रहे हो,.....हाँ जिस प्रकार राजपूतनियाँ भेजती थीं,...ठीक कहा तुमने ! मैं वीर माता हूँ, मेरा लाडला देश का सिपाही है......(गुनगुनाती है..........

इस झण्डे के नीचे निर्भय

(दूर से शब्द आते हैं—

लें स्वराज हम अविचल निश्चय।

माँ सुर मिलाती है।

बोलें भारत माता की जय।

पवित्र थाती है, प्राण रहते यह झण्डा हाथ से नहीं जा सकता अपने अपवित्र हाथों से इसे नहीं छूना।

एक बालिका—(आगे बढ़ कर) भैया झण्डा तू मुझे दे दे, यह राक्षस तेरी छोटी सी उम्र का ध्यान भी न करेंगे ! देखूँ मेरे हाथ से कैसे लेते हैं ये ? नीच कहीं के !

बालक—बहिन मैं जुलूस से चला जाऊँ ? भाग कर छिप जाऊँ ? धिक्कार है मुझे जो मैं ऐसा करूँ। मेरे जीते जी तो कोई यह झण्डा मुझसे ले नहीं सकता। हाँ, मैं मर जाऊँ तो तुम इसे अपने हाथों में ले लेना, इसे जमीन पर गिरने न देना। आओ बहिन मेरे पीछे खड़ी हो जाओ।

पुलिस का अफसर—मूर्ख लड़के, झण्डा मेरे हाथ में दे। हट जा सामने से ! क्यों मौत को बुला रहा है ? नहीं मानता....तो-ले (पूरी ताकत से बंदूक का कुंदा बालक के

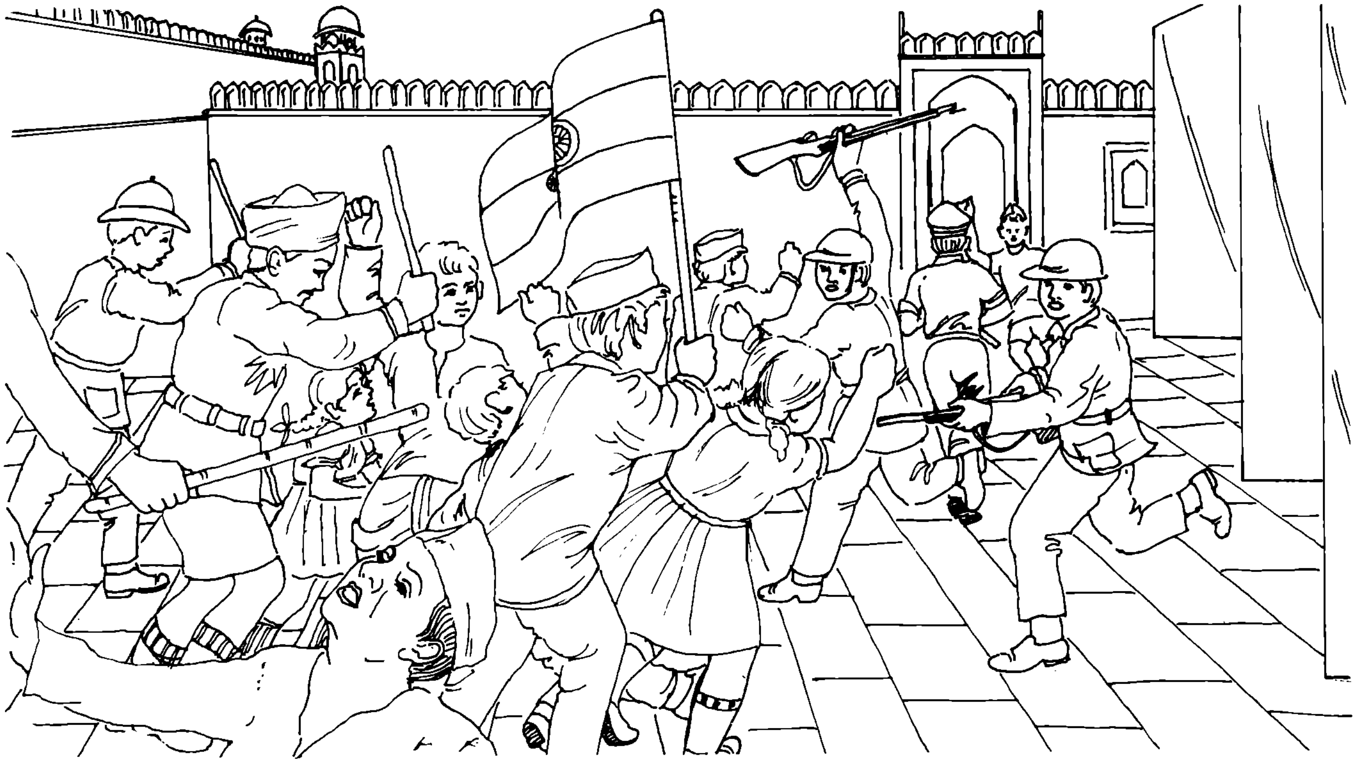

तीसरा दृश्य

(सशस्त्र पुलिस के सिपाही जमा हैं। दूसरी ओर से जुलूस आ रहा है।

आओ प्यारे वीरो आओ। गाता हुआ

सबसे आगे झण्डा लिये वही वीर बालक है)

एक अफसर—(आगे बढ़ कर) जुलूस रोको, तितर-बितर हो जाओ। भागो, जल्दी भागो। (लड़के की ओर घूम कर) लड़के झण्डा मुझे दे दे। भाग जा घर भाग जा।

बालक—नहीं भागूँगा ! वाह ! क्यों भागूँ ? यह माता की

सर पर मारता है। जुलूस पर लाठी चार्ज होती है।)

बालक—आह ! मार डाला दुष्ट ने, किन्तु नर पिशाच मैं तुझे झण्डा नहीं दूँगा। दीदी संभाल इस प्यारी अमानत को। मेरे हाथ...कमजोर पड़ रहे हैं। (बालिका आगे बढ़ कर झण्डा हाथ में लेती है, बालक गाता है रुक-रुक कर)—शान न इसकी जाने पाये। (बेहोश हो कर गिर जाता है।) जुलूस में से दो व्यक्ति उस बच्चे को उठा कर अलग ले जाते हैं। जुलूस पर लाठी चार्ज होने पर भी सब बिना तितर-बितर हुए आगे बढ़ जाते हैं। स्काउट लोग घायलों को ऐंबुलेंस में उठा कर ले जाते हैं।)

चौथा दृश्य

(माँ भजन गा रही है, किन्तु व्यग्रता उसके चेहरे से दिखायी पड़ती है)—

माँ—(अभी तक आया नहीं। अंधेरा भी हो गया। कब से दीपक जलाये उसकी राह देख रही हूँ। (जरा आवेश में आकर) आज मेरे लाल ने देश का झण्डा हाथ में उठाया है। आज उसके मन की हुई। आज उसके अरमान पूरे हुए। माँ भवानी, उसके सिर पर रक्षा का हाथ रखना। उसे लौटने दो आज, मैं उसके माथे पर रोली का तिलक लगाऊँगी।

(खट-खट-का शब्द होता है)

(प्रसन्नता से पागल-सी होकर) वह आ गया। मेरा बेटा आ गया....ठहर....बेटा खोलती हूँ किवाड़। (दौड़ कर किवाड़ खोल देती है एक बालिका को देख चौंक कर) कौन है तू बेटी ? मेरा लाल कहाँ है ? ये भीड़ तेरे साथ कैसी है ? ये पलँग पर किसे उठा कर लाये हैं ? क्या मेरा बेटा चोट खा गया है ?

बालिका—मेरे वीर भैया की माँ घबरा मत। भैया शीघ्र अच्छा हो जायगा। देखो माँ बेहोश होने पर भी भैया मुस्करा रहा है ? उसने कहा था दीदी-झण्डा मत छोड़ना, यह अमानत है। उसकी यह अमानत मेरे हाथ में है माँ। मेरे वीर भैया की माँ, तू धन्य है।

माता—(अर्द्ध विक्षिप्त-सी) क्या कहा ? मैं धन्य हूँ। हाँ मैं धन्य हूँ, सचमुच मैं धन्य हूँ। मेरा बेटा विजय का सेहरा बाँध कर अपने द्वार पर आया है। उसका सिंहासन जनता-जनार्दन कंधे पर उठा कर लायी है। ठहरो बेटी, मुझे आरती सजा लेने दो, मैं अपने विजयी बेटे की आरती उतारूँगी।

(तेजी से अन्दर जाती है और आरती सजा कर लाती है)

(बच्चा होश में आ जाता है, उसके माथे पर रक्त बह कर आ गया है जिससे तिलक सा बन गया है। वह पलँग पर उठ कर बैठ जाता है। माँ आरती उतारती है और तिलक लगाने के लिए जब आगे बढ़ती है तो रक्त बिन्दु देख कर कहती है)—यह तेरे माथे पर तिलक किसने लगाया बेटा ?

बालिका—मेरे भैया की पूजा राक्षसों तक ने की है माँ। ये पुलिस की बहादुरी की देन है।

माँ—आगे बढ़ कर बच्चे को छाती से लगा लेती है। उसकी आँखों से प्रेम के आँसू बहते हैं। जितने लोग साथ आये थे सब की आँखें पसीज जाती हैं, सब पुकार उठते हैं)

'वीर माता की जय'

माता—बेटा आज तूने मेरी कोख को पवित्र कर दिया। ओह, अब तक मैं मोह में पड़ी थी तू मेरा बेटा नहीं भारत माँ का लाल है।

माँ उस बालिका और अपने बेटे के सर पर हाथ रखती है। दोनों बालक-बालिका झण्डे को थामे हैं। गायन चलता है—

इस झण्डे के नीचे निर्भय.....

(पर्दा गिरता है।)

मोहन—रंजन, नाटक तो सुन्दर था. कितनी अच्छी माँ और कितना अच्छा बेटा।

रंजन—इस देश को स्वराज ही तब मिला है जब ऐसी कितनी ही माताओं ने अपनी गोदी के लालों को देश के नाम पर बलिदान कर दिया है।

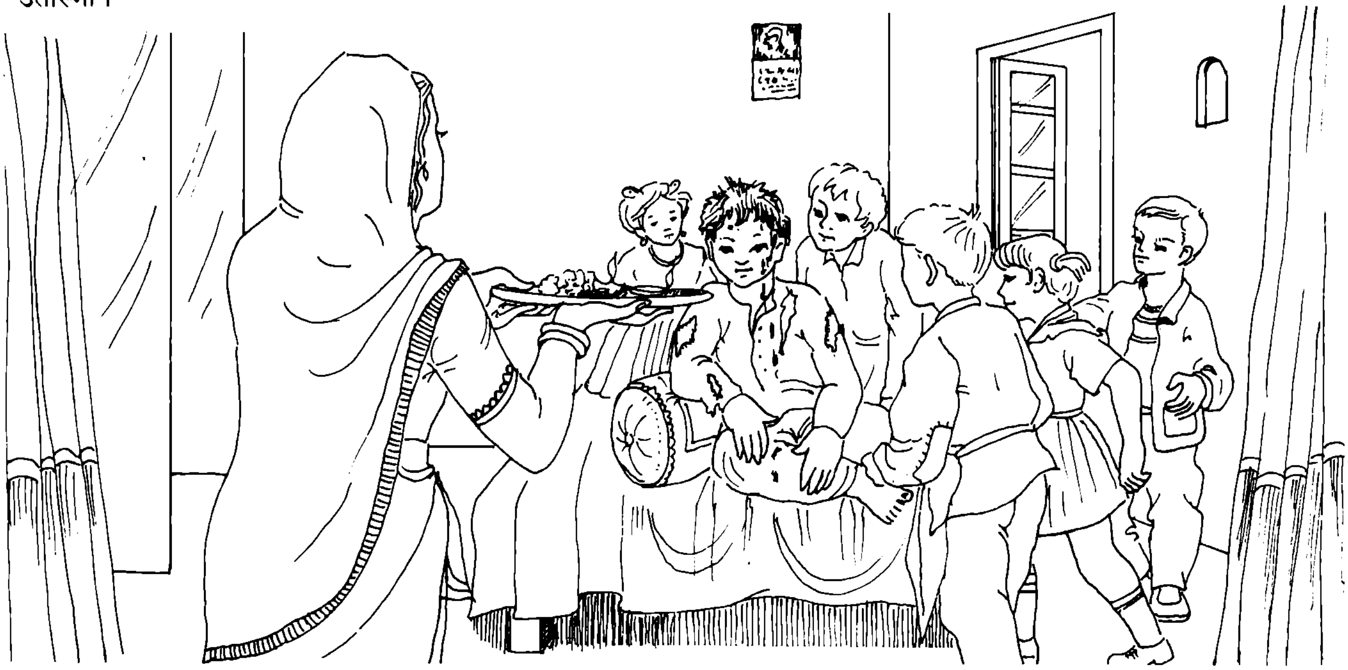

बाल संसार समग्र

(प्रथम भाग)

शकुन्तला सिरोठिया

बाल कवितायें

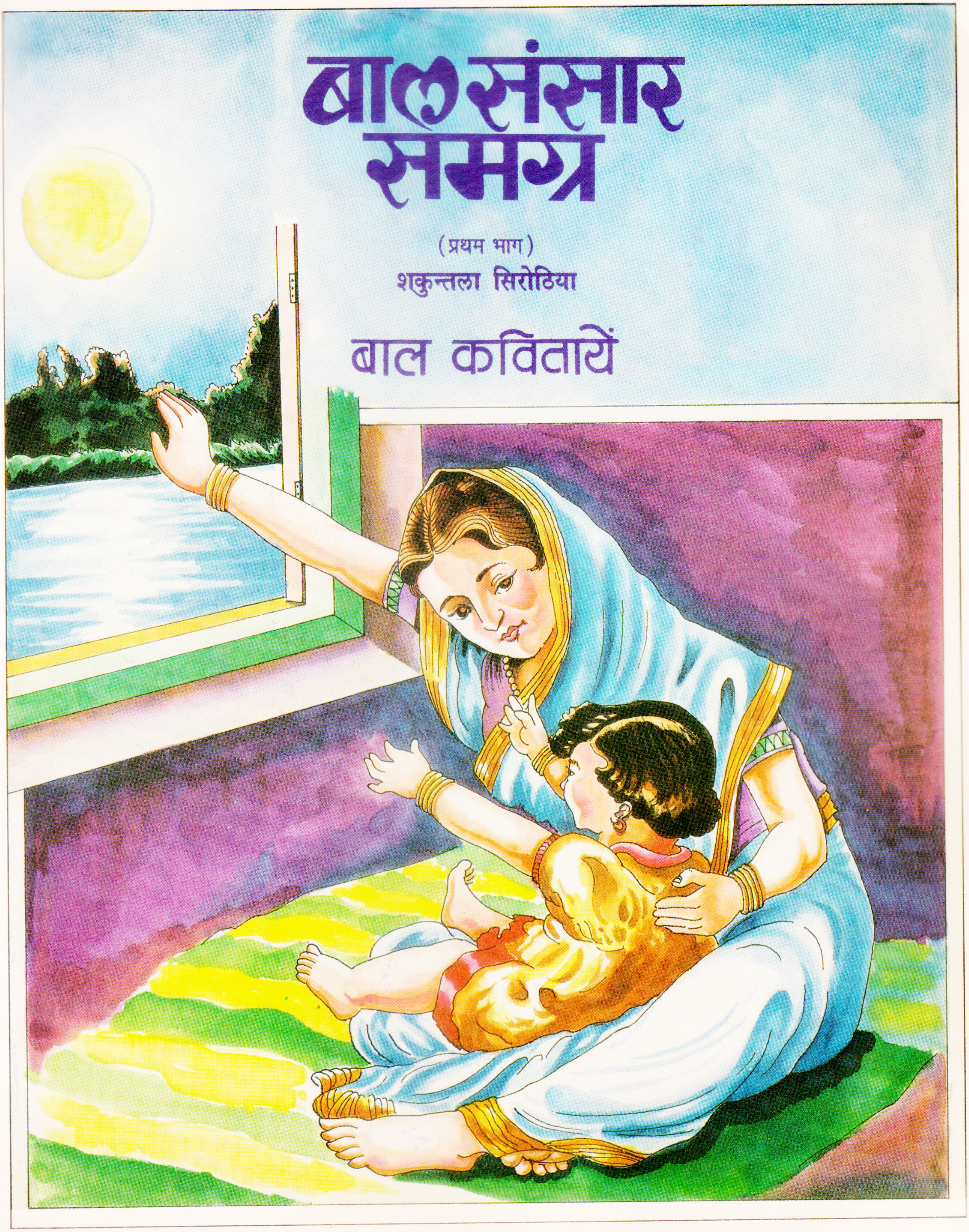

आ री निंदिया

किरणों पर चढ़ हँसती-हँसती आयी निंदिया!
जा रे मुन्ना तुझे बुलाने आयी निंदिया!
लेकर तुझको उड़ जायेगी यह परियों के देश!
खुश होगा तू देख लाड़ले उन परियों का वेश!
हँसते-हँसते जा रे मुन्ना आयी निंदिया!

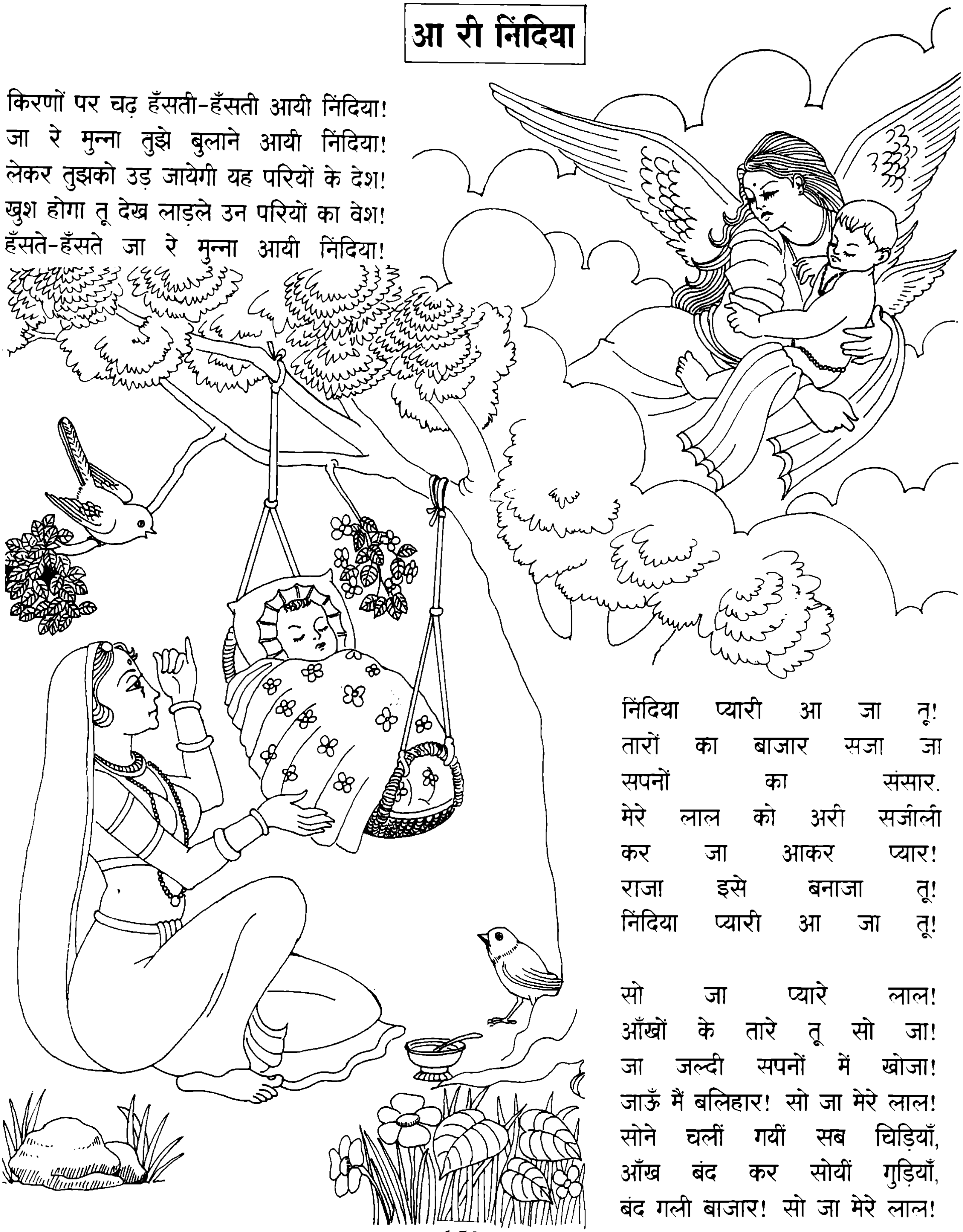

निंदिया प्यारी आ जा तू!
तारों का बाजार सजा जा
सपनों का संसार.
मेरे लाल को अरी सजीली
कर जा आकर प्यार!
राजा इसे बनाजा तू!
निंदिया प्यारी आ जा तू!

सो जा प्यारे लाल!
आँखों के तारे तू सो जा!
जा जल्दी सपनों में खोजा!
जाऊँ मैं बलिहार! सो जा मेरे लाल!
सोने चलीं गयीं सब चिड़ियाँ,
आँख बंद कर सोयीं गुड़ियाँ,
बंद गली बाजार! सो जा मेरे लाल!

आ री निंदिया! मुन्ना तुझको बुला रहा तू आ री निंदिया!
नदी किनारे वंशी बाजी बन में बोला मोर,
मुन्ना सुख की नींद सोयेगा, होगी जब तक भोर!
मीठे-मीठे सपने लेकर आ री निंदिया!
मुन्ना तुझको बुला रहा तू आ री निंदिया!

निंदिया के संग मुन्नी कर आ
चाँद-लोक की सैर!
बजती मधुर-मधुर शहनाई,
चाँद-लोक से परियाँ आयीं,
नभ-गंगा को तैर।
कर आ चाँद-लोक की सैर!
जा सोने के महल देख आ,
मोती-बन्दनवार देख आ
चाँदी की सब गैल!
कर आ चाँद-लोक की सैर!

आयी निंदिया! जा रे मुन्ना तुझे बुलाने, आयी निंदिया!
चाँदी के बल्ले से मुन्ना, तू सोने की गेंद खेलना,
हीरे मोती के महलों में छम-छम नाच देखना!
मीठे सुर में गाती-गाती, आयी निंदिया!

आ जा निंदिया!
चंदा की किरणों पर चढ़ कर
आ जा निंदिया!
चम-चम चम-चम चमके तारे,
जुगनू झलक दिखायें,
बादल में से झाँक-झाँक कर
चंदा भी मुस्काये,
छम-छम, छम-छम परियों के सँग
आ जा निंदिया!
मुन्ना की प्यासी आँखों में
छा जा निंदिया!

आँख बंद सुन रे मुन्ना,
बाज रही शहनाई!
तेरी पलकों पर शरमीली
नींद उतर कर आयी!
बात नहीं करती है लाजो
तू भी अब चुप सोजा!
निंदिया के सँग मेरे लाडले
जा सपनों में खोजा!
तारों भरी रुपहली चादर
लेकर निंदिया आयी।
बाज रही शहनाई!

आ जा निंदिया !
चाँद की बिंदिया !
सो जा प्यारे लाल !
आँख बंद कर सो जा मुन्ना
तुझे सुनाऊँ लोरी,
चाँद-लोक से परियाँ उतरीं
कुछ काली, कुछ गोरी!
सो जा मुन्ना निंदिया आयी,
ओढ़े चुनरी लाल!
सो जा मेरे लाल!

निंदिया प्यारी आ जा तू!
मुन्ने को बहला जा तू!
तुझको खील मिठाई दूँगी,
दूँगी नये खिलौने,
लाल सुनहरी चुनरी दूँगी
नयी मँगायी मैंने,
राग सुरीले गा जा तू!
निंदिया प्यारी आ जा तू!

आ री चिरैया वन-वंशी बजा।
मुन्ने को चुम्मी लेकर झट उड़ जा!

करती है देरी क्यों निंदिया को ला
सीटी बजाकर तू उसको बुला।
सावन की पूनो को आ जाना तू!
टोपी सितारों जड़ी लाना तू!
बदले में चुनरी पहन जाना तू!

आरी छम्मो! प्यारी छम्मो!
कहाँ लगा दी देर ?
मुन्ने की आँखों को
मीठे सपनों से दे घेर!
आम-डार से लगा पालना,
बँधी नीम से डोर!
बोल रही है मधुर कोयलिया
नाच रहा है मोर!

आँख बंद कर राजदुलारी!
तुझे सुनाऊँ लोरी!
लाल मुनइयाँ चिड़िया पालूँ
आम-डार पर पलना डालूँ!
रेशम की दे डोरी!
तुझे सुनाऊँ लोरी!
लहँगा, चुनरी तुझे मँगाऊँ,
चाँद सितारों से जड़वाऊँ,
सो जा मुन्नी भोली!
तुझे सुनाऊँ लोरी!

सो जा बारे बीर!
बाज रही है मधुर मुरलिया,
जमुनाजी के तीर!
सो जा बारे बीर!
चम-चम हीरों जड़ा कटोरा
तुझे खिलाऊँ खीर।
सो जा बारे बीर!

आ जा, आ जा, आ जा तू!
अरी हठीली निंदिया रानी
आ जा, आ जा, आ जा तू!
दूध भात का भरा कटोरा
आ, हँस हँस कर खा जा तू!
राजा मुन्ना सोने जाता,
मुरली मधुर बजा जा तू!
उतर चाँद से, किरणों पर चढ़
छम-छम छम-छम आ जा तू!

सो जा राजदुलारी!
आँखों की पुतली तू सो जा!
प्राणों की प्यारी तू सो जा!
सो जा मैं बलिहारी!
सो जा राजदुलारी!
तेरी सँग सहेली सोयी!
ले तेरे सँग मैं भी सोयी!
आँख बंद कर प्यारी!
सो जा राजदुलारी!

आओ, आओ, चंदा मामा
मुन्ना को ले जाओ।
क्या कहते हो ?
'सो जाने पर ही लेने आऊँगा ?
परियों के सब देश सुनहरे
उसको दिखलाऊँगा!'
सो जाओ तब मेरे लाडले,
माँ के सँग सो जाओ।
दूध भात का भरा कटोरा
दोनों मिल कर खाओ!

निंदिया रानी गीत गा रही!
क्यों चीं-चीं-चीं करता चुन्ना ?
जा अम्मा की गोद में!

उसके पर में चोंच छिपाकर,
सो जाना तू गोद में!
मुन्ने को भी नींद आ रही!
निंदिया रानी गीत गा रही!

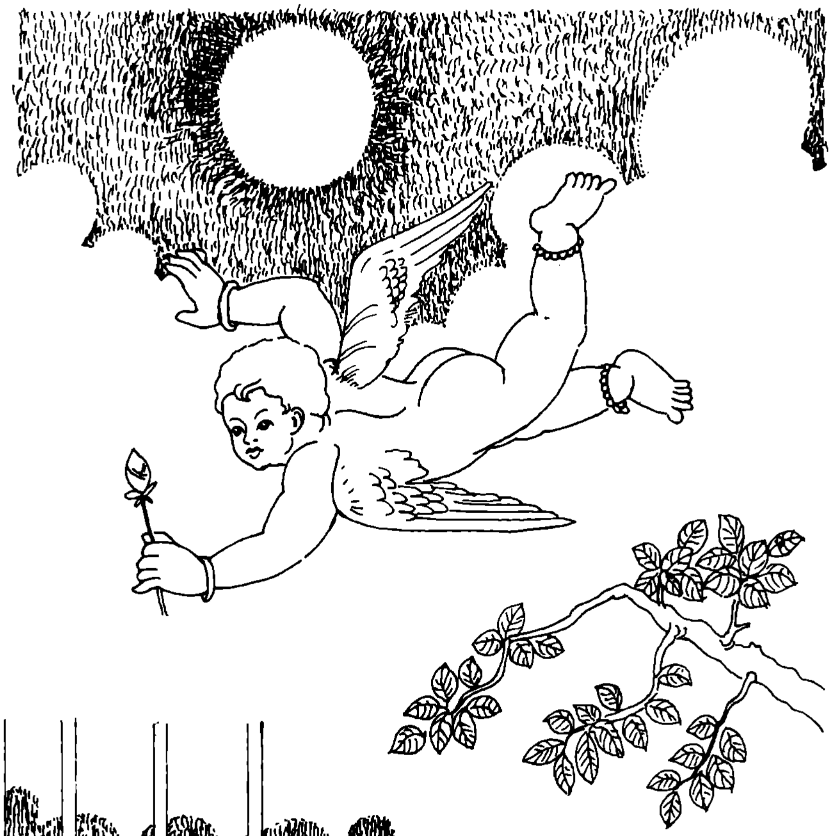

चाँदनी की चादर उढ़ाऊँ तुझे मोहना!
सो जा मेरे लालना!
सूरज भी सो गया,
पंथ सभी सो गये,
पत्तों की गोदी में
फूल सभी सो गये,
तू भी चुप सो जा
झुलाऊँ तुझे पालना!
सो जा मेरे लालना।

चिड़ियाँ भी सो गयीं
चिरौंटे भी सो गये,
गोदी में छिप उनके
चुन्ने भी सो गये,
तू भी चुप सो जा
जा सपनों से खेलना!
सो जा मेरे लालना!

निंदिया थम - थम - थम !
चंदा चम - चम - चम !
तारे दम - दम - दम !
निंदिया थम - थम - थम !
पानी झम - झम - झम !
गेंदा गम - गम - गम !
निंदिया थम - थम - थम !
ढोलक ढम - ढम - ढम !
पायल छम - छम - छम !
निंदिया थम - थम - थम !

जाग पहरुए

जाग जाग कर पहरा देना
आज पहरुए भाई रे !
बहुत दिनों की मेहनत अपनी
अब पनपी हरियाई रे।

मन्दिर तो बन गया किन्तु
गीला है चूना गारा रे
चौखट तो जड़ गयी किन्तु
चन्दन का नहीं किवाड़ा रे।

ठेस न इसे कहीं लग जाये
नष्ट न हो सुघराई रे !
जाग जाग कर पहरा देना
आज पहरुए भाई रे।

सोना है तो फिर सो लेना
अभी न आँखें झपकाना
बहुत निशाचर घूम रहे हैं
घर है उनका पहिचाना।

मौका पाकर घुस आयेंगे
रात अंधेरी छाई रे !
जाग जाग कर पहरा देना,
आज पहरुए भाई रे !

इस मन्दिर में बसा हुआ है
ईश्वर हम सब का जाना।
जिसकी करुणा और क्रोध,
दोनों को हमने पहचाना।

पड़े न इस पर किसी अपावन
की काली परछाई रे ?
जाग जाग कर पहरा देना
आज पहरुए भाई रे।

इस मंदिर में मुरलीधर ने
वंशी मधुर बजायी है—
राम हुए, गौतम ने इस
पर ही करुणा बरसायी है।

यहीं सूर तुलसी की
कविता की गंगा लहराई रे !
जाग जाग कर पहरा देना
चतुर पहरुए भाई रे।

आजादी 'त्योहार'

ले ले पूजा थार चलो
हम गालें मंगलाचार।।
आज खुशी में उमड़ रहा है
जनता का मन-सागर,
प्रेम-रस भरी छलक रही
सोने की ऊषा-गागर;

गरज-गरज कर मेघ कर रहा
माँ की जय-जय कार।
बहिन हम गालें मंगलाचार।
नये बोल में नयी राग में
आज रागिनी नयी बजा दे
मानव को शुचि मानवता का
फिर भूला संदेश सुना दे,
नभ पृथ्वी दोनों ही
देखें आजादी - त्योहार।।
चलो मिल गा लें मंगलाचार।।
अपने भारत पर फिर से
अब राम-राज्य लहराये,
विश्व-शांति के लिए तिरंगा
झण्डा यह फहराये।
सागर, पर्वत, भू, नभ
अपने कह दें यही पुकार।
ले कर पूजा-थार चलो।
हम गा लें मंगलाचार।

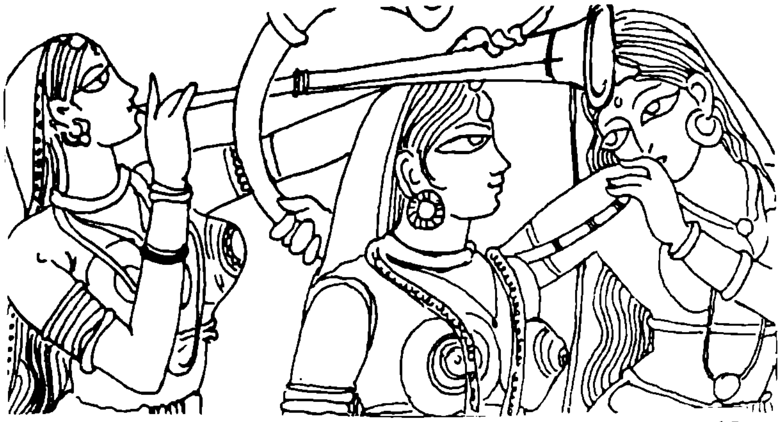

खेतिहर

ये जीने के अभ्यासी हैं
इन पर हँसो न भैया !
नील गगन की चादर इनकी
धरती इनकी शैया।
नहीं माँगते बिस्कुट, मक्खन
चाय, न काफी ताजी,
गरम पकौड़ी नहीं चाहते
पूरी गरम न भाजी।
नहीं चाहते राजमहल, ये
सुख की सेज न जाने।
नहीं माँगते षटरस भोजन
सुख से ये अनजाने।।
दो सूखी रोटी, हाथों पर
नमक कुटुक कर खाते।
चुल्लू से पानी पीकर ही
मन में बहुत अघाते।।
बहुत साँस सुख की लेते
जब पवन चले पुरवैया।
ये मेहमान के अभ्यासी हैं
इन पर हँसो न भैया।।
प्यार नहीं सोने चाँदी से
नाम न यश के प्यासे।
मानवता पर खिल पड़ते हैं
छल में रहे उदासे।।
प्यार इन्हें मीठे बोलों से
मीठा नहीं रुपैया।
ये खेतिहर मजदूर हमारे
इन पर हँसो न भैया।।

राखी

राखी भेज रही हूँ तुमको
सावन की पूनो को आज
जनम-जनम तक रखना भैया
मेरी इस राखी की लाज !!
नहीं साज आडम्बर है,
बस स्नेह सजे दो तागे हैं,
नहीं चतुरता सुघराई,
दो शब्द प्रेम में पागे हैं !!
दो शब्दों में दो तागों में
भैया तुम बँधते हो आज !
कुंकुम का कर तिलक भाल पर
देती तुम्हें स्नेह का राज !!
जनम-जनम तक रखना भैया
तुम मेरी राखी की लाज !!

मिट्टी में फूल

इस मिट्टी में दुनियावालों
हम फूल खिलायेंगे !
इस मिट्टी से ही राम बने
सीता, राधा, घनश्याम बने,
गंगा, जमुना इस पर लहरीं
इस पर सब तीरथ-धाम बने,
इसके कीचड़, कंकड़,
पत्थर, सब शूल हटायेंगे।

इस मिट्टी में दुनियावालों
हम फूल खिलायेंगे।
इस से भगवान गढ़े हमने,
चन्दन भी इसे बनाया है,
जब रूठी यह प्यारी माटी
बलि देकर उसे मनाया है,
यदि पवन बहे प्रतिकूल
उसे अनुकूल बनायेंगे।

इस मिट्टी में दुनियावालों
हम फूल खिलायेंगे।
इस रज की पावनता को हम
सब शीश झुकाते हैं,
'माता' कह कर बूढ़े बालक
सम्मान बढ़ाते हैं,
अनगिन इसके अहसान
उन्हें हम भूल न पायेंगे।
इस मिट्टी में दुनियावालों
हम फूल खिलायेंगे।
इस धरती की सेवा से ही
मानव अनगिन सुख पाता है,
इस पर आ उतर मचलने को
देवता बहुत ललचाता है,
हम मेहनत कर सोने-सी
इसकी धूल बनायेंगे।
इस मिट्टी में दुनियावालों
हम फूल खिलायेंगे।।

प्रभात-बेला

यह प्रभात की बेला।
ले अपना अधिकार चल दिये
सब दुनिया के वासी,
रात गयी, अब अँगड़ाई ले
उठ जा भारत-वासी !
द्वार खड़ी है किरण जगाने
सुन्दर सुखद सबेरा !
यह प्रभात की बेला !
आँख खोल, ले सूरज तुझको
राह दिखाने आया !
तेरे लिए पवन भी सुन्दर
सुखद सबेरा लाया,
चहक-चहक पंछी देते हैं
नभ-मंडल का फेरा।
यह प्रभात की बेला।।

दीपक

दीपक जरा जला लो भाई !
आँगन में अँधियार न छाये
दीपक जरा जला लो भाई !!
जन-जन में जातीय भावना
कूट-कूट कर भरते जाओ।
छूत-छात का, भेद-भाव का,
कूड़ा घर से दूर हटाओ।
दु:ख, दरिद्रता, फटक न पाये
पक्का दुर्ग बना लो भाई।
दीपक जरा जला लो भाई !!
तुम्हें शिवाजी की सुधि होगी
तुम प्रताप के गान सुनाओ,
विजयपताका वीरों ! माँ के
आँगन में मिल कर फहराओ,

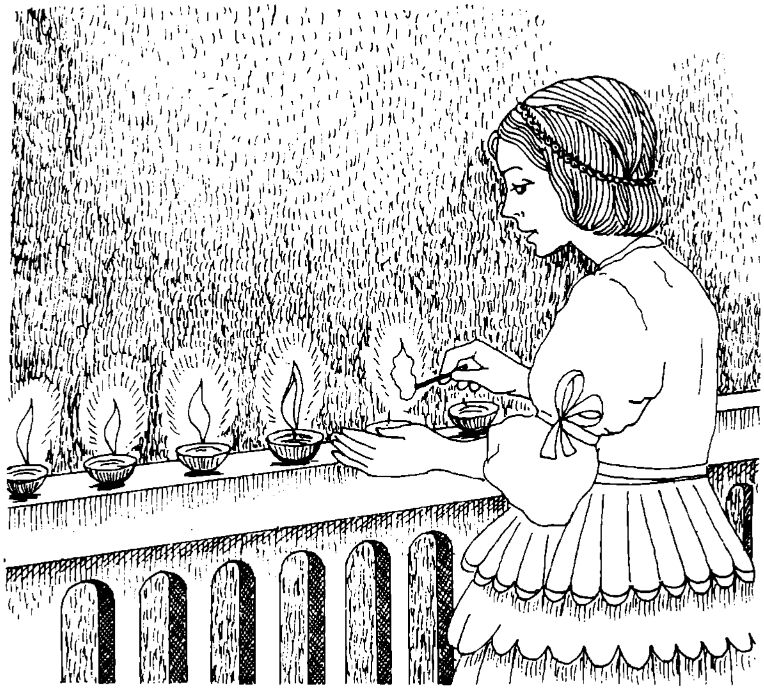

गूँजे पृथ्वी जयघोषों से
ऐसी विजय मना लो भाई !
दीपक जरा जला लो भाई !!
तुम माँ की मुस्कान सँभालो
घर के बन्दनवार सजा लो,
माता के आँचल में हीरे
मोती और लाल लटका लो !
जगमग जग यह भारत दमके
ऐसी ज्योति जगा लो भाई !
दीपक जरा जला लो भाई !!

प्रहरी

आज सजग हो पहरा देना
ओ भारत के प्रहरी !

गाते-गाते रात बिताना
नींद न सोना गहरी।।
राष्ट्र दुर्ग में भेद-भाव का
चोर न घुसने पाये।
लहराते झण्डे को दुश्मन
की न नजर लग जाये।।
अब न द्वार पर कोई द्रोही
घात लगाये गहरी।
आज चेत कर पहरा देना
ओ भारत के प्रहरी।।

भारत की नव बगिया का
पौधा पनपे लहराये।
सावधान रहना माली यह
मुरझा कहीं न जाये।।
पवन इसे दुलराये, सूरज
भेजे किरण सुनहरी।
जाग-जाग कर पहरा देना
ओ भारत के प्रहरी।।
अब न देश में रहने पाये
कोई दीन भिखारी।
अब न मनुज को सता सके
कोई भी अत्याचारी।
जनता के मन में गूँजे
आजादी की स्वर-लहरी।
घूम-घूम कर पहरा देना
ओ भारत के प्रहरी।।

सोना बरसा है

आओ दीदी चलें, खेत में
सोना बरसा है !
जैसे मैला लोहा, शुभ
पारस से परसा है।।
तेजवान रथ पर पूरब से,
सूरज आता है,
झूम-झूम कर पवन उसी का
गौरव गाता है !

यह सूरज ही खेतों में
सोना बरसाता है
मेघ घुमड़ कर पौधों को
जीवन दे जाता है।।
खेतों का वरदान चलो
मस्तक पर धर लायें,
आओ बहनों आँचल में
बरसा धन भर लायें।
देखो अपनी मेहनत में
मीठे फल आये हैं;
अपने भैया और बापू के
पुण्य सुहाये हैं।
चलो आरती खेतों की
देवी की कर आयें !
जिसने अन-धन दिया
उसी के गीत गुँजा आयें।।

झण्डा प्यारा

झण्डा प्यारा झण्डा प्यारा !
लहर-लहर लहराये न्यारा।।
चाहे धूप सुहानी सरसे
कदम हमारे नहीं रुकेंगे,
चाहे अगिन अंगारे बरसे
चाहे नभ यह पृथ्वी परसे,
यह भारत का मान निराला।।
झण्डा प्यारा, झण्डा प्यारा !
आसमान पर इसे उठा लो
पैरों को अब खूब जमा लो,
इसका भार नहीं मामूली
हाथों को मजबूत बना लो,
शान हमारी, प्राण हमारा।
झण्डा प्यारा, झण्डा प्यारा।।

घिर घिर आए बदरा

घिर-घिर आए बदरा भैया
चलो खेत की ओर !
पवन चले पुरवैया, भैया
चलो खेत की ओर।।
झिर-झिर-झिर-झिर पानी बरसा
गड़-गड़-गड़-गड़ बादल गरजा,
सुख का ओर न छोर।।
भैया चलो खेत की ओर।।
ले-ले दादा हल हरवाहे
जोते धरती को मन चाहें
सिंची मिलेगी सारी माटी

शिशु गीत

जब फिर होगी भोर।
भैया चलो खेत की ओर।।

कल खेती में होगा सोना
बीज आज ही होगा बोना
डरो न, आँधी पानी में भी
नींद न गहरी सोना होगा,
तब मोती की फसल कटेगी
आज लगालो जोर।
भैया चलो खेत की ओर।।

मेहनत कर लो बहे पसीना,
हँस-हँस कर ही भैया जीना
दु:ख-सुख तो चलता रहता है
भला नहीं आँसू ही पीना,
आँधी तूफानों से लड़ लो
आलस दो झझकोर।।
भैया चलो खेत की ओर।।

घड़ी देखने बड़ी शान से
चूँ चूँ करता चूहा आया।
बारह का घंटा टन्नाया।
चूँ चूँ तब बेहद घबराया।
टिक्-टिक्-टिक्-टिक् - डाँग
चूहा भागा, लेकर जान।

पप्पू बना शिकारी है।
भरी बाल्टी बंसी डाली,
मछली पकड़ी भारी है।
भइया की है यह बंसी,
सर-सर तैर रहीं थी चंचल
मोटी मछली खूब फँसी।

दिन भर चुप, चुप बैठे रहना
बहुत बुरी है बात।
इसीलिए ये पप्पू, शीला.
मिल कर करते नाच।
नाच, नाच कर थक जायेंगे.
दूध पियेंगे सो जायेंगे।

भाई-बहन हैं पप्पू शीला,
करते माँ का काम।
पानी भर कर लौट रहे थे,
पप्पू गिरा धड़ाम।
शीला डर कर लुढ़क गयीं, तब,
मुख से निकला-हाय! राम!

छोटी सी भोली गीता।
टूटा जूते का फीता।
बिन जूते के खेलेगी,

उसकी अम्मा बिगड़ेगी।
भइया जूता पहना दो।
सैर बाग की करवा दो।

बैठा है यह लड़का प्यारा,
इसका नाम समीर।
अम्मा ने खाने को दी है,
इसको मीठी खीर।
बड़ी लालची चिलबिल्ली।
ताक लगाये है बिल्ली।

फूल खिले हैं न्यारे-न्यारे।
नीले, लाल-लाल प्यारे।
लिये टोकरी छोटी गीता,
आयी है बगिया के अन्दर,
फूल तोड़ती है चुन-चुन कर,
जायेगी पूजा को मन्दिर।

पूसी कहती म्याऊँ म्याऊँ !
बेबी तुझको गेंद खिलाऊँ।
ठंड लग रही मुझको बेबी,
ऊनी टोपी कोट दिला दे।
तूने तो बिस्कुट खाया है,
मुझको मीठा दूध पिला दे।

नन्हीं पूसी खेल रही थी
कूद-कूद कर कूएँ पर।
भूल गयी कूआँ गहरा है,
कूद गयी उसके अन्दर।
पप्पू दौड़ा-दौड़ा आया,
मुश्किल में तब उसे बचाया।

मेरी मुनिया, अरे अरे।
क्यों करती है में,-में,-में ?
तेरा बच्चा कहाँ गया ?
खोज रही उसको क्या ?
पढ़ने कहीं गया होगा,
टीचर ने रोका होगा।

कुकडूँ कूँ ! कुकडूँ कूँ !!
मुर्गा बोला, कुकडूँ कूँ !
सूरज निकला दुनिया जागी
मुन्ना तू सोता है क्यूँ ?
कुकडूँ कूँ!

बाँ, बाँ, बाँ, बाँ गइया करती,
भों, भों, भों, भों कुत्ता।
चूँ, चूँ, चूँ, चूँ चूहा बोले,
घू, घू, उल्लू करता।
बत्तख बोली 'काले' कौए,
काँव काँव क्यों करता ?

टिंकू, पिंकू दो लड़के !
बैठ गये ऊपर चढ़के।।
टिंकू करता था शैतानी।
गिरा, आँख में आया पानी।।
ऊँ, ऊँ, ऊँ, ऊँ कर रोया।
आँसू से मुख को धोया।।

रोटीवाले रोटी दो।
पैसे चालिस मुझसे लो।
अच्छी तरह सेंक कर देना,
पैसे खरे रखा लेना।
ले लो बेबी रोटी लो।
घर में जा कर माँ को दो।।

ओ चरवाहे सोते हो ?
सपने नये सँजोते हो।
गइया सारी भागेंगी,
नहीं पकड़ में आयेंगी।
आलस में जो सोता है,
आगे चल कर रोता है।

ओ री नन्हीं प्यारी चिड़ियों,
आ जाओ तुम मेरे पास।
दाना खाना, पानी पीना ठंडा,
अगर लगी हो प्यास।
मेरे साथ-साथ रहना।
मन चाहे जब उड़ जाना।

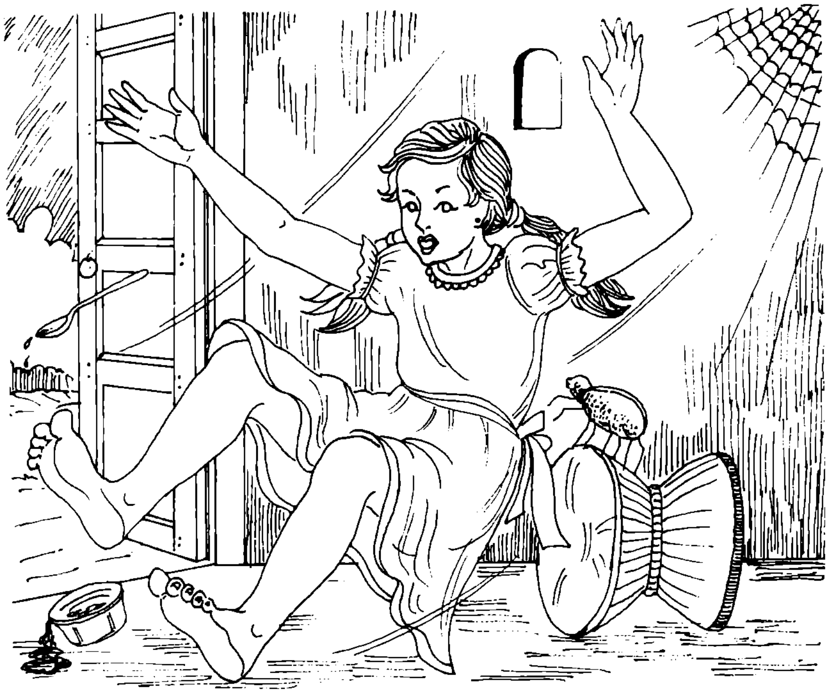

गीता मूढ़े पर बैठी थी,
चम्मच से खाती थी खीर।
मकड़ी एक पीठ पर कूदी,
गिर गयी चम्मच बिखरी खीर।
अब क्या गीता खायेगी,?
क्या भूखी रह जायेगी ?

आसमान के टिम-टिम तारे
आ जाओ तुम नीचे प्यारे।
अपने साथ खिलाऊँगा,
मीठे गीत सुनाऊँगा।
सोने के चन्दा तुम आओ।
नयी कहानी हमें सुनाओ।

यह शीला की भेड़ भली है।
फ्राक पहिन कर बस्ता लेकर
अब शीला स्कूल चली है।
ठुमुक-ठुमुक कर भेड़ भली यह
पीछे-पीछे कूद चली है।
यह शीला की भेड़ भली है।।

'पूसी प्यारी, पूसी प्यारी
कहाँ गयी थी ?'
'रानी के महलों में
सो रही थी।'
'पूसी प्यारी, पूसी प्यारी
वहाँ क्या मिला ?'
'छोटे से चूहे का नाश्ता मिला।'

आओ बच्चों, प्यारे बच्चों,
ले लो मीठी रोटी।
दस पैसे में ही दे दूँगा,
गोल गोल यह मोटी।
राम और रानी आये हैं,
सुबह सुबह बाजार।
माँ से माँग राम लाया है,
दस के सिक्के चार।

आओ खेलें खेल !
'ठहरो मैं भी आता हूँ,
जूता अभी पहिनता हूँ।'
मुन्नी बोली 'मैं भी आऊँ,
खेल खिलौने सब रख आऊँ।'
मुर्गी बोली 'जल्दी आओ
छूट जायेगी रेल।"
आओ खेलें खेल।

छोटी भेड़, छोटी भेड़
कितना ऊन है ?
छोटे बच्चे, छोटे बच्चे !
थैले पूरे तीन हैं ?
एक दूँगी मालिक को,
और एक मालकिन को,
एक दूँगी अपने छोटे,
बच्चे नानकुन को।

टिम, टिम, टिम, टिम, प्यारे, प्यारे,
चम, चम, चमक रहे हैं तारे,
मुन्ना लेटा माँ की गोदी में,
देख रहा है उनको।
आओ, आओ, प्यारे तारों,
मेरी खिड़की में चमको।
सो जा मुन्ना सो जा प्यारे।
बुला रहे हैं तुझको तारे।

ठुमक-ठुमक पूसी करती,
शैतानी दिन भर करती।
अरे गिरा दी तूने मेरी
पढ़ने की ए-बी-सी-डी ?
अम्मा अब आती होगी
मार तुझे खानी होगी।
चिल्लायेगी तब सी-सी,
शैतानी करती पूसी।

कुत्ता

मेरा प्यारा कुत्ता है यह।
नहीं किसी से डरता है यह।
इसके हैं दो लम्बे कान,
वीर टाइगर इसका नाम।
खाता है यह रोटी चार,
घर का है यह पहरेदार।
घर में यदि आ जाये चोर,
भों-भों कर के करता शोर।।

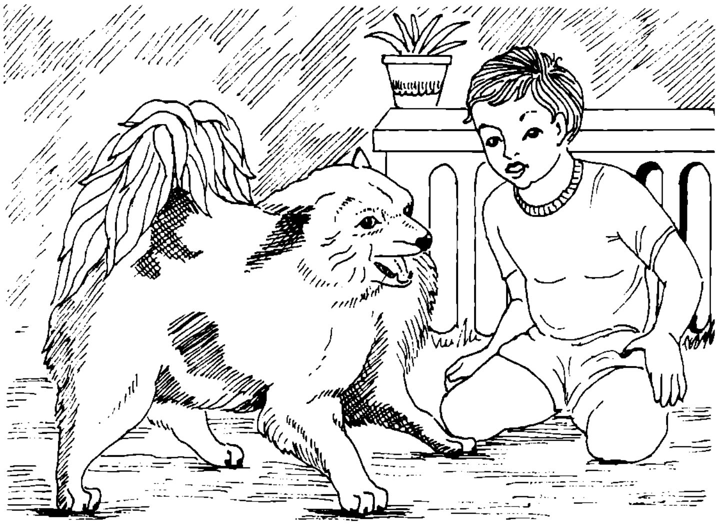

बन्दरवाला

ओ रे बन्दरवाले, आ जा!
मुझको अपना खेल दिखा जा।
वह देखो, वह आता है,
बन्दर-बँदरी लाता है।
छम-छम छम-छम बँदरी नाचे,
बंदर पीछे-पीछे भागे।
बन्दर दूल्हा बँदरी दुलहिन,
सबको दिखा रहे हैं नाच।
बँदरी रूठी नैहर जाती,
बन्दर भी जाता है साथ।

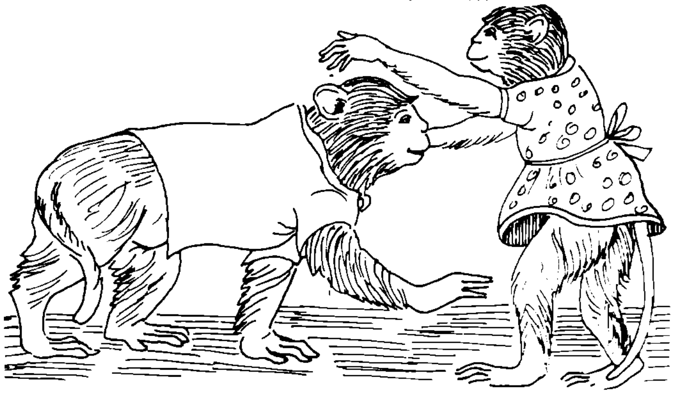

हाथी

हाथी आता झूम के,
धरती मिट्टी चूम के।
कान हिलाता पंखे जैसा।
हाथी मोटा ऊँचा कैसा ?
सूँड़ हिलाता आता है,
गन्ना पत्ती खाता है।
देखो इसके लम्बे दाँत !
सूँड़ बनी है इसके हाथ।
इस से ही यह लेता रोटी।
आँखे इसकी छोटी-छोटी !

रेल

आ रही रेल ! आ रही रेल !
यह दिल्ली से आ रही रेल !
हट जाओ, नहीं पिस जाओगे;
गिर जाओगे, घबराओगे;
सीटी देती फक-फक करती,
कलकत्ते को जा रही रेल।
आ रही रेल ! आ रही रेल !
अब आता है स्टेशन लो,
खाना खा लो, पानी पीलो।
जल्दी आओ रह जाओगे;
झक-झक-झक चल पड़ी रेल।
आ रही रेल ! आ रही रेल !

सोओ सुख निंदिया

सो जा गुड़िया रानी
तेरी कल कर दूँगी शादी !
मधुर-मधुर मेरे द्वारे पर
बाजेगी शहनाई !
तुझे विदा करके रानी
आयेगी मुझे रुलाई !
तू मत रोना लेकिन
हँस कर गुड्डे के सँग जाना,
चंदा-सा दूल्हा पाकर
दुल्हन के काम निभाना !
बहुत देर तक सोते
रहने की मत बनना आदी।
सो जा मेरी गुड़िया !

चाँद-खिलौना लूँगा माँ,
मैं चाँद-खिलौना लूँगा !
मुझे न भाती नटखट गुड़िया
आँखें खूब चमकती !
अकड़ू है वह गुड्डा जिसकी
टोपी खूब दमकती !
हँसता चन्दा प्यारा लगता
उसके सँग खेलूँगा।
चाँद-खिलौना लूँगा !

ओस टपकती मोती जैसी
तारों की दीवाली है।
चम चम चुनरी ओढ़े उतरी
निंदिया राजदुलारी है।
आओ राजदुलारी आओ,
मुन्ने को चुम्मी दे जाओ,
गोदी में बिठला कर मीठी-
मीठी लोरी उसे सुनाओ !

खिली चमेली, खिली केतकी
गमका बेला, गम-गम-गम,
तारे हँसने लगे गगन में
चमका चन्दा चम, चम, चम,
मुन्ने की आँखों में निंदिया
उतर रही है छम, छम, छम।

पत्तों पत्तों नींद उतरती
चिड़ियाँ सारी सोतीं।
झुके घास के तिनके सोते
धरती ओस भिंगोती !

हरसिंगार के फूल खिले हैं
लगते कैसे प्यारे !
जाग जाग कर पहरा देते
ये चमकीले तारे।

मेढक आगे टर्र टर्र तो
झिंगुर बजावे झुनझुना!
सनन् सनन् सन् हवा चल रही!
तान सुनावे ता ना ना!

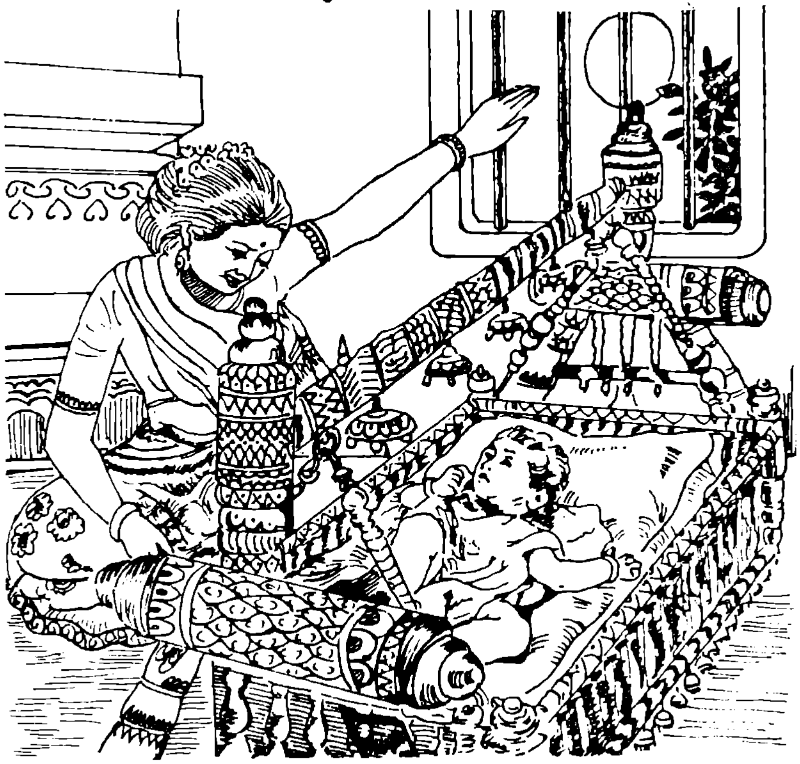

सोती है मँझली की मुनियाँ
लहर झुलाती पालना।
अम्मा गाती मीठी लोरी
रानी बिटिया सो जा ना !

तारों का बाजार लगा है
चल मुन्ना कर आयें सैर।
वह चन्दा की नाव रुपहरी
नील गगन में आयी तैर।
नींद-परी का नाच हो रहा है
मेले में छम-छम-छम।
खेल रहे हैं उसमें प्यारे
बच्चे तारे चम-चम-चम।

चन्दा में खरगोश थिरकता
ऊँचे-ऊँचे कान उठाये !
धुनन धुनन, धुन, धुन-धुन बैठी
बुढ़िया चरखा खूब चलाये।
नील गगन पर दौड़ा चन्दा
दोनों को रथ में बैठाये,
आँख बन्द कर तू भी उड़ जा
मुन्ना, चन्दा तुझे बुलाये !

अम्मा की पायलिया बोली
खनके मीठा कँगना !
फरर-फरर फर उड़े चुनरिया
आती तेरी बहना !

रेशम की झालर लटकी है
लहरे तेरा पलना !
बापू लाये नया खिलौना
सो जा मेरे ललना !

कौन चलेगा नदी किनारे
साथ हमारे ?
कौन गिनेगा आसमान के
सारे तारे ?

चन्दा की नइया है उसको
खेती निंदिया रानी !
तारों के घुँघरू लटके हैं
वंशी बजी सुहानी !

चिड़िया ने आवाज लगाई
आ जा बिटिया !
मेरे पर में चोंच छिपा कर
सोजा बिटिया !
सुबह दिखाऊँगी मैं तुझको
सारी दुनिया !
मीठे दाने तुझे खिलाऊँगी
री मुनिया !

सेमर की कली-कली
हँस-हँस कर झूलती !
अमवा की डार-डार
महक - महक फूलती !
निंदिया की मालिन का
हरा भरा बाग रे !
बैठे हैं पहरे पर
तारे सब जाग रे !

चंदा मामा ठहरो थोड़ा
कहाँ चले तुम जाते हो ?
खेल रहे क्या आँख मिचौनी
बादल में छिप जाते हो !
मुझे बुला लो मैं देखूँगा
कितने हो छिपने में तेज
नहीं पकड़ पाओगे मुझको
मैं दौड़ूँगा तुमसे तेज !

सो जा मेरे लाल
हिमगिरी पर चढ़ शंख बजाऊँ
रण की करूँ पुकार !
बड़े लुटेरे चीनी डाकू
करते पार पहाड़
बड़े साहसी हिन्दुस्तानी
देते उनको मार,
निर्भय सो जा मेरे बच्चे
बहे दूध की धार !
सो जा मेरे लाल !

अम्मा तारे बुला रहे हैं
तू कह दे मैं जाऊँ !
खील बताशे दे दे थोड़ा
उनको भी दे आऊँ !
सारी रात वहाँ खेलूँगा
सुबह चला आऊँगा !
उतरेंगी जब सूरज किरणें
उन पर चढ़ आऊँगा !

सूरज अब थक गया
जा रहा है अपने घर सोने।
तपती धरती को आयी है
ठण्डी ओस भिंगोने।

झाँक रहे हैं आसमान में
तारे कोने कोने,
तोता सोता, मैना सोती,
सो जा श्याम सलोने !

कौन आ रहा है ऊपर से
धीरे-धीरे ?
कौन गा रहा मीठे मीठे
गीत सुरीले ?
चाँद-खिलौना कौन दिखाता
तुझे सजीले ?
अब तू सो जा मेरे प्यारे
अरे हठीले !

सो जा मेरे लालना !
सो जा मेरे लालना !!
अम्मा तेरी खेत गयी है
धीरे - धीरे आती।
कूद - कूद कर बच्छा खेले
गइया खड़ी रँभाती !
चूल्हे ऊपर दूध चढ़ा है
दीप जले हैं आँगना !
सो जा मेरे लालना !!

पत्तों - पत्तों नींद उतरती
चिड़ियाँ जातीं सोने,
सूरज सोया, अँधियारा
अब छाया कोने, कोने।
सोओ प्यारी चिड़ियाँ सोओ
जब तक सूरज सोये,
सोओ जब तक किरणें झाँकें
धरती ओस भिंगोये !
आँखें खोलो बाग, बाग, के
फूल जगो मुस्काओ,
जगो रात भर हँस-हँसकर
सारी दुनिया महकाओ !
बात करो तारों से ये सब
साथ तुम्हारे खेले

आसमान में चाँद
लगायेगा तारों के मेले !
नमस्कार सब साथी
सोओ, तारे लोरी गायें,
तुम पर छाये नींद सुनहरी
मीठे सपने आयें !

चंदा प्यारे आ जाओ !
नींद रँगीली ले आओ !
चाँदलोक की परियाँ भेजो
भेजो मृग का छौना,
मेरा मीनू सोने जाता
लगे न इसको टोना,
पलना सोने का लाओ !
चंदा प्यारे आ जाओ !
नीले रँग के पलने में हों
तारे टँके सुनहरे,
किरनों की डोरी हो चम-चम
झुमके नीले पीले !
लोरी मीठी गा जाओ !
चंदा प्यारे आ जाओ !

अम्मा कैसा तेरा भइया
कभी न उसको यहाँ बुलाती ?
कभी न चंदा भू पर आता
तू भी ऊपर कभी न जाती !
राखी उसको नहीं भेजती
नहीं भेजता वह सारी
मामा के बिन सूनी तेरी
भाईदूज की खुशियाली !

ला दे थोड़े खील बताशे
मैं ही आज चला जाऊँ
रोली कुंकुम रख दे तेरा
टीका मैं ही पहुँचाऊँ।

चन्द्र-किरण पर चढ़ जाऊँगा।
सूर्य-किरण पर आऊँगा
सुबह चहकती चिड़ियों के सँग
आँख खोल मुस्काऊँगा।

ओ री दीदी निंदिया रानी !
मेरे द्वारे आना !
खील बताशे दूँगी तुमको
हँस कर मन भर खाना !
घर में नहीं पलँग पाटा है
मैं क्या आज बिछाऊँ ?
नन्हें की पलकों पर दीदी
आओ तुम्हें बिठाऊँ !

सोया सूरज सोयी चिड़ियाँ
सोयी दुनिया सारी !
दिन भर खेली नाच-नाच कर
सोती राजदुलारी !
मीठे सपने आयेंगे।
चन्दा तुझे खिलायेंगे।
सो जा मुनिया प्यारी !

उठ जा मुन्ना

सूरज निकला उठ जा मुन्ना !
मुरगा बोला उठ जा मुन्ना !!
चिड़ियाँ सारी जाग गयी हैं,
दाना चुगने भाग गयी हैं।
मुन्नी जागी पीती दूध,
आँगन में बिखरी है धूप।
तू अब भी बिस्तर पर लेटा,
उठ जा तू भी राजा बेटा !!

झण्डा

झण्डा प्यारा, झण्डा प्यारा।
लहर-लहर लहराये न्यारा।।
लेकर नन्हें हाथों में हम,
गाते-गाते बढ़ते हैं हम,
यह भारत का मान निराला।
झण्डा प्यारा झण्डा प्यारा।।
हाथों को मजबूत बना लो,
आसमान पर इसे उठा लो,
शान हमारी, प्राण हमारा।
झण्डा प्यारा, झण्डा प्यारा।।

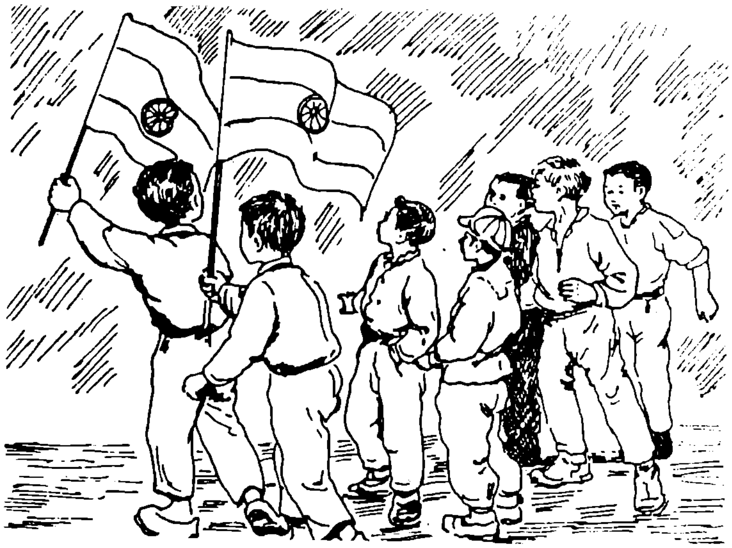

हम बड़े हैं

मत समझो हम छोटे से हैं,
कुछ काम नहीं कर सकते हैं।
हम वीर शिवाजी बन सकते,
राणा प्रताप बन सकते हैं।
हम दुश्मन से लड़ सकते हैं,
हम भारत पर मिट सकते हैं।
हम वीर जवाहर बन सकते।
हम गाँधी जी बन सकते हैं।।

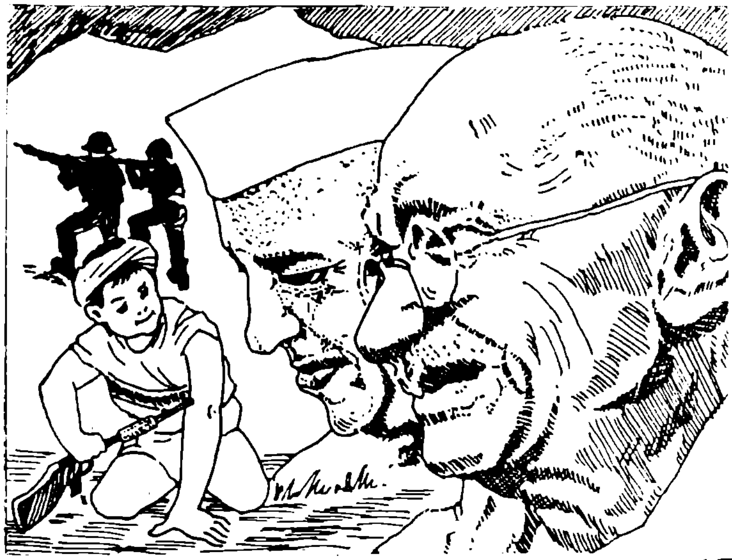

ढोल

ढप-ढप-ढप-ढप बजता ढोल।
दूर नाचता सुन्दर मोर,
इधर मचाते बच्चे शोर,
टीचर कहती दुनिया गोल।
ढप-ढप-ढप-ढप बजता ढोल।
सर-सर दौड़ रही है गाड़ी,
फर-फर चलती मोटर भारी,
हमने ली दिल्ली से मोल।
ढप-ढप-ढप-ढप बजता ढोल।।

रुकते नहीं जरा

हमें न समझो छोटा बालक,
हम कर सकते काम बड़ा !
आसमान को नीचा कर दें
ऊपर धरा उठा दें हम,
माता का सम्मान बढ़ा दें
दुश्मन मार भगा दें हम।
अंधकार को चीर बढ़ेंगे
दिल को करके खूब कड़ा।
रोक न सकती हैं चट्टानें
हम हँस-हँस पर्वत पर चढ़ते,
डर न हमें खाई खंदक का
आँधी तूफानों से लड़ते।
लहरों पर हम गाते गाने,
रुकते नहीं जरा।

बढ़ते चलो

बढ़ते चलो, बढ़ते चलो!
काँटे हैं तोड़ दो,
पत्थर हैं, फोड़ दो !
रुकना है काम नहीं,
डरने में शान नहीं !
आँधियाँ तूफान हैं,
छिपा आसमान है,
भारत के वीर किन्तु,
बढ़ने में शान है।
भारत - सपूत तुम,
बढ़ते चलो, बढ़ते चलो !

नाव

नाव चला लो रे !
लहर देख कर नाव सँभालो,
चट्टानों से इसे बचा लो,
हाथों में पतवार पकड़ कर
राह बना लो रे।
नाव चला लो रे !
वह देखो तूफान आ रहा,
मेघों से आकाश छा रहा,
खूब सँभल कर खेना भाई
जोर लगा लो रे।
नाव चला लो रे।

जाड़ा

जाड़ा आया, आ गयी ठण्ड।
ठण्डे पानी से डर लगता,
करना स्नान अब एक दंड।
मोजे पहिनो, जूते पहिनो,
स्वेटर गरम कोट भी पहिनो।
सिर पर लपेट लो अब मफलर,
फिर तुमको नहीं ठण्ड से डर।
पी गरम दूध, खेलो बाहर,
भागे जाड़ा, डर जाय ठण्ड।
जाड़ा आया, आ गयी ठण्ड।

होली

होली है, होली है !
घोलो रंग लाल लाल,
ले लो हाथ में गुलाल।
आओ फिर खेलें फाग,
जाना मत किन्तु भाग।
तुमने भिंगाया मुझे,
तुम को भिंगाऊँगा,
रंग खूब डाल फिर
अबीर भी लगाऊँगा।
कोयल भी कूक-कूक
एक बात बोली है।
अररर होली है !
होली है ! होली है !!

होली

होली आयी, होली आयी,
रंग और रोली लायी।
आओ, आओ प्रेम से
भिंगा दो आज सब को।
ले लो रंग की पिचकारी,
मारो धार को सँभारी,
आओ रंग डाल कर
अबीर मलो सब को।
नाचो और फाग गाओ,
बैर भाव को भगाओ,
हँसो और हँसाओ,
गले से लगाओ सबको।
भागने न पाये कोई,
छूटने न पाये कोई,
खाओ पियो, नाचो, तुम
नचाओ आज सब को।

होली

आया होली का रंग,
छाया होली का रंग !
जमुना किनारे लो बाजी बँसुरिया,
राधा भी नाच रही छम-छम-छम !
आया होली का रंग,
छाया होली का रंग !
कान्हा भी नाचे, लो ग्वाले भी नाचे;
बाजी ढोलकिया, ढम-ढम-ढम।

आया होली का रंग,
छाया होली का रंग !

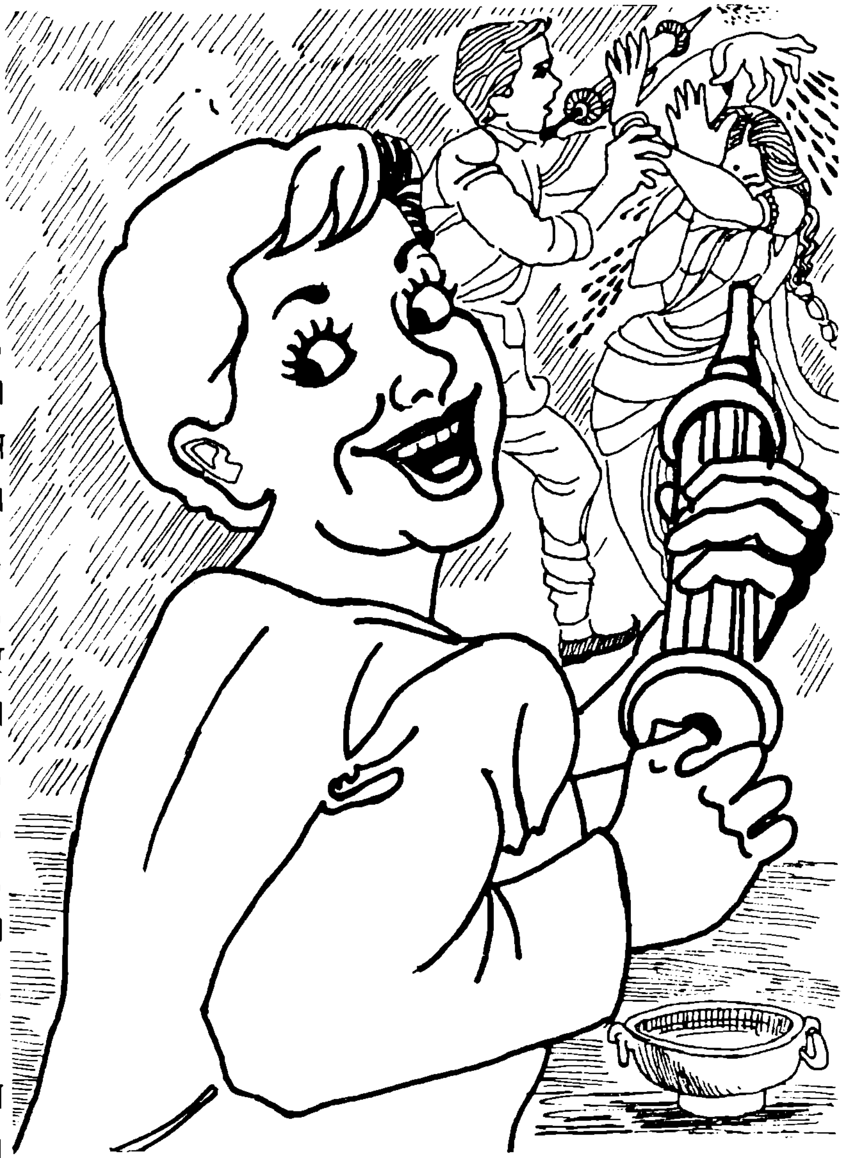

चंदा

झाँक रहा बादल से चन्दा
अम्मा उसे बुला ले तू।
तुझको ही वह देख रहा है
अपने पास सुला ले तू।
सुबह उठेंगे एक साथ फिर
मिल कर दोनों खेलेंगे।
जो कुछ भी खाने को देगी,
बाँट-बाँट कर ले लेंगे।
'चन्दा भैया' उसे कहूँगा,
'अम्मा' तुझे कहेगा वह,
चाँदलोक की नयी कहानी
मुझसे रोज कहेगा वह।।

दिल्ली चलो

काँव काँव कर कौआ बोला,
टें टें टें टें तोता;
कू कू कू कू कोयल कूकी
घू घू उल्लू रोता।।
भों भों भों भों करता कुत्ता,
म्याऊँ म्याऊँ बिल्ली,
हाय री अम्मा छोड़ गाँव यह
अब तो चल तू दिल्ली !
नेहरू चाचा वहाँ मिलेंगे,
उनके साथ रहूँगा,
बड़े-बड़े नेता आयेंगे;
उनसे बात करूँगा।।

चंदा

चंदा यहाँ उतर कर आ जा।
आ जा अब पृथ्वी पर आ जा।
नन्हीं आयी, मुन्नी आयी,
पप्पू, रजनी, बिन्नी आयी।
आँखमिचौनी खेलेंगे हम,
छिपने तुझे नहीं देंगे हम।
आ जा हमको खेल खिला जा,
चंदा तू तारों का राजा।।

घोड़ा

यह मेरा टिक-टिक घोड़ा,
कुछ नहीं बहादुर थोड़ा।
यह खूब कूदता चलता,
यह नहीं किसी से डरता।
यह मेरा टिक-टिक घोड़ा,
है सबमें हिम्मत भरता।
इसके ऊपर चढ़ कर
मैं बड़ी शान से बैठूँ,
यह मेरा टिक-टिक घोड़ा,
मैं इस पर चढ़ कर ऐठूँ।।

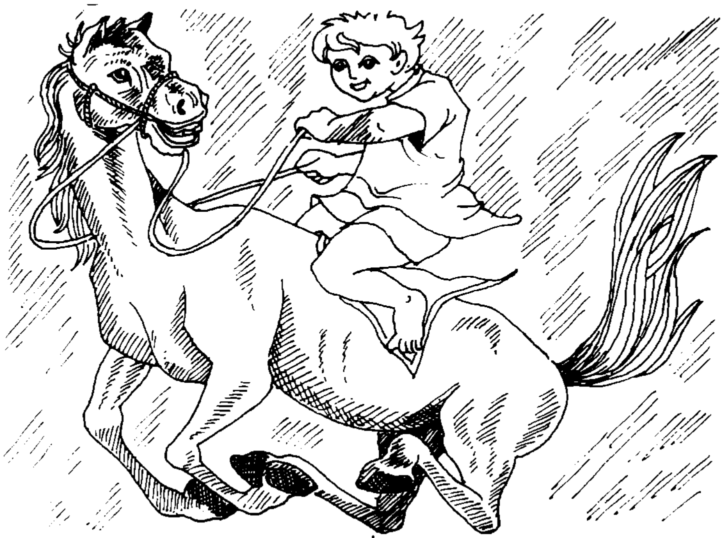

नन्हीं चिड़िया

नन्हीं-नन्हीं प्यारी चिड़िया
उड़ आ मेरे आँगन में।
गीत सुनाऊँगा मैं, तू भी
कजली गाना सावन में !
झम-झम-झम पानी बरसेगा
जब गड़-गड़ बादल गरजेगा
हम दोनों तब भींग भींग कर
नाचेंगे इस आँगन में !
कजली गाना सावन में !
ओ री नन्हीं भोली चिड़िया
आ जा मेरे आँगन में !

राखी

आया राखी का त्योहार !
भैया हाथ बढ़ा ला आगे,
बाँधूँ तुझको, रेशम धागे,
चमके पन्नी पीली लाल,
आया राखी का त्योहार !!
मीठा मुझे खिला दे पहिले,
माथे तिलक लगा दे पहिले।
राखी तब बँधवाऊँगा,
साड़ी तुझे दिलाऊँगा,
रुपया दूँगा पूरे चार !
आया राखी का त्योहार !!

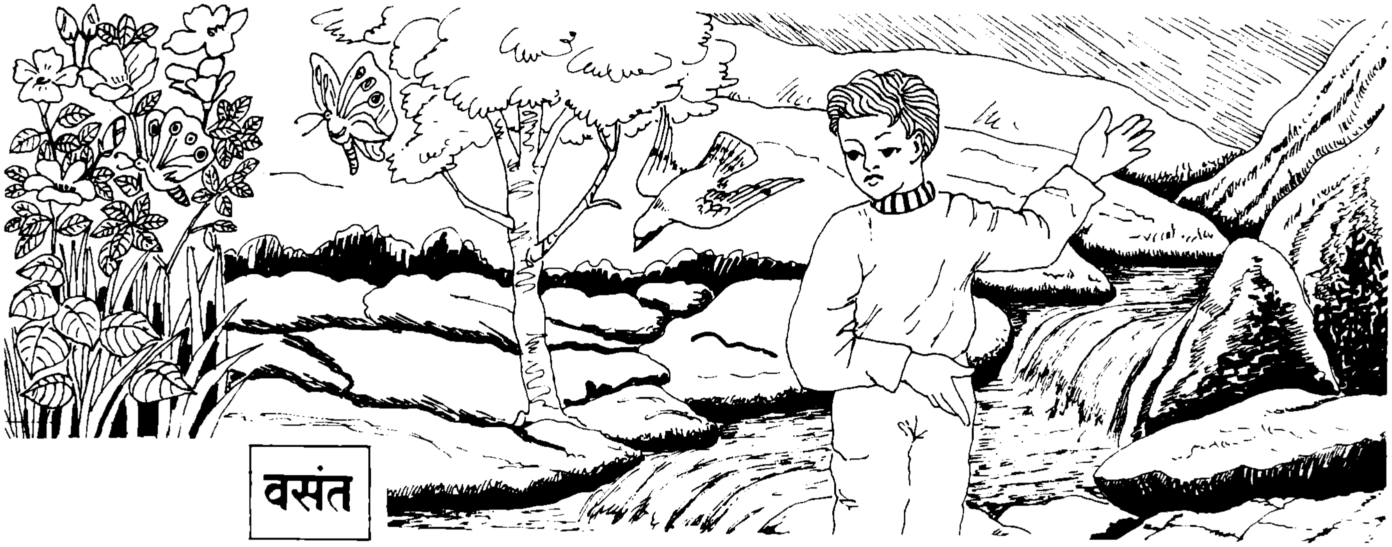

वसंत

आया वसंत रे पतछर का अंत रे,
फूलों में छायी बहार !
भँवरे की शान देखो,
चंचल उड़ान देखो,
तितली का देखो श्रृंगार !
फूलों में छायी बहार।
जाती है फूल - फूल,
महकी है धूल - धूल,
बागों में रस की बौछार।
फूलों में छायी बहार।

कल-कल नदी

कल-कल करती नदी बह रही
क्या कुछ हम से बात कह रही ?
कौन देश है नदी तुम्हारा ?
कौन वहाँ का रहनेवाला ?
नदिया कैसा उसका राजा ?
कैसी है उसकी रानी ?
कहो, कहो ओ नदी आज तुम
मुझ से उसकी एक कहानी !

नन्हीं चिड़िया

नन्हीं-नन्हीं प्यारी चिड़िया
उड़ आ मेरे आँगन में।
गीत सुनाऊँगा मैं, तू भी
कजली गाना सावन में !
झम-झम-झम पानी बरसेगा
जब गड़-गड़ बादल गरजेगा
हम दोनों तब भींग भींग कर
नाचेंगे इस आँगन में !
कजली गाना सावन में !
ओ री नन्हीं भोली चिड़िया
आ जा मेरे आँगन में !

राखी

आया राखी का त्योहार !
भैया हाथ बढ़ा ला आगे,
बाँधूँ तुझको, रेशम धागे,
चमके पन्नी पीली लाल,
आया राखी का त्योहार !!
मीठा मुझे खिला दे पहिले,
माथे तिलक लगा दे पहिले।
राखी तब बँधवाऊँगा,
साड़ी तुझे दिलाऊँगा,
रुपया दूँगा पूरे चार !
आया राखी का त्योहार !!

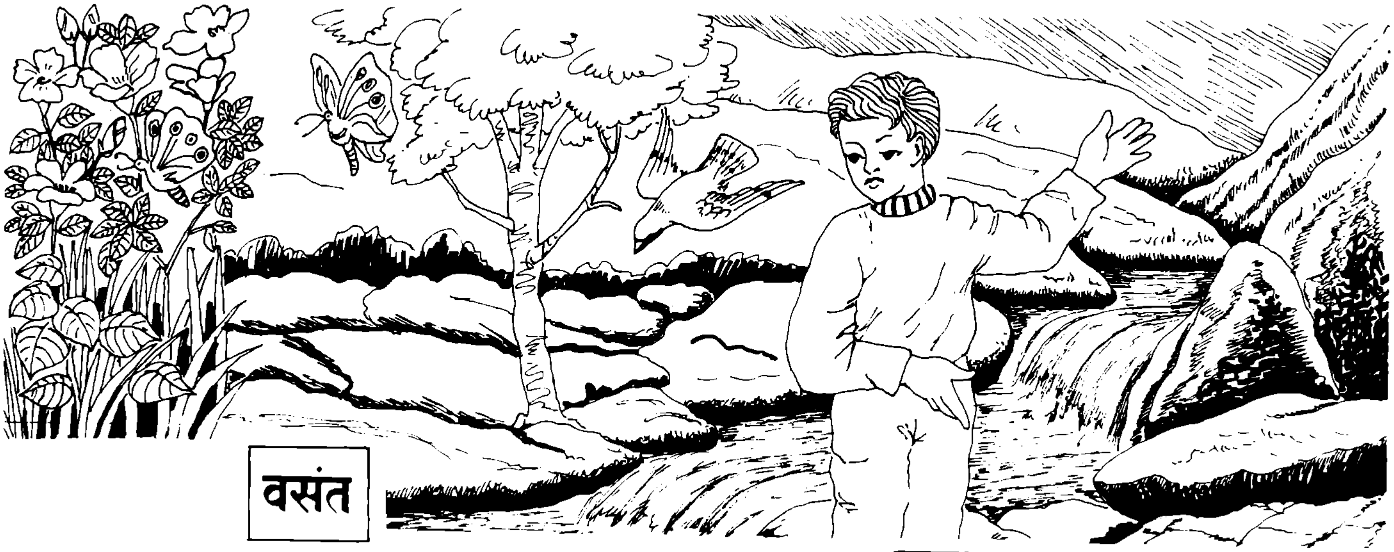

वसंत

आया वसंत रे पतछर का अंत रे,
फूलों में छायी बहार !
भँवरे की शान देखो,
चंचल उड़ान देखो,
तितली का देखो श्रृंगार !
फूलों में छायी बहार।
जाती है फूल - फूल,
महकी है धूल - धूल,
बागों में रस की बौछार।
फूलों में छायी बहार।

कल-कल नदी

कल-कल करती नदी बह रही
क्या कुछ हम से बात कह रही ?
कौन देश है नदी तुम्हारा ?
कौन वहाँ का रहनेवाला ?
नदिया कैसा उसका राजा ?
कैसी है उसकी रानी ?
कहो, कहो ओ नदी आज तुम
मुझ से उसकी एक कहानी !

बापू आजा

बापू अब तू फिर से आजा !
बीत गये दिन जाने कितने
तुझ से खेल नहीं हम पाये,
तेरी लाठी लेकर भागें,
फिर न कभी वे मौके आये,
आ फिर हमको खेल खिला जा।
बापू अब तू फिर से आ जा !
बहुत दिनों से तुझे न देखा
सुनी न तेरी हँसी निराली,
'रघुपति राघव राम' न गाया
सुनी न तेरी बोली प्यारी,
तुझे बुलाने आये आ जा,
बापू अब तू फिर से आ जा !

बापू

बापू तुझको करते प्रणाम।
जय जय राघव, जय राम राम।
बापू तुझे बुलाने आये,
भारत में फिर आना तुझको,
इसकी याद दिलाने आये।
फिर कुछ हमें बता जा बापू,
नया पाठ सिखला जा बापू,
अपनी हँसी सिखा जा बापू,
तुझ से शिक्षा लेने आये।
बापू, तुझे बुलाने आये।

झंडा

यह भारत का प्यारा झंडा !
यह दुनिया से न्यारा झंडा !
भारत पर यह फहरायेगा,
झूम झूम कर लहरायेगा।
इसकी शान बढ़ायेंगे हम।
इसका मान बढ़ायेंगे हम।
प्यार इसे हम दिल से करते।
नमस्कार आदर से करते।

बापू

बापू भारत में फिर आओ !
साहस भर दो मेरे मन में,
ताकत भर दो मेरे तन में,
बापू हमको वीर बनाओ।
कैसे गाऊँ गान देश का,
कैसे बनूँ सपूत देश का,
बापू इतना सिखला जाओ।

बंदरवाला

अम्मा तुझे बुलाती हैं
बन्दरवाले आजा रे !
दो पैसे वह तुझको देंगी
भरी कटोरी आटा देंगी,
हमको नाच दिखा जा रे !
बन्दरवाले आ जा रे !
कैसी सीधी बँदरी तेरी,
बन्दर पाजी लगता है;
वह बेचारी भाग रही
वह लाठी लिये झपटता है,
बन्दरवाले रोक उसे
डमरू की तान सुना जा रे !
बन्दरवाले आजा रे !!

सपूत

माँ बतला दूँ बात तुझे
मैं सत्य, देश का वीर बनूँगा।
होने तो दे बड़ा, देखना फिर
कितना गंभीर बनूँगा।
तू देगी जो कुछ भी आज्ञा
उसको पूरा कर लाऊँगा,
तेरी इच्छा पर माँ मेरी,
तारे नभ के ले आऊँगा।
दूर किसी नन्दन कानन से
चुन कर फूल तोड़ लाऊँगा,
माला उनकी बना, चतुरता से
मैं तुझे पिन्हा जाऊँगा।।

तितली

तितली हूँ, मैं तितली हूँ।
गेंदा, बेला, हरश्रृंगार,
मैं फूलों को करती प्यार।
पीले, लाल, सफेद गुलाब,
मुझको प्यारे सभी गुलाब।
फूलों से रंग लाती हूँ,
अपने पंख सजाती हूँ।
रंग-बिरंगी बनती हूँ,
फूल-फूल से मिलती हूँ।

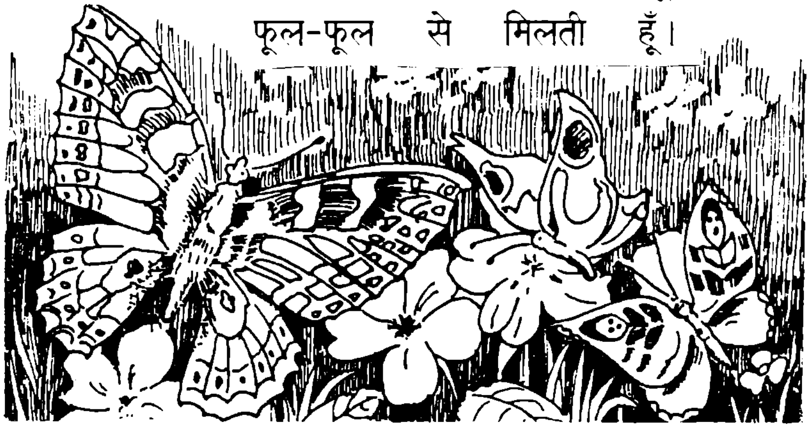

बरसा

अररर-अररर पानी बरसा !
धूल-धुल गयी, पत्ते-पत्ते,
नहा-नहा कर चमक गये हैं !
मुरझाये ये फूल कली सब,
अब खिल-खिल कर दमक गये हैं।
खुश हो चिड़ियाँ गीत गा रहीं,
दाना चुग कर उड़ी जा रहीं।
गड़-गड़, गड़-गड़ बादल गरजा !
अररर-अररर पानी बरसा !

नाव चली

कागज की मेरी नाव चली।
पानी में मेरी नाव चली।।
डगमग डगमग, हिलती डुलती,
इठलाती मेरी नाव चली !
कागज की मेरी नाव चली !!
बनकर दुलहन, कैसी बनठन,
इस पर बैठी, गुड्डे के सँग,
मेरी गुड़िया ससुराल चली !
कागज की मेरी नाव चली !!
यह पार समुन्दर जायेगी,
गुड्डा गुड़िया ले जायेगी,
आँधी तूफानों से न डरी।
यह उनको भी ललकार चली।
कागज की मेरी नाव चली !!

तितली रानी

तितली रानी, तितली रानी,
उड़ी कहाँ तुम जाती हो ?
बैठ रही हो फूल-फूल पर
क्या फूलों को खाती हो ?
काले, पीले, हरे, सुनहरे,
रंग कहाँ से लायी हो ?
ओ हो आया आज समझ में
चुरा फूल से लायी हो।
इसीलिए तो दिन-दिन भर
बागों में घूमा करती हो,
रंग की ताक लगाये बस
फूलों पर झूमा करती हो।

झगड़ा

अम्मा, मुन्ना नहीं मानता,
मेरी गुड़िया लेता है !
अपनी गेंद छिपा कर रखता,
मुझे बहुत दुःख देता है।
अम्मा तेरी मुन्नी, मेरी
रोज शिकायत करती है,
मैं गुड़िया से ब्याह करूँगा
यह क्यों नहीं समझती है !
दुलहिन इसे बनाऊँगा,
दूल्हा मैं बन जाऊँगा।
काम करेगी यह तेरा सब,
मैं इसको समझाऊँगा !

एक कहानी

ओ री दीदी सुन, तुझको
बतलाऊँ एक कहानी !
वे थे राजा राम और
सीता थी उनकी रानी !
राक्षस रावण बहुत दुष्ट,
ले कर भागा सीता को।
बहुत दूर लंका में उसने
कैद किया माता को।
दीदी, हनूमान जी ने तब,
उनका पता लगाया।
तीर धनुष ले रामचन्द्र ने,
रावण मार गिराया।
दीदी मैं भी राम बनूँगा,
धनुष एक ले आऊँगा।
भारत में यदि राक्षस आया,
उसको मार गिराऊँगा।।

सिंहराज की मौसी

शेरों जैसी पंजोंवाली,
शेरों जैसी सूरतः
वैसी ही आँखें मूछें हैं,
वैसी बिलकुल मूरत।
सिंहराज की मौसी बिल्ली,
करती 'म्याऊँ' 'म्याऊँ',
चूहा अगर कहीं दिख जाये,
कहती 'खाऊँ' 'खाऊँ'।
चाहे जहाँ छिपाकर रख दो,
दूध न बचने पाताः
दही देखकर मुस्का जाती,
इसे बहुत ही भाता !

अम्मा की बिल्ली

ओ री अम्मा ! तेरी बिल्ली,
हाय हाय रे बड़ी चिबिल्ली !
चौके के उस छोटे बिल में,
चूहा दोस्त हमारा है,
रोज उसे मैं रोटी देती,
बहुत मुझे वह प्यारा है!
लेकिन उसको तेरी बिल्ली,
आज पकड़नेवाली थी,
अगर न उसको दौड़ बचाती,
वह चट करनेवाली थी,
दो पैसे की लोहे की,
मोटी जंजीर मँगा ले तू,
बिल्ली को ले बाँध और,
उसको यह पाठ पढ़ा दे तू।
यदि दौड़ी मेरे चूहे पर,
मार बहुत वह खायेगी,
दूध दही सब बन्द करूँगी,
भूखों ही मर जायेगी !

कुकड़ूँ-कुकड़ूँ

सुन्दर कलँगीवाला मुर्गा
कुकड़ूँ-कुकड़ूँ बोले रे,
निकला सूरज सुबह हो गयी,
हवा सुहानी डोले रे।
लाल मुनैया चीं चीं बोले,
ठाकुर ! ठाकुर ! श्यामा,
में-में में-में करती बकरी
बछड़ा करता माँ ! माँ !!
उठ जा मुन्ना, उठ जा मोहना,
बहुत न झूल हिंडोले रे !

एक कहानी

अम्मा कह दे एक कहानी,
इक था राजा इक थी रानी।
कैसी थी वह राजकुमारी ?
भोली-भाली प्यारी-प्यारी,
किसने राक्षस को मारा था ?
क्यों वह सबको ही प्यारा था ?
कैसा था वह राजकुमार ?
अम्मा मुझे बता दे आज !

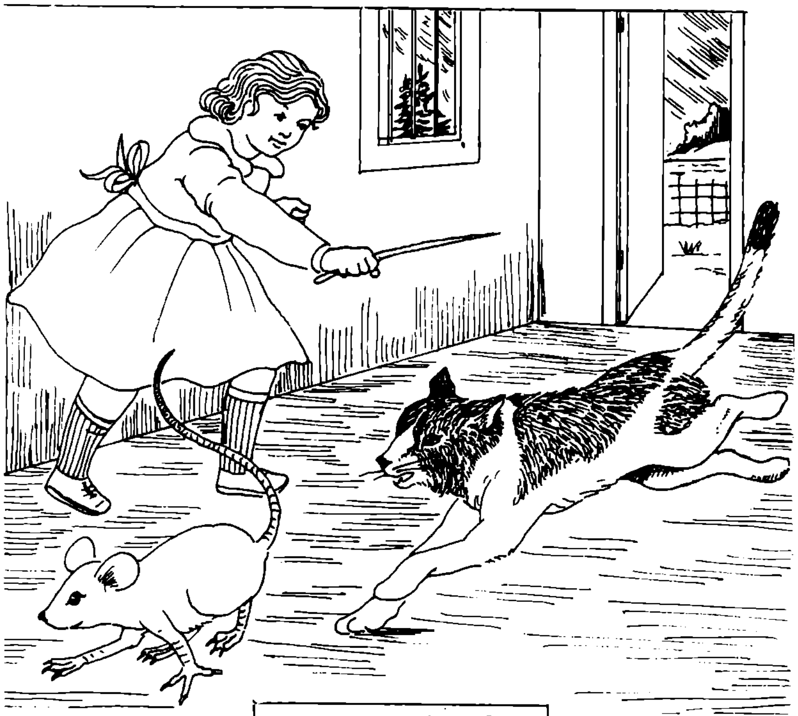

सोजा बारे वीर

सो जा बारे वीर !
घिरती आती रात अँधेरी
घिरता आता पानी !
देख दूर से अस्त्र-शस्त्र ले
आते हैं सेनानी !
ले अर्जुन का धनुष वीर
तू खूब चलाना तीर !
सो जा बारे वीर !

रेल

फक-फक करती, झक-झक करती
भक-भक मुँह से धुआँ उगलती,
नगर, गाँव, पर्वत, सरिता और
घने जंगलों को तय करती।
कभी तेज सी सीटी देती,
कभी ठहर कर पानी लेती,
बच्चे, बुड्ढे, युवक सभी को
गोदी में ले दौड़ा करती।
कभी न कुछ कहनेवाली यह,
कभी नहीं थकनेवाली यह,
आज बम्बई कल कलकत्ता,
चटपट ही जाने वाली यह।
इस पर चढ़ कर काशी देखो
या प्रयाग का संगम देखो।
कहो तुम्हें लखनऊ घुमा दे,
कानपुर की सैर करा दे।
दिल्ली जाकर कुतुब देख लो,
ताजमहल की झाँकी ले लो।
अगर कहो तो तुमको लेकर
यह पर्वत की छाती चीरे,
आँधी, वर्षा, तूफानों में रेल
तुम्हें हँस कर ले दौड़े।।

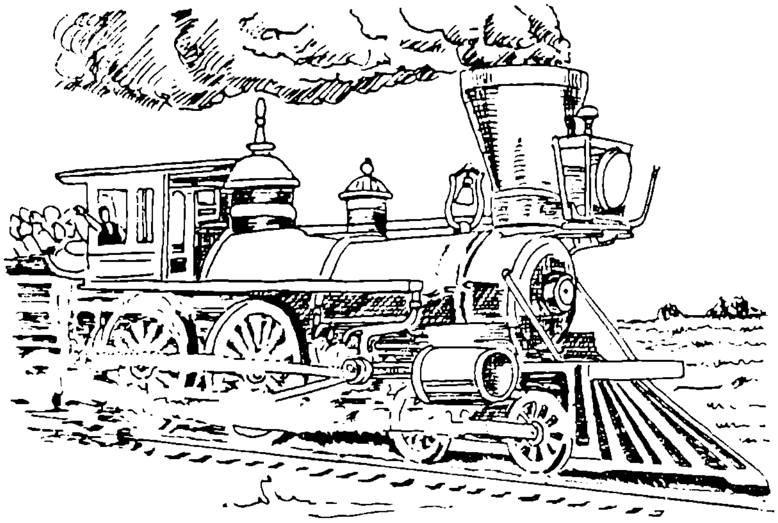

बिल्ली रानी

बूढ़ी नानी नित्य रात को
कहती एक कहानी थी।
कैसे चूहों को खाने की
उस बिल्ली ने ठानी थी।
बिल्ली बूढ़ी, उसकी अब
भूखों मरने की बारी थी,
बहुत दिनों से मिला न खाना
भूखी बहुत बिचारी थी,
कितने चूहे नित खाती
जब उसकी अरे जवानी थी।
लंघन करती, भूखों मरती,
चूहे आते पास नहीं।
सब आशायें छोड़ी उसने
जीवन की थी आस नहीं।
किंतु सोच तरकीब निकाली
बिल्ली बड़ी सयानी थी।
गयी एक मंदिर में चुपके
मालायें दो ले आयी,
एक गले में डाली उसने
एक हाथ में लटकायी।
चूहा एक देख जब भागा
वह थोड़ा मुस्कानी थी।
मीठी वाणी में तब उसने
उस चूहे को समझाया,
'भाग न बेटा, देख तनिक
यह मेरी साधू सी काया,
किंतु न ठहरा चूहा भागा,
बिल्ली को हैरानी थी।
पर धीरज धर मंदिर में ही
माला जपती जाती थी,
चूहे आते भोग उड़ाते
पर न पकड़ने जाती थी।

मौका कोई ताक रही
धीरज से बिल्ली रानी थी।
चूहों ने देखा वह उनको
नहीं पकड़ने को आती।
शांत बहुत बैठी रहती है
राम-नाम जपती जाती।
तब सब बेडर घिर आये
वह बन गयी 'भगतिन नानी' थी।
सभा लगी चूहों की होने
बिल्ली देती थी व्याख्यान,
मुग्ध सभी मिल कीर्तन करते
जपते जाते सीताराम !
पास बहुत जो चूहा होता
लेती पकड़ सयानी थी।
आँखे मीचे मुख ऊपर कर
वे तो भजते थे भगवान्।
क्या बिल्ली रानी करती है
इसका उन्हें न था कुछ ज्ञान।
नित्य पेट भर खाती, उसकी
अब किस्मत चमकानी थी।
इसी तरह वह मौज उड़ाती
चूहे घटते जाते थे।
थे वे सब हैरान, किन्तु
कुछ कारण जान न पाते थे।
उन चूहों में थी एक चुहिया
जो उन सब से ज्ञानी थी।
एक दिवस जब कीर्तन करते
सब चूहे आँखें मीचे।
चुहिया खोले आँख देखती
बैठी थी सब के पीछे।
जब बिल्ली ने पकड़ा चूहा,
तब चुहिया चिल्लानी थी।
बोली—'भाई' खोलो आँखे
देखो इस भगतिन का काम।
हाय हमारे भाई बंधु सब
इस दुष्टा ने किये तमाम।
चूहे सब भागे अब तो
बिल्ली रानी पछतानी थी।

इसके बाद न कोई चूहा
आया उस भगतिन के पास,
जान गये सब आदत उसकी
किया न फिर उसका विश्वास
भूखों मर कर इस प्रकार
बिल्ली को जान गँवानी थी।

तीन भालू

शीला थी अति नटखट लड़की
चली घूमने वह जंगल।
बड़ी सुहानी सुबह, लग रहा था
जंगल में भी मंगल।
लिये हाथ में गुड़िया शीला
चली अकेली बड़ी निडर।
दूर एक टीले पर देखा
उसने सुंदर छोटा घर।
'जंगल में यह किसका घर है ?
आज इसी को देखूँगी।
लाल द्वार, नीली खिड़की है
आज यहीं पर खेलूँगी।'
बाबा भालू, माता भालू
बच्चा भालू, का घर था।

तीनो थे बलवान, न उनको
वहाँ किसी का भी डर था।
जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा कर
शीला पहुँच गयी अंदर।
भोजन के कमरे में देखे
प्याले खीर भरे सुंदर।
बाबा-प्याला, माता-प्याला
बच्चा-प्याला उसको भाया।
इसे गिराया, उसे गिराया
पर छोटे प्याले का खाया।
तीन मेज के साथ कुर्सियाँ
तीन रखी थीं उस कमरे में।
तीन पलँग भी बिछे हुए थे
एक पास के ही कमरे में।

दोनों बड़ी कुर्सियाँ देखी
दोनों बहुत बड़ी ऊँची थीं
बच्चा-कुर्सी उसको भायी
उस पर बैठी, वह नीची थी।
खुश होकर वह कूदी उस
पर छोटी कुर्सी टूट गयी।
खीर हाथ की गिरी भूमि पर
छोटी प्याली फूट गयी।
यूँ ऊधम करते करते अब
बहुत थक गयी थी शीला,
पेट भरा था और नींद से
बदन हो चला था ढीला।
पर सोने की अब कठिनाई
उसके सम्मुख हुई खड़ी,
पलँग सामने बिछे हुए थे
जल्दी से उस ओर बढ़ी।
कमरा भी था सुंदर जिसमें
तीन पलँग थे पड़े हुए,
तीन भालुओं के थे उन पर
साफ़ बिस्तरे बिछे हुए।
बच्चा-भालू के बिस्तर पर
शीला सोयी बेखटके।
लेकिन थोड़ी ही देरी में
घर के दरवाजे खटके।
घर के मालिक, बाबा, अम्मा
बच्चा भालू अंदर आये,
जब घर देखा तितर बितर सब
तीनों मन में चकराये।
बच्चा भालू अपनी कुर्सी
प्याली देख बहुत रोया,
अम्मा ने चुप उसे कराया,
जल से उसका मुख धोया।
शोर सुना तो जागी शीला
पर कुछ समझ नहीं पायी

तीनों भालू को जब देखा
तब तो बेहद घबरायी।
गुर्राया तब बच्चा-भालू
झपटा बच्चा उसकी ओर.
देखा, खिड़की खुली हुई थी
भागी शीला बिस्तर छोड़।
बहुत डर गयी थी अब तो
वह जल्दी-जल्दी घर आयी,
हाँफ-हाँफ कर कठिनाई से
माँ को बात बता पायी।
सुनकर माँ भी हुई अचम्भित
शीला कैसे बच आयी,
एक नहीं, दो, तीन भालुओं से
निज प्राण बचा पायी ?
उस गड़बड़ में शीला
अपनी गुड़िया वहीं भूल आयी,
पछतायी, पर बहुत तसल्ली
बच्चा-भालू ने पायी।

राणा रणजीत सिंह

महाराज रणजीत सिंह का
किसने नाम नहीं जाना ?
रण में बाँका पर दयालु भी
किसने उन्हें नहीं माना !
एक दिवस वे राज्य देखने
चले जा रहे थे पथ पर,
लगा अचानक बड़ी जोर से
एक बड़ा पत्थर आकर।
हुए दास हैरान बहुत
यह किसने राजा को मारा ?
पागल है या मूर्ख कि जिसने
यम को आज न्योत डाला !
दिया दिखायी और न कोई
स्त्री एक बिचारी थी,
अति दुर्बल, अति दीन कि
जैसे जीवन से ही हारी थी।
पूछा राजा के नौकर ने
बहुत कड़कती भाषा में,
"तू ही क्या अपराधिन मूर्खे
खड़ी मौत की आशा में ?"
पर राजा ने रोका उसको
खुद आये स्त्री के पास,
घबरायी-सी खड़ी हुई थी
खोकर सब साहस विश्वास।
राणा बोले—"माँ मैने कुछ
तेरा कभी बिगाड़ा है ?
आज दंड देने को तूने
कस कर पत्थर मारा है।"
रोयी दुखिया फफक फफक कर,
'महाराज अपराध हुआ,
दो दिन से भूखा है
बालक खाने को कुछ नहीं हुआ।
अति दरिद्र, दे सकी न भोजन
भूखा बालक बेचारा,
आम तोड़ कर दूँगी उसको
यही सोच पत्थर मारा।
किन्तु हाय हूँ बड़ी अभागिन
इतना भी मैं कर न सकी,
पत्थर उलटा लगा आपको
मैं दो फल भी पा न सकी।'
सुन स्त्री की करुण कहानी,
महाराज अति सकुचाये,
अपनी दुःखी प्रजा की हालत
देख नयन भर-भर आये।
उसको समझा कर, मुठ्ठी भर
मुहरे आँचल में डालीं,
'ले माँ, तेरी सूखी डाली पर
छा जाये हरियाली।'

कितने दुख की बात कि
भूखा मेरा छोटा भाई है,
दीपक के नीचे अंधियारी
मुझको नहीं सुहायी है।'
चकित सभी नौकर चाकर क्या
भूले राजा दंड विधान ?
आज मारनेवाले को ही
देते हैं भरपूर इनाम !
उनकी हैरानी पर वह
पंजाब केशरी मुस्काया,
उन अज्ञानी सभी नौकरों को
फिर हँस कर समझाया—
'यदि जड़ तरु भी पत्थर खाकर
देता है मीठे फल चार,
राजा होकर दे न सकूँ कुछ
हो जाऊँ क्यों मैं लाचार ?'

दुलहिन चुहिया दूल्हा बिल्ला

झम-झम-झम-झम बरसा पानी !
बिल से निकली चुहिया रानी।
एक बिलौटा दिया दिखायी।
हाय बहुत चुहिया घबरायी।
किंतु बहुत खुश, नाचा बिल्ला।
सुंदर चुहिया, सुंदर बिल्ला।
'अपना व्याह रचाऊँगा मैं,
दुलहिन इसे बनाऊँगा मैं।'
चुहिया शरमा कर मुस्कायी।
बाजी तब बिल में शहनाई।
चूँ-चूँ-चीं-चीं चुहियाँ गाती,
बिल्ले-बिल्ली बने बराती।
चुहिया का तब भैया आया,
बिल्ले का साला कहलाया।
ढम-ढम, ढम-ढम ढोल बजाया,
बहनोई को नाच दिखाया।
चुहिया एक झमकती आयी
बिल्ले को कस चुटकी खायी।
हँस बिल्ले ने पकड़ा उसको,
जकड़ लिया पंजे में उसको।
जीजा छोड़ो कुछ न करूँगी
मैं जीजी के साथ चलूँगी।
हँस कर तब बिल्ले ने छोड़ा
भागी वह बिल में मुख मोड़ा।
हँस हँस हुए बराती दुहरे,
ऐसे अवसर कहाँ सुनहरे।
बजे मँजीरे, ढोलक बजती,
नव गहनों से दुलहिन सजती।
लहँगा लाल, सुनहरी चुनरी
माँग भरी सिंदूरी गहरी।
छम-छम, छम-छम रूप सुहाई,
चुहिया सज दुलहिन बन आयी।
लेकर दुलहिन, छोड़ दहेज,
बिल्ला लौटा अपने देश।

शेर और बकरी

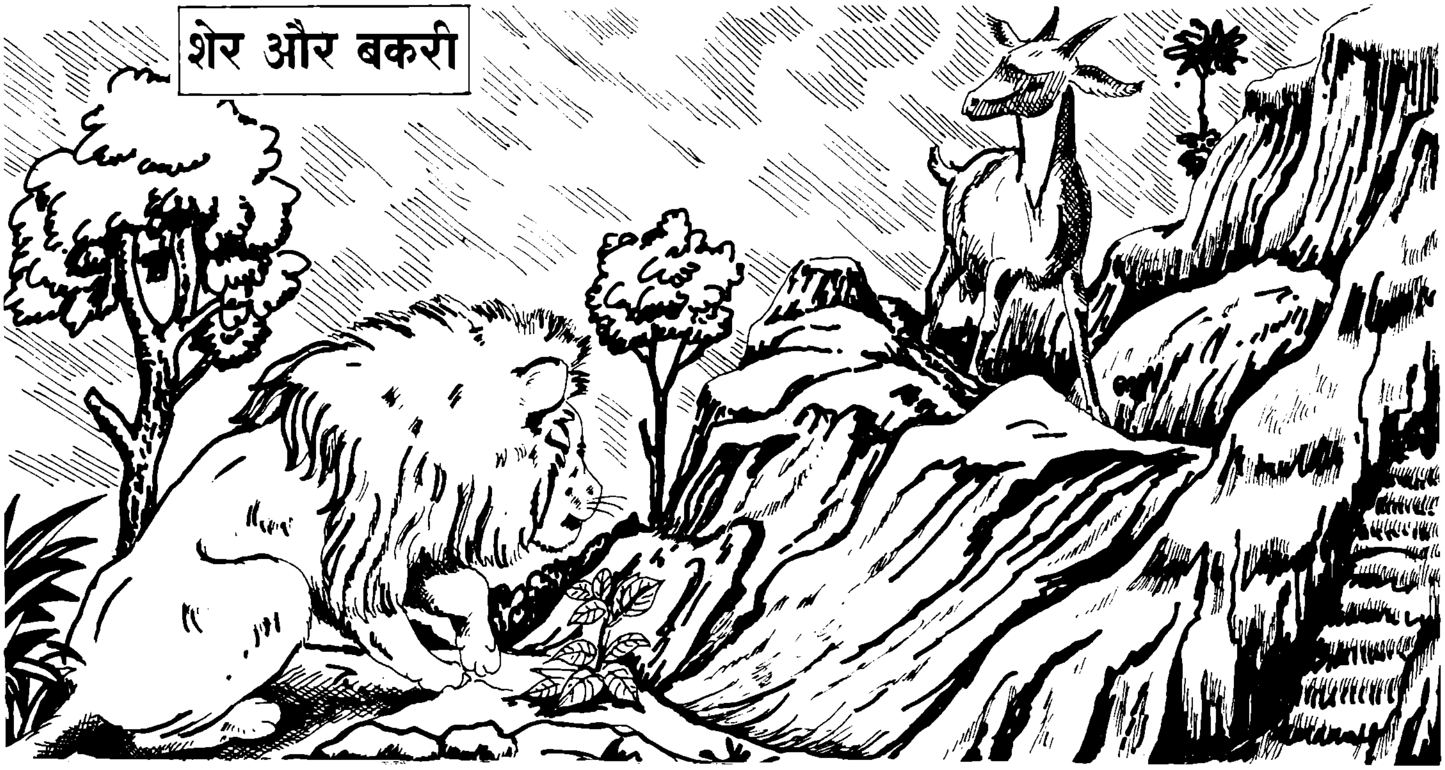

घूम रहा था एक शेर अति ही व्याकुल-सा वन में,
मिला न था खाने को कुछ भी पछताता था मन में।
चलता-चलता एक पहाड़ी के नीचे वह आया,
उच्च शिला पर देख एक बकरी को मन ललचाया।
किंतु न चढ़ सकता था ऊपर शिला बहुत ऊँची थी,
और जहाँ वह खड़ा हुआ था जगह बहुत नीची थी।
बोला-'रानी राम राम क्या वहाँ कर रहीं ऊपर ?
हरी भरी है घास यहाँ पर देखो तनिक उतर कर।
मैं भी भूखा, तुम भी भूखी, आओ मिलकर खायें,
हरियाली में घूम-घूम कर अपना मन बहलायें।
चौंकी बकरी ? दुश्मन ही क्यों करता स्वागत मेरा ?
कुछ किस्मत ही चमकी है या है संकट ने घेरा ?
फिर बोली वह—'सिंहराज जयहिंद हमारा तुमको,
मेरी चिंता आज कर रहे, धन्यवाद है तुम को।
घास वहाँ की यदि सुंदर है तुम ही खालो उसको।
किंतु न डालो भ्रम में लालच दिखलाकर यूँ मुझको।
यहाँ पत्तियाँ बहुत मुलायम, ऊपर यहीं चरूँगी
किन्तु न अपने खाने का मैं तुमको अवसर दूँगी।'
सोच समझ कर जो बकरी-सा करते हैं हर काम,
खतरे से भी बच जाते हैं जग में करते नाम।

भोला और शेरा

भोला था एक प्यारा बच्चा,
सुंदर स्वस्थ हृदय का सच्चा।
कुत्ता एक मित्र था उसका,
शेरा नाम रखा था जिसका।
भोला जब-जब खेला करता,
शेरा उसकी रक्षा करता।
भोला बन में चला घूमने,
शेरा भी सँग लगा झूमने।
बहुत बड़ा सा जेबरा आया,
भोला को जब नंगा पाया।
हँसा, किंतु शेरा गुर्राया,
'अपना सा क्यों कोट न लाया ?'
झेपा जेब्रा, धारीवाला,
लाया सुंदर कोट निराला।
भोला खुश हो लगा नाचने,
शेरा उसको लगा चाटने।
दोनों दौड़े पेड़ छुआ,

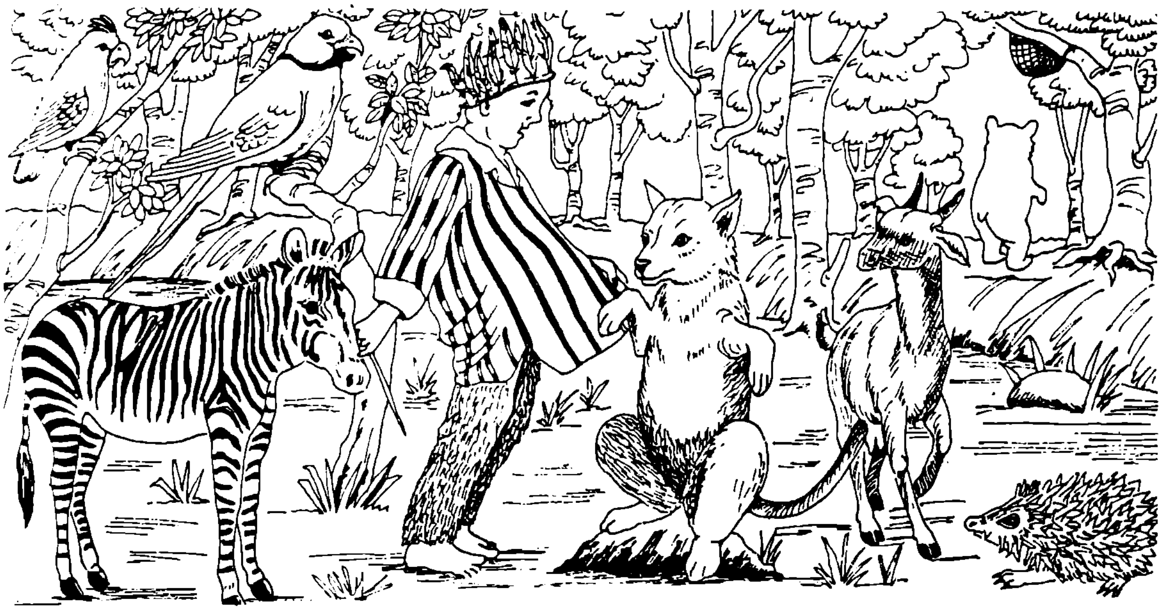

उस पर बैठा काकातुआ।
लगा चिढ़ाने-'गंजा भोला।'
'चुप' गुस्से से शेरा बोला।
'जल्दी से ला सुंदर ताज।'
रंग बिरंगे पर का ताज !
तोता उड़ा पंख ले आया,
उसका सुंदर मुकुट पिन्हाया।
हँसने लगा पहिन कर भोला।
'कितना सुंदर' शेरा बोला।
आया काला बकरा भारी,
'सिर पर मुकुट, पैर क्यों खाली ?'
पर शेरा को गुस्सा आया,
बकरे को डाँटा, गुर्राया।
'जल्दी से ला एक पैजामा,
रोयेंदार गरम पैजामा।'
वह लाया पैजामा एक,
मुस्काया भोला वह देख।
मिली एक साही कुछ दूर
'भोला को देखा तब घूर।
उसे देख भोला घबराया,
शेरा साही पर चिल्लाया।
'जल्दी दे काँटे दो एक,
मेरा भोला डरे न नेक।'

छोड़े तब काँटे दो चार,
भागी साही खाकर मार।
आया काला भालू एक,
शहद खा रहा था भर पेट।
भोला ने तब मारा तीर
भागा भालू हुआ अधीर
भोला ने तब शहद उड़ाया,
मीठा खा आनन्द मनाया।
भोला, शेरा थे अब प्यासे,
बंदर से तब नारियल माँगे।
जब 'भों भों' शेरा चिल्लाया,
बंदर डर भभकी में आया।
झट तरु से नारियल टपकाया,
भोला पानी पी अलसाया।
ऊँ ऊँ, भोला हुआ निंदासा,
शेरा ने तब दिया दिलासा।
उसे पीठ पर झट बैठाया,
जल्दी जल्दी घर को आया।
'अभी बहुत भोला नादान,
नहीं इसे है कुछ भी ज्ञान।
सदा रहूँगा इसके पास'
दोनों घर पर सोये साथ।

प्रचारक ग्रंथावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा० लि०
सी.२१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी- २२१००१

मुद्रक - वेरोनिका प्रिंटर्स, वाराणसी।